Financial Support:- Sri Narendra Kumar Jain
Virginia, U.S.A
Proccess & Digitized by:-ZEN INFORMATICS,
Devashram, Mahadeva Road,
Arrah, Bihar (INDIA)
Mob:- 09431419369

Only for study & research not for commercial use.

Manuscripts

Pravachan Sar

Copy ® Reserved for Sri Syadwad Mahavidyalaya, Varanasi

श्री स्याद्वाद (दि० जैन) महाविद्यालय
भदैनीघाट–काशी ।

श्री अकलंक सरस्वती भवन

नाम पुस्तक प्रवचनसार
नंबर ______ विषय ______
ग्रन्थकार ______
दातार [illegible]
मिती ______ वी० सं० २४

॥ अथ प्रवचनसार लिख्यते ॥ १ ॥

प्र॰सा॰
१

॥ॐनमः सिद्धेभ्यः अथ प्रवचनसारसिद्धांतस्य बालावबोध टीका लिख्यते॥ छप्पय॥ छंद॥ सर्वसिद्धकरतार
करैनिजकरमसरमनिद्धि॥ आपैकरनसुरूपहोइसाधरासाधैविधि॥ संप्रदानतासुधरै आपकौ आपसमप्पै
अपादानतैं आप आपकौ करिथिरथप्पै॥ अधिकरनहोइ आधारनिजवरतै परनत्रैमूपर॥ करविधिकारक
मयरहितविविहरूपकविधिअनआमर॥१॥ दोहा॥ महतत्वमहनीयमह महाधाम गुनधाम॥ चिदानंदपर
मातमावंदौं रमताराम॥२॥ कुनयदमनिसुवचनअवनि॥ रमनस्यातपदसुद्धि॥ जिनवांनीमानीमुनिप॥ घ
टमैंकरहुसुबुद्धि॥३॥ चौपई॥ पंचइष्टपदकेपदवंदौं॥ सत्यस्वरूपगुरुगुणअभिनंदौं॥ प्रवचनसारग्रंथकीटी
का॥ बालबोधभाषामयनीका॥४॥ रचौंआपपरकौंहितकारी॥ भव्यजीवआनंदविथारी॥ प्रवचनजलनि
धिअरथजलालै॥ मतिभाजनसमाननलपैहै॥५॥ दोहा॥ अमृतचंद्रकृतसंस्कृतटीकाअगमअपा
र॥ तिसअनुसारकहौंकछुसुगमअलपविस्तार॥६॥ आगेश्रीकुंदकुंदाचार्यप्रथमहीग्रंथआरंभविषै मंगल
चरननिमित्तनमस्कारकरै है॥ गाथा॥ एससुरासुरमनुसिंदवंदितं॥ धोदघाइकम्ममलं॥ पणमामिवड्ढमा
णं तित्थंधम्मस्स कत्तारं॥१॥ एषः सुरासुरमनुष्येंद्रवंदितं॥ धौतघातिकर्म्ममलं॥ प्रनमामीवर्धमानतीर्थंधर्म

श्री अकलंक सरस्वती भवन
स्याद्वाद विद्यालय, काशी।

स्यकर्त्तारं ॥ टीका ॥ एषः अहं वर्धमानं प्रनमामि ॥ यहं जु हौं मैं स्वसंवेदनप्रत्यक्षज्ञानदर्सनस्वरूप कुंदकुंदा
चार्य ॥ सो वर्धमान जु है ॥ देवाधिदेव परमेस्वर परमपूज्य ॥ अंतमतीर्थंकर तिनहि प्रनमामि नमस्कार करौ हौ
कैसे है श्रीवर्धमान तीर्थंकर ॥ सुरासुरमनुष्येंद्रवंदितं ॥ सुर विमानीक देव ॥ असुर पातालवासनी देव अरु मनु
ष्य इनके जु इंद्र तिनहु कर वंदनीक है ॥ त्रैलोक्यपूज्य है ॥ बहुरि कैसे है ॥ धौत घातिकर्ममलं ॥ धौए है चारि घा
तिया कर्मरूप मैल जिनि ॥ अनंत चतुष्टय संयुक्त है ॥ बहुरि कैसे है ॥ तीर्थंकरता करन समर्थ है ॥ बहुरि कैसे है ॥ धर्म
स्य कर्त्तारं सु हु आत्मीक जु है धर्म ॥ तिसके करता उपदेसक है ॥ गाथा ॥ सेसे पुन तित्थयरे ससव्वसिद्धे विसुद्ध
सब्भावे ॥ समणे य णाणदंसण ॥ चारित्ततववीरियायारे ॥ २ ॥ सेषान पुन तीर्थंकरान ससर्वसिद्धान विसुद्धस
द्भावान् ॥ श्रमनाश्च ज्ञानदर्सनतपोवीर्याचारान् ॥ टीका ॥ पुनः अहं सेषान् तीर्थंकरान् ॥ ससर्वसिद्धान् प्रन
मामि ॥ पुनः अहं बहुरि मैं कुंदकुंद सेषान् तीर्थंकरान् सेष बाकी जु हैं तेईस तीर्थंकर ॥ ससर्वसिद्धान् सम
स्तही ॥ अतीतकालके सिद्ध हैं संयुक्त तिनहि प्रनमामि नमस्कार करौ हौ कैसे है तीर्थंकर अरु सिद्ध विसुद्धस
द्भावान् ॥ विसुद्ध निर्मल है ज्ञानदर्सन स्वभाव जिनिका के ॥ जैसै पिछली आंच करि पकाया हूवा सोना

अत्यंतनिर्म्मलथोयाहोयहै॥तैसैसभावसंपन्नहै॥चपुनः श्रमणान्॥बहुरिश्रमनजुहैआचार्यउपाध्या
यसाधुतिननिंनमस्कारकरौहौ॥कैसेहैंएज्ञानदर्सनचारित्रतपोवीर्याचारान्॥ज्ञानदर्सनचारित्रतप
वीर्यएहेआचारजिनकै॥परमसुधोपयोगभूमिकाकौप्राप्तहुएहै॥इसगाथामेंपंचपरमेष्टीकौनमस्का
रकीया॥गाथा॥तेतेसव्वेसमगं॥समगंपत्तेगमेवपत्तेगं॥वंदामियवट्टंते॥अरहंतेमाणुसेखेत्ते॥३॥ता
न्तान्सर्व्वाण्॥समकंसमकंप्रत्येकमेवप्रत्येकंवंदेचवर्तमानान्अर्हतोमानुषेक्षेत्रे॥टीका॥चपुनः
अर्हंमानुषेक्षेत्रेवर्त्तमानान्॥तान्तान्सर्व्वाण्अर्हतः वंदेचपुनःअर्हं॥बहुरिमैंजुहौकुंदकुंदाचार्यसो
मानुषक्षेत्रेमनुष्यक्षेत्रजुहैअढाईद्वीपतिसविषैवर्त्तमानान्॥वर्त्तमानजेजेअरिहंतहै॥तान्तान्स
र्वानअर्हतः॥तिणतिणसबअरिहंताननिकौंवंदै॥वंदौहौसमकंसमकंसमस्तहीकौएकहीबारवंदौहौ॥प्र
त्येकंएवप्रत्येकं॥अथवाएकएककौजुदाजुदाकरिकैवंदौहौ॥भावार्थ॥इसभरथक्षेत्रविषैवर्तमान २
कालतीर्थंकरनांहीं॥तातैमहाविदेहविषैजेतीर्थंकरअबवर्त्तैहै॥तिनकौंमनवचनकायकरिसाक्षात्
नमस्कारकरौहौसोनमस्कारदोयप्रकारहै॥एकद्वैतएकअद्वैतहै॥जोशरीरकौंनवायमस्तककौंभूमि

सोलगाइ॥ अनेकसलवननिसोंपंचपरमेष्टीकोंअष्टांगणमस्कारकीजेसोहैतिनमस्कार॥ अरुजहांभावस्या
वक॥ भावनिकरिविसेषताकरिअत्यंतमगनहोयकै एवंपंचपरमेष्टीयहमें असास्वपरभेदमिस्निनाय॥ तहां
अर्हंतनमस्कारकहिए॥ अभ्यंतरिकेपरिनामनिकानामभावकहिए एवचनउचाररूपजेवाह्यभावतेभाव
ककहिए॥ गाथा॥ किच्चाअरहंताणं॥ सिधाणंतथनमोगणाधराणं अझावयवग्गाणं॥ साहूणंचेदिसव्वे
सिं ४॥ तेसिंविसुद्धदंसण॥ णाणपधानासमंसमासेज्जं उवसंपयामिसम्मं जत्तोनिव्वाणसंपत्ती ५॥ कृत्वा
र्हद्भ्यःसिद्धेभ्यः॥ तथानमोगणाधरेभ्यः॥ अध्यापकवर्गेभ्यः साधुभ्यश्चेतिसर्वेभ्यः॥ तेषांविसुद्धदर्सनज्ञा
नप्रधानाश्रमंसमासाद्यउपसंपद्ये॥ साम्यंयतोनिर्वाणसंप्राप्ति॥ टीका॥ अहंसाम्यंउपसंपद्ये॥ अ
हंमैग्रंथकर्त्तासाम्यसमताभावकुंजुहै॥ वीतरागचारित्रतिसहिउसंपद्ये अंगीकारकरौहौ॥ कहाकरी
अर्हद्भ्यः॥ नमस्कृत्वाअरिहंततनुहै॥ अनंतचतुष्टयसंयुक्तजीवनमुक्तिजिनेस्वर॥ तिनहिपूर्वोक्तदो
यप्रकारस्कानमस्कृत्वानमस्कारकरिकै॥ तथासिद्धेभ्यः॥ तैसेहीसिद्धिनिकौंनमस्कारकरिकै॥ अथअ
ध्यापकवर्गेभ्यः तैसेहीअध्यापकजोहैउपाध्याय॥ तिनकेजुवर्गसमूहतिननहिनमस्कारकरि॥ चपुनः

सर्वेभ्यः साधुभ्यः वहुरि ते सैं ही समस्त ही जु हैं साधु तिनि कौं नमस्कार करि। यहुरि कहा करौं समन्ताभाव कौं अंगी
कार करौ हौं॥ तेषां विशुद्धदर्सनज्ञानप्रधानाश्रमं समासाद्य॥ तेषां ते जु हैं पंच परमेष्टी तिन का विसुद्ध निर्मल दर्स
नज्ञान करि प्रधान वडा जु है आश्रम स्थानक ताहि समासाद्य पाइ करि कैं॥ भावार्थ॥ समस्त उपाधि रहि
त आत्मा का जानना॥ गृहस्थ द्वारा एभि निर्मल दर्सन ज्ञान कहिये। ए पंच परमेष्ठी जो है स्थानक है इन ही विषै
पंच परमेष्ठी पाईये है॥ ऐसे स्थानक कौं पाइ करि वीतराग चारित्र कौं अंगीकार करौ हौं॥ अहं यद्यपि सराग
स्थानक कौं चढनि परिपाटी विषै सराग चारित्र जो रावरे सो आइ परै है॥ तथापि मैं उस कौं दूरि ही तें छाडौं हौं
जा तें वह कषाय कण संगर्भित है॥ अरु पुन्य बंध कौं करै है॥ ताते समस्त कषाय क्लेश रहित शास्त्रान्त मोक्ष का का
रन वीतराग चारित्र अंगीकार करौ हौं॥ आगैं श्रीकुंदकुंदाचार्य वीतराग सराग चारित्र का जु है उपादेय हेय पनि
स का व्यौरा गाथा सूत्र मैं कहै है॥ गाथा॥ संपज्जदि णिव्वाणं देवासुरमणुयरायविहवेहिं॥ जीवस्स चरित्ता
दो दंसणणाणप्पहाणादो॥ ६॥ संपद्यते निर्वाणं देवासुरमनुजराजविभवैः जीवस्य चारित्रात् दर्सनज्ञानप्र
धानात्॥ टीका॥ जीवस्य चारित्रात् निर्वाणं संपद्यते॥ जीवस्य जीव कै चारित्रात् चारित्र गुन कै आचर

नतेंनिर्वाणराजुहेमोक्षसोसंपद्यतेउपजेहे। कैसेहैचारित्रतें दर्शनज्ञानप्रधानात्। सम्यग्दर्सनज्ञानएहेप्रधानजा
विषैंतिनिविसिृतनिसंयुक्त मोक्षपावैहे। देवासुरमनुजराजविभवैः सह। देवसुरकल्पवासीअसुरपातालवासी। मनुज
मनुष्यनकेराजातिनकानुविभवविभूतितिनसंयुक्त ॥भावार्थ॥ चारित्रदोयप्रकारहै। एकवीतराग। एकस
राग। वीतरागचारित्रतेंमोक्षहोइहै। जातेवीतरागचारित्रआपमोक्षरूपहै। अरुसरागचारित्रतेंइंद्रधरणेंद्र
चक्रवर्तीकीविभूतरूपबंधहीहोइहै जातेंकषायअंसकरिआत्माकेगुनकाघातकहै। आपबंधरूपहै। ताते
ज्ञानीकेंसरागचारित्रहेइहैवीतरागचारित्रउपादेयहै। आगेंनिश्चयचारित्रकास्वरूपकहिएहे ॥गाथा
चारित्तंखलुधम्मोधम्मो। जोसोसमोत्तिणिदिट्ठो। मोहक्खोहविहीणो। परिणामोअप्पणोधसमो ॥७॥चा
रित्रंखलुधर्म्मोधर्म्मोयस्तसाम्यमितिनिर्दिष्टं। मोहक्षोभविहीनः परिणामः आत्मनोयसाम्यं ॥टीका॥
खलुचारित्रंधर्म्मः खलुनिश्चयकरिआपविषैंआपनेस्वरूपकाजुआचरनसोचारित्रकहिये। सोचारित्र
धर्मकहिये। जोअपनेस्वरूपकाआचरणसोवस्तुकास्वभावहै। जुस्वभावहेसोधर्महै। तातेंअपनेस्वरू
पकेधारणातेंचारित्रकानामधर्म्मकहिए। यःधर्म्मस्तत्साम्यंइतिनिर्दिष्टं। जुधर्महेसोईसाम्यहै। यहक

प्र॰सा
५

यनश्रीवीतरागदेवनैंदियापाहै॥ साम्यकहाकहियेमोहक्षोभविहीनः मोहक्षोभउद्वेगताइनकरिविही
नरहित॥ पः आत्मनः परिनामः जोआत्माकापरिनामसोसाम्य॥ साम्यभावकहिए॥ तातैयहबातसिधभई
वीतरागचारित्रवस्तुकास्वभावहै॥ वीतरागचारित्रनिश्चयचारित्रधर्मसाम्यभाव॥ एसबएकार्थवाची
जाननै॥ मोहकर्मरहितनिर्विकारशुद्धआत्माकापरिनामथिरतारूपसुखमयसोचारित्रकास्वरूपहै॥ आगे
चारित्रअरुआत्माकीएकतादिखावैहै॥ गाथा॥ परिनमदिजेनदव्वंतक्कालंतम्मयत्तिपण्णत्तंतम्हाधम्मपरि
णदो॥ आदाधम्मोमुणेयव्वो॥ छा॰ परिनमतियेनद्रव्यंतत्कालेतन्मयमितिप्रज्ञप्तं॥ तस्माधर्मपरिनतआ
त्माधर्मोज्ञातव्य॥ टीका॥ येनद्रव्यंपरिनमिति॥ जिसकालजिसस्वभावकरिद्रव्यपरिनवैतकालेतिसका
लतन्मयं॥ तिसस्वभावमईद्रव्यहोइहै॥ इतिप्रज्ञप्तंश्रीसाभगवंतदेवनैकह्याहै॥ जैसेलोहकागोलाअग्नि
मैडाल्याहुवाउष्णरूपहोइपरिनवैहै॥ उष्णतासौंतन्मयहोइहै तैसेयहआत्माजिसकालविषैसुभअसु
भसुद्धतैंसभावहूपरिणावैहै॥ तिसकालतिनतैंसभावनिसौंतन्मयहोइजाइहै॥ तस्माधर्मपरिनत॥ आ
त्मा॥ तातैंधर्मजोहै वीतरागचारित्रसमताभावतिसहिपरिणयायहआत्माधर्मोज्ञातव्य॥ धर्मजानना॥ ५

जबजैसेभावरूपपरिनवैयहआत्मातबतैसाहीहै॥ तातैवीतरागचारित्ररूपधर्मरूपपरिनयायहआत्मावीत
रागचारित्रधर्महीहोइरहै॥ तातैआत्माकैंअरुचारित्रकैंएकताहै॥ आत्माकौचारित्रऐसाकहि२०॥ आ
गैसुभअसुभसुद्धऐसीतीनभावनिकीटीकताकरैहै॥ गाथा॥ जीवोपरिनमतिजदा॥ सुहेनअसुहेनवासुहे
असुहोसुहेनतदासुद्धो॥ हवदिहुपरिनामसब्भावो॥९॥ जीवःपरिनमतियदासुभेनावसुभेनअसुभेनवासु
भभावनिकरि॥ अथवाअसुभभावनिकरिपरिनमतिपरनवैहै॥ तदासुभअसुभःभवति॥ तबयहजीवसुभ
असुभहोइहै॥ जबइहजीवदानपूजाव्रतादिभावरूपसुभभावनिपरिनवैहै॥ तबतिनिभावनिसौंतन्मयहो
इसुभहोयहै॥ जबविषयकषायअव्रतादिरूपअसुभभावनिपरिनवैहै॥ तबतन्मयहोइअसुभहोइहै॥ कै
साहैयहजीव॥ परिनामस्वभावः परिनामहीहैसुभावजाकैं॥ जबजैसेपरिनामनिपरिनवै॥ तबतैसाहीहो
इजाइहै जैसेफटिक॥ जोकालेफूलकासंजोगपावै॥ तौकालाहीहोइ॥ जोलालफूलकासंजोगपावैतौला
लहीहोइ॥ जातैफटिककैपरिनामनस्वभावहै॥ तैसाहीजीवहै॥ सुद्धेनतदासुद्धोभवति॥ जबयहजीवआत्मीक
वीतरागसुद्धभावनिपरिनवैतबसुद्धहोइहै॥ जैसेफटिकमनिफूलसंजोगरहितअपनैसुद्धभावनिपरिन

प्र.सा
५

वै है। इस भांति आत्मा के एतीनि भाव जानने॥ आगे वस्तु का सुभाव है। परिनाम वस्तु तें अभेद है ऐसा कह
है है॥ गाथा॥ णत्थि विणा परिणामं अत्थो अत्थं विणेह परिणामो॥ दव्वगुणपज्जयत्थो॥ अत्थो अत्थित्त
णिव्वत्तो॥ १०॥ नास्ति विना परिनामं अर्थो ऽर्थं विनेह परिनामः द्रव्यगुनपर्ययस्थो ऽस्तित्वनिर्वृत्तः॥ टीका॥ प
रिनाम विना अर्थः॥ नास्ति परिनाम विना अर्थ जु है द्रव्य सो नास्ति नांही है॥ ऐसे ना होय कि काहू का द्र
व्य परिनाम विना होइ है॥ जातें परिनाम द्रव्य॥ गुन है के सींग समान है॥ जैसें गोरस के परिनाम दूध दही घृ
त तक्र इत्यादि अनेक है॥ इनि अपने परिनामनि विना गोरस जुदा पाइए जहां परिनाम नांही त
हां गोरस की सत्ता नांही॥ तैसें ही परिनाम विना द्रव्य की सत्ता नांही॥ तातें कोई जानेंगा कि द्रव्य विना परिना
म होता होइगा सो यौं भी नांही॥ अर्थ विना परिनाम नांही॥ अर्थ जु है द्रव्य तिस विना परिनाम न होइ क
हे तें जातें परिनाम का आधार द्रव्य है॥ जो द्रव्य ही न होइ तौ परिनाम किसके आधार होइ॥ जो गोरस न होइ
तौ दूध दही घृत तक्र इत्यादि पर्याय कहां तें होइ॥ तैसें द्रव्य विना परिनाम अपने अस्ति॥ ता कौं पावै वै
सा है परार्थ अपने अस्तित्व निर्वृत्तः॥ अपने अस्तित्व करि निर्वृत्त सिद्ध होइ है॥ भावार्थ॥ जहां द्रव्य गुन २

पर्यायइनितीनोंकाएकताहोयतहांद्रव्यकाअस्तित्वहै॥ जोइनिमेंएकभीकमीहोइतोपदार्थनहोइ॥ जैसे
सुवर्णद्रव्यहै॥ अरुवामैंपीततादिगुनहै॥ अरुकुंडलादिपर्यायहै॥ इनामैंएककमोहोइहैतोसोनेकाअभाव
होयहैतैसेंपदार्थविषैपरस्वरूपजांननां॥ तातैंपरिनामद्रव्यकापर्यायहै॥ इसविनाद्रव्यकाअभावहोइहै
यहवातसिधहुई॥ इननाविशेषजहांजैसाद्रव्यहै॥ ताकैंतैसेगुणपर्यायजांननें॥ जोसुद्धआत्माहै॥ ताकेतैसेही
सुद्धद्रव्यगुनपर्यायहै॥ असुधकेंअसुद्धजाननें॥ जहांआत्मासुभअसुभपरिनामनिपरिनवैहै॥ तवतैसाही
है यातेंपरिनामद्रव्यकास्वभावहै॥ आगेसुभपरिनामअरुअसुद्धपरिनामएदोऊंचारित्रहैइनकेफलकहै
है॥ गाथा॥ धम्मेणपरिणदप्पा॥ अप्पाजदिसुद्धसंपयउगजुदो॥ पावदिनिव्वाणसुहं॥ सुहोवजुत्तोवसग्ग
सुहं॥ ११॥ धम्मेणपरिणतात्मायदिसुद्धसंप्रयोगयुक्तःसुद्धोपयोगसंयुक्तःहोयहै॥ तदानिर्वाणसुखंप्रा
प्नोति॥ तवमोक्षसुखकौंपावैहै॥ वाअथवायहआत्मासुभोपयोगभावनिपरिनवैहै॥ तवस्वर्गसुखसुख
कौंपावैहै॥ कैसाहैयहआत्माधर्मेंनपरिनतात्मा॥ धर्मसौंपरिनयाहै॥ स्वरूपनिसका॥ भावार्थ॥ वीतरा
गसरागभावनिकरिधर्मदोयप्रकारहै॥ जवयहआत्मावीतरागआत्मीकधर्मसौंपरिनयाहुवासुद्धो

॥प्र०॥ पयोगभावपरिणमैहै॥तबकर्मनिकरिवहआत्माकीशक्तिरोकीजातीनाहीं।अपनेकार्यकरिनकौसमर्थहोइ
॥६॥ है॥तातेअनंतअतींद्रिआत्मीकमोक्षसुखकैस्वभावहीनैपावैहै॥अरुजबआत्मादानपूजाव्रतसंजमादिरू
पसरागभावपरिणतिपरिनयाहवा॥सुभोपयोगपरनतिकौधारैहै॥तबइसकीशक्तिकर्मनिकरिरोकीजायहै॥सो
क्षरूपकार्यकरनकौअसमर्थहै॥तातेकर्मबंधरूपस्वर्गनिकेसुखहियावैहै॥यद्यपसुभोपयोगचारित्रकाअं
गहै॥तथापिआत्मीकसुखतैंविपरीतपणधीरतासंसारीकइंद्रियजनितसुखकाकारणहै॥काहेतैजातेइहइ
ग्रकुरवापगर्भितहै॥अरइंद्रियजनितसुखजुहैसोदुखहीहै॥कैसेजैसेकोउपुरषतृषाकरिसीचाहवा
दाहदुखकूपावैहै॥कदाहुवाजोवहपीउकरिसोंज्यातोकछुसांततानभई जैसेआगिकेजलतेंदुखहोइहै
तैसाहीइसतैंहै॥तातेतत्रघनसमांनराइंद्रीयजनितसुखजाननां॥भावार्थ यहजुसुभोपयोगसंसारकौदे
है॥तातेंहेयहै॥सुधोपयोगयोगआत्मीकसुखदेहैतातेउपादेयहै॥आगेअन्यतहींहेयचारित्रघातककु
है अमुसुभोपयोगनिसकाफलकहैहै॥गाथा॥असुहोदएणआदा॥कुणरोतिरियोभवियणेरइयो॥दुखस ६
हस्सेंहिसदा॥अभिदुदोभमदिअच्चंतं॥१२॥असुभोदयेनात्माकुनरस्तिर्यग्भूत्वानैरयिकः दुःखसहस्रैः सदा

अभिदुतोभ्रमत्यत्यंतं ॥ टीका ॥ असुभोदएन आत्मा अत्यंतभ्रमति । असुभोदयेन कहतां । अव्रतविषयक
षायरूप । असुभोपयोगनिकरिपरिणया आत्माकहतां एहवाहींनुंषसंसारीजीव अनंतकहतांबहुतकालभ्र
मतिकहतांसंसारविषैभ्रमैहै । केसाहवाभ्रमैहै कुनरतिर्यक्नैरयिकः भूत्वा दुःखसहस्रैः सदाअभिद्रुत । कु
नरकहतांदुखीदरिद्रीखोटेमनुष्य । तिर्यक्कहतांतिर्यंचनैरयिकः कहतांनारकीव भूत्वाकहतां होइकरिदुख
सहस्रैःकहतांदुखनिकेअगनितभेदनकरिसदाकहतां सदाकाल अभिद्रुतः कहतांपीडततहवासंसारमैभ्र
मैहै ॥ भावार्थः ॥ सुभोपयोगविसहोएकव्यवहारनयकेअंगकरिधर्मकाअंगहै । परिएहअसुभोपयो
गधर्मकाअंगकिसहीप्रकारनाही । तातेयहअत्यंतहेयहै । अहजेइसविषेलगेहै । तेकुत्सितमनुष्यति
र्यंचनारकीकहइनितीनगतिमेअनेकदुखनिकरिसंक्लेशहोताससदाभ्रमैहै ॥ आगेअत्यंतउपादेयसुद्धोपयो
गकाफलकहियेहै ॥ गाथा ॥ अइसयमादसमुत्थं । विसयातीदंअणोवममणंतं । अव्वुच्छिण्णंचसुहंसुद्धो
पयोगप्पसिद्धाणं ॥ १३ ॥ अतिशयमात्मसमुत्थं । विषयातीतमनौपम्यमनंतं । अव्युच्छिन्नंचसुखंसुद्धोपयो
गप्रसिद्धाणां ॥ टीका ॥ सुद्धोपयोगप्रसिद्धानांएतादृसंसुखं । सुद्धोपयोगकहिये । वीतरागपरमसाम

प्र॰ मायकुघातिआतिसकरिप्रसिद्धकहिए॥ सोभूनंउपनेतुहैअरिहंतअरुसिद्धतिनकैएताइस्यंकहिये॥ ऐसासुषं
७ कहिएसुषअबहै॥ कैसाहैसुषअतिशयं॥ अतिसयकहिएसबतैअधिकहैजातै॥ अनादिकालतैलेकरिवे
सासुष॥ फुनइंद्रादिककेसुषनिमैंभीअपूर्वआश्चर्यकारीपरमानंदरूपकबहूभयानाही॥ तातैबहुरिकैसा
हैआत्मसमुत्थं आत्मकहिएआपनैआत्मातैसमुत्पन्नकहिएउपज्यापराधीननाही॥ बहुरिकैसाहैविषया
तीतं॥ विषयकहिएपंचइंद्रियनिकेस्पर्शरसगंधवर्णशब्दरूपअर्थतिनकरिअतीतकहियेरहितहै॥ सेकल्प
विकल्परहितअतीन्द्रियहै॥ बहुरिकैसाहैअनोपम्यं कहिएउपमातैरहितहै॥ त्रैलोक्यविषैजिससुषकीवरा
बरिऔरसुषनाहीइसिसुषकीअपेक्षाऔरसुषदुषहीहै॥ बहुरिकैसाहैअनंतं॥ अणंतकहिएजेसकाअं
तविनासनाही॥ सदाकालनित्यहै॥ बहुरिकैसाहै॥ अवुछिन्नं॥ अवुछिन्नकहिएबाधारहितएकसानिरंत
रिप्रवर्तैहै॥ ऐसासुषशुद्धोपयोगकाफलहै॥ तातैयहिवातप्रसिद्धभई॥ शुद्धोपयोगसर्वथाउपादेयहै॥ सुभ
अशुभउपयोगहेयहै॥ इनदोऊविषैभीव्यवहारकरिकथंचितप्रकारशुभोपयोगउपादेयहै॥ अशुभोपयो ७
गसर्वथाहेयहै॥ आगैशुद्धोपयोगसंयुक्तजीवहैतिसकास्वरूपकहैहै॥ ॥गाथा॥ सुविदितपयत्थसुत्तो

संजमतवसंजुदोविगदरागोसमणोसमसुहदुखो ॥ भनिदोसुद्धोवउगोत्ति ॥१४॥ सुविदितपदार्थसूत्रसंयमतप
संयुक्तोविगतरागः श्रमणः समसुखदुःखोभनितः सुद्धोपयोगइति ॥ टीका ॥ एतादृशः श्रमनः सुद्धोपयोग।
इतिभाणितः एतादृशः कहिए ऐसेश्रमनः कहिए वीतरागदेवनेकहाहै ॥ कैसाहैसुविदितपदार्थसूत्र ॥ सु
विदितकहिए भलीभांतिजानेहैं ॥ पदार्थकहिए जीवादिकनवपदार्थ ॥ अरसूत्रकहिए इनिपदार्थनिकाक
हनवालासिद्धांतएदोन्योजानेहैं ॥ भावार्थ ॥ जिनिमुनिनेसूपरिभेभलीभांतिजान्याहै अरदयाहै ॥ अरु
निजस्वरूपआचरनकीयाहै ऐसाजानोहै ऐसाज्ञातोहैमुनि ॥ बहुरिकैसाहै ॥ संजमतपसंपुक्त संजमकहिए पं
चइंद्रियविषयमनोभिलाषषट्कायविराधनाइनतें आत्माकोनिवृत्तिकरिअपनेस्वरूपकाआचर
नतपकहिए ॥ बाह्यअरअभ्यंतरबारहप्रकारतपकेबलिकरिस्वरूपकीस्थिरताकेमध्य सतेज्ञानकाजुतप
नहैदैदीप्यमानहोना ॥ इनदोनोंकरिसंयुक्तकहिए संयुक्तहै ॥ बहुरिकैसाहैविगतरागतरागः विगतकहिए
हरहुहुवाहैरागकहिएपरद्रव्यविषैरमनभावजिसकै बहुरिकैसाहै समसुखदुःखं समकहिएबराबरहै
सुखअरदुःखजिसकै ॥ परमज्ञानकलाकेअवलंबनकरिइष्टअनिष्टरूपजुहै इंद्रियविषयतिनविषैहर

प्र॰ येविषयासनाहीकरैहै ॥ जोऐसापुरषहैसुसुद्धोपयोगीकहिए ॥ आगैसुधोपयोगलाभकेअनंतरहीसुद्धआ
८ त्मस्वभावकालाभहोइहैयहकहैहै ॥ गाथा ॥ उवओगविसुद्धोजो ॥ विगदावरणंतरायमोहरजो ॥ भूदोसय
मेवादा ॥ जादिपरंणेयभूदाणं ॥ १५ ॥ उपयोगविसुद्धोयोविगतावरनांतरायमोहरजो ॥ भूतःस्वयमेवात्मा
यातिपरंज्ञेयभूतानां ॥ टीका ॥ यः उपयोगविशुद्धसआत्माज्ञेयभूतानांपारंयाति ॥ यः कहियेजुआत्माउ
पयोगकरि कहियै ॥ सुद्धोपयोगतिसकरिविशुद्धः कहियेनिर्मलहुवाहैसआत्माकहिएसोजोसज्ञेयभूतकहि
ए ॥ सकलपदारथतिनकेपारकहिएअंतपातिप्राप्तहोइहै ॥ भावार्थ ॥ इसोजुसुद्धोपयोगीजीवहै
सोकालत्रयवर्तीसकलपदार्थज्ञायकऐसेकेवलज्ञानकोप्राप्तहोइहै ॥ कैसाहैतसोतऐसाहोइहै ॥ विग
तावरनांतराइमोहरजोस्वयमेवभूतः सनुविगतिकहिएदूरिभएहै ॥ आवरनकहिएज्ञानावरनदर्सनाव
रन ॥ अरुअंतराइअरुमोहकहिए ॥ मोहनाकर्मएईहुरजकहिएफलमलजिसतेऐसास्वयमेवकहि
एआपहीतेंभूतः ॥ संनकहिएहोतहोतसता पुनः भावार्थ जोसुधोपयोगीजीवहैसोगुनस्थारा ॥ गुना ८
स्थानविषेशुद्धहोताबारमेंगुनप्रस्थानकेअंतसमस्तचारिघातियाकर्मकानासकरिकेवलज्ञानकोपा

वेहै। आत्माकास्वभावज्ञानहै। ज्ञानज्ञेयप्रमांनहै। ज्ञेयकालत्रयवर्तीसकलपदार्थहै। तातैसुद्धोपयोगकाफल
केवलज्ञानप्रसुद्धआत्माकालाभजबहूवाआत्माकैहोइहै। तबषट्कारकरूपआपहीहोइस्वाधीनहोइ
है। औरपरकारककौनाहींचाहैहै॥ आगेंऐसाकहैहै॥ गाथा॥ तहसोलद्धसहावोसव्वण्हूसव्वलोगपदिमहिदो
भूदोसयमेवादा॥ हवदिसयंभुत्तिनिद्दिट्ठो॥ १६॥ तथासलब्धस्वभावः सर्वज्ञः सर्वलोकपतिमहितः भूतःस्व
यमेवात्माभवतिस्वयंभूरितिनिर्दिष्टः॥ टीका॥ तथासआत्मास्वयंभूरेवइतिनिर्दिष्टः तथाकहिएति
सहीप्रकारजैसैसुद्धोपयोगकेप्रसादतैंकेवलज्ञानादिगुननिकौ॥ जोआत्माप्राप्तहूवातिसहीभांतिसआ
त्माकहिएसोईआत्मास्वयंभूऐसैनामभवतिकहिएहोयहै॥ इतिकहिएऐसानिर्दिष्टकहिएदिखायाहै
भगवंतदेवनै॥ भावार्थ॥ जोआत्माकेवलज्ञानादिस्वाभाविकगुननिकौप्राप्तहूवाहोयातिसआत्माका
नामस्वयंभूकहिए॥ स्वयंभवतीतिस्वयंभू॥ स्वयंकहियेआपहीतैंऔरद्रव्यकेसहायबिनाहीभवतिकहिये-
आपणेस्वरूपहोइहै॥ तातैंइसकानामस्वयंभूकहिए॥ आत्माअपनेस्वरूपकीप्राप्तिअवस्थाविषैऔ
कारकनांहींचाहैहै॥ आपहीषट्कारकरूपहोइआपकौसाधैहै॥ जातैंआत्माविषैअनंतसक्तिहै। औ

प्र·सा ९ आत्मास्वयंभूहैसोहैकैसाहै॥लब्धस्वभावलब्धकहिएपायाहैघातियाकर्मकेनासतेंसभावकहिएअनंतज्ञान
दर्शनादिरूपआत्मीकपरिनामजानें॥वहुरिकैसाहैसर्वज्ञः सर्वकहियेत्रिकालगतज्ञेयपदार्थहैतिनकौज्ञायक
करतांजानैहै॥वहुरिकैसाहैसर्वलोकपतिमहितः सर्वलोककहिएतीनलोकतिनकेपतिकहिएइंद्रधरनेंद्र
चक्रवर्त्यादिकतिनकरिमहितःकहिएपूज्यहै॥वहुरिकैसाहैस्वयंभूतः॥स्वयंकहिएआपहीतेंपरिसहाइ
विनांअपरोसुधोपयोगकेवलकरिअनादिअविद्याउत्पन्नानानाप्रकारबंधकाविध्वंसकरिभूतःकहि
एहुवाहै सकलसुरासुरपूज्यसर्वज्ञवीतरागत्रैलोक्यनाथसुद्धआत्मीकस्वयंभूपदकौप्राप्तहुवाहै॥आ
गैंआपहीविषैषट्कारकदिषावाहै॥ कर्त्ता॥१॥कर्म्म॥२॥करन॥३॥संप्रदान॥४॥अपादान॥५॥अधि
करन।६॥एषट्कारककेनामहै॥एषट्कारकदोयप्रकारहै॥एकव्यवहारहै॥एकनिश्चयहै॥जहांपरिकौ
निमित्तकारणकरिकार्यसिधिकीजे॥तहांव्यवहारषट्कारकहोइहै॥जहांआपहीआपविषैआपकौउपादा
नकारनकरिआत्मीककार्यकीसिधिकीजे॥तहांनिश्चयव्यवहारषट्कारकहोइहै॥जहांआपहीविषैआ
पकौउपादानकारनकरिआत्मीककार्यकीसिधिकीजे॥तहांनिश्चयषट्कारककहैंव्यवहारषट्कारक ९

उपचारतैं असद्भूत नय करि कै साधिये है। असत्य है। निश्चय षट्कारक आपविषै साधिए है सो सत्य है। जातैं को-
ई द्रव्य किसही द्रव्यकौं करता हरता नांही है। तातैं व्यवहार षट्कारक असत्य है। आपकौं आपइ करै है। तातैं निश्चय-
कारक सत्य है। जो स्वाधीन होइ करै सो कर्त्ता। जु कार्य कीजिए सो कर्म। जिस करि कीजियै सो करन। जु कर्म करि कै दीजि-
ए सो संप्रदान। एक अवस्थाकौं छांडि जिसतैं औररूप होइ सो अपादान। जिसकै आधार कर्म होइ सो अधि-
करन कहिए। सब व्यवहार निश्चय षट्कारक दृष्टांत करि कहिए है। व्यवहार करि जैसैं कुंभकार कर्त्ता है। घट कार्य कौं करै है।
तातैं कर्म घट है। दंड चक्र चीवरादिक करि घट कर्म साधिए है। तातैं दंड आदिक करन कहिए। जलादिककै
भरनैं निमित्त घट दीजिये है। तहां संप्रदान कारक है। मृत्पिंडादिक अवस्थाकौं त्याग घट अवस्थाकौं प्राप्त होय
है। तहां अपादान है। भूमिकै आधार घट कर्म कीजिये है। तहां अधिकरन है। ए व्यवहार कारक है तातैं कर्त्ता-
और है। कर्म्म और ही है। करन और द्रव्य है। और ही कौं दीजिये है। और ही तैं करिये है। और कै आधार हो-
इ है। तातैं ए व्यवहार है। निश्चय कारक आपही विषै है। जैसैं मृत्तिका कर्त्ता है। आपने घटपरिनाम कर्म कौं क-
रै है। आपही आप सौं घटपरिनाम कौं साधै है। आपही करन है। आपनै घटपरिनाम कौं करि आपही कौं

प्र॰सा
१०

सो पै है ॥ तातै आपही संप्रदान है आपनी पूर्व अवस्था कौं त्यागि ॥ आपनी घट अवस्था कौं करै है ॥ त
हां आपही अपादान है । आपही विषै अपने घट परिनाम कौं करै है ॥ तहां आपही अधिकरन है । एव
ह कारक निश्चय है ॥ जातै और कौ ईद्रव्य सहायपनों है ॥ तातै आपही विषै निश्चै कारक साधै है ॥ संसार दसा मैं
इह आत्मा जव सुद्धोपयोगभाव रूप परनवै है ॥ तव और की सहाय विनां आपनी ही अनंत सुद्ध चैतन्य
कौं आपही षट्कारक होइ केवलज्ञान कौं प्राप्त होइ है ॥ तहां तव पंच कहिए सुद्ध अनंतसक्ति ज्ञायक
स्वभाव कौं करै है स्वाधीन है ॥ यह आत्मा अपने सुद्ध ज्ञायक स्वभाव कौं करै है ॥ तहां कर्त्ता है ॥ जिस सुद्ध
ज्ञायक स्वभाव कौं करै है । सुद्ध स्वभाव इस आत्मा का कर्म है ॥ सुद्ध कर्म आप ही है ॥ तातै सुद्ध अनंतसक्ति ज्ञा
यक स्वभाव करि आप कौं प्राप्त होइ है ॥ तहां यह आत्मा कर्म है ॥ यह आत्मा अपने सुद्ध आत्मी
क परिनाम करि स्वरूप कौं साधै है ॥ तहां अपने ही अनंत ज्ञान करि करण कारक होइ है । यह आत्मा
अपने सुद्ध परिनाम कौं करि आपही कौं देहै । तहां सुद्ध अनंतसक्ति ज्ञायक स्वभाव कर्म करि आप १०
ही कौं अंगीकार करना सम्प्रदान कारक होय है ॥ यह आत्मा जव सुद्ध स्वरूप कौं प्राप्त होइ रहै है ॥ त

वहसआत्माकैसंसारीकअसुद्धक्षयोपसमिकज्ञाननासकैंप्राप्तहोइहै॥तहांअपनेसहजज्ञानस्वभाव
करिथिरताकौंअवलंवैहै॥तहांयहआत्माअपादानकारककौंधारिहोइहै॥यहआत्माअपनेसुद्धअनंत
शक्तिज्ञायकस्वभावकाआधारहै॥तहांअधिकरनकारककौंअंगीकारकरैहै॥ऐसैयहआत्माआपहीषट
कारकरूपहोइअपनेसुद्धस्वरूपकौंउपजावैहै॥स्वयंभूपदकौंपावैहै॥अथवाअनादिवहद्दढतरघातिया
कर्मनिकौंनासिआपहीप्रगटहूवाहै॥सहायविनातिसतैंभीस्वयंभूकहियै॥इहांकोईप्रस्नकरैहै॥कैपरस
हायतैंस्वरूपकीप्राप्तिक्यौंनहोइ।तिसकाउत्तरः।जोइहआत्मापराधीनहोइतौआकुलतासंयुक्तहोइ
तहांआकुलताहैतहांस्वरूपकीप्राप्तिनाहीं॥तातैंआत्मापरसहाइविनांनिराकुलहै।तहांआपनीहीसहा
इआपकौंपावैहै॥यातैंनिश्चयनयकरिआपषट्कारकहै।आपनीअनंतसातिसंपदाकरिसंपूर्णहै॥तातैं
परकौंकाहेकौंचाहै॥आगैस्वयंभूप्रभुकेसुद्धस्वभावकौंनिश्चलदिखावैहै॥अरुकिसहीएकप्रकारकरिउत्पादव्य
यहीअवस्थादिखावैहै॥गाथा॥भंगविहूणोयभवोसंभवपरिवज्जिदोविणासोहिविज्जदितस्सेवपुणो॥ठि
दिसंभवणाससमवाओ॥१७॥भंगविहीनश्चभवःसंभवपरिवर्जितोविनासोहिविद्यते॥तस्यैवपुनः॥स्थितिसं

प्र॰ भवनाससमय॥ टीका॥ तस्य आत्मनः भंगविहीनः भवः विद्यते॥ तस्य आत्मनः कहिए तिस ही आत्मा के
११ नो आत्मा सुद्धोपयोग के प्रसाद तैं स्वरूप कौं प्राप्त हूवा तिस आत्मा कैं भंग कहिए नास तिस करि विही
न कहिये रहित भवः कहिए उत्पाद विद्यते कहिए प्रवर्त्तै है॥ जु इसि आत्मा के सुद्ध स्वभाव का उत्पाद हूवा
तिस का फेरि विनास नाहीं। ऐसा इसि प्रभु कै उत्पाद है च पुनः॥ संभवपरिवर्जितेन॥ विनासः विद्यते॥ च पु
नः कहिए बहुरि॥ इसि आत्मा के संभव कहिए॥ उत्पाद तिस करि परिवर्जित कहिये रहित विनास कहिये व्य
य है॥ अनादि अविद्या उत्पन्न जु रस आत्मा कै अभाव असुद्ध परणति थी तिस का विनास है॥ ऐसा विना
स है जु फिरि इस का उत्पाद नाहीं॥ तातैं इह अर्थ सिद्ध हूवा जु इसि भगवान कै उत्पाद सो तो विनास तैं रहित
है॥ जो व्यय है सो उत्पाद रहित है॥ अरु अपरोग सिद्ध स्वरूप करि ध्रुव है॥ जो इहु आत्मा असुद्ध दशा विषै था
सो ई आत्मा सुद्ध दसा विषैं स्यात् ध्रुव है॥ अरु अपनें सिद्ध स्वरूप॥ तस्यैव पुनः स्थितिसंभवनाशसमवायः
विद्यते॥ तस्यैव कहिए तिस ही आत्मा कै पुनः कहिये बहुरि स्थिति कहिए ध्रुव संभव कहिये उत्पाद ना ११
श कहिये व्यय॥ इनि तीनि हूं का समवाय कहिये मिलाप विद्यते॥ कहिये एक ही समय मैं प्रवर्त्तै है॥ या

नैयहप्रभुएकहीसमयविषैउत्पादव्ययध्रौव्यरूपहोइपरिणवैहै॥ जाहीसमैसुद्धपर्यायकाउत्पादहै॥ ताहीसमैअ
सुद्धपर्यायकानासहै॥ ताहीसमयद्रव्यत्वकरिध्रुवहै॥ ऐसेंएकहीसमयमांतीनोंही॥ तिसयेयहवार्तासिद्धभई॥ द्रव्या
र्थिकनयकरिउत्पादव्ययध्रौव्यसेयुक्तहै॥ आगेयहकहियेहैकेउत्पादादिकद्रव्यकास्वरूपहैतिसतैंआत्मा
विषैभीअवश्यहैसर्वद्रव्यनिविषैहै॥ गाथा॥ उप्पादोयविनासोविज्जदिसव्वस्सअट्ठजादस्स॥ पज्जाएणदुके
णवि॥ अट्ठोखलुहोदिसब्भूदो॥१०॥ उत्पादविनाशौविद्येतेसर्वस्यार्थजातस्य॥ पर्यायेणतुकेनाप्यर्थःख
लुभवतिसद्भूतः॥ टीका॥ केनापिपर्यायेणतुसर्वस्यअर्थजातस्यउत्पादः॥ अविनासः विद्यते॥ केनापिक
हिएकिसहीएकपर्यायेणतुकहिएपर्यायकरिसर्वस्यकहियेसमस्तहीअर्थजातस्यकहियेपदार्थनि
कासमूहद्रव्यतिसकेउत्पादकहियेउत्पन्निचशब्दनः॥ चहुरिविनासकहिएव्ययविद्यतेकहियेप्रवर्त्तै
है॥ भावार्थ॥ जेइहिलोकविषैसर्वपदार्थहै॥ तेसवस्वभावपर्यायकरि॥ अथवाविभावपर्यायकरि
अर्थपर्यायकरिअथवाव्यंजनकरि॥ किसहीएकपर्यायकरिउत्पादव्ययध्रौव्यसेयुक्तहै॥ खलुअर्थ
सद्भूतः॥ भवति॥ खलुकहियैनिश्चयसौं॥ अर्थकहियेपदार्थसद्भूतकहिएसत्तारूपभवतिकहिएहोइ

प्र॰ है ॥ भावार्थ ॥ पदार्थका जु अस्तित्व है सो स्वभाव है । सत्ता जु है सो उत्पादव्ययध्रौव्य स्वरूप है । उत्पादव्यय
१२ ध्रौव्य संयुक्त सत् ॥ ऐसा सिद्धांत विषै कह्या है । तातै पदार्थ उत्पादव्ययध्रौव्य करि अस्तित्वकौं धारै है । तातै
उत्पादादिक सर्व विषै है ॥ आत्मा विषै भी अवश्य है । जैसै सुवर्ण कुंडलपर्याय करि उपजै है । पूर्व कंकणप
र्याय करि विनसै है ॥ पीत स्निग्ध गुरु आदि गुननि करि ध्रुव है । तैसै सर्व द्रव्य उपजै है । विनसै है थिर रहै है
संसार दशा मै जीव देवादिक पर्याय करि उपजै है ॥ मनुष्य आदिक करि विनसै है । जीवत्व करि थिर रहै है ॥ मुक्त अ
वस्था विषै शुद्धता करि उपजै है ॥ अशुद्धता करि विनसै है । द्रव्यत्व करि ध्रुव है । अथवा आत्मा सकल पदार्थ
कौं जानै है ॥ ज्ञान ज्ञेयाकार होइ रहै है ॥ तातै सकल पदार्थ जैसै उत्पादव्ययध्रौव्यरूप होइ रहे हैं ॥ तैसै ज्ञान भी होइ र
है ॥ यहि ज्ञान की अपेक्षा भी आत्मा कै उत्पादव्ययध्रौव्य जानना । अरु अवर गुन हैं तिन ही की अपेक्षा
भी उत्पादादिक है आत्मा विषै और द्रव्यनि विषै भी सिद्धांत उक्त जैसै बणै तैसै साधि लेनै ॥ इहां कोई पू
छै है ॥ कि द्रव्य का अस्तित्व उत्पादव्यय ध्रुव इनि तीन करि क्यौं कहा है केवल ध्रुव करि कहा ॥ द्रव्य का अस्तित्व एक ध्रुव ही १२
करि क्यौं न होता ॥ ताका उत्तर ॥ कै जो पदार्थ ध्रुव ही होता ॥ तो स्वरूपका सुवर्ण दुग्ध आदिक समस्त पदा

र्यप्रगमन जैसो के त्यो रहि जाते॥ घटादि कुंडलादि दधि आदिक भेद होते॥ एतो भेद देखिये है॥ ताते प
र्याय अवस्था विषे उपजिता विनसता देखिये है॥ ताते द्रव्य का सरूप उत्पादव्ययध्रौव्य है॥ अरु जो ए न मा
नीए तो संसार का विलोप होइ॥ ताते पर्याय करि उत्पादव्यय है द्रव्य करि ध्रुव सधै है॥ इनि तीनहू क
रि द्रव्य का अस्तित्व है॥ आगे यह कहै है॥ कि यह आत्मा सुद्धोपयोग के प्रभाव ते स्वयंभू हूवा इंद्रिय
नि विना ज्ञान अरु आनंद रस कौ किस भांति होइ॥ ऐसे संदेह कौ दूरि करै है॥ जे अज्ञानी जीव
ज्ञान आनंद इंद्रियजनित ही मानर हे है॥ तिन के प्रतिबोधारणामित्त स्वाभाविक ज्ञानानंद दिखाइए
है॥ गाथा॥ पक्कीणघादिकम्मो॥ अणंतवरवीरिउ अधिकतेजो॥ जादो अदिंदिउ सो॥ णाणं सोक्खं
च परिणमदि॥ १९॥ प्रक्षीणघातिकर्म्मो अनंतवरवीर्यो अधिकतेजाः॥ जातो अतींद्रियः सो ज्ञा
नं सौख्यं च परिणमते॥ टीका॥ स खल्वतींद्रियज्ञानः सः कहिए सोई स्वयंभू भगवान अतींद्रिय कहिए
इंद्रियज्ञान रहित जातः कहिये हूवा॥ कैसा है भगवान प्रक्षीणघातिकर्म्मा प्रक्षीण कहिये दूरि
हुए है सर्वथा प्रकार घातिया कर्म जिस तै॥ जब तांई घातिया कर्म संयुक्त था तब तांई क्षयोपश

प्र मिकज्ञानदर्सनसहितया॥ घातियाकर्मनिकेविनिष्टहुऐंअतींद्रियहुवाचहरिकैसाहैभगवा
१३ नअनंतवीर्य॥ अनंतकहिएमर्यादारहितहैवरकहिएउत्कृष्टवीर्यकहियेवलजिसकेअंतराय
केगयेअणंतबलसंयुक्तहै॥ वहहरिकैसाहैभगवानअधिकतेज॥ अधिककहियेअनंतहै॥ तेजक
हियेज्ञानदर्शनप्रकासजिसकेज्ञानावरणदर्सनावर्णकर्मगऐ॥ अणंतज्ञानअणंतदर्सन
भऐहै॥ समस्तमोहनीकर्मकेनासतेंस्थिरआत्मीकसुभावकौप्राप्तहुवासोईभगवानज्ञानसोर
यंवपरिनमते ज्ञानकहिएस्वपरप्रकासकआत्मीकअणंतज्ञानसोरवंकहिए॥ अनाकुल
आत्मीकसुष॥ इनदोऊस्वभावनिकौपरिणमतेकहिएपरनवैहै॥ भावार्थ॥ इसआत्माकास्वभ
वज्ञानआणंदहै॥ परिकेआधीननांही॥ तातेंनिरावरणदसाविषैइंद्रियविनाज्ञानसुषस्वभावै
परणवैहै॥ जैसैसूर्यकास्वभावप्रकासहै॥ मेघपटलकेआछादतेंहीनप्रकासहै॥ मेघपटलकेविन
सतेस्वाभावीकप्रकासहोरहैहै॥ तैसेहीइसआत्माकेइंद्रियआवरणगऐस्वाभाविकज्ञानसुषहोइ
है॥ जवतांईआत्माइंद्रियाधीनहैतवतांईसरीरसेवेधीसुषदुषवेदैहै॥ यहकेवलज्ञानीभगवान १३

अतींद्रियहै॥ तिसतैंइसकेशरीरसंबंधीसुषदुषनांहीं॥ यहआगैंकहैहै॥ गाथा॥ सोक्खंवापुणदुक्खंकेवलना
णिस्सणत्थिदेहगदं जम्हांअदिंदियत्तंजादंतम्हादुतंणेयं॥२०॥ सौख्यंवापुनःदुःखं।केवलज्ञानिनोनास्तिदे
हगतं॥ यस्मादतींद्रियत्वंजातंतस्मात्तुतत्ज्ञेयं॥ टीका॥ केवलज्ञानिनःदेहगतंसौख्यंवापुनःदुःखंनास्ति
केवलीकेंदेहगतंकहिएदेहतेंउपज्यासौख्यंकहिएभोजनादिसुषवापुनः अथवादुःखंकहियेक्षुधादि
कदुषनास्तिकहियेनांहींहै॥ यस्मात्अतींद्रियत्वंजातं॥ यस्मात्कहियेजिसवास्तैं॥ इसिकेवलीकैंअती
द्रियत्वंकहिए॥ इंद्रियरहितभावजातंकहिएप्रगटहुवातस्मात्तत्ज्ञेयं॥ तस्मात्तत्ज्ञेयं॥ तस्मात्कहि
एतिसवास्तैंतत्कहिएअतींद्रियज्ञानसुषज्ञेयंकहिएजानना॥ जैसेअग्निलोहपिंडकीसंगतिकेअ
भावतेंघणाहकीचोटकोंनांहीपावैहै॥ तैसेंयहआत्मालोहपिंडकीबराबरिजुहैइंद्रियतिनकेंअभाव
तेंसंसारीकसुषदुषकोंनांहींअनुभवैहै॥ जेकेईसंसयमतीकेवलीकैंकवलाहारमानैहैं॥ तिनकाणि
षेधकिया॥ इसगाथामैंआगैंकेवलीकेंअतींद्रियज्ञानतैंसर्वप्रत्यक्षहैयहकहैहै॥ गाथा॥ परिणाम
दस्सखलुणाणं॥ पच्चखासव्वदव्वपज्जाया॥ सोणेवतेविजाणादि॥ उग्गहपुव्वाहिंकिरियाहिं॥ २१॥ परिणमा

प्र

२५

णास्यखलुज्ञाणंप्रत्यक्षाः सर्वद्रव्यपर्यायाः सर्वतस्तान्विजानाति अवग्रहएवाभिः क्रियाभिः॥ टीका
ज्ञाणपरिणामः मानसकेवलिनः॥ यतः सर्वद्रव्यपर्यायाः प्रत्यक्षाभवंती ज्ञाणंकहियेकेवलज्ञाणतिस
हिपरिनमसमानस्यपरिनयाज्ञुहेकेवलेन॥ केवलीभगवानतिसकेखलुनिश्चयस्योसर्वद्रव्यपर्याया॥ स
मस्तद्रव्यअरूपिकाल्लगतिसमस्तपरियायपतेप्रत्यक्षासाक्षात्प्रगटप्रत्यक्षहे जैसेहाथविषेफटिक
मनिकाप्रकासअंतरिबाहिरतैप्रगटदीसे तैसेभगवानकोसर्वप्रत्यक्षहेतान्अवग्रहएवांभिः क्रिया
भिः नैवविजानाति॥ सहसोकेवलीभगवानतान्तिणिद्रव्यपर्यायनिको अवग्रहः एवांभिः क्रियाभिः
अवग्रहआदिलेजुहेक्रिया॥ अवग्रहईहा॥ अवाइधारनाइणाकरिनैवविजानातिनांहीजानता॥ जैसे
क्षायोपसमिकज्ञानवालेअवग्रहादिकक्रियाणाकरिजानेहे॥ तैसेकेवलीनांहीजाणेहै॥ जातेरसभग
वानसर्वआवरणविनासतेअखंडअणंतशक्तिप्रगटअनादिनिधनअसाधारणस्वयंभूतसाह
जीककेवलज्ञाणप्रगटहे॥ तातेएकहीसमयमेसमस्तद्रव्यक्षेत्रकालभावएकहीबारज्ञाणभूमि २५
काविषेप्रत्यक्षप्रतिभासेहे॥ आगेइनभगवानकेअतींद्रियज्ञाणकेपरणवतेकछुपरोक्षनांही

यहकहैहै ॥ गाथा ॥ णत्थिपरोक्खंकिंचिवी ॥ समंतसव्वक्खगुनसमिधस्स ॥ अखातीदस्ससदा ॥ सयमेवहिना
णजादस्स ॥ २२ ॥ नास्तिपरोक्षपरोक्षंकिंचित् अपिसमंतसर्वाक्षगुनसमृद्धस्य अक्षातीतस्यसदास्वयमेवहिज्ञा
नजातस्य ॥ टीका ॥ अस्यभगवतः परोक्षंकिंचित् अपिनास्ति ॥ अस्यभगवतः इसकेवलीभगवानकैं किंचि
त् अपिकछभीपरार्थपरोक्षनास्तियरोक्षनांहीहै ॥ एकहीकालसमस्तद्रव्यक्षेत्रकालभावकौप्रत्यक्षजा
नैहै ॥ तातैपरोक्षनाही ॥ सोभगवांनकैसाहै ॥ जाकैऐसाज्ञानहै ॥ अक्षातीतस्यअक्षजुहैइंद्रियतिनकरिअ
तीतस्यरहितहै ॥ इंद्रियजुहैतेसंसारीकज्ञानकौकारनभूतहै ॥ अस्यपरोक्षरूपमर्यादालियेपदार्थकौजानै
है तैऐसीइंद्रियभगवानकैनांही ॥ तातैसबजानैहै ॥ बहुरिभगवांनकैसाहै समंतसर्वाक्षगुणसमृधस्य समंत
कहियेसबआत्माकेप्रदेसनिविषैसर्वाक्षगुनकहैसमस्तइंद्रियानिकेजुहैगुणकरिसमृद्धसपरिपूर्नहै
स्पर्शरसगंधवर्णशब्दरूपजुहैपंचविषयतिनकेजानिवेकौएकएकइंद्रियविषैएकएकगुणहै ॥ औरइंद्रि
नै यऔरकेविषयकौनजांनै क्षयोपसमज्ञानकेअभावतैभगवानकैऐसागुणप्रगटहुवाहै ॥ जुसर्वांगहीस
बविषयनिकौजानैहै ॥ जेइंद्रियनकेगुनकेगुनथेतेअसंख्यातहीप्रदेसनविषैप्रगटहुएहै ॥ येरूपउज्ञान

कानाशभयाहै। वहरिभगवांनकैसाहै। स्वयमेवहिज्ञाणत्तानस्य। स्वयमेवकहिएआपहीतैंतिनिश्चयसोंज्ञा
प्र० २५ नकहिएकेवलज्ञांणतिसुकोंजातस्यप्राप्तहुवाहै। स्वपरकाप्रकासककअविनासीलोकालोक ज्ञाणतैरहितअ
तींद्रियऐसाज्ञांणभगवांनकैप्रगटहैतहांपरोक्षयनांकाहेका। आगैंआत्माकोंज्ञाणप्रमांणअरुज्ञान
कोंसर्वगतिकहेहैं। गाथा। आदाणाणपमाणं। णाणंणेयप्पमानमुद्दिठं। णेयं लोगालोगं तम्हाना
णंतुसव्वगयं। २३। आत्माज्ञांणप्रमानं ज्ञांणज्ञेयप्रमांणमुद्दिष्टं। ज्ञेयंलोकालोकंतस्माज्ज्ञाणसर्वगतं
। टीका। आत्माज्ञांणप्रमानं। आत्माजुहैजीवद्रव्यसोज्ञांणप्रमानंज्ञानकेप्रमांणहै। द्रव्यजुहैसुअप
नेगुणपर्यायकीवराबरिहोयहै। तिसतैंआत्मद्रव्यअपनेंज्ञांणगुणकीवराबरिहै। आत्माज्ञानतैंअ
धिकअरुकमीहोइनांही। परणामैंहैतातैंवराबरिहै जैसेसोनांअपनेंकंकनादिपर्यायपरिणसोंअरुपीत
तादिगुणसोंअधिकवाछानाहिपरिणमैहैं तैसैंजाननंांज्ञांणज्ञेयप्रमांनेउद्दिष्टं। ज्ञानकहिएकेवल
ज्ञांणसोज्ञेयप्रमानंकहियेज्ञेयकीवराबरिहोइहै। तैसैंज्ञांणसकलज्ञेयपदार्थकोंजांणतातांतेज्ञेयप्र
मांनहै। ज्ञेयकहाकहिएंलोकालोकेंज्ञेयजुहैसुलोकअरुअलोकहै। अतीतअनागतवर्तमांनअ २५

णंतपर्यायसमेतजुहेषटद्रव्यसोलोककहियै। इसलोककैतेबाहिरअकेलाआकाससोअलोककहियै॥ लो
कअरुअलोकइनदोनौंकौंज्ञेयकहियै॥ तस्मात्ज्ञानंतुसर्वगतं॥ तस्मातकहियैतिससे॥ ज्ञानकहियैकेवल
ज्ञानसोसर्वगतंकहियेसर्वविषैहै॥ जातैंकेवलज्ञानसबहीआवरणकैगएसतै॥ लोकालोककैविषैजेते
पदार्थहै। तिनिसबकेपारिजाइहै॥ निश्चलहोयसबकौंजानैहै॥ तातेज्ञानसर्वगतिकहिए॥ इसहीवास्तै
ज्ञानज्ञेयकीबराबरिजांनना॥ आगैंजेकुमतीआत्माकौंज्ञानप्रमांननांहींमानतेअधिककैरणमानै
है॥ तिनकौंयुक्तिकरिदूखैहै॥ गाथा॥ णाणप्पमाणमादा। णहवदिजस्सेहतस्ससोआदा॥ हीनोवाअ
धिगोवा। णाणादोहवदिधुवमेव। २४॥ हीणोजदिसोआदा॥ तणाणमचेदणंणजाणादि॥ अधिगोवा
णाणादो॥ णाणेणविणाकहंनादि॥ २५॥ ज्ञानप्रमाणआत्मानभवति यस्येहतस्यसआत्माहीनो
वाअधिकोवाज्ञानाद्भवतिध्रुवमेव। हीनोयदिसआत्मातत्ज्ञानमचेतनंनजानाति अधिकोवाज्ञा
नात्। ज्ञानेनविनाकथंजानाति॥ टीका॥ इहयअपज्ञानप्रमाणंआत्मानभवति। यहकहिएइसलो
कविषैयपकहियैजिसकुमतीकैमनविषैं॥ ज्ञानप्रमानकहियेज्ञानकीबराबरआत्माकहिए॥ जी

सद्भयगाभवतिकहिएनांहीहोइहै।जोविपरीतमतीआत्माकोज्ञानप्रमाणनाहीमानैहै।तस्यआत्म
ज्ञानात्हीनः वा अधिकवाद्भवेएवभवतितस्यकहिएँतिसकुमतीकैमतिविषैसआत्माकहिए।सो
जीवद्रव्यज्ञानात्कहिएआपनेज्ञानगुनतेहीनवाएवोछा अधिकवाकहिएकैवडा।एवंएवक
हिएनिश्चयस्यैभवतिकहिएहोयहै।जोआत्माकोज्ञानप्रमाननांहीमांनैहै।तिसकेमतिविषै
युक्तिप्रमाणतैआत्माज्ञानगुनतैअधिकाकैऊछाठहरयाहै।पदिसआत्माहीनाधिककहिएजोस:
आत्माकहिएसोजीवद्रव्यहीनकहिए।ज्ञानतैऊछाहोइततदातत्ज्ञानंअचेतनंनजानाति।तदाकहियेस
तौतत्ज्ञानंकहिएसोज्ञानअचेतनंकहिएंअचेतनहोतोसेतानजानातिकहिएकछुभीनांहीजानैहै
जोआत्माकोज्ञानतैऊछामानिएतोज्ञानगुणस्पर्शरसगंधवर्णकीसीनाई।अचेतनहोइजायकाहे
ते।जातेज्ञानगुणकाआश्रयआत्माहै।आत्माविनाज्ञानगुणकछूहोत्तानांही।जैसेउष्णगुनकाआ
श्रयअग्निहै।अग्निविनाउष्णगुणकछुकहूंहोत्तानांहीतिसतैजोज्ञानतैआत्माऊछाहोयतौआत्मातै १६
ज्ञानअधिकाहोइ।जोऐसैंहोइतौआत्माविनाभीज्ञानहुवा।काहेतेंजातैअधिकाहै।जोतौअधिक

हैतैंताहीतैंभिंन्नहै।जोआत्मातैंभिंन्नहैसोअचेतनहै।तातैंज्ञानभीअचेतनहूवा।जैसैंस्पर्सादिककछून
जाणैंतैसैंज्ञानभीकछूनजाणैं दूसरेदोषकेभयतैंज्ञानतैंऊंचाआत्मानाहींज्ञानप्रमांणहै।याज्ञानात्
अधिक।ज्ञानगुणविनाकथंजानातिवाकहियेजोआत्माकोंयोमानीयेंकिज्ञानातकहियेहै।ज्ञानतैंअधि
कछूहिएवइहै।नोज्ञानगुणविनाकहियेज्ञानविनाकथंजानातिकहियेकैसेंजानें।जोआत्माज्ञानतैंअधि
कहोइतोघटपटादिपदार्थकीनांईअचेतनहोयजाय।कांहैतैंजातैंआत्माजुहैसुचेतनद्रव्यहै जेताआत्मा
अपनोचेतन्यतातैंअधिकहोयतेताअचेतनहोइ।सुअचेतनहोइसुकछूनजानें।जैसैंआगितोउष्णगुनतैं
अधिकहोइ।तोजेतीअधिकीहोइतेतीईंधनकोंनजलाइसकैकाहेतैं जातैंउष्णहीगुनकरिजलावेहै।तैसैं
आत्माजुजाणैहैसोज्ञानहीगुनकरिजानैं।तातैंइसदोषकेभयतैंतोआत्माज्ञानतैंअधिकनांहीं।ज्ञानही
प्रमांणमानना।तातैंयहसिद्धांतसिद्धवा।आत्माज्ञानतैंअधिकऊंचानांहीं॥आगैंजैसैंज्ञानसर्वगतहैति
महीन्यायआत्माभीसर्वगतहोइहैऐसाकहैहै॥गाथा॥सव्वगदोजिणवसहो।सव्वेविपतगयाजगदिअट्ठा
णाणमयादोयजिणोविसयादोतस्सतेभणिदा॥२६॥ सर्वगतोजिनवृषभः सर्वेपिचतद्गता।जगत्यर्थज्ञा।

प्र २

णामयत्वाद्धि जिणोविषयत्वात्तस्य ते भणिता ॥ टीका ॥ जिनवृषभः सर्वगतः जिण कहिये गणधरादिक
तिनविषे वृषभ कहिये प्रधान ॥ सर्वज्ञ भगवान सो सर्वगत कहिये ॥ सब लोकालोकविषे प्राप्त हुवा है क
स्मात् जिनः सर्वगतः ॥ काहे तै भगवान सर्वगत है ॥ ज्ञानमयत्वात् ज्ञानमयत्व कहिये ॥ ज्ञानमय स्वरूप है ति
सतै अतीत अनागत वर्त्तमान संयुक्त है ॥ समस्त ज्ञेय के आकार तिनकौं जाननां ता सेती ज्ञान सर्वगत है
तिस ज्ञानमई भगवान है ॥ तिसतै भगवान भी सर्वगत कहिये च पुनः जगति सर्वोपि अर्थाः तद्गताः च पुन
कहिये बहुरि जगतः कहिये ॥ इस लोक के विषे सर्वेपि कहिये समस्त ही है अर्थ कहिये पदार्थ ते तद्गता ॥ कहिये
तिस भगवान के विषे प्राप्त हुए है ॥ जैसे आरसी विषे घटपटादि पदार्थ प्रतिभासै है तैसे भगवान विषे स
कल पदार्थ कहिये ॥ तस्मात् तद्गताः ते भणिताः काहे तै तिस भगवान विषे प्राप्त हुए है ॥ ते पदार्थः तस्य वि
षयत्वात् ॥ तस्य कहिये तिस भगवान के विषयत्वात् कहिये विषय है जाणणे कौं जोग्य ज्ञेयरूप है ॥ तिसतै
निश्चय करि ज्ञान आत्मा प्रमाण है ॥ तातै निर्विकार निराकुल अनंत सुख आत्मा विषे आपवै है ज्ञा १७
न आत्मा का स्वाभाविक लक्षण है ॥ तिसतै आत्मा अपरोक्ष ज्ञान स्वरूप कौं छोड़ता नांही ॥ समस्त ज्ञेय

कारनिविषैंनांहीप्राप्तहोइहै। आपहीविषैतिष्टैहै। स्वरूपहीकेविषैहै यहआत्मासकलपदार्थकाजानन
हाराहै। तिसतैंविवहारनयकरिसर्वगतिकहिए। निश्चयकरिनांहींतैसैंहीनिश्चयकरिवेपदार्थइसआ
त्माविषैभीनांहीं कहैतै। जातैंकोईपदार्थअपरोस्वरूपकौंछोडतानांहीसमस्तनिमित्तभूतज्ञेयाका
रआत्माविषैप्रतिबिंबितहैं। तिसतैंउपचारनयकरिसकलपदार्थआत्माविषैकहिए। जैसैंनिश्चयकरि
आरसीविषैघटपटादिपदार्थनांहीप्रवेसकरैहैं। प्रतिबिंबकेनिमित्तभूतहैं। तिसविवहारकरिआरसीवी
षैकहिए। ऐसैंआत्माविषैज्ञेयपदार्थजाननैं। निश्चयकरिनांहीं॥ तिसतैंयहबातसिद्धभईनिश्चयकरि
आत्माज्ञेयनिविषैनांहीं। उपचारकरिआत्माज्ञेयनिविषैहै। वेआत्माविषैहैकाहेतैं। जातैंइनदोनोंकोज्ञेय
ज्ञायकसंबंधहैइनिचारहै। आगैंज्ञानआत्माएकहै। आत्माज्ञानभीहै। अरुसुखादिस्वरूपभीहै॥
ऐसैंभेदकहैंहैं। गाथा। णाणंअप्पत्तिमदं। वट्टदिणाणंविणाणअप्पाणं। तम्हाणाणंअप्पा। अ
प्पाणाणंचअण्णंवा। २७। ज्ञानमात्मेति। मतंवर्तते ज्ञानंविनानात्मानं। तस्मात्ज्ञानमात्माज्ञा
नंचान्यद्वा। टीका। ज्ञानंआत्माइतिमतंज्ञानंकहिए ज्ञानगुणसोआत्माकहिएजीवहै। इति

प्र·

१८

कहिएऐसामतिकहिएभगवानदेवनैकह्याहै॥ ज्ञाणअरुआत्माकैभेदनांही॥ काहेतैज्ञातैआत्मानैवि
नाज्ञानेनवर्त्तंते॥ आत्मानंविनाकहिएजीवद्रव्यविनाज्ञानकहिये॥ चेतनागुनवर्ततेनैकहिए॥ औरजागैनां
हीप्रवर्त्तैहै॥ एकआत्माकौछांडिऔरद्रव्यविषैज्ञाणगुननांही॥ तस्मातज्ञाणंआत्मा॥ तस्मात्कहिएज्ञा
तै॥ ज्ञाणकहिएचेतनागुनआत्माकहियेजीवहै॥ ज्ञानअरुआत्माकौआधारादिनिश्चयस्वाभाविकसं
बंधहै॥ आत्माकैअभावतैज्ञानकाअभाव॥ ज्ञानकैअभावतैआत्माकाअभावहोयजाइ जौरनका
ऐसासंबंधनहोइ॥ तातैज्ञाणआत्माकौएकताहै॥ चआत्माज्ञाणंवाअन्यत॥ चपुनःकहिएचहोर
आत्माकहिएजीवद्रव्यज्ञानकहिएचेतनागुनरूपहै॥ वाकहिएअथवाअन्यतकहिएऔरगुणरूपा
भीहै॥ औरद्रव्यविषैज्ञाणगुननांही॥ तातैजोज्ञाणसोआत्माऐसैतौअवश्यहै॥ आत्माजुहैसुहैसु
अनंतगुनात्मकहै॥ जैसैआत्मामैएकज्ञाणगुणहै॥ तैसैसुखवीर्यआदिकअनंतगुणहै तातैआ
त्माएकांतकरिज्ञाणहीहै॥ ऐसाणकहाजायजोयौकहियेकिआत्माज्ञाणहीहैतौऔरसुखवीर्या १८
दिगुणनिकाअभावहोय जोऔरगुननिकाअभावहोयतौआत्माकाअभावहोइजोआत्माका

अभाव होइ तौ ज्ञान गुण का भी नाश होइ ॥ तातै आत्मा ज्ञान गुण की अपेक्षा ज्ञानस्वरूप है ॥ और गुणनि की
अपेक्षा और स्वरूप है ॥ सुखरूप है वीर्यस्वरूप है ॥ तातै भगवंत का अनेकांत मत महा बलवंत है जो एकांत करि
ज्ञान गुण ही कौ आत्मा कहिए तौ ज्ञान गुण आत्मद्रव्य होय जाइ ॥ जो गुन ही द्रव्य होइ तौ गुन के अ
भाव तै द्रव्य का अभाव होय यहै ॥ और जौ सर्वथा आत्मा कौं ज्ञान ही कहिए तौ आत्मद्रव्य एक ज्ञान गुण
मात्र ही रहै ॥ और गुणां के अभाव तै आत्मा का अभाव होय ॥ तातै यह बात सिद्ध भई ज्ञान गुण तौ आत्मा
अवश्य है ॥ काहे तै ॥ जातै ज्ञान और द्रव्य विषै नाही ॥ आत्मा तु है ज्ञान गुण की अपेक्षा ज्ञान है ॥ और गु
न की अपेक्षा और गुन भी है ॥ जातै द्रव्य अनंत गुनात्मक है ॥ गुण समुदायो द्रव्य ॥ ऐसा सिद्धांत का वच
न है ॥ आगे ज्ञान ज्ञेय विषै नाही आवै है निश्चय करि ऐसा कहै है ॥ गाथा ॥ णाणी णाणसहावो ॥ अट्ठा
णेयप्पगा हि णाणिस्स ॥ रूवाणि व चक्खूणं णेवण्णोण्णेसु वट्टंति ॥ २८ ॥ ज्ञानी ज्ञानस्वभावोऽर्था ॥ ज्ञे
यात्मका हि ज्ञानिनः ॥ रूपाणीव चक्षुषोर्नैवान्योन्येषु वर्तन्ते ॥ टीका ॥ ज्ञानी ज्ञानस्वभावः ज्ञानी कहि
ए आत्मा सो ज्ञानस्वभावः कहिए ज्ञान ही है स्वभाव जिसका ऐसा है ॥ आत्मा ज्ञानस्वरूप है ॥ ज्ञेयरू

प्र
१९ रूपनांही ॥ हि अर्थाः ज्ञेयात्माकारित्कहियैनिश्चयप्सो ॥ अर्थाकहियेपदार्थ ज्ञेयात्माकारिकहियेज्ञे
यस्वरूपहै ॥ जेपदार्थहैतेज्ञेयहै ॥ आकाराःस्वरूपनांही ॥ ऐसीवस्तुकीमर्यादाहै तेज्ञानिनः अन्योन्येषु
नैववर्तंते ॥ तेकहिएवेपदार्थ ज्ञानिनः कहियेआत्माके ॥ अन्योन्येषुकहिएपरस्परमिलिकरि ए
कअवस्थाविषैनैववर्तंतेकहिएनाहीप्रवर्तेहै ॥ यद्यपिआत्माअरुपदार्थनिकोज्ञेयज्ञायकसंबं
धहै ॥ तथापिअपनेस्वरूपकौंछोडिकरिएकरूपनाहीहोइजाइहै ॥ ज्ञेयज्ञेयहै ज्ञायकज्ञायकहै ॥ किसं
कीनाई ॥ चक्षुर्वारूपाणिइव चक्षुषाकहिएनेत्रनिकेरूपाणिकहियेरूपीपदार्थ ॥ इवकहियेजैसेए
करूपहुवैनाहीप्रवर्तेहै जैसेनेत्ररूपीपदार्थविषैविनाहीप्रवेसकियेउनकेस्वरूपकेग्रहनेकौंसमर्थ
है ॥ औरवेरूपीपदार्थनेत्रनिविषैविनाहीप्रवेसकिये अपनेस्वरूपसौंप्रवेसकौंनेत्रनिकौंजानाइवे
कौंसमर्थहै तैसेआत्मासकलपदार्थनिविषैविनाहीप्रवेसकिये ॥ सबकौंजानैहै ॥ औरवेसकलपदा १९
र्थआत्माविषैप्रवेसकियेविनाहीअपणेस्वरूपकौंजनावैहै ॥ तातेआत्माउननिविषैजायहै ॥ तावेआ
त्माविषैआवैहै ॥ नेत्ररूपीद्रव्यकीसीनाईइंद्रीनकैज्ञेयज्ञायकसंबंधहै ॥ तातेआत्माउपचारकरिसर्वग

तिहै॥ कैंआत्माविषैंहै ऐसाकथनहै॥ यद्यपिनिश्चयकरिपदार्थनिविषैंआत्माप्रवेशनांहीकरैहै तथापि
विवहारकरिपैठासाहै॥ ऐसीसक्तिकिंचिचित्रितादिखाईयेहै   णपविट्ठोणाविट्ठो॥ णाणीणाणेसु
सुरूवमिवचरक्कु॥ जाणदिपस्सदिणियदं॥ अरकातीदोजगमसेसं॥ २९॥ नप्रविष्टोनाविष्टोज्ञानीज्ञेयेषु
रूपमिवचक्षुः जानातिपश्यतिनियतमक्षातीतोजगदशेषं   ज्ञानीज्ञेयेषुप्रविष्टः नतानोकहियेए
आत्मासोज्ञेयेषुकहियेज्ञानगोचरजोग्यअन्यपदार्थतिनिविषैंप्रविष्टः नकहियेनिश्चयनयकरिपैठाना
हीहै॥ अ॰ वहैआत्मा अपिविष्टः॥ नकहियेअन्यज्ञेयपदार्थनिविषैंनाहीपैठासर्वथाऐसेंभीनाहीं॥ व्य
वहारकरिपैठासाभीहै॥ कैसाहैआत्मा अक्षातीतः॥ अक्षकहियेइंद्रियतिनकरिअतीतकहियेरहित
है अगातअतींद्रीयज्ञानसंयुक्तहै॥ ऐसाछहै आत्मासोअशेषंजगतनियतंजानाति॥ पश्यति॥ अ
शेषकहियेसमस्तजगतकहियेषट्द्रव्यस्वरूपलोकालोकतिसहिनियतंकहियेनिश्चितज्योंकात्योंजा
नातिकहियेजानैहै॥ पश्यतिकहियेदेखैहै॥ यहआत्माज्ञेयपदार्थनिकौपरसतानाहीं॥ अपनेप्रदेस
निकरितथापउराणपदार्थनिकौ अपनेज्ञानविषैंअगोकारकरतासंताजानैहै॥ दिखैहैइसआत्मा

प्र. त्माविषैकोइकज्ञायकविचित्रसक्ति ऐसीहैतिसकरिसमस्तज्ञेयनिकेआकारजानौकिउपारव
२० णिनिगलिगयाहै॥ यद्यपिनिश्चयकरिपदार्थनिविषैप्रवेशनाहीकरैहै॥ तथापिज्ञायकशक्तिके
योगतैप्रवेसभीकहियै॥ किसिदृष्टांतकरिज्ञेयकौंआत्मादेखैजाणैहैचक्षुरूपद्रव्य॥ चक्षुक
हियेनेत्ररूपकहियेरूपीपदार्थतिसहि॥ दृष्टकहियेजैसेंदेखैजानेहै॥ जैसेनेत्रअपणेप्रदेश
निकरिरूपीद्रव्यकौंपरसतानाहीं॥ अरुउसिविषैप्रवेशकरतानाहीदेखैजाणैहै॥ अरउप
चारकरिउणिविषैदृष्टिकहिएहै॥ ज्ञायकशक्तिकीविचित्रताकरितैसेंआत्माजानना आ
गैव्यवहारकरियहआत्माज्ञेयपदार्थनिविषैप्रवेसकरैहै इसदृष्टांतकरियहबतावैहै गुणकरैहै
गाथा॥ रयणमिह इंदनीलं दुद्धज्झसियं जहा सभासाए॥ अभिभूय तं पि दुद्धं॥ वट्टदि तह णाणमभ
ट्ठेसु॥ ३०॥ रत्नमिहेंद्रनीलं दुग्धाध्युषितं यथा स्वभासा अभिभूय तदपि दुग्धं वर्तते तथा ज्ञा
नमर्थेषु॥ टीका॥ इंद्रनीलरत्नंइहयथादुग्धाध्युषितंस्वभासातदपिदुग्धंअभिभूयवर्तते॥ य २०
हकहियेइसलोकविषै॥ इंद्रनीलरत्नकहियेप्रधाननीलमणि॥ यथाकहिजैसेंदुग्धाध्युषितं॥ का

हिए दूधविषैं डोल्या हुवा सुभासा कहियै ॥ अपनी नीलीदीप्तकरि तद्दपि दुग्धं कहियै सो रंजु है दूध
तिसहि अभिभूय: कहियै हरिकरिकैं प्रवर्त्तें है ॥ नीलवर्न करै है ॥ भावार्थ ॥ जैसे वडो दूध कर भर्या है
जो उसविषैं नीलारत्न डारियै ॥ तो समस्त ही दूध नीलवर्न दिखाई देइ ॥ उस नीलमणिका स्वभाव है
है ॥ अपनी आभा तिसकरि दूधकों नीलासा करै है यद्यपि निश्चयकरि नीलमणि आप ही विषैं है
तथापि उपचारकरि सब दूधविषैं व्यापी कहियैं प्रकासकी विचित्रताकरि ॥ तथा अर्थेषु ज्ञानं तथा क
हियै तिस ही भांति अर्थेषु कहियै ज्ञेयाज्ञेय पदार्थनिविषैं ॥ ज्ञानं कहियै केवलज्ञान प्रवर्त्तें है ॥ निश्चयक
रि ज्ञान आत्मा ही विषै है व्यवहारकर ज्ञेयविषै भी कहियै ॥ जैसे आरसी विषै घटपटादि पदार्थनिकै
प्रतिबिंब होय है ॥ उनि प्रतिबिंबनिकों घटपटादि पदार्थ कारण है ॥ तैसे ही ज्ञानरूप आरसी विषै ॥ स
मस्त ज्ञेयपदार्थनिके प्रतिबिंब है ॥ ज्ञेयपदार्थ इनि प्रतिबिंबनिकों कारण है ॥ जैसे आरसी अपनो
स्वच्छशक्तिकरि घटपटादि पदार्थके आकार होय है ॥ तैसे ही ज्ञान अपनी ज्ञायकशक्तिकरि ज्ञेयाकार
होय है ॥ तातैं ज्ञान जु हुवा है ज्ञेयके आकार तिस तैं उपचारकरि ज्ञान ज्ञेयपदार्थनिविषै कहियै है ॥

प्र. ज्ञेयविषैं ज्ञान है ॥ त्यौंही उपचारकरि ज्ञानविषैं पदार्थ है यह कथन करै हैं ॥गाथा॥ यदि ते ण सं
२९ ति अट्ठा ॥ णाणे णाणं ण होदि सव्वगयं ॥ सव्वगयं वा णाणं ॥ कहं ण णाणट्ठिया अट्ठा ॥ २९ ॥ यदि
ते न संत्यर्था ज्ञाने ज्ञानं न भवति ॥ सर्वगतं वा ज्ञानं कथं न ज्ञानस्थिता अर्था ॥टीका॥ यदि
ते अर्था ज्ञाने न संति ॥ यदि कहिये जो ॥ ते अर्थाः कहिये ते ज्ञेयपदार्थ ज्ञाने कहिये केवलज्ञा
नविषै न संति कहिये नांही प्रवर्ते है ॥ तदा सर्वगतं ज्ञानं न भवति ॥ तदा कहिये तौ सर्वगतं क
हिये सर्वज्ञेयपदार्थकै विषै प्राप्त हुवा ऐसा ज्ञानं कहिये केवलज्ञानं न भवति कहिये नांही
होइ है ॥ जो समस्त ज्ञेयपदार्थनिकौ आकार ज्ञानविषै आरसीविषै प्रतिबिंबकी सी नाई प्रतिभासै
तौ ज्ञान सर्वगत होय ॥ आरसीविषै घटपटादिपदार्थ तौ नतव प्रतिभासै है ॥ जो आरसी अपनी
स्वच्छताकरि घटपटादिपदार्थनिकै आकार होइ है तैसैंही ज्ञान ज्ञेयनिकौं तब जानै है ॥ जब ज्ञेयनिकै
आकार होइ है ॥ तातै ज्ञान सर्वगत है वा सर्वगतं ज्ञानं वा कहिये जो सर्वगत कहिये सब विषै है २९
ज्ञानं कहिये केवलज्ञान तौ अर्था ॥ ज्ञानस्थिता कथं न अर्थाः ॥ कहिये पदार्थ ते ज्ञानस्थि

ता । कहियै ज्ञानविषै तिष्टै है॥ ऐसै कथंन कहियै कहा है तै न होहि अवस्य होहि॥ तौ ज्ञान सर्वगत है॥ तौ ज्ञान
विषै सकल पदार्थ क्यौं न होइ॥ व्यवहार करि अवस्य कहियै॥ अतीत अनागत वर्तमान ज्ञेय कै आकारनि कौ परं
पराय ज्ञान आरसी विषै सव प्रतिबिंवत है प्रतिबिंबित ज्ञेयाकारनि विषै सव जागै ज्ञान है॥ तातै उपचार करि
प्रतिबिंबित ज्ञेयाकारनि कौ कारनभूत जु है ज्ञेय पदार्थ तिनि विषै ज्ञान कहियै है॥ तैसै ही उपचार करि ज्ञान विषै
सकल ज्ञेय पदार्थ कहियै॥ यद्यपि उपचार करि आत्मा पदार्थनि कौ ज्ञेय ज्ञायक संबंध है॥ तथापि निश्चय क
रि पदार्थनि कै ग्रहन त्यजन रूप परिनमन कै अभाव तै अत्यंत ही जुदा दीखै है॥ आत्मा कै अग्रे गेयइ कहै है॥ गाथा
गिण्हदि णेव ण मुंचदि॥ ण परं परिनमदि केवली भगवं॥ पेच्छदि समंतदो सो जाणादि सव्वं निरवसेसं॥ ३२
गृह्णाति नैव न मुंचति॥ न पर परिनमति केवली भगवान्॥ पश्यति समंततः स जानाति सर्वं निर्विसेषं॥ टीका
केवली भगवान परं तैव न गृह्णाति न मुंचति॥ परिनमति केवली भगवान कहा है केवलज्ञानी सर्वज्ञदेव सो पर व
हियै ज्ञेयभूत परद्रव्यानि सहि॥ नैव कहा है सनाही निश्चय सौं गृह्णाति कहियै ग्रहै है॥ न मुंचति कहियै नाही छोडै है
न पर परिनमति कहियै नाही परिणवै है॥ जव यह आत्मा केवलज्ञान स्वरूप परनमै है॥ तव इस कै केवल ज्ञा

प्र णजोतिप्रगटैहै। जैसेंचोषारत्नअपणेंप्रकासकरिअडोलहोयरहैहै। तैसाथिरहोइरह्यौहै। परिज्ञेयपदार्थंनांग्र
२२ हैहै णाछोडैहै। णाउसरूपपरिनवैहै अपणेंसरूपकरिआपविषेंआपकौंवेदैहै अतींद्रियहै परिद्रव्यसोंस
र्वथाउदासीणतारूपकरैहै। जैसेंआरसीकीइछाविनांहीआरसीविषैंघटपटादिपदार्थप्रतिबिंबितहै
तिसिभगवानकेज्ञाणकीपलटनिनांही। काहेतेंजातेंएककहीसमयविषैंसबप्रतिबिंबितहै। तिसतैंज्ञेयप
दार्थकेग्रहनछोडनरूपक्रियानांही। पहलेंईसमयप्रतिबिंबीनज्ञेयाकारज्ञाणपरणयाहै। औरआकार
कौईभीरह्यानहीं। तिसतैंऔरआकारकेवलीकाज्ञाननांहीपरनमैहै। सबकेआकारहोयरह्याहै। सःसर्वं
निरविसेषंसमंततःपस्यतिजानाति। सःकहिएसोकेवलीभगवानसर्वंकहिएसमस्तानिरविसेषंकहियेबा
कीभीबाकीनांही। ऐसेंज्ञेयपदार्थतिसाहिसमंततःकहिए। सर्वांगहीपस्यतिकहियेदेषैहै। जानाति
कहिएजानैहै। अपनेंप्रदेशनकरिपरिकौंग्रहैहै। नछोडैहै। नतद्रूपहोइपरिनमैहै। सबकाग्यातादृष्टाहै
इछाविनांही। तातेंयहबातसिद्धभईहै। इहांकोईऐसाजाणैगकेकेवलज्ञाणहीकरिआत्माजानैहै
औरज्ञानकरिनांहींतिसकूंआसंकाकेदूरिकरिनेकेतांईकेवलज्ञानीअरुश्रुतकेवलीइनदोनोंके २२

वरणवरियावैहै आगली गाथामैं । गाथा । जोहिसुदेणविजाणदि अप्पाणंजाणगंसहावेणतंसुयकेवलि
मिसुणो । भणंतिलोगप्पदीवयरा । अ० । योहिश्रुतेनविजानात्यात्मानंज्ञायकस्वभावेन । तंश्रुतकेवलीनमृषयो
भणंतिलोकप्रदीपकरा । टीका । यः हिश्रुतेनआत्मानंविजानाति । यः कहियेजोपुरुषहिकहियेनिश्चयसों
श्रुतेनकहियेभावश्रुतज्ञानकरिआत्मानंकहियेअपनेनिजसरूपकौंविजानातिकहियेविसेषता-
करिजानैहै आत्माकैसाहैस्वभावेनज्ञायकं । स्वभावेनकहिये । अपनेहीसाहजरूपसुभावकरिज्ञायककहिये
सबकाज्ञाननहाराहै । ऋषयः तंश्रुतकेवलिनंभनिते । ऋषयः कहियेवीतरागदेव । तंकहियेतिससभावश्रु
तज्ञानीकैंश्रुतकेवली ऐसाभनंतिकहियेकहैहै । केसेहैवीतरागदेवलोकप्रदीपकराः । समस्तलोककेउ
द्योतकारेहै । जैसेकेवलज्ञानीएककालहीअनंतचैतन्यमात्रिसंयुक्त । केवलज्ञानकरिअनादिअनंतकार
नरहितअसाधारणस्वसंवेदनज्ञानमहिमासंयुक्त । केवलआत्माकौंआपविषैआपकरिवेदेहै । अरुके
वलीहै तैसैंहीयहसम्यग्दृष्टीभीक्रमसौएकक्रमवर्ती । चैतन्यशक्तिनिकरिसंयुक्तहैश्रुतज्ञानताकरिकेवल
आत्माकौंआपविषैआपकरिवेदेहै ताते यहश्रुतकेवलीकहीयैपरमस्वरूपवेदणोकीअपेक्षाकेवल

प्र लज्ञानी अरु श्रुतकेवली समांन है। भेद इतनो ही जु केवलज्ञानी संपूर्ण अनंत ज्ञान शक्ति वेदै है
२३ श्रुतकेवली केतीएक सक्ति करि वेदै है। अैसा जानिये सम्यग्दृष्टी है। निजस्वरूप को स्वसंवेदनज्ञान करि वे
दै है। आप विषै निश्चल होइ तिष्टै है। ज्ञानगुण है सो जाति करि एक है। मतिज्ञान आदि पंच ज्ञान के
जे भेद है। ते आवरन भेद तै है। जैसै सूर्य का प्रकास एक है। मेघपटल के आवरन तै प्रकास के भेद होय है
प्रकाशक सक्ति करि प्रकाश एक है। आवरन तै सामान्य विशेष का फरक है। ज्ञान भेद नाही। तैसै ही
मति श्रुत आदि भेद आवरन तै है। ज्ञान जाति करि ज्ञान एक है। जैसै कोई दिवस विषै सूर्य के
प्रकाश करि देषै है। तैसै केवलज्ञानी केवलज्ञान करि आपको देषै है। अरु जैसै कोई रात्रि विषै दीप
के प्रकास करि देषै है। तैसै संसार पर्यायरूप रात्रि विषै यह सम्यग्दृष्टी विवेकी भावश्रुतज्ञानरूप
दीप करि आपको देषै है इस प्रकार केवली श्रुतकेवली समांन है। आगे ज्ञान के श्रुत उपाधि
दूरि करै है। गाथा॥ सुत्तं जिणोवदिट्ठं पोग्गलदव्वप्पगेहिं वयणेहिं। तज्जाणणा हि णाणं॥ सुत्त २३
स्स य जाणणा भणिया॥ ३४॥ सूत्रं जिनोपदिष्टं पुद्गलद्रव्यात्मकैर्वचनैः। तत्ज्ञप्तिः॥ हि ज्ञानं सू

त्रस्यचजाणणाभणिता ॥ टीका ॥ पुद्गलद्रव्यात्मकैर्वचनैः पुद्गलद्रव्यस्वरूपजुहैवचनतिनकरिजिनोपदि
ष्टंकहियै ॥ जिनराजुहैभगवानवीतरागदेवसर्वज्ञतिनतैंउपदिष्टंकहियै ॥ उपदेस्याहैऐसोजोहैसोसूत्रद्रव्य
श्रुतहै ॥ भावार्थ ॥ यहजुद्रव्यश्रुतपुद्गलीकहै ॥ सोअनेकांतरूपभगवानकावचनहै ॥ हितत्ज्ञप्तिःज्ञानक
हियइनिश्चयस्यो ॥ तत्रकहियैतिसद्रव्यश्रुतज्ञानकाज्ञप्तिकहियै ॥ जाननासोज्ञानकहियैभावश्रुतज्ञान
है ॥ सूत्रस्यचज्ञप्तिः ॥ भणिता ॥ सूत्रस्यकहियैद्रव्यश्रुतकैभीज्ञप्तिःकहियैज्ञानभनिताकहियैकह्याहै
द्रव्यश्रुतकैजोजानैहै ॥ जाणनाकौतोज्ञाननिश्चयस्योकहियै ॥ अरुवचनात्मकपुद्गलीकजुहैद्रव्यसू
त्रताकौजुज्ञानकहियैहै ॥ सोव्यवहारकरिज्ञानकेउपजाइवेकौनिमित्तभूतहै ॥ तातैकारनकैविषैका
र्यकाउपचारकीजैहै ॥ द्रव्यसूत्रकौनिश्चयकरिज्ञानसंज्ञानाही ॥ जातैवचनजुपुद्गलीकहै ॥ ज्ञानकै
उपाधिनाही ॥ ज्ञानजोज्ञानमात्रहै ॥ श्रुतज्ञानऐसाजुकहियैहै ॥ सोकर्मकेसंयोगतैद्रव्यश्रुतकानि
मित्तपाइज्ञानउपजैहै ॥ तातैऐसाकहियैहै ॥ वस्तुस्वभावकैविचारतैज्ञाननहीतैउपजैहै ॥ इसहीवा
स्तैज्ञानकैकोईउपाधिनाही ॥ ज्ञानआत्माकास्वभावहै ॥ स्वपरप्रकाशकसक्तिसंयुक्तहै ॥ आत्माकै

प्र स्वरूपकौवेदैहै। कोईएकवादीज्ञानतैंआत्माकौंभिन्नमानैहै॥ तिनकेदूरिकरिवेकौंआत्माकर्त्ताहै
२५ ज्ञानकारणहै। ऐसाभिन्नभेददूरिकरैहैंआत्माज्ञानकौंअभेददिखावैहै॥ गाथा॥ जोजाणदिसोणाणं
णहवदिणाणेणजाणगोआदा। णाणंपरिणमदिसयं॥ अट्ठाणाणट्ठियासव्वे॥ ३५॥ यः जानातिसज्ञानं
भवति। ज्ञानेनज्ञायकआत्माज्ञानंपरिणमतेस्वयमर्थाज्ञानस्थिताःसर्वे। टीका॥ यः जानातिस
ज्ञानंयः कहियेजोआत्माजानातिकहियेजानैहै॥ सकहियेसोईआत्माज्ञानंकहियेज्ञानहै पृथ
क्व्यवहारकरिसेज्ञानलक्षनगुणोज्ञानादिभेदकरिज्ञाणऔरआत्माकौभेदकहियेहै वस्तुकेसमुझि
वेकेंनिमित्ततथापिनिश्चयसौंज्ञानअरुआत्माकैभिन्नप्रदेसपणोनांही॥ ऐसेंसनिकरिज्ञानुआत्मास
कहै तातैंज्ञानभावपरिणयाजुहैआत्मासोईज्ञानहै जैसैंअग्निजलायवेकौंक्रियाकाकर्त्ताहै उ
ष्णगुणजलावनेकौंक्रियाकासाधनहै॥ सोपृथक्व्यवहारकरिभेदहै॥ वस्तुतैंआत्माज्ञानजुदेनांही
जोईआत्मासोईज्ञान॥ तातैंआत्माकौंज्ञानऐसाभीकहिये॥ ज्ञानेनज्ञायकः आत्मानभवति २५
ज्ञानेनकहियेज्ञानगुनकरिज्ञायकः कहियेजाननहाराआत्माकहियेचेतनद्रव्यनः भवतिकहि

येनांहीहोइहै॥ जैसेकोईपुरुषलोहकेदांतेकरिघासकाटनहाराकहियेहै॥ तैसेयहआत्माज्ञानकरिजाननं
हारानांही॥ काहेतेंजातेंघासकाटनहारापुरुषभिन्नहै॥ जिसदांतेकरिकाटैहैसोभिन्नहै॥ इहांकर्त्ताअरुसा
धनकौप्रदेशभिन्नकरिजुदाईगोहै॥ ऐसैंआत्माअरुज्ञानकैजुदाईनांही॥ आत्माज्ञानकौंअभिन्नज्ञ
प्तिक्रियाकौंसाधैहै॥ जैसेअग्निअरुअगनकैएकताहै॥ तैसैंआत्माज्ञानकैएकताहै॥ जैसेदांतकाटन
क्रियासाधनहै॥ काटनहारापुरुषकर्त्ताभिन्नहै॥ ऐसैंभिन्नकर्त्तासाधनभावकरिज्ञायकनांही॥ अभिन्न
करतासाधनभावकरिजानैहै॥ अरुजेकेईअन्यवादीमिथ्यादृष्टीकहैहैं॥ किआत्मातैंज्ञानभिन्नहै॥ ज्ञान
केसंयोगसेतीआत्माज्ञायकहै॥ तिनकैमतआत्माअचेतनहै॥ ज्ञानकेसंयोगतेचेतनहै॥ ऐसैमांनतै
धूलिभस्मघटपटादिसमस्तअचेतनपदार्थचेतनहोहिंगे। जबपदार्थज्ञानीएहै। तबइनसौंभीज्ञानकासं
योगहै॥ इसभांतिएभीचेतनहोहिंगे॥ ज्यौंअचेतनआत्माज्ञानकासंयोगतेंचेतनहोइहै॥ इसिदोषतैंआत्म
अरुज्ञानएकहीमांननें॥ स्वयंज्ञानपरिनमतें॥ स्वयंकहिएआपहीतैंज्ञानकहिएआत्मातैंभिन्नज्ञान
परिनमतेकहिएसैपरिणवैहै॥ जातैंभिन्नज्ञानकरिआत्माज्ञानीनांहीहोइहै॥ तातैंआत्मातैंअभेदहुवा

प्र
२५
ज्ञानसमस्तज्ञेयकेआकारहोइपरिनवैहै । सर्वे अर्थाः ज्ञानस्थिताः सर्वेकहिऐंसमस्तही । अर्थाकहिए
ज्ञेयपदार्थ । ज्ञानस्थिताकहिएज्ञानविषैतिष्ठेहै जैसेआरसीविषैप्रतिबिंबरूप । घटपटादिपदार्थति
ष्ठेहै । तैसेज्ञानविषैसकलज्ञेयपदार्थआयरहैहैं तातेआत्माअरुज्ञानकैएकताहै । अन्यवादीकैसी
नाईअएकतानाही ॥ आगैज्ञानकह्यौहैज्ञेयकह्यौहै ॥ ऐसाभेदकहैहैं ॥ गाथा ॥ तम्हाणाणंजीवो
णेयंदव्वंतिधासमक्खादं दव्वंत्तिपुणोआदा परंचपरिणामसंबंध ॥ ३६ ॥ तस्मात्ज्ञानंजीवोज्ञेयं । द्रव्यं
त्रिधासमाख्यातं द्रव्यमितिपुनरात्मापरंचपरिणामसंबंध ॥ टीका ॥ तस्मात्जीवः ज्ञानंतस्मात्क
हियें । तिसकारनतैंजीवः कहियेआत्माज्ञानंकहियेज्ञानस्वरूपहै जिसकारणपहिलीगाथामेंकह्या
कियहआत्माआपहीज्ञानभावपरिणयकरिपरसहायविनास्वाधीनज्ञानीतिसकारणतेंआत्माज्ञा
नहै । औरद्रव्यभावज्ञानपरिणतकौजानिवेकौअशमर्थहै । त्रिधासमाख्यातंज्ञेयंद्रव्यंज्ञेयं । त्रिधा
कहिएं अतीतअनागतवर्तमानपर्यायभेदनिकरि अथवाउत्पादव्ययध्रौव्यकरि । अथवाद्रव्यगुण
पर्यायकरितीनप्रकारसमाख्यातंकहिएकह्याहै द्रव्यंकहिएजोद्रव्यंज्ञेयसोज्ञेयहै । आत्माज्ञानहै । अ २५

रूजोअतीतअनागतवर्त्तमानकरिनानाप्रकारपर्यायपलिपेद्रव्यहैसोज्ञेयहै॥ आत्मापुनःद्रव्यमितिपदं च॥ आ
त्माकहियेजीवपदार्थ॥ पुनःकहियेबहुरिद्रव्यमितिकहियेद्रव्यऐसेपदकौधरैहै॥ पदं च कहियेआत्मातैंअन्य
अचेतनपदार्थतेभीद्रव्यनामपावैहै जोआत्माकेज्ञानवेकोजोग्यद्रव्यहै॥ सोज्ञेयहै सोवहद्रव्यआत्माअना
त्माकेभेदकरिदोयप्रकारहै॥ तातैंज्ञेयभीदोयप्रकारहै॥ आत्माज्ञानीभीहैअरज्ञेयभीहै औरपंचद्रव्यज्ञेयहीहै
आत्माआपकौंजानैहै अरपरकौंभीजानैहै॥ तातैंज्ञानअरज्ञेयऐसीदोयअवस्थाकौंधरैहै॥ जोइहांकोईप्र
श्न॥ हैकिआत्माआपकौंजानैहै॥ सुपरस्वातवनतौनांही॥ जैसैंनटबथाचालाकपुरुषजौनटकलाविषैअत्यं
तप्रवीनहोइगातौकहा॥ आपकूंनटअपनेकांधेचढैगा॥ तैसैंयहआत्माज्ञायकशक्तिकरिजोअन्यज्ञेयपदा
र्थनिकौंजानैहै॥ तौज्ञानहूआपकौंतौगाजाननवालाहोइगा॥ तिसकासमाधान॥ आत्मामैंस्वपरप्रकाशकश
क्तिहै॥ जैसैंदीपकस्वपरप्रकाशकशक्तिसंयुक्तहै॥ घटपटादिपदार्थनिकौंप्रकाशकरिदिखावैहै॥ आपकौंभी
प्रकाशैहै॥ तैसैंआत्मास्वपरकाज्ञाननहोयहै॥ सर्वपदार्थज्ञेयकेभेदनिकरिज्ञेयपदंदोयप्रकारजानना॥ जोकोईप्र
श्नकैकिआत्माकौंद्रव्यनिकाज्ञाताकाहेतैंहै॥ द्रव्यनिकौंज्ञेयभावकाहेतैंहै॥ तिसकासमाधान॥ ज्ञाताज्ञेयरूप

प्र॰ पवस्तु कैसे है॥ परिनामसंबंध॥ परिनाम निकरि संबंध कहिए है बंधि रहे है॥ आत्मा आत्मा के ज्ञेयपदार्थ के अ
२६ खिलं विज्ञाणायरणाति है॥ जो ज्ञेय होइ नाहि तो किसकौं जानें॥ अरु ज्ञेय पदार्थ ज्ञाण कौं अखिलं विज्ञेय अव
स्था कौं धरे है॥ जो ज्ञान न होइ तो इनकौं कौण जानें ज्ञेय परिनति का अभाव होइ॥ तातें इन दोनों विषें इनहीं जाति का
संबंध दुर्निवार है॥ जैसें दीपक घटपटादि पदार्थनि कौं प्रकाशत संतें प्रकाश नाम पावै है॥ अरु घटपटादि पदा
र्थ प्रकासिबे कौं जोग्य है॥ तातें प्रकाश्य नाम पावै है॥ जो इन में एक संबंध न होइ॥ तो प्रकाश भाव का नाश होइ॥ तैसें
आत्मा अरु पदार्थनि कै ज्ञेय ज्ञायक संबंध दुर्निवार है॥ जे द्रव्यनि के पर्याय अतीत काल भए॥ अरु जे अनाग
त काल हैं होहिंगे॥ ते ज्ञाण विषें वर्तमान वत् प्रतिभासै है॥ आगें यह कहै है॥ गाथा॥ तक्कालिगेव सव्वे॥ सदसब्भूदा
हि पज्जया तासिं॥ वट्टंते ते णाणे॥ विसेसदो दव्वजादीणं॥ ३७॥ तात्कालिका इव सर्वे सदसद्भूता हि पर्यायास्ता
सां वर्तंते॥ ते ते ज्ञाने विशेषतो द्रव्यजातीनां॥ टीका॥ तासां द्रव्यजातीनां॥ सर्वे सदसद्भूता हि पर्यायाः॥ विशे
षतः ज्ञाने नवर्तंते॥ तासां कहियै ते जु है प्रसिद्ध जीवादिक द्रव्य जातीनां कहिये॥ द्रव्यकी जातिभेद॥ तिनके जे स
ज्ञाने न वर्तंते॥ तासां कहियै ते जु है प्रसिद्ध जीवादिक द्रव्य जातीनां कहियै॥ द्रव्यकी जातिभेद॥ तिनके जे सर्वे २६

कहियेसमस्तसदसद्भूताः कहियेविद्यमानअविद्यमान: हि कहियेनिश्चयसोंपर्यायाकहिये। पर्यायहैं॥ तेज्ञा
णोज्ञाणविषे॥ विसेषतः कहियेभिन्नभिन्नभेदलियेंप्रवर्त्तेंहै कहियेप्रवर्त्तेंहैं: केसेज्ञानविषेप्रवर्त्तेंहै॥ तत्कालार
वतत्कालिका: कहियेवर्त्तमानकालसंबंधीपर्यायवत्कहियेंजैसेंसमस्तषटद्रव्यनिकेपर्यायवर्त्तमानका
लसंबंधीविद्यमानहै॥ अरुअतीतअनागतकालकेअविद्यमानहैं॥ अपनेअपनेविसेषलक्षनसंयुक्तस
मस्तहीपर्यायएककालसमयविषेंज्ञाणमेंदिखेंभिन्नभिन्नकाविषेंक्रमस्यौंतुरेतुरेआइतिष्ठेहै॥ तैसेंविद्यमान
वस्तुहोईतैसेंप्रतिभासिहैहै॥ जैसेंकोनाहीचितेरेनेंचित्रपटविषेंबाहुबलिभरतादिअतीतपुरुषनिका।
चित्रलिख्याहै॥ अरुभावीकालसंबंधीश्रेणीकादितीर्थंकरनकाचित्रलिख्याहै॥ तेवेचित्रगतसचित्रपटविषे
वर्त्तमानकालहीदिखियेहै॥ तैसेंज्ञाणचित्रपटविषेंजेपर्यायहोयविनसेंजेआगेंहोइगेतिणपर्यायाणाकाव
र्त्तमानप्रतिबिंबप्रतिभासिहैहै॥ ऐसाहीज्ञाणकास्वभावहै॥ जोकोइपूछेकेवर्त्तमानकालकेंज्ञेयाकारज्ञा
नविषेप्रतिबिंबितहोइसुंयहतोबनेंहै॥ जेहोइगएअरुहोहिंगेतिनकैसेंप्रतिभासेंहैयहबनतीनांही॥ तिसकासमा
धान॥ परमस्थज्ञानीभीजोअतीतअनागतवस्तुकोविचारेहै॥ वर्त्तमानकालतवउसपुरुषकाज्ञाण

प्र·
४२

अतीतअनागतवस्तुकेआकारहोयहै।वस्तुवर्तमाननांही।जैसैंगणधरनज्ञानविषैअतीतअनागतप्र
तिभासैहै।ज्ञानकाऐसाहीस्वभावहै स्वभावतर्ककरिअबाधितहै।जेपर्यायवर्तमाननाहीतिनकौंकिसहीप्र
कारवर्तमानसादिखाईयेहै॥गाथा॥जेणेवहिसंजाया।जेखलुणट्ठाभवीयपज्जाया।तेहोंतिअसब्भूया·
पज्जायाणाणपच्चक्खा॥३८॥जेनैवहिसंजाताः येखलुनष्टाभूत्वापर्यायाः तेभवंतिअसद्भूताःपर्यायाज्ञानप्र
त्यक्षाः॥टीका॥येनैवहिसंजातायेकहियेजेपर्यायपनैनकहियेनाहीहोहैंहिकहियेनिश्चयसे।संजाताकहियेउ
पजेहैं।जेपर्यायउपजेनांही।आगामीकालउपजहिंगे।येपर्यायाः खलुभूत्वानष्टाः जेपर्यायाः।कहियेजेख
निकैपर्यायखलुकहियैनिश्चयसे।भूत्वाकहियेहोयकरिनष्टाकहिये।विनीसहोरगयहै।जेअतीतकाल
पर्यायहोयगए।तेअसद्भूताःभवंति।तेकहियेतेसमस्तअतीतअनागतपर्यायपनांहीतेअसद्भूतकहिये
तेपर्यायाः ज्ञानप्रत्यक्षाः।तेपर्यायकहिये।तेअसद्भूतपर्यायज्ञान।प्रत्यक्षाकहिये।केवलज्ञानविषैप्र
त्यक्षहै।यद्यपिअतीतअनागतपर्यायपनांही।तथापिज्ञानविषैविद्यमानमांतिबिंबितहै।तातैंज्ञानकी ४२
अपेक्षासद्भूतभीकहिये।जैसैअतीतअनागतचौवीसतीर्थंकरनिकेआकारपाषाणस्तंभविषैउकेरेहु

सवर्त्तमानहोयहै॥तैसैही अतीत॥अनागतज्ञेयाकार ज्ञानविषैप्रतिबिंबितहुए वर्त्तमानहोयहै॥असद्भूतपर्या
यज्ञानविषैप्रत्यक्षहै॥इसहीकथनकौदृढकरैहै॥गाथा॥जदिपच्चुखमजादंपज्जायंपलइदंचनाणस्स नहवदिवा
तंणाणं॥दिव्वतिहिकेपरूवंति॥अर्थ॥यदिप्रत्यक्षोजातः पर्यायः प्रलयितश्च॥ज्ञानस्यभवति॥वातज्ज्ञानंदिव्य
मितिहिकेप्ररूपयंति॥टीका॥यदिवाज्ञानस्य अजातः पर्यायः प्रलयितश्चप्रत्यक्षोनभवति॥यदिवाकहियेजो
ज्ञानस्यकहियेकेवलज्ञानकौ अजातः॥पर्यायः कहियेअनागतिपर्याय॥चकहियेबहुरि प्रलयितः कहिये
त अतीतपर्याय॥प्रत्यक्षः नभवतिकहियेप्रत्यक्षगोचरनहोइ तदातत्ज्ञानंदिव्यइतिहीकेप्ररूपयंति॥तदाक
हियेतौतत्ज्ञानंकहिये॥तिसज्ञानकौदिव्यकहियेसर्वोत्कृष्ट॥इतितैजोगपइतिकहियेऐसाहिकहियेनिश्च
यसोंवेकहिये॥कोगणधरप्ररूपयंतिकहियेकहैहै॥कोईभीनाहीकहैहै॥जोज्ञानअतीतअनागतिपर्याय
निकौनजानैतौज्ञानकीकछुमहिमानाहीज्ञानकीबडाईएहीजुसबकौप्रत्यक्षजानै॥तातैंभगवानकेदिव्य
ज्ञानविषैत्रिकालसंबंधी॥सर्वद्रव्यपर्यायएककहीवारप्रतिभासतहैहै॥इसमैंकछुसंदेहनाहीयोहीहै॥अ
नंतमहिमासंयुक्तआत्मीयकरिसर्वज्ञकाज्ञानऐसाहीहै॥इंद्रियजनितज्ञानअतीतअनागतपर्यायकेजा

प्र·
२८
णिवेकौं असमर्थ है। ऐसा कहै हैं गाथा॥ असंख्यपणिवादिदं ईहापुव्वेहिं जोविजाणादि। तेसिं परोक्खमिदं
णादुम सक्कंतियण्णंते॥ ८५॥ अर्थमक्षणिपातितं मीहापूर्वैर्यो विजाणाति तेषां परोक्षमतं ज्ञातुमशक्यमिति
प्रज्ञप्तं॥ टीका॥ ये अक्षणिपातितं अर्थं॥ ईहापूर्वैः। विजाणाति येकहिये तेजीव॥ अक्षणिपातितं कहिये इं
द्रियविषै आयसंबंध भया है॥ इंद्रियगोचर हुवा है॥ ऐसा अर्थ कहिये घटपटादि पदार्थ तिसहि ईहापू
र्वैः कहिये आगे॥ ईहा अवाय धारना ऐसे मतिज्ञानके भेद तिनकरि विजानाति कहिये जाणो है तेषां परोक्ष
तं ज्ञातुं अशक्यं इति प्रज्ञप्तं॥ तेषां कहिये तिनि जीवनकौं परोक्षं कहिये अतीतकालसंबंधी॥ वस्तु
ज्ञातुं कहिये जाणिवेकौं अशक्यं॥ कहिये असमर्थ है॥ इति ऐसा प्रज्ञप्तं कहिये सर्वज्ञदेवनै कह्या है॥ जे मति
ज्ञानी जीव हैं तिनकौं प्रथम ही इंद्रिय अरु पदार्थ सेती संबंध हो है॥ पीछे अवग्रह ईहादि भेदनिकरि
पदार्थकौं टीकता होय है॥ तातें अतीत अनागत कालसंबंधी वस्तु सेती इंद्रियसंयोग ही तानो है॥ अ
रु वर्तमानकालसंबंधी जे सूक्ष्म परमाणू आदि पदार्थ हैं॥ अरु दूरि तिष्ठै हैं॥ स्वर्ग मेरु आदिक तिनस्यौं भी २८
संयोग नांही॥ अरु अमूर्त्त वस्तु सेती तातें मतिज्ञानी इनकौं जाणि नाही॥ इंद्रिय द्वारा करि स्थूल घटप

दाहिजाणिये है॥ तातें इंद्रियज्ञाणहीण है॥ परोक्ष है हेय है केवलज्ञानकी सी नोई सर्वप्रत्यक्ष नाहीं॥ अ
णें अतींद्रियज्ञाण सर्वकौं जाणै है॥ ऐसा कहै है गाथा॥ अपदेसं सपदेसं मुत्तममुत्तं च पज्जयमजादं॥ पलयं
गदं च जाणदि॥ तं णाणं मदिंदियं भणियं॥ ४१॥ अप्रदेशं सप्रदेशं मूर्त्तं च अमूर्त्तं अजातं पर्यायं च प्रलयंगतं
जानाति यत् कहिये जो ज्ञाण॥ अप्रदेस कहिये प्रदेशनैं रहित जु है कालानु आदिक तिसहि जाणै है॥ अरु सप्रदे
सं कहिये सप्रदेस सैं पुद्गल है पंचास्तिकाय तिणहि जानै है॥ अरु मूर्त्तं कहिये पुद्गलकौ च पुनः कहिये बहुरि अमू
र्त्तं कहिये सुद्ध जीवादिक द्रव्यकौं अजात पर्याय कहिये॥ अनागत पर्यायकौं प्रलयंगतं कहिये॥ अतीत पर्या
यकौं जानाति कहिये जो ज्ञाण जाणै है॥ तत् ज्ञानं अतींद्रियं भणितं॥ तत ज्ञानं कहिये सो ज्ञाण अतींद्रि
य कहिये॥ इंद्रियातिनै अतीत सर्वप्रत्यक्ष भणितं कहिये भगवंतदेवनै कह्या है॥ अतींद्रियज्ञाण सर्वकौं जानै
है॥ तातें अतींद्रियज्ञानीकौं सर्वज्ञपद है॥ अरु जे इंद्रियज्ञाण करि सर्वज्ञ मानै है ते मत्य स्वामि घ्यावादी है
इंद्रियज्ञाण करि जो पदार्थ वर्त्तमान न होइ मूर्त्तीक स्थूल प्रदेस लिये होइ॥ अरु नजीक होइ॥ तिसकौं क्रम
सैं तौ कछुक जानै है॥ जो पदार्थ अप्रदेसी है अमूर्त्त है॥ अतीत अनागत कालसंबंधी है॥ तौ महिं नाहि मा

जाणेहै।तातैयेसेज्ञाणकरिसर्वज्ञपदकहातेहोइ॥क्षायकअतींद्रियज्ञानकौइष्टअणिष्टपदार्थविषैस
प्र २९ विकल्परूपपरिणामणक्रियानांहीयहकहैहैं॥गाथा॥परिणमदिणेयमट्ठंणादाजदिणेवखाइयंतस्स
णाणंत्तिमितंजिणिंदाखवयंतंकम्ममेवुत्ता॥५२ परिणमतिज्ञेयमर्थंज्ञातायदिनैवक्षायिकंतस्य ज्ञा
नमितितंजिनेंद्राःक्षपयंतंकर्म्मैवोक्तवंतः॥टीका॥योज्ञाताज्ञेयंपरिअर्थंपरिणमतिपरिकहियेजो
ज्ञाताकहियेजाननहाराआत्माज्ञेयकहिअर्थंकहियेज्ञेयपदार्थ।तिसाहिपरिनमतिकहियेसंकल्पविक
ल्परूपहोयपरणवैहै।तदातस्यक्षायकंज्ञाणंएव।नैवकहियेतौतस्यकहियेतिसआत्माकेक्षायकेक
हियेकर्म्मकेखयतैउत्पन्नअतींद्रियज्ञानेकहिये।केवलज्ञाननकहियेनांहीहै।एवकहियेनिश्चयस्योज
नतांईयहआत्मासविकल्परूपपदार्थकौजानेहै।तबतांईतिसआत्माकैक्षायकज्ञाणहोतानाही॥इति।
जिनेंद्रा।तंकर्म्मक्षपयंतएवउक्तवंतः इतिकहियेइसहीवास्तेजिणेंद्राकहियेसर्वज्ञदेवतेकहियेतिस
विकल्पीजीवकौकर्म्मक्षपयंतकहिये॥एककर्मकाअनुभवनहारा।एवकहियेनिश्चयस्योउक्तवंत २९
कहियेकहैहै।जोजीवसविकल्पीहै।सोपदार्थपदार्थविषैरागाहुवामृगतृस्नाविषैजलकीसीबुद्धि

करतासेताकर्मनिकौंभोगवैहै। तिसकैरागमलज्ञानकाहैकाहोइ। तातेक्षायकज्ञानीकैइंद्रियनिकेअ
भावतैपदार्थविषैसविकल्परूपपरिणतिनाहीं। निरावरनअतींद्रियज्ञानकरिअनंतसुषसेवेरनहै। परं
अज्ञानीकैइंद्रियाधीनसविकल्परूपपरिनतिहै। तातेकर्मसंजोगजनितपदार्थनिकौंभोगवैहै। आगेंयह
कहैहैं कैज्ञानबंधकाकारननाहीं। ज्ञेयपदार्थविषैजुहै। रागदोषपरिणतिसोईबंधकाकारनहै। गाथा
उदयगदाकम्मंसा। जिणवरवसहेहिंणियदिणाभणिया। तेसुहिमुहिदोरत्तो दुट्ठोवाबंधमणुहवदि॥४३॥
उदयगताःकर्मांशाजिणवरवृषभैर्नियत्याभणिताः। तेषुहिमुग्धोरक्तोदुष्टोवाबंधमनुभवति। टीका। जि
नवरवृषभैः उदयगताकर्मांशाः नियत्याभणिताः जिनवरवृषभैकहिये। गणधरादिकविषैं प्रयभ
वेजुहैश्रीवीतरागदेवतिनहुरौउदयगताः कहियेउदयअवस्थाकोंप्राप्तहुवे। ऐसेकर्मांशाः कहियेकर्म
निकेभेदज्ञानावरनादिकतेनियत्याकहियेनिश्चयस्योभणिताः कहियेकहेहैं। संसारीजीवनिकेअवस्थमेंवज्ञा
नावरनादिकर्मनिकाउदयहोयहै। ऐसाभगवंतदेवनेकह्याहै। तेषुअपिमुग्धःरक्तः। वाद्विष्टःबंधंअनुभवति ते
षुकहियेतिनिउदयभावकर्मनविषैजोजीवअपिकहियेनिश्चयेनिश्चयस्यो। मुग्धःकहियेमोही रक्तः कहि

प्र
३०

रागी ॥ जाकहियेअथवादुष ॥ कहियेरोषीहोइहैसोजीव ॥ वंधंकहिये प्रकृतिस्थितिअनुभागप्र
देशा ऐसेचारप्रकारवंधकैअनुभवतिकहियेभोगवैहै ॥ भावार्थ ॥ यहजुकर्मकाउदयतौसवसंसारी
जीवनकैहै ॥ परंतुवहकर्मकाउदयवंधकाकारननाहीं ॥ कर्मजनितइष्टअनिष्टभावनिविषैजोजीवरा
गीद्वेषीमोहीहोइपरनवैहै ॥ तिसकौवंधहै ॥ तातैयहवातसिद्धभई ॥ ज्ञानवंधकाकारननाहीं वंधकेका
रनएकुरागद्वेषमोहभावहै ॥ तिसतेएसवंधात्यन्यहै ॥ आगेकेवलीकेकर्मकाउदयहै ॥ अरुजोगक्रिया
भीहै ॥ रागादिभावनिकेअभावतैवंधनाहीयहकहैहै ॥ गाथा ॥ ठाणनिसेज्जविहारा ॥ धम्मुवदेशोयनि
यदयातेसिंअरहंताणंकाले ॥ मायाचारुव्वइत्थीणं ॥ ४४ ॥ स्थाननिषद्याविहाराः धर्मोपदेशश्चनियतय
स्तेषांअर्हतांपुः तेषांअर्हतांकहियेतिनिअरहंतानिकैकालेकहियेकर्मकेउदयकालविषैस्थाननिष
द्याः ॥ विहारकहियेस्थानआसनरागविहारकर्मएतौकायजोगकीक्रियाअरुकहियेवहुरिधर्मोपदेशकहिये
दिव्यध्वनिनिश्चयव्यवहारात्मकधर्मकाउपदेशयहवचनयोगकीक्रियानियतयः कहियेयेतौजोगनि- ३०
कीक्रियानिश्चितहोइहै ॥ भावार्थ ॥ यहवीतरागदेवकैकायवचनयोगकीक्रियानिश्चितहोइहै ॥ उदयो

कभावनिकरि परंतुउनिक्रियानिविषैकोईभगवंतकाजतननांहीमोहकेअभावतैंइच्छानांहीसहजहीहोयहै
किसद्रष्टांतहोयहै सोकहियेहै स्त्रीनांमायाचारइव स्त्रीनांकहियेस्त्रीनिकेस्त्रीवेदउदयहोतै सहजहीयत्न
विनामायाचारकहियेकुटिलाईकाआचरणयत्ना इवकहियेजैसेंहोइहै ॥भावार्थ॥ जैसेस्त्रीकेस्वभाव
विलासविभ्रमादिकस्वभावहीतैंहै तैसेंअरिहंतकेजोगकेक्रियासहजहीहै औरभीदृष्टांतकहियेहै जे
सैंमेघकैजलकावर्षनागाजनावलनाथिरहोइरहना इत्यादिक्रियाविनाहीपुरुषकेयत्नमेघकेस्वभाव
हीतैंहै तैसेंऔदयिकभावनिकरिइच्छाविनाहीअरिहंतकेक्रियाहोइहै इसहीकारणतैंकेवलीकेबंधनां
ही रागादिककेअभावतैंऔदयिकक्रियाबंधफलकौंनांहींदेती आगेअरिहंतनिकेपुण्यकर्मकाउदयबं
धकारनांहींयहकहैहै ॥गाथा॥ पुन्नफलाअरहंता तेसिंकिरियापुणोहिउदइया मोहादीहिंविरहदातं
म्हासाखाइगत्तिमदा ४५ पुण्यफलाअर्हंतस्तेषांक्रियापुनर्हि औदयिकीमोहादिभिर्विरहिता तस्मा-
त्साक्षायिकीतिमता ॥टीका॥ अर्हंतः पुण्यफलाः अर्हंता कहियेसर्वज्ञवीतरागदेवतेपुण्यफलाः कहियेती
र्थंकरनामाजुहैपुन्यकर्मतिसकेफलहै अरिहंतपदजुहोइहैसोतीर्थंकरनामकर्मउदयतैंहीहोयहै तातैं

प्र तेअरिहंतपुंन्यकर्मकेफलकहियेहै। पुनः हितेषांक्रियाऔदयिकीपुनः कहियेवहुरिहिकहियेनिश्चयसो। तेषांक्रि
३१ याकहियेतिनि अरिहंतनिकी कायवचनकीक्रियाऔदयिकी कहियेकर्मके उदयतैहै ॥भावार्थ॥ जोअरिहंतनि
कैदिव्यध्वनिविहारादिक्रियाहैसोकर्मकेउदयतैहै। तातैउदयिकीकहिये। यस्मात्सा क्रियामोहादिभि
रहिता। तस्मात्क्षायिकीइतिमता। यस्मात्कहियेजिसकारनतैसाक्रियाकहिये। तीर्थंकरकैसोजुहै। औरए
त्विकीक्रियामोहादिभिः कहिये। मोहरागद्वेषभाव। इनिकरिविरहिताकहियेरहितहै। तस्मात्कहियेतिसकार
नतैक्षायिकीकहियेमोहकर्मकेक्षयतैउत्पन्नहुईहै। इहनिकहियेऐसीमताकहियेकहीहै ॥भावार्थ॥ जो
अरिहंतकैक्रियाहैसोपूर्वबंधेहूकर्मकेउदयसेतीहै। परंतुरागद्वेषमोहभावनिकेअभावतै। आत्माकेचैतन्यवि
कारस्वभावकर्मकौनास। होउपनावैहै। तातैउदयिकीहै। औरआगैनोतननबंधकौकारननाही। पूर्वकर्मके
क्षयकौकारनहैजिसकर्मकेउदयसेतीवहक्रियाहोइहै। सोबंधअपनारसदेकैखिरिजाइहै। इसप्रसंगअरिहं
तकीक्रियाकर्मक्षयकौकारनहै। तिसतैवहक्रियाक्षायिकीऐसीभीकहिये। नोतननबंधकौनकरै। पूर्वबंधकाना ३१
सकरै। ऐसैवहक्रियाकौगणमांनिपै। अवश्यमाननेजोग्यहै। तातैयहबातसिद्धभई। अरिहंतकेकर्मकावि

याकै आत्मीकभावकौ घात नांही ॥ मोहकर्मके होतें क्रिया आत्माकौ घातै है ॥ मोहके अभावतें क्रिया काव
लक छद्मस्थानां ही ॥ तातें केवली अबंध है ॥ जैसें केवलीके परिनाम विकार नांही है तैसें और जीवनिके परि
नाम विकारका अभाव नांही ॥ आगें यह कहै हैं ॥ गाथा ॥ जदि सो सुहो व असुहो ण हवदि आदा सयं सहा
वेण ॥ संसारो वि ण विज्जदि सव्वेसिं जीवकायाणं ॥ ४६ ॥ यदि शुभो वा अशुभो वा न भवत्यात्मा स्वयं स्वभावेन सं
सारोऽपि न विद्यते सर्वेषां जीवकायानां ॥ टीका ॥ यदि स आत्मा स्वभावेन स्वयं शुभः वा अशुभः न भव
ति यदि कहिये जो स आत्मा कहिये सो जीवद्रव्य स्वभावेन कहिये ॥ अपने स्वभावकरि स्वयं कहिये ॥ आप
ही शुभः कहिये शुभपरिनामरूप वा कहिये ॥ अथवा अशुभ कहिये ॥ असुभपरिनामरूप न भवति कहिये न
होइ ॥ भावार्थ ॥ जैसें सांख्यमती आत्माकौं शुभाशुभभावनि परिणवता नांही माने है ॥ तैसें ही संसारी जीव
निकौं केवलीकी सी नांई शुभाशुभभावनि परिनवते जो न मानिये तदा सर्वेषां जीवानां संसार एव न विद्यते
तदा कहिये तौ सर्वेषां जीवानां कहिये समस्त जीवनकौ संसारी कहिये संसारपरिणति एव कहिये निश्चय
सौं न विद्यते कहिये नांही ॥ विद्यमान न होइ ॥ भावार्थ ॥ आत्मा जु है सु परिनामी है ॥ जैसें स्फटिक मनि परिनामी

प्र.
३२

मीहै॥ कालेपीलेलालफूलकेसंजोगपायै॥ तसाकरकालापीलालालहोइपरिणवैहै॥ तैसेहीयहआत्माअ
नादिपरिद्रव्यसंजोगसेती रागद्वेषमोहरूप अज्ञानभावनिपरिणवैहै॥ तातातेसंसारभावैहै॥ अरजोयेरागभा
नियेतोसंसारहोइनाही॥ सवहीजीवअनादितैलेकरिमोक्षरूपहोगतिहेसोपोतोनांही॥ तातेइहवातसिद्धभ
ई॥ जेकेवलीहै॥ ततोसुभाशुभभावनिनाहीपरनवैहै॥ याकीऔरसंसारीजीवसवसुभअसुभभावपरनवेहै
श्वेहीकथानुअतीन्द्रियज्ञानसोई॥ अवसवकजानननहारणोकरिदिखाइयैहै॥ गाथा॥ जंतक्कालियमिदरं
जाणादिजुगवंसमंतदोसव्वं॥ अत्थंविचित्तविसमंतंणाणंखाइयंभणियं॥ ४७॥ यत्तात्कालिकमितरज्ञा-
नाति॥ जुगपत्समंततः सर्वं॥ अर्थंविचित्रं॥ विषमंतत्ज्ञानंक्षायिकंभनितं॥ टीका॥ यत्समंततः सर्वंअ
र्थंजुगपत्जानाति॥ तत्ज्ञानंक्षायिकंभणितं तत्कहियेजोज्ञानसमंततःकहियेसर्वांगसर्वकहियेसमस्त
ही॥ अर्थंकहियेपदार्थनिकासमूह॥ तीसकौजुगपत्कहियेएकहीवारएकहीसमयविषैजानातिकहिये
जानैहै॥ तत्ज्ञानंकहियेसोज्ञानक्षायकंकहियेकर्मकेक्षयतेउत्पन्न॥ अतीन्द्रियऐसाभणितंकहियेक ३२
ह्याहै॥ पदार्थनिकासमूहकैसाहै॥ जिसकौजानैहै॥ तात्कालिकंकहियेवर्त्तमानकालसंबंधीपर्यायसि

पैहै। अरु इतनै तक कहिये अतीत अनागत निपर्यायपलिपैहै। बहुरि कैसा है पदार्थसमूह विचित्र कहिये भिन्नभि
न्न अपने लक्षणा स्यलक्षीकरि अनेक प्रकार है। बहुरि कैसा है। विषम कहिये मूर्त्त अमूर्त्तादिक गुनु है। अ
समानजातीय भेदनिनकरि विषम है। एकसा नाही।। भावार्थ।। अतीत अनागत वर्तमान कालसंबंधीना
नाप्रकार विषमता लियै जु है। समस्त पदार्थ तिनकौ सर्वांग एक समय विषै प्रकासिवेकौ एक अतीन्द्रिय क्षा
यिक केवलज्ञान ही समर्थ है। औरनिकै सैसै ज्ञानकी शक्ति नाही ज्ञानावरण कर्मके क्षायोपसमसै जु है ज्ञान ते
एकही वार समस्त पदार्थनिकौ ज्ञान जानै नाही क्रमलियै जानैहै सो असा क्षायोपसमिक ज्ञानका केवलज्ञान
विषै अभाव है। तातै एकही वार सबकौ जानै है। क्षायोपशमिक ज्ञान एकदेस निर्मल है। तातै सर्वांग वस्तु
कौ नाही जानै। यह क्षायक ज्ञान सर्व विसुद्ध है। अरु एकदेस निर्मल ज्ञान भी याहीमै समाय गए है। तातै
वस्तुकौ सर्वांग प्रकासै है। अरु इस केवलज्ञानकै सर्व आवरनका नास है। मतिज्ञानावरनादिकके क्षयोप
समका भी अभाव है। तातै समस्त वस्तुकौ प्रकासै है। इहि केवलज्ञानकै मतिज्ञानावरनादिक कर्मनका क्ष
य हुवा है। और केवलज्ञानावरनका भी क्षय है। तातै नानाप्रकार वस्तुकौ प्रकासै है। असमान जातीय जु है

प्र ३३ केवलज्ञानावरनतिसकाक्षयहै॥ समानजातीपणुहै मतिज्ञानावरनादिचारितिनिकेक्षयोपसमका
क्षयहै॥ तातैविषमकौप्रकासैहै॥ औरदृशिक्षायकज्ञानकी मैमहिमाकहतांपीकहै॥ अतिविस्तारक
रिपूरांतांहोइ॥ अपरोंअघटितप्रकासकीगुरुताईकरिअवस्यमेवसर्वदाकालसवजानैसर्वथाप्रका
रसवकौजानैहै॥ जोसवकौजानैसोएककौभीनजानै॥ आगेयहविचारटीकजियेहै॥ गाथा॥ जोनवि
जाणादिजुगवं॥ अच्छेतेकालिकेतिहुवनत्थेनादुंतस्सणसक्कंसपज्जयंदव्वमेकंवा॥ ४९॥ योणविजानाति
जुगपदर्थान॥ त्रैकालिकान्त्रिभुवनस्थान॥ ज्ञातुंतस्यनासक्यंसपर्यंयद्रव्यमेकंवा॥ टीका॥ यः त्रि
भुवनस्थानत्रैकालिकानअर्थान जुगपत्नैविजानाति॥ यः कहियेजोपुरुषत्रिभुवनस्थानकहियेतीन
नलोकमैविद्यमानहैं॥ ऐसेत्रैकालिकानकहियै॥ अतीतअनागतवर्तमान तीनकालसंबंधीअ
र्थानकहियै॥ पदार्थतिनकौजुगपत्कहियै॥ एककहीवारनकहियेनाहीविजानातिकहियेजानैहै तस्य
सपर्यंयएकद्रव्यंवाज्ञातुंनसक्यं॥ तस्यकहियेसपुरुषकेसपर्यंयकहियै॥ अनंतपर्यायसंयुक्तएकंद्रव्यं ३३
वाकहियै॥ एकद्रव्यभीज्ञातुंकहियेजानिवेकौसक्यंकहियेनाहीसमर्थहजियेहै॥ भावार्थ॥ यहिलो

कविषैआकासद्रव्यएकहै॥धर्मंद्रव्यभीएकहै॥अधर्मद्रव्यभीएकहै॥कालद्रव्यअसंख्यातहै॥जीवद्रव्य
अनंतहै॥पुद्गलद्रव्यजीवरासितैअनंतगुनअधिकहै॥औरइनिद्रव्यनिकेतीनकालसंबंधीअनंतअनंत
पर्यायभिन्नभिन्नहै॥एसमस्तद्रव्यपर्यायज्ञेयहै इनिविषैएकजीवद्रव्यजाननहाराहै॥जैसेअग्निसमस्त
ईंधनकौजलावतातांईंधनकानिमित्तपायकाष्टतृणपत्रआदिकईंधनकेआकारहोइ॥एकअपनेअग्निके
स्वभावपरनवैहै॥तैसेयहज्ञाइकआत्मासमस्तज्ञेयकौजाननहारसेता॥ज्ञेयकानिमित्तपाइसमस्तज्ञेयाकार
रूपएकज्ञानकेस्वभावपरनवैहै॥अरुआपकौवेदैहै॥आत्माद्रव्यकास्वभावहै॥तातैयहवातसिद्धिभई
जोसवज्ञेयकौजाणानजाणैसोएकआत्माकौभीनजानै॥जातैइसिआत्माकेज्ञानविषैसमस्तज्ञेयाकारप्र
तिबिंबितहोइहै॥तातैयहआत्मासमस्तकाजाननहाराहै॥ऐसासवकाजाननहाराआत्मानवप्रत्यक्षजा
नीयैहै॥तवऔरसमस्तज्ञेयजानियैहै॥सवज्ञेयपाहीविषैप्रतिबिंबितहै॥जोसवकौजानैतौआत्माकौभी
जानैहै॥अरुजोआत्माकौजानैतौसवकौजाणै यहवातपरस्परएकहै॥जिसतैसवकाजाननाएकआ
त्माहीकेजाणैतैहोइहै॥तातैआत्माकाजाननाअरुसवकाजाननाएकहै॥तातैयहअरहअर्थकहरणा

जोसबकौंजानैनही॥ सोएकआत्माकौंभीनजानै॥ आगेयहकहैहैकिजोएककौंनजानैसोसबकौंनजा

प्र
नै॥ गाथा॥ दव्वंअणंतपज्जयमेक्कमणंताणिदव्वजादाणि॥ णविजाणदिजदिजुगवं॥ किधसोसव्वाणि

३५
जाणादि॥ ४९॥ द्रव्यमनंतपर्यायमेकमनंतानिद्रव्यजातानि॥ नैवजानातियदियुगपत्कथंसर्वाणिजा

नाति॥ टीका॥ यःपुरुषःअनंतपर्यायंएकंद्रव्यंनैवजानाति यःकहियेजोपुरुषपरिकहियेजोअनंतप

र्यायकहिये॥ अनंतहैपर्यायजिसविषै॥ ऐसाजुहैएकद्रव्यकहियै॥ एकआत्माद्रव्यतिसाहिनैवक

हियेनाहीजानातिकहियेजानैनाही॥ तदासयुगपत्अनंतानिसर्वाणिद्रव्यजातानिकथंजानाति

तदाकहियेतौसकहियेसोपुरुषयुगपत्कहियेएकहीवार॥ अनंतानिकहियेअंततैरहित॥ सर्वाणिक

हियेसमस्तही ऐसेजुहैद्रव्यजातानिकहियेद्रव्यनिकेसमूहतिनहिकथंकहियैकैसेजानातिकहि

येजानैजानै॥ भावार्थ॥ आत्माकालक्षनज्ञानहै सोज्ञानप्रकासरूपहै॥ सर्वजीवरासिविषै

महासामान्यहै॥ अपनेज्ञानमईअनंतभेदनिसोव्याप्तहोतै॥ ज्ञानकेअनंतभेदज्ञेयरूपजुहै ३५

अनंतद्रव्यपर्यायतिनकैनिमित्ततैहै॥ तातैअनेकअनंतविशेषनिकरिसंयुक्तसामान्यरूपज्ञानहै

यहज्ञानसोसबकौंजानैहै।ऐसेज्ञानसंयुक्तआत्माकौंजोपुरुषप्रत्यक्षनांहीजानैहै।सोपुरुषसर्वपदार्थ
निकौंकैसेंजाणैगा।सबज्ञेयजानीयैहै।ज्ञाणकेअणंतभेदतिकरि।सोअणंतभेदसंयुक्तज्ञाणआत्मावि
यैहै तातेंएकआत्माकेजाणेंतेसबजानियैहै।जोएकआत्माकौंणजाणैसोसबकौंनजानै॥यहगाथा
काअर्थटीकाहुवा॥आत्माअरुपरद्रव्यइनकौंज्ञेयज्ञायकसंबंधहैजुदेजुदेहैं।अपणेअपणेसरूपतें।तथा
पिज्ञायकरूपज्ञानकेपरिनमनतैंसमस्तज्ञेयपदार्थझलकै।किज्ञानविषैपैठिरहाहैऐसेंभांतिभासैहै।जोऐ
सानमानियैतौआत्माअपनेसरूपकौंएनंनाकरिथिरैनांही।औरआत्माकेज्ञानकीमहिमानहोइ
तातैंजोआत्माकौंजाणैसोसबकौंजानै॥जोसबकौंजाणैसोआत्माकौंजानै॥एकजानतैंसबजानियैहै
सबजाणतेंएकजानियैहै यहकथनदोऊभांतियहकथनकेवलज्ञानकीअपेक्षाजानना॥एकदेश
ज्ञानकीअपेक्षापहचाननहोय जोज्ञानपदार्थनिकौंक्रमसेंनीजानैहै।सोज्ञाणसर्वगतनांही॥आगें
ऐसानिश्चयकरैहै॥गाथा॥उप्पज्जदिजदिणाणं॥कमसोअट्ठेपडुच्चणाणिस्स॥तंणेवहवदिणिच्चं॥ण
खाइगंणेवसव्वगदं॥५५॥उत्पद्यतेयदिज्ञानंक्रमतोऽर्थान्प्रतीत्यज्ञानिनः तःनैवभवतिनित्यंन-

प्र. क्षायिकं न शर्वगतं ॥ टीका ॥ यदि ज्ञानिनः ज्ञानं क्रमतः अर्थात् प्रतीत्य उत्पद्यते परि कहिये जो ज्ञानिनः क-
३५ हिये आत्मा का ज्ञानं कहिये चैतन्य गुन सो क्रमतः कहिये क्रम सेती अर्थान् कहिये पदार्थनि कौं प्रतीत्य
कहिये अवलंबि करि उत्पद्यते कहिये उपजै है ॥ तदा तत् नित्यं न भवति ॥ तदा कहिये तो तत् कहिये सो ज्ञान नि-
त्य कहिये ॥ अविनासीक नैव कहिये नांही भवति कहिये होइ ॥ क्षायिकं न अरु वह ज्ञान कर्म के क्षय तें उत्प-
न्न नांही ॥ और सर्वगतं न सर्वनि विषै गया नांही सब कौं जानता नांही ॥ भावार्थ ॥ जो ज्ञान एक एक पदार्थ कौं अ-
वलंबि करि क्रम सौं प्रवर्त्तै है ॥ एक ही बार सब कौं जाणता न है सो ज्ञान विनासीक है ॥ एक पदार्थ के अ-
लंबन तें उपजै है दूसरे पदार्थ के ग्रहन तें विनसै है ॥ तातें अनित्य है ॥ अरु एक ही ज्ञान कर्म के क्षयोप-
सम तें हीन अधिक होत रहै है ॥ तातें क्षायिक नांही ॥ क्षयोपसम रूप है ॥ और अनंत द्रव्य क्षेत्र काल भा-
व जानिवे कौं असमर्थ है ॥ तातें सबनि विषै जानता नांही असर्वगत है ॥ तातें यह अर्थ ठहराया जिस ज्ञा-
न करि क्रम सौं पदार्थ जानिये सो पराधीन है ॥ ऐसे ज्ञान करि सर्वज्ञ कहिये नांही ॥ जो एक ही काल स-
र्व कौं जानै तिस ज्ञान करि सर्वज्ञपद की सिद्धि है ॥ आगै यह बतावै है ॥ गाथा ॥ तैकालणिच्चविसमं

सकलंसव्वत्थसंभवंचित्तंजुगवंजाणदिजोण्हं ।। अहोहिणाणस्समाहप्पं ।। ५१ ।। त्रैकाल्यंनित्यंविषमंसक
लंसर्वत्रसंभवंचित्रं युगपत्जनातिजैनं ।। अहोहिज्ञानस्यमाहात्म्यं ।। टीका ।। ० जैणांत्रिकाल्यनित्य
विषमं ।। सकलंसर्वत्रसंभवं ।। चित्रंयुगपत्जानाति ।। जेणंकहियेजिनकेवलीभगवानतिसिविषैउत्पन्ना
जुहैकेवलज्ञाणसोत्रैकाल्यंनित्यंविषमंकहिये ।। तीणीकालकरिनित्यविषमंसदाकालविषैहैसमपनाही
अतीतअनागतिवर्त्तमानकेभेदकरिऐसाजोपदार्थहै ।। असकलंकहियेसमस्तहीहै ।। औरसर्वत्रसंभवंक
हियेसबलोककेविषैउत्पन्नहोतिष्टहैं ।। चित्रंकहियेअनेकजातिकरिनानाप्रकारहै ।। ऐसाजोपदार्थतिसाहियु
गपतकहियेएकहीबारजानातिकहियेजानैहै ।। अहोहिज्ञानस्यमाहात्म्यं ।। अहोकहियेएभव्यलोकतुमदे
षहु ।। ज्ञानस्यकहियेक्षायिकज्ञानकामहात्म्यकहियेपरममहात्मवडाई ।। भावार्थ ।। जोज्ञानसकलपदा
र्थकौंअवलंबिप्रवर्तैहै ।। सोज्ञाननित्यहै ।। औरक्षायिकहै औरसर्वगतहै ।। जातैकेवलज्ञानविषैसमस्तप
दार्थऐसेप्रतिभासिरहेहैं ।। टंकोत्कीर्णन्यायकरिऔरप्रकारहोहिगेनांही ।। इसिज्ञानकौऔरएकछुज्ञा
नमोरहनांही ।। जुइसिविषैज्ञेयाकारकीपलटनिहोइ ।। जातेयहज्ञाननित्यहै ।। जातेइसिज्ञानकीकोईथा ।।

प्र त्तिकर्मकरिआछादितनांही । अणंतही सक्तिपुलीहै ॥ तातैयहज्ञान व्यापिकहै ॥ तातैयहज्ञानअनंत
३६ द्रव्यक्षेत्रकालभावकौप्रगटकरैहै तातैयहसर्वगतहै ॥ ऐसैज्ञानकी महिमांकौजांणकरिसकै ऐसैहीज्ञा
नकरिसर्वज्ञपदहोइहै ॥ आगै कहै है कि केवली • कै ज्ञानकै क्रियाहै ॥ परंतु क्रियाकाफलबंध नांही ॥ व
ह अर्थसंक्षेपताईसोकहि आचार्यज्ञानाधिकारपूराकरैहै ॥ गाथा ॥ णविपरिणमदिणगिण्हदि ॥ उ
प्पज्जदिणेवतेसुअट्ठेसु जाणण्णवितेआदा । अबंधगोतेणपण्णत्तो ॥ ५२ ॥ णापियरिणमतिनग्रह्णाति
उत्पद्यतेनेवतेषुअर्थेषु ॥ जानन्नपितानात्मा अबंधकस्तेनप्रज्ञप्तः ॥ टीका ॥ येणआत्मांताजानंनज्ञानंन
अपियरिणमति ॥ येणकहियेजिसकारणातैं ॥ आत्माकहियेकेवलीशुद्धात्मता न कहियेतिनिपदार्थ
निकौजाणकहिमनांही ॥ अपिकहियेनिश्चयसौंपरिणमतिकहियेपरणवैहै । नगृह्णातिकहियेग्रह-
तानाही ॥ नेवतेषुअर्थेषु उत्पद्यते ॥ नेवकहियेनांही ॥ तेषुकहियेतिनिपदार्थनिविषे ॥ उत्पद्यतेकहिये
उपजैहै ॥ क्याकरतासंतापदार्थनिकौपरणवतानांही तानन्जानन्नपितानकहिये ॥ तिनिपदार्थनि
कौजाननअपिकहियेजाणतासंताभीतेन अबंधकः प्रज्ञप्तः । तेनकहियेतिसकारणातैं ॥ सोकेवलीभ ३६

गज्ञानअबंधकहिये ।नोतनकर्मबंधतैरहित ।प्रज्ञप्रकहियेकह्याहै ।भावार्थ ।यद्यपिकेवलज्ञानीसम
स्तपदार्थनिकौंजानैहै ।तथापिउनपदार्थनिकौरागदोषमोहभावकरिपरिनवैहै नग्रहैहैनेउननिवि
उपजैहै ।तातैंबंधरहितहै ।क्रियादोयप्रकारकीहै एकज्ञप्तिक्रियाहै ।एकज्ञेयार्थपरिणमनक्रियाहै ।राग
दोषमोहविनाज्ञानकीजोज्ञानरूपक्रियासोज्ञप्तिक्रियाकहिये ।जोरागदोषमोहकरिपदार्थज्ञानएसोज्ञे
यार्थपरिणमनक्रियाकहियेज्ञेयार्थपरिनमनक्रियाकरिबंधहै ।ज्ञप्तिक्रियाकरिबंधनाहीं ।केवलीकेज्ञप्ति
क्रियाहैतातैबंधनाहीं ज्ञेयार्थपरिनमनक्रियाकोंएवंहीउदयगदाकुम्मसाइसिगाथाकरिबंधकाकार
नकह्यासोकेवलीकैनाहीं णिरुहदिणेवणामंचादिहमिगाथाकरिएसेंहीदेखनेजाननेरूपक्रियाकेवलीनै
कही सुद्धमिज्ञप्तिक्रियाकरिबंधनाहीं ॥ इ श्री च सा सि त वा वि ध क पं ना
म न रं ते ना क्र सं णं ।१। आ आ र्यं न जु नो ज्ञसुखतिसकाअधिक
रकह्याचाहैहैं ।तातैकौंज्ञानसुखहेयहै ।कौणउपादेयहै ऐसाकथनप्रथमहीदिखावैहैं ॥गाथा॥ अत्थि
अमुत्तंमुत्तं ।अदिंदियंइंदियंचअत्थेसु ।णाणंचतधीसोक्खं जंतेसुपरंचतणेयं ॥५३॥ अस्त्यमूर्तंमूर्तम

तींद्रियमैंद्रियं चार्थेषु ज्ञानं तथा सौख्यं यत्तेषु परं च तत् ज्ञेयं   अर्थेषु अतींद्रियं ज्ञानं अमूर्तं अस्ति
प्र ३७ अर्थेषु कहिये पदार्थनि विषै अतींद्रियं कहिये इंद्रियाधीनता रहित ज्ञानं कहिये जो ज्ञान ना सो अमूर्तं
अस्ति कहिये अमूर्तीक है ॥ च ऐंद्रियं मूर्त्तं ॥ च कहिये पुन और जो ज्ञान ऐंद्रियं कहिये इंद्रियजनित ज्ञान है ॥ सो
ज्ञान मूर्तं कहिये मूर्तीक है ॥ च तथा सौख्यं च कहिये बहुरि तथा कहिये जिस भांति सौख्य कहिये सुख भी है ॥ जो
इंद्रिय बिना सुख का अनुभवन सो अतींद्रिय अमूर्तीक सुख है ॥ जो इंद्रियाधीन सुख का वेदना सो इंद्रियज-
नित मूर्तीक सुख है   एक ज्ञान सुख अतींद्रिय अमूर्तीक है एक इंद्रियाधीन मूर्तीक है ॥ च ते-
षु यत् परं तत् ज्ञेयं च कहिये बहुरि तेषु कहिये तिन ज्ञान सुख के भेदनि विषै ॥ यत् कहिये जो परं कहिये उत्कृष्ट है त-
त् कहिये सो ज्ञेयं कहिये जानने जोग्य है उपादेय जानना ॥ इन विषै जे अतींद्रिय अमूर्तीक ज्ञान सुख है ते उपा-
देय है ॥ जे इंद्रियाधीन मूर्तीक ज्ञान सुख है ते हेय है ॥ जे आत्मीक अमूर्तीक चैतन्यरूप परद्रव्य संजोगरहित के-
वल सुख परिणति रूप सक्ति है तिन तें उत्पन्न है जे ज्ञान सुख ते सर्वथा आत्मा के आधीन है ॥ अविनासीक ३७
है ॥ एक ही वार अखंडित धाराप्रवाह रूप प्रवर्ते है सत्रु तें रहित है ॥ घटते वधते नाही ॥ तातें उत्कृष्ट है ॥ उपा

देयहै॥ जे आत्माकै मतिकर्मक्षायोपशमरूप इंद्रियाधीन चेतन्यशक्ति निकरि उपजै है॥ ज्ञान सुष तै पराधीन है
विनासीक है क्रमस्यौं प्रवर्ते है॥ शत्रु करि घेरे तिष्ठै है॥ घटै वधै है॥ तातै हीण है॥ हेय है॥ आगै अतींद्रिय सुष का कारन
अतींद्रिय ज्ञान उपादेय दिषाइये है॥ गाथा॥ जं पेछदो अमुत्तं मुत्तेसु अदिंदियं च पछन्नं॥ सयलं सगं च इदरं
तं णाणं हवदि पचख्खं॥५४॥ प्रेक्षमानस्यामूर्तं मूर्तेषु अतींद्रियं च प्रच्छन्नं॥ सकलं स्वकं च इतरत् तत् ज्ञानं भवति प्रत्यक्षं॥
टीका॥ प्रेक्षमाणस्य पतत् अमूर्तं॥ प्रेक्षमाणस्य कहिये देखनेवाले पुरुष का पतत् कहिये जो ज्ञान अमूर्तं कहिये धर्म
अधर्म आकास काल जीव ए पंच द्रव्य अमूर्त है॥ इनकौ जानै है॥ च मूर्तेषु अतींद्रियं च कहिये बहुरि जो ज्ञान मूर्तेषु क ने
हिये पुद्गलद्रव्य के पर्याय है॥ तिनि विषै अतींद्रियं कहिये इंद्रियनकै परिमान आदिक जो पुद्गलना ही ग्रहण स्य है ति
सकौं भी जाणै है। च प्रच्छन्नं॥ च कहिये बहुरि जो पदार्थ प्रछन्न है॥ द्रव्य क्षेत्र काल भाव करि गुप्त है॥ तिसकौ भी जा
णै है॥ कालाणं आदिक द्रव्य करि प्रछन्न है॥ अलोकाकास के प्रदेशादिक क्षेत्र प्रछन्न है॥ अतीत अनागत
पर्याय काल करि प्रछन्न है॥ द्रव्यनि के सूक्ष्म पर्यायनि विषै रहे गुन ते हीण तारतम्य रूप ते सूक्ष्म पर्याय है॥ ते भाव प्र
छन्न है॥ ऐसे च्यारि प्रकार कौं जानै है॥ च सकलं स्वकं इतरत्॥ च कहिये बहुरि सकल कहिये समस्त ही॥ स्व

प्र कं कहिये स्वज्ञेय ॥ इतरत् कहिये परीक्षे परजनकौं जो जानै है ॥ तत्तस्य ज्ञानं प्रत्यक्षं भवति ॥ तत् ज्ञानं कहिये सो ज्ञा
३८ न प्रत्यक्ष कहिये ॥ इंद्रिय विना केवल आत्माकै आधीन प्रवर्त्ति कहिये है सो ए है ॥ भावार्थ ॥ जो सर्वकौं जानै सो
प्रत्यक्ष ज्ञान है ॥ इसि ज्ञान विषै अनंत सुख ल्हा है ॥ और सामग्रीकौं चाहता नांही ॥ एकु अक्ष नाम आतमु है आ
त्मा ताहि प्रति निश्चित हुवा प्रवर्त्तै है ॥ अपनी अनंत सक्ति निकरि अनंत स्वरूप है ॥ जैसे आगि ई घन हु
कै आकार है तैसें इह ज्ञान ज्ञेयाकारनकौं करता नांही ॥ तातें अनंत स्वरूप है ॥ ऐसे प्रत्यक्ष ज्ञानकौं म
हिमाकौं कोइ हरकौ समर्थ नांही ॥ तातें पहु उपादेय है ॥ पहु प्रत्यक्ष ज्ञान अतींद्रिय सुखका कारन है ॥ आ
गै इंद्रिय सुखका कारन जु है इंद्रिय ज्ञान सो हेय परिग्याइवेकौं निरूपै है ॥ गाथा ॥ जीवो सयं अमुत्तो ॥ मुत्तिगदो ते
ण मुत्तिणा मुत्तं ॥ ओगेण्हित्ता जोग्गं ॥ जाणदि वा तं ण जाणादि ॥ ५५ ॥ जीवः स्वयममूर्त्तो मूर्त्तिगतस्तेन मूर्त्तें
न मूर्त्तं ॥ अवगृह्य योग्यं जानाति वा तन्न जानाति ॥ टीका ॥ जीवः स्वयं अमूर्त्तः जीव कहिये आत्म द्रव्य सो स्व
यं कहिये अपणे स्वभावकरि अमूर्त्तः कहिये स्पर्स रस गंध वर्ण रहित अमूर्त्तीक वस्तु है ॥ एवमनेन तः कहि ३८
ये सो ई आत्मा अनादि बंधकी अपेक्षा करि मूर्त्तीक कहु है शरीरमें सर्वविधि लिये है तेण मुत्तेणा जोग्गं म

तेंअवग्रहज्ञानाति॥वाततनजानाति॥तेनमूर्त्तैंनकरियें॥तिसमूर्तीकसरीरविषै ज्ञानकौंउत्पन्नकौंनिमित्त
भूतनुहैमूर्तीकद्रव्येंद्रियतिसकरिजोग्यकहियै॥इंद्रियग्रहनकेंजोग्यस्थूलरूपमूर्तकहियेस्पर्शरसगंधवर्णरू
पमूर्तीकवस्तुतिसकौंअवग्रहकहियै॥अवग्रहईहादिभेदनिकरिक्रमस्योंग्रहनकरिजानातिकहियेजानै
है॥वाकहियेअथवानजानातिकहियेनांहीजानैहै॥क्षयोपसमकीतीव्रताहोइतौजानै॥भावार्थ॥जोआ
त्माअनादिकालतैंअज्ञानअंधकारकरिअंधभयाहै॥यद्यपिअपनीचैतन्यमहिमांलियैहै॥तथापिकर्मसंजो
गतैंइंद्रियविनाअपनीसक्तिकरिपदार्थजानिवेकौंअसमर्थहै॥ऐसेआत्माकैयहपरोक्षज्ञानहोयहै॥यह
परोक्षज्ञानमूर्तीकद्रव्येंद्रियकेआधीनहै॥मूर्तीकपदार्थकौंजानैहै॥अतिचंचलहै॥अनंतज्ञानकीमहि
मातैंगिरहैविकलहै॥अनंत॥महामोहमल्लकीसहायतैपरपरणतिविषैप्रवर्त्तैहै॥जागैजागैउलझहैदेनै
लाइकहै॥परमार्थतैंस्तुतिजोग्यनाही॥निंदाहैतातैंहेयहै॥इंद्रियज्ञानयद्यपिअपनेजानिजोग्यमूर्तीकपदा
र्थकौंजानैहै॥तथापिएककहीवारजानतानांहीतातैंहेयहै॥आगैयहकहैहै॥गाथा॥फरसोरसोयगंधो॥वण्णो
सद्दोयपुग्गलाहोंति॥अक्खाणंतेअक्खाजुगवंतेणेवगिण्हंति॥५६॥स्पर्शोरसश्चगंधोवर्णोशब्दश्चपुद्गलाभ

प्र भवंति ॥ अक्षाणां नाणप्रक्षानि युगपत् नैव प्रभवंति ॥ टीका ॥ अक्षाणां च स्पर्शः रसः च गंधः वर्णश्च शब्द
३९ पुद्गलाः भवंति कहिये स्पर्श रस गंध वर्ण शब्द पुद्गल विषै है ॥ एषां च इंद्रिय इन विषयनिकौं जानै है ॥ तानि अ
क्षाणि तानि युगपत नैव प्रभवंति ॥ तानि अक्षाणि कहियै ते इंद्रिय तान कहियै तिनि पंच विषयनिकौ युगप
त कहियै एक ही वार नैव कहियै नाही प्रभवंति कहियै ग्रहै है ॥ भावार्थ ॥ एषां च इंद्रिय अपनै अपने विषयकौ
ग्रहै है ॥ परंतु एक ही काल एपंच इंद्रिय अपने अपने कार्यकौ करते नाही ॥ जिस काल रसना इंद्रिय रसकौ वेदै
है ॥ तिस काल और इंद्रियका कार्य होता नाही ॥ जब और इंद्रियका कार्य होइ है ॥ तब और इंद्रियका नाही जा
तै अंतरंग कै विषै क्षयोपशम ज्ञानकी ऐसी ही सक्ति है जु क्रम स्यौ प्रवर्तै ॥ जैसै काक के दोऊ नेत्रनि विषै पु
तली एक ही होय है ॥ सो जिस काल जिस नेत्र विषै होय है ॥ तिस काल तिस ही नेत्र कै कार्यकौ करै है ॥ परंतु उ
सि पुतलीकी सिताबी ऐसी है ॥ जो दोऊ नेत्रनि विषै जानौ कि एक ही काल प्रवर्तै है ॥ ऐसै बाहिर दिखाई
देहै ॥ तैसै यह क्षयोपशम सक्ति सब विषयनिकौ एक ही बार जाननेकौ असमर्थ है ॥ जिस काल जिस द्वार जा ३९
नन रूप प्रवर्तै है ॥ तिस काल तिस ही द्वार है ॥ और इंद्रिय द्वार विषै नाही तातै एक ही काल सब इंद्रियनि

कालांननांही तातेंपरोक्षहै॥ इंद्रियज्ञानाहेयहै॥ आगेंइंद्रियज्ञानप्रत्यक्षनांहीऐसानिश्चयकरैहै
गाथा परदव्वंतेअक्खाणे॥वसहावत्तिअप्पणोभणिदा॥ उक्तासादिकहिये॥ समस्तजुहैपरद्रव्यरूपजुनिम
त्तिइनकीसहायविनाकेवलआत्माहीकेसहायउपजैहै॥ एकहीसमयविषैसमस्तद्रव्यपर्यायकौजानै
सोज्ञानकेवलआत्माधीनहै॥ तातेंप्रत्यक्षकहिये॥ एहीमहाप्रत्यक्षज्ञानआत्मीकसहजसुखकासाध
नहै॥ एहीअतींद्रियज्ञाननिश्चयकरिसुखहै॥ आगेंऐसाअभेददिखाईएहै॥ गाथा॥ जादंसयंसमत्तं
णाणमणंतत्थवित्थडंविमलंरहियंतुउग्गहादिहिं॥ सुहंतिएगंतियंभणिदं॥ ५९॥ जातंस्वयंसमस्तं ज्ञा
नमनंतार्थविस्तृतंविमलंरहितंत्ववग्रहादिभिः सुखमितिऐकांतिकंभणितं॥ टीका॥ एतादृसंज्ञा
नमैकांतिकंसुखं इतिभणितं॥ एतादृसंज्ञानकहिये॥ ऐसाज्ञानऐकांतिककहियेनिश्चयसों॥ सुखक
हियेअतींद्रियसुखइतिकहियेऐसाभणितंकहियेकह्याहै॥ कैसाहैज्ञानस्वयंजातं॥ स्वयंकहियेपराधी
नताविनाआपहीतेंजातंकहियेउपज्याहै॥ बहुरिकैसाहैसमस्तंकहियेनिरावरणतातैंसंपूर्णहै बहुरि
कैसाहै॥ अणंतत्थवित्थडं॥ अनंतजुहैसमस्तअर्थपदार्थतिनिविषैविस्तृतंकहियेविस्तारिरह्याहै

प्र औरजाननाररहानांहीतातेंविस्तीर्नहै। वहुरिकैसाहै विमलेसंसयादिदोषरहितनिर्मलहै। वहुरि हैऐव
४० हुरिकैसाहै। अवग्रहादिभिःरहितं। अवग्रहादिभिःकहियै। अवग्रहईहादिअवायधारनाइत्यादिक्रु
हेक्रमवर्तीज्ञानकेभेदतिनकरिरहितकहियेरहितहै। क्यूंकेवारूसनकौनाशहै। तातेंक्रमवर्तीनांही। भा
वार्थ। जिसमैंआकुलतानहोइसोसुषकहियै। परमात्मसअतींद्रियज्ञानअनाकुलहै। तातेंएही
सुषहै। यहपरोक्षज्ञानपराधीनहै। तातेंपरतेंउत्पन्नहै सावरनहै तातेंसंपूर्णनांही। अनंतपदार्थ
निकौंजाननानांही। तातेंसर्वविषैविस्तीर्णनाही। संसयादिकलिएहै। तातेंनिर्मलनांही। अवग्र
हादिकरियुक्तहै। तातेंक्रमवर्तीहैखेदलियेहै। आकुलतासंयुक्तहै। तातेंसुषरूपनांही यह अ
तींद्रियप्रत्यक्षज्ञानपराधीनतारहितएकनिजशुद्धात्माकाकारनपाइउपज्याहै। तातेंआपहीतेंउ न
त्पन्नहै। आवरनरहितसमस्तअपनेआत्माकेप्रदेसनिविषै। अपनीअनंतसक्तिसंयुक्तहै
तातेंसंपूर्नहै। अपनीज्ञायकशक्तिकेवलकरिजानै। कि समस्तज्ञेयाकाररूपीयेहै। तातेंस ४०
मस्तपदार्थनिविषैविस्तीर्णहै। अनंतसक्तिवाधककर्मक्षयतेंसंसयमोहविभ्रमरहित॰

तसमस्तसूक्ष्मादिपदार्थकेप्रगटज्ञानततेंनिर्मलहै॥ अतीतअनागतवर्तमानकालरूपलोकालोककोएक
वारजाणेहै॥ तातेंक्रमवर्तीनाही॥ खेदरहितऐसेनांही अनाकुलहै॥ तातेंयहप्रत्यक्षज्ञानहीअतींद्रियसुखजानना
केवलज्ञानकोसर्वकेजाननरूपपरिणामकरिखेदउपजताहोयगा तातेंनिश्चयकरिसुखनांही॥ ऐसाकोई
वितर्ककरेहै॥ ताकोनिषेधियेहै॥ गाथा॥ जंकेवलंत्तिणाणं॥ तंसोक्खंपरिणमंचसोचेवखेदोतस्सणभणिदो॥ ज
म्हाघादीखयंजादा॥ ६०॥ यत्केवलमितिज्ञानंतत्सौख्यंपरिनामश्चसएवखेदस्तस्यनभणितो॥ तस्मात
घातीनिक्षयंजातानि॥ टीका॥ यत्केवलमितिज्ञानं॥ यत्कहियेजोकेवलऐसेनामज्ञानहै॥ तत्सौख्यंकहियेते
सोसौख्यंकहियेअनाकुलसुखहै॥ चसएवपरिनाम॥ चकहियेबहुरिसएवकहियेसोईसुखरूपपरिनामकहि
येसर्वकेजाननरूपपरिनामहै॥ तस्यखेदःभणितः तस्यकहियेतिसकेवलज्ञानकेखेदकहियेआकुलभवनक
हियेनांही॥ भणितःकहियेकह्याहैक्याहेततस्मात घातीनिक्षयंजातानि॥ यस्मात्कहियेजाकारणतेंघाति
निकहियेचारिघातियाकर्मक्षयकहियेमलसत्तातेंनासकोजाताकहियेप्राप्तहुएहैंतातेंअनाकुलहै॥ भा०
वार्थ॥ ज्ञानकोखेदकेकारणघातियाकर्महै॥ जातेंमोहकर्मकेउदैयहआत्मामतवालाहोय॥ असत्यवस्तु

प्र· विषैसमर्थपुरिकै धरैहै ॥ तेपरपदार्थनिविषैपरिनवैहै ॥ तातैवेघातियाकर्मइसआत्माकौंइंद्रियाधीनकरिप
६१ दार्थकेजाननेकौंपरनवावैखेदकौकारणहोयहै ॥ तातैघातियाकर्मनकौंहोतैंतौआत्माकेअसुद्धज्ञान
परिणामहैसोखेदकौकारणहै ॥ घातियानिकेअभावतैकेवलज्ञानविषैखेदकाहेकाहोय ॥ एकहीकाल।
त्रिकालवर्तीसमस्तज्ञेयकेजाननेकौंसमर्थविचित्रभिन्नवस्तुअनंतस्वरूपआपजाननरूपपरनवै
है ॥ केवलज्ञानपरिनामहै ॥ ऐसेस्वाधीनपरिनामविषैखेदकाहेकाउपजै ॥ ज्ञानस्वरूपस्वभावकेघात
ककर्मनिकानासभयाहै ॥ तातैज्ञानकीअनंतसक्तिप्रगटभईहै ॥ सवलोकालोककाजाननसीलीहैक
छुजाननारहानांही ॥ तातैकूटस्थअवस्थाकरिअत्यंतनिश्चलहै ॥ आत्मातैंअभिन्नअनंतसुखरूपअ
नाकुलताकौंलियैहै ॥ ऐसाजुहैयहकेवलज्ञानसोईसुषहै ॥ तातैज्ञानसुषविषैकोईभेदनांही ॥ सर्व
थाप्रकारनिश्चयसौकेवलज्ञानहीसुषमाननौजोग्यहै ॥ आगैयहरिकेवलज्ञानकोसुषरूपकहैहैं ॥ गा
था ॥ णाणंअत्थंतगयं ॥ लोगालोगेसुवित्थडादिट्ठी ॥ णट्ठमणिट्ठंसव्वंइट्ठंपुणजंतुतंलद्धं ॥ ६१ ॥ ज्ञानं
मर्थांतगतंलोकालोकेषुविस्तृतादृष्टिः ॥ नष्टमनिष्टंसर्वमिष्टंपुनर्यत्तुतल्लब्धं ॥ टीका ॥ ज्ञानंअर्थांतग ६१

तें ॥ ज्ञानं कहिए केवलज्ञान सो अर्थांतगतं कहिए पदार्थनिकै पारगया है सबकूं जाननहारा है ॥ लोका
लोकेषु विस्तृता दृष्टिः लोकालोकेषु कहिये तीनलोक अरु अलोक तिनविषै विस्तृता कहिये विस्त
री है दृष्टिः कहिये केवलदर्शन सबकूं देषनहारा है सर्वं अनिष्टं नष्टं सर्वं कहिये समस्त ही अनिष्टं क
हिये दुखदाईकूं अज्ञान सो नष्टं कहिये विनाश हूवा पुनः यत्तु इष्टं तत्तल्लब्धं पुनः कहिये बहुरि यत्तु कहि
ये जो इष्ट कहिये सुखका कारण ज्ञान तत् कहिये सो लब्धं कहिये प्राप्त हूवा ॥ बहुरि जो आत्मस्वभावकौ
घातै सो दुख कहिये । आत्मस्वभावके घातकका जु नास सो सुख है ॥ आत्माके स्वभाव ज्ञानदर्शन है ॥ इनि
ज्ञानदर्शनका घातक जबताईं आवरन है ॥ तबताईं इनकै सबकै जानन सबकै देषनेकी शक्ति ता
नाहीं ॥ एकहीं आत्माकै दुख है ॥ जब घातक आवरनका नास होइ तब ज्ञानदर्शनकै सबका देषना जा
नना होइ ॥ स्वच्छंदता तें यह निराबाध सुख है ॥ तातै अनंतज्ञानदर्शन सुखका कारन है ॥ और अभेद वि
वक्षा करि जो ई केवलज्ञान सो ई आत्मीक सुख है ॥ जातै केवलज्ञान सुखस्वरूप ही है ॥ तातै एक है ॥ आ
त्माकौ दुखका कारण अज्ञान है ॥ अज्ञान स्वरूप सो तो केवल अवस्थाविषै विनसै है ॥ और जो सुख

प्र कोकारनस्वरूपसबकुंजाननाहैंमगटहै ॥ तातेकेवलज्ञानहीसुखहै ॥ यहुतनविसतारकरिलीनीकीतें ॥ ग्रा
५२ गेंयुहकहैंहै ॥ किकेवलीहीकेपरमार्थकरिअतींद्रियसुखहै ॥ ग्रैसीटीकत्ताकीजेंहे ॥ गाथा ॥ णोसद्द
हंतिसोक्खंसुहेसुपरमंतिविगदघादीणं सुणिऊणतेअभव्वाभव्वावातंपडिच्छंति ॥ ६२ ॥ नश्रद्दध
तिसौख्यंसुखेषुपरमामितिविगतघातीनांश्रुत्वानतेअभव्याभव्यावातत्प्रतीच्छंति ॥ टीका ॥ एवंविगतघाती न
नांसुखेषुपरमंसौख्यं ॥ इतिश्रुत्वानश्रद्दधति ॥ येकहियेजेएकपुरुषविगतघातीनांकहियेदूरभ
याहैघातियाकर्मजिनतें ॥ ग्रैसेजुहैकेवलीभगवानतिनकैसुखेषुकहिये ॥ अन्यसमस्तसुखनिविषैप
रमंकहियेउत्कृष्टसौख्यंकहियेअतींद्रीयसुखहै ॥ इतिकहियेग्रैसाश्रुत्वाकहियेसुनिकरिनहींश्रद्दध
तिकहियेनाहीश्रद्धानकरेहैकेवलीकेउत्कृष्टअतींद्रियसुखहै ॥ जेग्रैसाउनिकोंनाहीमानैहै ॥ तेअभव्याः
तेकहियेतेजीवअभव्याःकहिये ॥ सम्यक्तपरनतितेरहितअभव्यहै ॥ भव्यातत्प्रतीच्छंतीभव्याःकहियेस
म्यक्तपरिणतिसंयुक्तजेजीवहै ॥ तेतत्कहियेकेवलीकेतिसअतींद्रियसुखकौंप्रतीच्छंतिकहियेमानै
है ॥ वाकहियेअथवाजेदूरभव्यहैतेआगैमानैगे ॥ भावार्थ ॥ जैसेअंधदृष्टीजीवहै ॥ तेसंसारविषैमोही ५२

प
८२

जीवनिकै सुषका आभाव करै है ॥ इंद्रियसुषकौ सुषरूप है तै मानै है ॥ एक सत्यसुष केवलीकौ रहै है कौ हतै जातें
घातियाकर्मनिका नास भया है ॥ अनाकुलता प्रगट भई है ॥ तातें केवली ही कै परमार्थसुष है जे अज्ञानी आ
त्मीक सुषकै आस्वादक नांही ॥ ते इंद्रियाधीन सुषकौ मानै है ॥ मृगतृस्नाविषै जैसे बाधि कीसी नांई ॥ आगें क
है है: कि परोक्षज्ञानीकौ इंद्रियाधीन सुष है ॥ परमार्थसुष नांही है ॥ गाथा ॥ मणुवासुरामरिंदा अभिद्दुदा इं
दिएहिं सहजेहिं ॥ असहंता तं दुक्खं रमंति विसएसु रम्मेसु ॥ ६३ ॥ मनुजासुरामरेंद्राः अभिद्रुता इंद्रियैः सहजैः अ
सहमानाः तद्दुःखं रम्यंते विषयेषु रम्येषु ॥ टीका ॥ मनुजासुरामरेंद्राः ॥ रम्येषु विषयेषु रमंति ॥ मनुजासुरामरेंद्रा म
नुज कहिए मनुष्य ॥ असुर कहिए पातालवासी देव ॥ अमर कहिए वैमानीक देव इनके इंद्र कहिये स्वामी ते रम्ये
षु कहिये ॥ भले मैं लागै ऐसे जु है विषयेषु कहिये इंद्रियके विषै ॥ तिनि विषैं रमंति कहिये क्रीडा करै है ॥ कैसे है
एडंइ सहजैं ॥ इंद्रियैः ॥ अभिद्रुताः सहजैः कहिये साहजीक व्याधिरूप जु है इंद्रियैः कहिए पंच इंद्रियनि करि
अभिद्रुता कहिये पीडित भए है ॥ वहुरि तत् दुःखं असहमानाः तत्दुःखं कहिये ॥ तिस इंद्रियजनित दुःखकौं सहमा
नाः कहिये नाही सहसकते ॥ तातें इंद्रियविषयनिविषै लगे है ॥ भावार्थ ॥ संसारी जीवनकै प्रत्यक्षज्ञानना

हीपरोक्षज्ञानराग है । तातैं इंद्रियाधीन है । महामोहरूप कालअग्निकरि ग्रसे है जैसैं तप्तलोहका गोला तैसैं अति
तीव्रतृस्नासंयुक्त है । तिनि इंद्रियकरि कै पीडित हो इ मूर्तीकविषयनि विषै लागे है । जैसैं व्याधिपीडित रोगी औ
षधसेवै है । तैसैं इंद्रियरूपव्याधिकरि दुखी हो इ विषयरूप औषधकौ सेवै है । तातैं परोक्षज्ञानी महादुखी है । इस
कै आत्मीकनिश्चयसुखनांही । आगें कहै है कि जबतांई इंद्रिय है तबतांई स्वभाविक दुखही है । गाथा । जेसिंवि
सएसुरदी तेसिंदुःखंवियाणसाहावं । जदितंणहिसाहावं वावारोणत्थिविसयत्थं ॥६४॥ येषांविषयेषुरति
स्तेषांदुःखंविजानीहि । स्वाभावंयदितन्नास्ति । स्वभावेव्यापारोनास्तिविषयार्थं ॥ टीका ॥ येषांविषयेषुरतिः
येषां कहिये जिनि जीवनि कै विषयेषु कहिये पंचेंद्रियविषयनि विषै रतिः कहिये प्रीति करि लगनि है । तेषां दु
खंस्वाभाविकंविजानीहि । तेषां कहिये तिनि जीवनि कै दुखं कहिये पीडा स्वाभाविकं कहिये । साहजीक विजा
नीहि कहिये जानहु जिनि जीवनि कै इंद्रिय जीवै है । तिनकै और उपाधि तैं कोई दुखनांही । सो इंद्रियही महा
दुख है । जु एइंद्रिय अपनै विषयकौं चाहै है । एइंद्रिय अपनै विषयकौं चाहै तौ । आत्माकौ दुख उपजावतै प्र
त्यक्ष देखिये है । हस्ती स्पर्शनेंद्रियकरि पीडित हाथीपकरना इथनीकै वसि हो इ है । मछ जीभइंद्रियकै व स

प्र
८५ सहुपावेंसीकेमांसकौंचाबेहै ॥ भ्रमरनासिकाकरिपीडितसुगंधकमलकीवासकौलेहै ॥ पतंगनेत्रइंद्रियकरि
रूपतेंदीपसिषाविषेजलैहै ॥ मृगकर्णइंद्रियकरिपीडतअहेरीकेरागकौंसुणैहै ॥ इनिइंद्रियनितैंसाहजीक
औरसादुषहोयहै ॥ जिसदुःकरिपीडततहचाविषयनिविषेलागिपहजीवअपणेप्राणनिविनासेहै ॥ तातेंएइंद्रि
यरोगीकीसीनाईंदुषरूपहै । परिरसाभावेतत्रनास्तिपरिदृकरिहियेंजोस्वाभाविककहियेसाहजीकउनतकहियेंसो
इंद्रियरूपदुःखनास्तिकहियेंनहोइ ॥ तदाविषयार्थव्यापारः नास्ति । तदाकहियेतौविषयार्थकहियेविषयनि
केसेवनकेनिमित्तिव्यापारःकहिये ॥ इंद्रियनिकेप्रवृत्तिनास्तिकहियेंनहोइ ॥ भावार्थ ॥ जोइंद्रियदुःखरूपन
होइतौविषयनिकीचाहभीनहोइ जैसेसीतज्वरकेगयेंअग्निकासेवननाहीचाहियेहै ॥ अरुदाहज्वरकेगयेंकां
जीकासीचनांकछुनांही ॥ अरुरोगत्रपीडाकेगयेंपरियासंगमिसरी ॥ इत्यादिऔषधकार्यकारीनांही
करोमललनासरूरैछेलैकामृतनांहीचाहियेहै ॥ घाऊकेनीकेहूयेंआलेपणनाहिंचाहिये ॥ जैसेंजोइं
द्रियदुःखरूपनहोइहितौविषयग्रहणकीचाहनहोइ । इनइंद्रियनिकेविषयकीचाहदेखियेहै । तातेंएस्वभाव
हीतैंव्याधसमानहै । विषयऔषधसमानहै ॥ तातैंपरोक्षज्ञानीइंद्रियाधीनस्वभावहीतैंदुखी ॥ आगेंकहैहै ८५

कि जे मुक्ति हूए हैं॥ तिनकै सरीर विनां ही सुख है॥ तातें सरीर सुख का कारन नांही॥ गाथा॥ पप्पा इट्ठे विसए॥ फा
सेहिं समासिदे सहावेन॥ परिणममाणो अप्पा सयमेव सुहं न भवदि देहो॥ ६५॥ प्राप्येष्टान् विषयान् स्प
र्शैः समाश्रितान् स्वभावेन परिनममान॥ आत्मा स्वयमेव सुखं न भवति देह॥ टीका॥ स्वभावेन परिणममा
नः॥ आत्मा स्वयमेव सुखं भवति॥ स्वभावेन कहियै अशुद्ध ज्ञान दर्सन स्वभाव करि परिणममानः॥ कहि
यै परिणवै है॥ आत्मा कहियै अशुद्ध ज्ञान दर्सन स्वभाव करि परिणममानः॥ कहियै परिनवै है॥ आत्मा
कहियै जीव द्रव्य सो स्वयमेव कहियै॥ आप ही सुखं कहियै इंद्रिय सुखरूप भवति कहियै होइ है॥ कहा करि स्प
र्शैः समाश्रितान् इष्टान् विषयान् प्राप्य स्पर्शैः कहियै पंच इंद्रिय करि समाश्रितान् कहियै ग्रहे हैं॥ इष्टान्
कहियै भले विषयान् कहियै स्पर्शादिक पंच विषय पतिन को प्राप्य कहियै पाय करि॥ भावार्थ॥ इस आ
त्मा के सरीर अवस्था के होतें भी सरीर सुख का कारण है ऐसा देषते नांही॥ काहे तें मोह तें जातें मोह भ्रान्ति
करि मन वाल्हे से गुहै हैं॥ एइ इंद्रिय पतिन के वसि हूवा॥ यह आत्मा षोटी अवस्था कों धरत संता अशुद्ध ज्ञान
दर्सन वीर्य स्वभाव कों परिणवै है॥ तहां आप ही सुख मानि लेहै है॥ इस वासतें संसार अवस्था विषै भी सरी

प्र॰ रसुखकाकारननांही ॥ देहसुखंनभवति देहकहियेशरीर सोसुखकहियेसुखरूपएभवतिकहियेनाही
५५ होइहे ॥ शरीरजुहैसोअचेतनहै ॥ अचेतनवस्तुसुखकाउपादानकारणहोतानांही ॥ तातैसरीरसुखकाकार
ननांही। आत्मा[illegible]ही है संसारअवस्थाविषैभीआत्माहीसुखकाकारणहै फिरिपहवातदिढकरैहैं ॥ गाथा
एगंतेनहिदेहो ॥ सु[illegible]देहस्सकुणइसग्गेवा ॥ विसयवसेनतुसोक्खं ॥ दुक्खंवाहवदिसहमादा ॥ ६६ ॥ एकांतेन
हिदेहः ॥ सुखंनदेहिनः करोतिस्वर्गेवा ॥ विषयवसेनतुसौख्यंदुखंवाभवतिस्वयमात्मा ॥ टीका ॥ एकांतेनहिदे
ह देहिनः सुखंस्वर्गेवानकरोतिएकांतेनकहिये ॥ सर्वथाप्रकारकरि ॥ हिकहियेनिश्चयस्यो देहः कहियेशरीर
देहिनकहियेआत्माकौसुखंकहिये ॥ सुखरूपस्वर्गेवाकहिये ॥ स्वर्गहुविषैनकरोतिकहियेनांहीकरैहै ॥ भावार्थ
सर्वगतिनविषैस्वर्गउतकृष्टहै ॥ तहांकेविषैभीउत्तम ॥ वैक्रियकशरीरसुखकाकारनहोतानांही औरन्का
गैकौनकहाचालीहै ॥ विषयवसेनतुआत्मास्वयंसौख्यंवादुखंभवति विषयवसेनतुकहियेविषयनिकेवसि
करि आत्माकहियें ॥ जीवद्रव्यसोस्वयंकहियेआपहीतैसोख्यंकहियेसुखरूप ॥ वाकहियेअथवादुखंकहियै ५५
दुखरूपभवतिकहियेहोइहै ॥ इसअनिष्टविषयनिकेवासहवापइआत्माआपहीसुखदुखमानलेहै ॥ सरी

रसुषदुषकाकारननाहीं॥ आगेंकहैहैंकिआत्माकासुषस्वभावहीहै॥ तातेंइंद्रियविषैभीसुषकाकारनना
हीं॥ गाथा॥ तिमिरहरा जइ दिट्ठी जणस्स दीवेण णत्थि कायव्वं॥ तह सोक्खं सयमादा॥ विसया किं तत्थ कुव्वंति
॥६७॥ तिमिरहरा यदि दृष्टिर्जनस्य दीपेन नास्ति कर्तव्यं॥ तथा सौख्यं स्वयमात्मा विषयाः॥ किं तत्र कुर्वंति॥ टी
का॥ जनस्य यदि तिमिरहरा दृष्टिः जनस्य कहिये चोर॥ आदिकजीवकी यदि कहिये जो तिमिरहरा कहिये अं
धकारकी हरिवेवारी दृष्टि कहिये देषनेकी शक्ति होइ॥ तदा दीपेन कर्तव्यं नास्ति॥ तदा कहिये तौ दीपक
कहिये॥ दीवेकरि कर्तव्यं कछु कार्य करनना नास्ति कहिये नांही॥ भावार्थ॥ जैसें कोई एक रात्रिकूं फिरनहारे वा
घसर्प राक्षस चोर आदिकजीव॥ अंधेरेके होतेसंतें भी वस्तुकूं देषैहै॥ अंधकारकौं हरिकरि अैसा उनकी दृ
ष्टिका स्वभावहै॥ दीपके प्रकाशादिकसौं कछु प्रयोजन नाहीं॥ तथा आत्मा स्वयं सौख्यं तथा कहिये तैसें आ
त्मा कहिये॥ जीवद्रव्य स्वयं कहिये आपही सौख्यं कहिये सुषस्वभावहै तत्र विषयाः किं कुर्वंति तत्र कहिये तहां
विषया कहिये इंद्रियविषय किं कहिये कहा कुर्वंति कहिये करैहै॥ भावार्थ॥ यह आत्मा आप सुषस्वभावहै॥ ता
तें अज्ञानीजननें वृथा सुषके कारण मानेजुहै॥ ए इंद्रियविषय तेसुषकौं कारण कैसे होहिंगे॥ जैसें रात्रि

प्र
४६
त्रिकेचलनहारेजीवनिकीदीपआदिकप्रकासविनाही। अंधकारकीनासिनीदृष्टिस्वभावहीतेंहै। तैसेइंद्रिय
विषयविनासभावहीतेसुषरूपआत्माहै। विषयकाजुसुषमाननांहैसोमोहविलासतैंहै। मिथ्याभ्रमहै।जैसे
शरीरसुषकाकारननांही तैसेइंद्रियविषयभीसुषकाकारननाही। परक्रियनसिद्दहुवा।आगेआत्माकैज्ञानसु
षद्रष्टांतकरिद्रढकीजियेहै॥गाथा॥यमेवजहादिच्चो।तेजोउण्होयदेवदाणभसि।सिद्धोवितहाणाणंसुहंचलोगे
तहादेवो॥६८॥स्वयमेवयथादित्य।तेजः उष्णश्चदेवताणभसि।सिद्धोपितथाज्ञानं।सुषंचलोकेतथादेव॥टीका
यथानभवासिआदित्य।स्वयमेवतेज उष्णदेवता।यथाकहियेजैसेणभसिकहियेआकासविषैआदित्यः कहि
येसूर्य्यस्वयमेवकहियेआपहीअन्यकारनविना।तेजः कहियेवहुतप्रभाकेसमूहतैप्रकासरूपहै।उष्णः कहि
येतप्तलोहपींडकीसीनाईसदाकालगरमहै।देवताकहियेदेवगतिनामकर्मकेउदैतैदेवपदवीकाधारकहै त
थालोकेसिधोपिज्ञानंचसुषं।तथाकहियेतैसेलोकेकहियेइसजगतविषैसिद्धः कहियेसुद्धआत्माज्ञानंक
हियेज्ञानस्वरूपहै।चकहियेवहुरिसुषंकहियेसुषरूपहै।तथाकहियेतैसेहीदेवकहियेपूज्यहै॥भावार्थ॥जैसेसूर्य्य
अपणैसाहजीकस्वभावहीतेअन्यकारनविनातेजस्वीहै।उष्णहैदेवताहै इनितीनगुणसंयुक्तहै।तैसेहीआ

त्माभगवान्‌अन्यकारनविनासाहजैसैंस्वपरप्रकासक॥ अनंतसक्तिमयचैतन्यप्रकाशतैंज्ञानस्वरूपहै॥ तैसेंही
आत्माकीअभिन्नरूपअनाकुलथिरतातैंसुषरूपहै॥ औरतैसैंहीनैंकोईआत्मरसकैंआस्वादीसम्यग्दृष्टीकिंचिछन
जनहै॥ तिणावैचितरूपयाधारणाथंभकैविषैसौसिद्धरूपजानैंराचिउवैसाहै॥ तातैंप्रत्यक्षस्तुतिकरनैंजोग्यदेवताहै॥ सभाव
हीतैंयहआत्माज्ञानसुषरूपहै॥ इनितीनिगुणसंयुक्तहै॥ तातैंइसिआत्माकगुणसाहईकस्वभावहै॥ तातैंसुषके
कारणसेरेविषयैजुहै॥ एइंद्रियविषयइनकरिआत्माकौंसुषहोतानांही॥ तातैंइनिकीप्रसंसाहोउ॥ आत्माआपही
सुषरूपहै॥ इतिअतींद्रियसुखाधिकार॥ आगैंइंद्रियजनितसुषकाविचारआरंभैहै। तिसकथनविषैप्रथमहीइंद्रि
यसुषकाकारनजुहै॥ सुभोपयोगतिसकास्वरूपकहियैहै॥ गाथा॥ देवदजदिगुरुपूजा॥ सुचेवदाणम्मिवासुसीलेसु
उववासादिसुरत्तो॥ सुहोवओगप्पगोअप्पा॥ ६९ ॥ अथसुभपरिनामाधिकार॥ देवतायतिगुरुपूजासुचैवदाणे
वासुसीलेषु॥ उपवासादिषुरक्तः सुभोपयोगात्मकः आत्मा॥ टीका॥ यः आत्मादेवतायतिगुरुपूजासुरक्तः यः
कहियेजोआत्माकहियेजोयहआत्मादेवतायतिगुरुपूजासुकहियै। देवयतिगुरुपूजनविषैरक्तः कहियेरागीहुवा
प्रवर्त्तैहै। चएवदानेचकहियै॥ बहुरिएवकहियैनिश्चयस्यौंदानेकहियैच्यारिप्रकारत्यागविषैलग्याहै॥ वासु

सीलेषुवाकहियै॥ अथवासुसीलेषुकहियैगुणव्रतमहाव्रतादिभलेस्वभावनिविषैप्रवर्तै है॥ अथवाउपवासा
दिषुकहियै॥ आहारादिकत्यागविषैरागी है॥ सशुभोपयोगात्मकसकहियैसोजीवसुभोपयोगात्मक॥ सुभ
परिनामहैस्वरूपजिनिका॥ ऐसासुभोपयोगीकहियै॥ भावार्थ॥ जोजीवधर्मानुरागीहैसोइंद्रियसुषकीसाध
नहारीसुभोपयोगरूपक्रियाविषैप्रवर्त्तैताकहियै॥ आगैकहैहैं॥ किसुभोपयोगकरिइंद्रियसुषहोइगा॥ गाथा॥ जुत्तो
सुहेणआदा॥ तिरियावामानुसोपदेवोवाभूदोतावदकालं लहदिसुहमिंदियंविविहं॥ ७४॥ युक्तःसुभेनात्मा॥
तिर्यग्वामानुषोवादेवोवाभूतस्तावत्कालंलभतेसुषमैंद्रियंविविधं॥ टीका॥ सुभेनयुक्तः आत्मासुभेणकहि
यैसुभपरिनामनिकरियुक्तःकहियैपरनयाजुहै॥ आत्माकहियैजीवसोतिर्यकूजीवसोतिर्यकूवादेवोवामानु
षोवाभूतः तिर्यकूवाकहियै॥ अथवाउत्तम॥ तिर्यंचदेवोवाकहियै॥ अथवाउत्तम॥ तिर्यंचदेवोवाकहियै॥ अ
थवादेवतामानुषोवाकहियै। अथवाउत्तममनुष्यभूतः कहियैऐसाहोइ॥ तावत्कालंइंद्रियेसुषंविविधंल
भते तावत्कालंकहियै॥ जितनेकोतिर्यंचमनुष्यदेवताकीथितीहै॥ तितनेकालताई॥ ऐंद्रियंकहियैइंद्रियजनि
तविविधंसुषंकहियैनानाप्रकारसुषलभतेकहियैपावैहै॥ भावार्थ॥ यहजीवसुभपरिनामतैतिर्यंचमनुष्यदेव ४७

इनितीनिगतिविषैउपजैहै। तहांअनेकप्रकारइंद्रियजनितसुखकाभोक्ताहोरहेहे ॥आगेंइंद्रियसुखकोदुखहीकहेहे
॥गाथा॥ सोखंसहावसिद्धं णत्थिसुराणंपिसिद्धमुवदेसे। तेदेहवेदणट्टा रमंतिविसयेसुरम्मेसु ॥७१॥ सौख्यंस्वभा-
वसिद्धं। नास्तिसुराणामपिसिद्धमुपदेसे। तेदेहवेदनार्त्तारमंति। विषयेषुरम्येषु ॥टीका॥ सुराणांअपिस्वभाव
सिद्धंसौख्यंनास्तिसुराणां। अपिकहियेअनिमादिआदरिधिसंयुक्त जेदेवताहै। तिनकेंभीस्वभावसिद्धकहि
येआत्माकेनिजस्वभावकरिहुवाहै। ऐसाजुसौख्यकहियै। अतींद्रियसुखसोनास्तिकहियेनांहीहै। उपदेसे।
सिद्धं। उपदेसेकहियेभगवन्तनीतपरमागमविषैं। सिद्धंकहियेघहकथनसाध्याहे। तेदेहवेदनार्त्तारम्ये
षुविषयेषु। रमंतितेकहिये तेदेवतादेह वेदनार्त्ताकहिये देहकीजोवेदनापीडा। तिसकरिआर्त्ताकं
हिये। पीडतहुएरम्येषुकहियेमनोग्यजुहे। विषयेषुकहियेइंद्रियविषयतिनिविषैरमंतिकहियेक्रीडाकरेहे
॥भावार्थ॥ सबसुखनिविषैप्रधानदेवताकेसुखहे। तिनिकेंभीआत्मीकसुखनांही। केवलस्वाभाविकदुखही
है॥ जिसितेदेवताशरीरविषैरूपजुहेपिसाच। तिनिकेंपीडाकरिकेंमनोज्ञविषयनिविषैझंपातकरेहे जैसेकोई
पुरुषकिसिहीएकचसुकरिपीडतहिवापरवततेंगिरिमरेहे। तैसेइंद्रियनिकेदुखतेंविषयनिविषैलागेहे। तातै

प्र० इंद्रियसुषदुषरूपहीहैहे ॥ अज्ञाणबुद्धितैंसुषसाप्रतिभासैहै । एकदुषहीकेसुषदुःषएदोनौंभेदहै ॥ युक्तिकरि
५८ इंद्रियसुषकोंदुःषकरिपाया ॥ आगेंइंद्रियसुषकासाधकजुहैसुभोपयोगतिसकौंपापकाकारनजुहैअसुभोप
योगतिसकीसमानतादिषावैहै ॥ गाथा ॥ णरणारयतिरियसुरा ॥ भजंतिजदिदेहसंभवंदुक्खं ॥ किहसोसुहोवअसु
हो उवउगोहवदिजीवाणं ॥ ७२ ॥ नरनारकतिर्यक्सुराभजंति ॥ यदिदेहसंभवंदुषंकथंसशुभोवा ॥ सुभोउप
योगोभवतिजीवानां ॥ टीका यदिनरनारकतिर्यक्सुराः देहसंभवंदुषंभजंति । यदिकहियेजोनरनारकतिर्यक
सुराः कहियेमनुष्यनारकीतिर्यंचदेवताएच्यारिगतिकेजीव देहसंभवंकहिये ॥ सरीरतेंउत्पन्नदुषकहियेपीडा
तिसभजंतिकहियेसेवैहैतदाजीवानांसउपयोग ॥ शुभवाअसुभः कथंभवतितदाकहियेतौजीवानांकहि
ये चतुर्गतिसंबंधीजीवानिकैसउपयोगकहिये ॥ सोचैतन्यरूपपरिनामसुभकहियेभला ॥ वाकहियेअथवा
असुभःकहियेबुरा । कथंकहियेकैसेंभवतिकहियेहोइहै ॥ भावार्थ ॥ सुभोपयोगकाफलदेवतानिकीसंपतिहै
असुभोपयोगकाफलनरनारकादिआपदाहै ॥ इनिदोन्योंविषैआत्मीकसुषनाही ॥ तातेंइनिदोनौंजागेंदुष ५८
हीहै ॥ तातेंपरमार्थतेंजोविचारियेतौसुभोपयोगअसुभोपयोगइनिदोनौंमैंभेदकछूनाहीकायेकीसमांन

तातैकारनकैभीसमानताहै॥ आगेअसुभोपयोगतैउत्पंन्नजुहैफलवंतपुन्य॥ तिसहिविसेषताकरिस्थनकै
निमितिदियाइकरिनिषेधियेहै॥ गाथा॥ कुलिसाउहचक्कहरा॥ सुहोवउगप्पगेहिंभोगेहिं॥ देहादीणंविद्धिं॥ करं
तिसुहिदाइवाभिरदा॥ ७३॥ कुलिसायुधचक्रधराः शुभोपयोगात्मकैर्भोगैः॥ देहादीनांवृद्धिंकुर्वंतिसुखिताइ-
वाभिरताः॥ टीका॥ कुलिशायुधचक्रधराः कुलायुधकहियेइन्द्र॥ चक्रधराः कहियेचक्रवर्त्तितेशुभोपयोगात्मकैर्भो
गैः कहियेसुभोपयोगतैउत्पंन्नजुहै॥ भोगतिनकरिदेहादीनांवृद्धिंकुर्वंतिदेहादीनांकहियेसरीरइंद्रियादिककी
वृद्धिकहियेअधिकाईतिसहिकुर्वंतिकहियेकरैहै॥ कैसेहैइंद्रियविषयनिविषैलगेहै॥ भावार्थ॥ सुभोपयोग
तैइंद्रचक्रवर्त्तिआदिकविसेषफलहोइहै॥ परंतुतेइंद्रादिकमनवांछितभोगनिकरिसरीरादिककोंपोषैहै
सुषीनांही॥ सुषीसेदीसैहै॥ जैसेजोकसविकारलोहूकोंअतिलगणिस्यौपीवैहैसुषमानैहै॥ पाछैदुषका-
कारनहै॥ तैसेइहसांकरिसुषमांनरहेहै॥ आगेअसुभोंपयोगजनितपुण्यकोंदुषकाकारणप्रगटकरैहै॥ गाथा॥ ज
दिसंतिहिपुण्णाणियपरिणामसमुब्भवाणिविविहाणि॥ जणयंतिविसयतन्हं॥ जीवाणंदेवदंताणं॥ ७४॥ यदिसं
तिहिपुण्यानिचपरिणामसमुद्भवानिविविधानिजनयंति॥ विषयतृष्णांजीवानांदेवतानां॥ टीका॥ यदि

प्र॰ ४९ हिपरिणामसमुद्भवानिविविधानितृष्णानिसंति॥यदिकहियेजोहिकहियेनिश्चयस्योपरिनामसमुद्भवानि
कहियेसुभोपयोगपरिनामतेउत्पन्नविविधानिकहियेनानाप्रकारतृष्णानिसंतिकहियेहुणएवहै॥तदादे
वतानांजीवानांत्रस्नांजणयंति॥तदाकहियेतौदेवतानांकहियेदेवतानिनांई॥जीवानांकहियेसमस्त
संसारीजीवनकौत्रस्नाकहियेअत्यंतअभिलाषातिसाहिजणयंतिकहियेउपजावैहै॥भावार्थ॥जोसु
भोपयोगतेंअनेकप्रकारिकेपुन्यउपजेहैतौ॥उपजोकुछुविसेषतानांहीकाहेतेंजातेंतेइंद्रदेवतातें
लेसमस्तजीवनकौत्रिस्नाउपजावैहै॥जहांत्रस्नाहैतहांदुखहै॥त्रस्नाविनाइंद्रियनिविषैप्रवृत्तिन
होइजैसेत्रस्नाविनाजोंकसविकाररुधिरकौनपीवे॥तैसैंसंसारीनिकौविषयप्रवृतिहै॥जातेंपुन्यत्रस्ना
कौधरेहै॥आगेंपुण्यकौदुखबीजप्रगटिकहेहैं॥गाथा॥तेपुणउदिण्णतिण्हादुहिदातण्हाहिविसयसु
हिदातण्हाहिविसयसोख्वानि॥इच्छंतिअणुहवंतिय॥आमरणंदुःखसंतत्ता॥७५॥तेपुणरुदीर्णत्रि
स्नादुःखितात्रस्नाभिर्विषयसौख्यानि॥इच्छंत्यनुभवंतिचामरणंदुःखसंतप्ताः॥टीकाः॥पुनःतेविषयसौ ४९
ख्यानिआमरणंइच्छंतिचअनुभवंति॥पुनःकहियेवहुरितेकहियेदेवताईसमस्तजीवराासीविषयसे

ख्यानि कहिये ॥ इंद्रियविषयतैं उत्पंन्न जु है सुष तिनहि आमरणां कहिये मरणपर्यंत इछंति कहिये चाहै है ॥ च क
हिये बहुरि अनुभवंति कहिये भोगवै है ॥ कैसे है संसारी जीव उदीरणत्रस्ना कहिये उदै है त्रस्ना जिनकै ॥ बहुरि कैसे
है त्रस्नाभिर्दुषिता ॥ त्रस्नाभिः कहिये अति अभिलाषनि करि दुषिता कहिये पीडित है ॥ बहुरि कैसे है ॥ दुषसंतप्ता
कहिये दुषनि करि जलै है ॥ भावार्थ ॥ जैसे मृगत्रस्नातैं जलकी अभिलाष ॥ तैसे ए संसारी जीव पुण्यतैं उत्प
न्न त्रस्नानि करि विषयनितैं सुष चाहै है ॥ तिस त्रिस्नातैं उपज्या जु है दुष संताप तिसकौं सहि सकतै नांही ॥ ता
तैं वारंवार विषयनिकौं भोगवै है ॥ जवतांई मरैगे तवतांई जैसे जोंक त्रिस्नानि करि क्रमस्यौं सविकार रुधिरकौं तवतां
ई पीवै है ॥ जवतांई नासकौं प्राप्त होइ है ॥ तैसे पापी जोंकनिकी सी नाईं पुंन्यवंत जीव भी त्रस्नाबीज करि वध्या
है ॥ दुषरूप अंकूर तिस करि क्रमस्यौं विषयनिकौं चाहै है ॥ तिनहीकौं बारबार भोगवै है ॥ जवतांई क्षय जाहिंगे
तवतांई क्लिष्ट होइ है ॥ तातैं पुन्य सुष लाभ दुषके कारण है ॥ सर्वथा त्याज्य है ॥ आगे बहुरि पुंन्यजनित जु है इंद्रि
यसुष तिसकौं बहुत प्रकार करि दुषरूप करै है ॥ गाथा ॥ सपरं बाधासहियं विछिण्णं बंधकारणं विसमं ॥ यदिंद्रि
येः लब्धं तत्सौख्यं दुःषमेव तथा ॥ जं इंदियेहि लद्धं ॥ तं सुखं दुःषमेव तहा ॥ ७६ ॥ सपरं बाधासहितं ॥ विछिण्णं

प्र·
५०
बंधकारणं विषमं। यदिंद्रियैः लब्धं तत्सौख्यं दुःखमेव तथा॥ टीका। यत इंद्रियै लब्धं सौख्यं तत्त दुःखमेव यत
कहिये तो इंद्रियैः कहिये॥ पंच इंद्रियनि करि लब्धं कहिये प्राप्त हूवा है॥ सोख्य कहिये सुख तत्त कहिये सो दु
खमेव कहिये दुःखरूप ही है॥ कैसा है इंद्रिय सुख सपरं कहिये पराधीन है॥ बहुरि कैसा है बाधासहितं क
हिये॥ क्षुधा तृषादिक बाधा संयुक्त है॥ बहुरि कैसा है विछिन्नं कहिये असाता के उदयसे ती विनासिक हो
य है॥ बहुरि कैसा है बंधकारणं कहिये कर्मबंध का कारन है जहां इंद्रिय सुख होइ है॥ तहां अवस्य रागा
दिक द्वेषनिकी सेन्या होइ है तिसके अनुसार अवस्य कर्म धूलि लागै है॥ ताते बंध का कारन है बहु
रि कैसा है विषमं कहिये। अति चंचलता करि वृद्धि हानि लिये है॥ ऐसा जु है सुख सो दुःख ही है कैसा प्रका
र दुःख है तथा कहिये जिस प्रकार सुख पराधीन बाधासहित विनासीक बंध का कारन विषम इनि पंच
प्रकार विसेष लिये है तैसे ही दुःख भी है॥ पराधीन है॥ बाधासहित है॥ विनासीक है॥ बंध का कारन है॥ वि
षम है॥ ऐसे पंच विसेष दुःख भी लागे है॥ ताते ऐसा रीति सुख दुःख एक है॥ इसि सुख का कारन पुन्य है॥ सो भी
पाप की नाई दुःख का कारन है॥ परमार्थ ते पुन्य पाप मे कोई भेद नाही॥ जैसे सुख दुःख मे भेद नाही॥ आगे ५०

पुन्यपापमैंकोईभेदनांही ॥ ऐसानिश्चयकरिकैइसिकथनकौसंक्षेपकरैहैं ॥ गाथा ॥ णहिमण्णदिजोएवं ॥ णत्थिवि
सेसोत्तिपुण्णपावाणं ॥ हिंडदिघोरमपारं ॥ संसारंमोहसंछण्णो ॥ ७७ ॥ नहिमन्यतेयएवं ॥ नास्तिविसेषइतिपुण्यपाप
योः ॥ हिंडदिघोरमपारं ॥ संसारमोहसंछन्नो ॥ टीका ॥ यएवनहिमन्यते ॥ यःकहियेजोपुरुषएवंकहियेइसिप्रकारन
हिकहियेनांही ॥ मन्यतेकहियेमानैहै ॥ किसप्रकारपुन्यपापयोः ॥ विसेषनास्तिइतिपुण्यपापयोःकहियेपुन्य
अरुपापइनिदोनोंविषैविसेषकहियेभेदसोनास्तिकहियेनांहीहै ॥ पुण्यपापविषैपरमार्थतैकछूभेदनांही
दोनोंसमानहै ॥ ऐसाजोनमानैसोमोहसंछन्नघोरमपारंतकूअपारसंसारहीडन्त ॥ सकहियेसोपुरुषमोह
संछन्नकहियै ॥ मोहकरिआछादितहुवाघोरकहियेभयानककूअपारकहियेनांहीहैपारजिसका ॥ ऐसाजो
संसारकहियेइससंसारतिसहिंडतिकहियेभ्रमैहै ॥ भावार्थ ॥ जैसैनिश्चयसैंसुभअसुभमैंभेदनांही ॥ औरसु
खदुखमैंभेदनांही ॥ तैसैंहीपरमार्थतैपुन्यपापविषैभेदनांही ॥ दोन्योंजागेआत्मधर्मकाअभावहै ॥ जोकोईइ
निपुन्यपापविषैअहंकारकरिकैभेदमानैहै ॥ सोसोनैलोहकीबेडीकीसीनांई ॥ अहमिंद्रइंद्रचक्रवर्त्यादिसं
पदानिकाकारणपरिपूर्णधर्मानुरागअवलंबैहै ॥ सोजीवसरागभावनिकरिसुद्धोपयोगप्राप्तितैरहितज

प्र वर्त्तोईसंसारविषैहै।तबताईंसंसारसरीरसंबंधीदुखनिकाभोक्ताहोइहै॥आगेकहैहै।किजोपुरुषसुभासुभोप
५२ योगविषैएकतामांनकरिसमस्तरागदोषकौहरिकरैहै॥सोसमस्तदुखक्षयकेंनिमित्तिनिश्चलचित्तहोइसुद्धो
पयोगकौअंगीकारकरैहै।गाथा।एवंविदिदत्थोजो।दव्वेसुणरागमेदिदोसंवा।उवओगविसुद्धोसो।खवेदिदेहुद्
वंदुखं।७८।एवंविदितार्थोयोद्रव्येषुरागमेतिद्वेषंवाउपयोगविशुद्धःसःक्षपयतिदेहोद्भवंदुखं॥टीका।यःएवं
विदितार्थःद्रव्येषुरागंवाद्वेषंनइतियःकहियेजोपुरुषएवंकहियेइसिप्रकारविदितार्थःकहियेजान्याहैस्वरूप
जिननें।किंपुन्यपापदोउसमानहैद्रव्येषुकहियेपरद्रव्यविषैरागंकहियेप्रीतिभाव॥वाअथवाद्वेषंकहियेद्वे
षभावतिहिनकहियेनांहीं।इतिकहियेप्राप्तहोइहै॥जोपुरुषपुन्यपापकौएकताजाणिपरद्रव्यविषैरागदोष
भावनांहींपरिणवैहै।सःउपयोगविशुद्धः।देहोद्भवंदुखंक्षपयति॥सःकहियेसोपुरुषउपयोगविशुद्धःक
हियेउपयोगकरिनिर्मलसुद्धोपयोगीहुवा।देहोद्भवंकहियेदेहतैउत्पन्नदुखंकहियेपीडातिसहिक्षपयति
कहियेक्षपावैहै॥भावार्थ॥जोपुरुषसुभअसुभभावनिकौजानिस्वरूपविषैस्थिरहोइ।परद्रव्यविषैरा ५१
गदोषछोडै॥सोदुखसरीरसंबंधीदुखनिकानासकरैहै।कैसेंजैसेंलोहपिंडकैविषैप्रवेशरहितअ

ग्निघणाहकीचोटकौंनांहीसहैहै॥ऐसैदुःषकौंनांहीसहैहैं॥तातैंमुनिकौंएकसुद्धोपयोगहीसरनहोउ॥जिसतैंदुषात्म
कसंसारकाअभावहोइ॥आगैंकहेहैं॥किसैसमस्तपापजोगछांडिचारित्रकौंप्राप्तहुवाहो॥जोसुभोपयोगकेवसिहोइ
रहै॥अरुमोहकौंदूरिनकरौतौमेरैसुद्धात्माकालाभकहांतैंहोइ॥इसवास्तैमोहनासकौंउद्यमीहै॥गाथा॥चत्ताप
वारंभंसमुट्ठिदोवासुहम्मिचरियम्मि॥णजहदिजदिमोहादी॥णलहदिसोअप्पगंसुद्धं॥७९॥त्यक्त्वापापारंभंसमु
त्थितोवासुभेचरित्रे॥नजहातिपरिमोहादीनलभतेसआत्मकंशुद्धं॥टीका॥पापारंभंत्यक्त्वा॥पापारंभकहियैपाप
काकारणजुहैआरंभतिससहितव्यापारकहियैछांडिकरि॥वासुभेचरित्रेसमुत्थितःवाकहिएअथवासुभेकहिएसु
भचरित्रेकहियेचारित्रविषैसमुत्थितःकहियेप्रवर्तैहै॥जोपुरुषपरिमोहादीनननजहाति॥यदिकहियैजोमोहा
दीनकहियै॥मोहरागदोषकौंनजहातिकहियैनाहीत्यागेहै॥तदासशुद्धआत्मकंनलभते॥तदाकहियैतौ
सकहियैसोपुरुषशुद्धकहिएकर्म्मकलंकरहितआत्मककहियेजीवद्रव्यतिसहिनलभतेकहियेनाहीपा
वैहै॥भावार्थ॥जोपुरुषसर्वपापक्रियाकौंछांडिपरमसामायिकनामचारित्रकीप्रतिज्ञाकरिकैंसुभोपयो
गक्रियारूपजुहैमोहठगकीचोरीसोतितसकैंजौवसिहोइहैतौमोहसेनाकौंनजीतैगा॥औरतिसकेनिक

ट-आगैकदुयसंकटहैनिर्मल आत्माकौंपावैगा॥ इसहीतासैंतैमोहसेनाकेजीतवेकैनिमत्तमैकमरवांधीहै आ

प्र. गेकहैहैं: किमुद्यकरिमोहसेनाकैंसेजीतीजाइ। ऐसैउपायकौंविचारैहै॥ गाथा। जोजाणदिअरहंतंदव्वत्तगुणत्तपज्जय

५२ त्तेहिं सोजाणदिअप्पाणं॥ मोहोखलुजादितस्सलयं॥ ८०॥ योजानातिअर्हंतंद्रव्यत्वगुणत्वपर्यायत्वैः सजानात्यात्मा

नंमोहः खलुयातितस्यलयं॥ टीका॥ यः द्रव्यगुणत्वपर्ययत्वैः अर्हंतंजानाति॥ यः कहियेजोपुरुषद्रव्यत्वगुण

त्वपर्यायत्वैः कहियेद्रव्यगुणपर्यायानिकरिअर्हंतकहियेप्रत्यक्षवीतरागदेव॥ तिसहिजानातिकहियेजानैहै नि

श्चयकरिअर्हंतजैसाशुद्धहै: तैसाही आत्माशुद्धहै तातैंअर्हंतकेजानैतैं आत्माजानियेहै॥ खलुतस्यमोहः लयं

याति॥ खलुकहियैनिश्चयसौं॥ तस्यकहियैतिसपुरुषकामोहः॥ एमोहकर्म्मलयंकहियेनासकौंजातिकहियेप्रा

प्तहोइहै। जोआत्माकौंजानैहै तिसकैंमोहकानासहोइहै॥ भावार्थ॥ जैसैआगिकीआचकरियकायाहुवासो

नानिकलंकहोइहै॥ तैसाअर्हंतकास्वरूपहै॥ तातैइनिकेजानतैंआत्माजानियेहै। जोगुणपर्यायनिकाआधा

रहैसोद्रव्यहै। जेद्रव्यकेज्ञानादिकविसेषगुणहै। तेगुणकहियै॥ जेएकसमयमात्रकालकेप्रमाणकरिचैतन्य ५२

केपरणतिभेदतेपर्याय॥ एद्रव्यगुणपर्यायप्रथमहीअर्हंतकेअपनेमनकेविषैअवधारै॥ पाछैआपकौइनि

द्रव्यगुणपर्यायपनिकरि जाणै। पाछैं निजस्वरूपकौं अभेद अनुभवै इसि आत्माके त्रिकालसंबंधी पर्याय एक
कालकै विषै अनुभवै। जैसें हारविषै मोती मोये हैं। भेदरूप नाहीं कीजिये है। तैसें आत्माविषै चित्पर्याय अभे
द कीजे जैसें हारविषै उज्वलगुनकौं अभेद नांही कीजिए है। तैसें आत्माविषै चेतनागुनकौं गोपै। जैसें पहरनवाला
पुरुष अभेद हारकी सोभाकै सुखकौं वेदै है। तैसें केवल अभेद आत्मीक सुखकौं वेदै है। ऐसी अवस्थाके हो
तें अगले समयनिविषै छीन होय है। कर्ता कर्म क्रियाका भेद तातें क्रियारहित चैतन्यमात्र भावकौं प्राप्त होय है। जै
सै चोषा रत्नका अकंपनिर्मलप्रकास होय है। तैसें चैतन्यप्रकास निर्मल होय है। तब आश्रयविना मोह अंधकार
का नास होइ है। जो इसि भांति स्वरूपकी प्राप्ति होइ है। तौ मोहकी सेनाके जीतवेका उपाय पाया। आगैं कहै हैं कि
यद्यपि स्वरूपचिंतामनि पाया है। तथापि प्रमाद रूप चोर है। तातें सावधान जागौ हूं। गाथा। जीवो ववगदमोहो उ
वलद्धो तच्चमप्पणो सम्मं जहदि जदि रागदोसे। सो अप्पाणं लहदि सुद्धं। ८१। जीवो व्यपगतमोह उपलब्धवांस्तत्त्वमा
त्मनः सम्यक्। जहाति यदि रागद्वेषौ स आत्मानं लभते शुद्धं। टीका। व्यपगतः मोहः जीवः आत्मनः। तत्वं
सम्यक् उपलब्धवान् व्यपगतमोहः। कहिये दूरि भया है मोह जिसतें। ऐसा जु है जीव। कहिये आत्मा सो आ

प्र· त्मवः तत्वंकहियेआत्माकास्वरूपसम्यकूकहियेयथार्थः उपलब्धवानकहियेप्राप्तहूवाहोता। यदिरागद्वेषौजं
५३ हाति। यदिकहियेजोरागद्वेषोकहियेरागद्वेषजुद्वेषप्रमादभावइनाहिजहातिकहियेत्यागे। तदासुद्धंआत्मानं
लभते। तदाकहियेसोजीवसुद्धंकहियेनिर्मलआत्मानंकहियेनिजस्वरूपकूंलभतेकहियेप्राप्तहोयहै। जो
कोईभव्यएवंहीकहुंजुउपायतिसकरिमोहकानासकरै। आत्मतत्वस्वरूपचिंतामनिरत्नकोंपावै। जोपायेउपरां
तिरागद्वेषप्रमादकेवसिनहोइतौसुद्धात्माकोंअनुभवै। अरुजौरागद्वेषकेवसिहोइतौप्रमादकेवसिहूवा
सुद्धात्मअनुभवचिंतामनिकोंलुटावै। पाछैअंतः करणविषैमहादुखपावै। जातैरागद्वेषकेविनासिवेकेंनि
मित्तिमुझकोंसावधानहोइजागनाजोग्यहै। आगेकहैहै किभगवंतदेवइनेआपअनुभवकरिएहीएकमो
क्षमार्गदिखायायाऐसीबुद्धिकीटीकताकरैहै। गाथा। सव्वेवियअरहंता तेणविधाणेणखविदकम्मंसा किं
च्चातधोवदेसं णिव्वादातेणमोतेसिं। ८२। सर्वेपिचार्हंतस्तेनविधानेनक्षपितकर्मांसाः। कृत्वातथोपदेशं
निर्वृतास्तेनमस्तेभ्यः। टीका। सर्वेपिअर्हंतस्तेनविधानेनक्षपितकर्मांसा सर्वेपिकहियेसमस्तहीअर्हंतः क
हियेभगवंततीर्थंकरदेवः। तेनविधानेनकहियेतिसपूर्वोक्तविधानकरिक्षपितः कर्मांसाः। क्षपितकहि ५३

हियेविनासेहैकर्म्मनिकेभेदजिनहुऐ॥ जेतीर्थंकरहुएतिनहूप्रथमहीअरहंतकास्वरूपद्रव्यगुणपर्यायकरिजा-
न्या॥ याछैतेसाहीअपनास्वरूपअनुभयायाछैसमस्तकर्मनिकानासकीया॥ चततथैःपदेशंकृत्वातेनिर्वृत्ताः
चकहियेबहुरितथाकहियेतिसहीभांतिउपदेसं॥ कृत्वाकहियेउपदेसकरिकै॥ तेकहियेतेवीतरागदेवनिर्वृत्ताः
कहियेमोक्षकौप्राप्तहूए॥ जिसप्रकारअरहंतस्वरूपजानिआपाअनुभया॥ तिसहीप्रकारऔरभव्यनिकौउपदे-
सदीनाकिएकयहीमोक्षमार्गहै॥ औरनांही॥ औरअजयंचमकालविषैभीसोईउपदेशचल्याजावहै॥ तेभ्य
नम॥ तेभ्यनम॥ तेभ्यः कहियेतिनअरहंतदेवनिकौनमः कहियेनमस्कारहोउ॥ भावार्थ॥ वहुतविस्तारकहांल-
गिकरैं॥ परहेउहमारीबुद्धिटीकरैहै॥ भगवतवीतरागवडेहीउपगारीहै॥ जिनहुंअैसाउपदेशदीनाहै॥ तातेतिन
कौत्रिकालनमस्कारहोहु॥ आगैसुद्धमलाभकाघातकमोह॥ तिसकेस्वभावकोऔरभूमिकाकोकहैहै॥ गाथा॥ द-
व्वादिसमुमूढो॥ भावोजीवस्सहवदिमोहोत्ति॥ खुब्भदितेणोच्छण्णो॥ पप्पारागंवदोसंवा॥८३॥ द्रव्यादिकेषुमूढोभा-
वोजीवस्यभवतिमोहइति॥ क्षुभ्यतितेनावच्छन्नः॥ प्राप्यरागंवाद्वेषंवा॥ टीका॥ द्रव्यादिकेषुजीवस्यमूढभावः॥
मोहइतिभवतिद्रव्यादिकेषुकहियेद्रव्यगुणपर्याय॥ इनिविषैजीवस्यचकहियेआत्माकामूढभा॥ वकहियेति

प्र· परीतिरज्ञानभावः ॥ सो मोह इति कहिये मोह ऐसे नाम भवति कहिये है यहां ॥ जिस भावकरि इह जीव धतूरे खाया
५४ वाले पुरुषकी सी नांई ॥ द्रव्यगुणपर्यायनिकौं यथार्थ न जानै न श्रद्दहै सो भाव मोह कहिये ॥ तेनअवच्छन्नत्वा
त्ति तेन कहिये ॥ तिस दर्सणमोहकरि अवच्छन्न कहिये आच्छादित जु है ॥ यह जीव क्षुभ्यति कहिये क्षोभकौं प्रा
प्त होइ है ॥ इसि दर्सणमोहकै उदै परद्रव्यकौं आत्मद्रव्य जानै है ॥ परगुणकौं आत्मगुण मानै है ॥ परपर्याय
कौं आत्मपर्याय जानै अंगीकार करै है ॥ कहा करि क्षोभकौं प्राप्त होइ है रज्यन्वा द्वेष्टि वा प्राप्य रागं वा कहिये अथ
वा रागभावकौं ॥ द्वेषं वा कहिये ॥ अथवा द्वेषभावकौं प्राप्य कहिये पायकरि ॥ भावार्थ ॥ अनादि अविद्यातैं उत्प
न्न भया है जु परविषै आत्मसंस्कार ॥ तातैं सदाकाल परद्रव्यकौं अंगीकार करै है ॥ इंद्रियनिकै वसि होइ ॥ द्र
ष्ट अनिष्ट पदार्थनिविषै रागद्वेषभावनि करि है तभावकौं प्राप्त होइ है ॥ यद्यपि संसारके सर्व विषय एकसे
है ॥ तथापि रागदोषभावकरि भले बुरे लागै है ॥ जैसै काहू एक नदी का पुल बध्या है ॥ अल्पं जल पानी के प्रवा
हकरि भंग हुवा दोइ खंड होइ है ॥ तैसैं इह आत्मा मोह करि रागद्वेषभावकरि परिणया हूवा तिस भावकौं धरता अति
आकुल है ॥ तातैं एक मोह के रागद्वेष मोह ए तीन भेद जानने ॥ आगै कहै है ॥ कि यह मोह अनिष्ट कार्य ५४

करनकौकारनहै ॥ तातैंइसितीणप्रकारमोहकाक्षयकरणायोग्यहै ॥ गाथा ॥ मोहेणवरागेणव ॥ दोसेण
वपरिणदस्सजीवस्स ॥ जायदिविविधोबंधो तम्हातेसंखवइदव्वा ॥ ८४ ॥ मोहेनवारागेणवाद्वेषेणवा ॥ परि
णतस्यजीवस्यजायते ॥ विविधोबंधस्तस्मात्तेसंक्षपयितव्या ॥ टीका ॥ मोहेनवारागेणवाद्वेषेनवापरिणत
स्यजीवस्यविविधःबंधजायते ॥ मोहेनवाकहिए ॥ अथवामोहभावकरि ॥ रागेणवाकहियै ॥ अथवाप्री
तिभावकरि ॥ द्वेषेनवाकहियै ॥ अथवादुष्टभावकरिपरिणतस्यकहियै ॥ परनयाजुहैजीवस्यकहियै आ
त्माति ॥ सकरिविविधिः कहियैनानाप्रकार ॥ आरज्ञानिबंधकहियैकर्मकाबंधजायतेकहियैउपजैहै ॥ तस्मा
त्तेसंक्षपयितव्या ॥ तस्मात्कहियैतिसतेतेकहियै ॥ वेरागद्वेषमोहभावसंक्षपयितव्या ॥ कहियेमूलसत्तातै
क्षपावणेयोग्यहै ॥ भावार्थ ॥ जातैंजीवकैरागद्वेषमोहभावनिकरिअनेकबंधहोइहै ॥ तातैंइनतीनिभा
वनिकानासकरनाजोग्यहै जैसेमोहकरिअज्ञानमदमत्तवराहस्तीअतिप्रीति ॥ भावकरिसियाईहस्ति
नीकेंआलिंगनकरैहै दोषभावकरिअन्यहस्तीकोलरिवेकौसन्मुषधावैहै ॥ अनकीछानिकरिआछा
दितजुहै ॥ गर्त्ततिसविषैगिरैहै ॥ तहांप्रकारनहारेपुरुषनानाप्रकारवांधैहै जैसेमोहरागद्वेषकरि इस

प्र° ५५ जीवकेनाणाप्रकारबंधहोइरहेहै॥तातेजोबंधतैंछुटवाचाहेहै॥ताकौएअणिष्टकार्यकेकारणतीण
भावसलसतातेसर्वथांप्रकारक्षयकरणैजोग्यहै॥आगैयहकहेहै॥किएतीनिभाववइनिलक्षणानिक
रिउपजतेदेपीज्ञासकरिवेजोग्यहै॥गाथा॥अट्टेअजधागहणं॥करुणाभावोयतिरियमणुएसु॥विसए
सुचप्पसंगो॥मोहस्सेदाणिलिंगाणि॥८५॥अर्थेअयथाग्रहणं॥करुनाभावश्चतिर्यग्मनुजेषु॥विषयं
सुचप्रसंगोमोहस्यैतानिलिंगानि॥टीका॥अर्थअयथाग्रहणंकहिएपदार्थविषै॥अयथाग्रहणंक
हियेऔरकाऔरजाननाचकहियै॥तिर्यग्मनुजेषुकरुनाभावः॥चकहियैवहुरितिर्यचकहियै॥तिर्यंच
मनुजेषुकहियेमनुष्य॥इननिविषैकरुनाभाव॥कहियेममताकरिदयाभावः चविषयेषुसंगः चकहिये
वहुरिविषयेषुकहिये॥इष्टअणिष्टपदार्थनिविषैप्रसंगकहियेलगनाइष्टविषैप्रीतिकरिलगना॥अ
णिष्टविषैद्वेषभावकरि॥मोहस्यएतानिलिंगानि॥मोहस्यकहियेतीणप्रकारमोहके॥एतानिकहिए
एतेलिंगानिकहियेचिहनहै॥भावार्थ॥पदार्थनिकौऔरकाऔरजानना॥औरमनुष्यतिर्यंचनिवि ५५
षैममत्वबुद्धिकरिदयाएतोदर्सनमोहकेचिहनहै॥इष्टविषैप्रीतियहरागकालक्षण॥अणिष्टविषैद्वे

एभावयहदोषकालस्वरूप॥ इनिलक्षणनिकरि इसिमोहकौं उपजावैहै ऐसि अवश्यनासकरनांजोग्यहै॥ आगें
मोहकेनासकौं औरउपायकौविचारकहैहै॥ गाथा॥ जिणसत्थादो अट्ठे॥ पच्चक्खादीहिंबुज्झदोणियमा॥ खी
यदिमोहोवचयो॥ तम्हासत्थंसमधिदव्वं॥ ८६॥ जिनसास्त्रादर्थान् प्रत्यक्षादिभिर्बुध्यमानस्यनियमात्क्षीय
तेमोहोपचयः तस्मात्सास्त्रंसमध्येतव्यं॥ टीका॥ प्रत्यक्षादिभिः जिनसास्त्रात्॥ अर्थान्बुध्यमानस्य नि
यमात्मोहोपचयः क्षीयते प्रत्यक्षादिभिः कहिये प्रत्यक्षपरोक्षआदिदेप्रमांनज्ञानकरि॥ जिनसास्त्रात्
कहियेवीतरागप्रनीतजिआगमतें॥ अर्थान्कहियेपदार्थनिकौं बुध्यमानस्य कहियेजाननहाराजुहैपुरषतिसकै
मोहोपचयः कहियेमोहकासमूहहै॥ उपचयसंचयविपरीतज्ञानश्रद्धानसो क्षीयतेकहियेनासकौंप्राप्तहोय
है॥ तस्मात्सास्त्रंसमध्येतव्यं तस्मात्कहियेतिसकारनतें॥ सास्त्रकहियेजिनागम॥ सोसमध्येतव्यं॥ कहियेभ
लेंप्रकारअभ्यासकरणांजोग्यहै॥ भावार्थ॥ जोपूर्वेंहीअर्हंतकेद्रव्यगुनपर्यायकेजाननेंतेंआत्माकाज्ञा
नहै॥ ऐसामोहकेनासकाउपायवतायाथासोउपायअरउपायकौंभीचाहहै॥ काहेतेंजातेंद्रव्यगुनपर्या
यकाज्ञानआगमविनाहोतानाहीं॥ तातेंआगमभीवडाउपायहै॥ जिनिकिनहींभव्यजीवनेंमपघमहोद्गा।

प्र.सा नम्रभिक्षाकेविषैगमनकीनाहै॥ सोजीवकुणायनिकरिअथेंद्रिनाजिनप्रनीतआगमकेंप्रमानकरिकेउ
५६ करैहै॥ तिसआगमकेवलकरितिसकेआत्मज्ञानशक्तिसंपदाप्रगटहोइहै॥ औरप्रत्यक्षपरोक्षादिज्ञान
करिसमस्तवस्तुनिकाज्ञाताद्रष्टाहोइहै॥ तववस्तकेयथार्थज्ञानतेंमोहकानासहोयहै॥ तातेंमोहनाशके
उपायनिविषैशब्दब्रह्मकीसेवाजोग्यहै॥ भावश्रुतकेवलिकरिदृढपरिदृढपरिनामकरिकेंआगमपारअ
भ्यासवढाहै॥ आगेंकहैहैं॥ किजिणप्रनीतशब्दब्रह्मविषैसवपदार्थनिकेकथनकीयथार्थस्थितिहै॥ गा
था॥ दव्वाणिगुणातेसिं॥ पज्जायाअट्ठसण्णयाभणिया॥ तेसुगुणपज्जयाणं॥ अप्पादव्वत्तिउवदेसो॥ द्र
व्याणिगुणास्तेषांपर्याया अर्थसंज्ञयाभनिता॥ तेषुगुणपर्यायाणां आत्माद्रव्यमित्युपदेशः॥ टीका॥ द्रव्या
णितेषांगुणाः पर्याया॥ अर्थसंज्ञयाभनिता॥ द्रव्याणिकहियेगुणपर्यायनिआधारसमस्तद्रव्यतेषांक
हियेतिनिद्रव्यनिकेगुणाः॥ कहियेसहभूगुण॥ औरक्रमवर्त्तीपर्याया कहियेक्रमवर्त्तीपर्याय अर्थसंज्ञयाकहियेए
अर्थऐसेनामकरिभनिता कहियेकहेहैं॥ द्रव्यगुणपर्यायइनतीनकाअर्थऐसानामहै॥ जातेंसमयसमय ५६
अपनेगुणपर्यायनिप्रतिप्राप्तहोयहै॥ अथवागुणपर्यायनिकरिअपनेसरूपकौप्राप्तहोयहै॥ तातेंद्रव्य

कानामअर्थऐसाकहिये॥अर्थशब्दकाअर्थगमनहैप्राप्तहोताहै॥जातेंआधारभूतद्रव्यकोंप्राप्तहोइ
है॥अथवाद्रव्यकरिजेप्राप्तकीजियेहै॥तातैंगुणनिकानामअर्थऐसाकहिये॥जातैंक्रमपरिणामनिकरि
द्रव्यकोंप्राप्तहोइहै॥अथवाद्रव्यकरिप्राप्तहोइहै॥अपनेस्वरूपकों॥तातैंपर्यायनिकानामअर्थकहिये
जैसैंसोनाअपनेपीतत्वआदिकगुननिकौं॥औरकुंडलादिपर्यायनिकौंप्राप्तहोइहै॥अथवागुणपर्या
यनिकरिसुवर्णत्वकोंप्राप्तहोइहै॥तातैंसोनेकौंअर्थकहियेहै॥औरजैसैंआधारभूतसोनेकौंपीतत्वआ
दिगुणकौंप्राप्तहोइहै॥तातैंपीतत्वआदिगुनकोंअर्थकहिये॥औरजैसैंक्रमपरिणामकरिकुंडलादिपर्याय
सोनेकोंप्राप्तहोयहै॥अथवासोनेकरिप्राप्तहोइहै॥तातैंकुंडलादिपर्यायनिकोंअर्थकहिये॥इसिप्रकारद्रव्य
गुणपर्यायनिकानामअर्थजाननां॥तेषुगुणपर्यायाणांआत्माद्रव्यमितिउपदेशः॥तेषुकहियेतिनिद्रव्यगु
णपर्यायनिविषै॥गुणपर्यायाणांअकहियेगुणपर्यायनिकाआत्माकहिये॥सर्वस्वद्रव्यंकहियेद्रव्यहै॥इ
तिकहियेऐसाउपदेश॥कहियेभगवंतकाकथनहै॥भावार्थ॥जैसैंसुवर्णपीतत्वआदिगुनकुंडलादिपर्यायनि
विषै॥पीतत्वादिगुनकुंडलादिपर्यायनिकोंसोनेतैंजुदाएनांही॥तातैंसुवर्णअपनैंगुणपर्यायनिका

प्र सर्व स्व है आधार है तैसै द्रव्य गुण पर्याय विषै गुणपर्यायनिकों द्रव्यतैं जुदाइगी नांही तातैं द्रव्य अपने
५७ गुणपर्यायनिका सर्वस्व है आधार है द्रव्य कौ गुणपर्यायनिस्यौं अभेद है आगै कहै हैं किमोहकै नासक
रनका उपाय जिणेस्वरका उपदेस है ताकै लाभ हूए संतैं भी पुरुषार्थका प्रकार है तातैं उद्यम करियावे है गाथा
जो मोहरागदोसे णिहणदि उवलह्व जोह्नमुवदेसं सो सव्वदुक्खमोक्खं पावदि अचिरेण कालेण ८८ मो
मोहरागद्वेषान्निहंति उपलभ्य जैनमुपदेशं सर्वदुःखमोक्षं प्राप्नोत्यचिरेन कालेन टीका यः जैनं उपदे
शं उपलभ्य मोहरागद्वेषान् निहंति यः कहिये जो पुरुष जैनं कहिये जिनवीतराग प्रनीत उपदेशं कहिये आ
त्मधर्मोपदेश उपलभ्य तै कहिये पायकरि मोहरागदोषान् मोहरागद्वेषभावनि निहंति कहिये घातै
है सः अचिरेन कालेन सर्वदुःखमोक्षं प्राप्नोति सः कहिये सो पुरुष अचिरेन कालेन कहिये थोडे ही से का
लकरि सर्वदुख मोक्षं कहिये सर्वदुखनैं भिन्न अवस्थाकौं प्राप्नोति कहिये पावे है भावार्थ इस अनादि
संसार विषै काहू एक प्रकार करि थोडे की सी धार जिनराज प्रनीत उपदेस कौं पायकरि मोहरागद्वेषसत्रुनि ५७
कौं मारै है सो जीव सिताव ही सर्वदुखतैं मुक्त होइ है सुखी होइ है जैसै सुभट तरवारि करि शत्रुकौं मारै है

तातेसर्वप्रकारउद्यमीहोइकरिमोहकेक्षपकरनेकौपुरुषार्थविषैसावधानमेतिष्ठौहो ॥आगेकहैहै॥
कि स्वपरभेदविज्ञानकीसिद्धितै ॥ मोहकानासहोइहै ॥ तातेस्वपरकेभेदकूदिखावैहै ॥गाथा॥ णाणप्पगमप्पा
णं परंच दव्वत्तणाहिसंबंधं ॥ जाणदिजदिणिछयदो जोसोमोहक्खयंकुनदि ॥८९॥ ज्ञानात्मकमात्मानंपरं
चद्रव्यत्वेनाभिसंबंधं ॥ जानातियदिनिश्चयतोय ॥ सोमोहक्षयंकरोति ॥टीका॥ यः यदिनिश्चयतः ज्ञा
नात्मकंआत्मानंद्रव्यत्वेनअभिसंबंधजानातिचपरं ॥ यः कहियेजोजीवयदिकहियेजौनिश्चयतः निश्च
यसो ॥ ज्ञानात्मकंकहियेज्ञानरूपहै ॥ आत्मानंकहियेपरमात्मातिसहिद्रव्यत्वेनकहियेमें ॥ अथपरंद्रव्य
स्वरूपकरिअभिसंबंधकहियेसंयुक्तजानातिकहियेजानैहै ॥ चकहियेवहुरिपरंकहियेपुद्गलादिकअ
चेतनतिसहिजडस्वरूपकरिआत्मातैभिन्न ॥ अथपरंअचेतनद्रव्यस्वरूपसंयुक्तजानैहै ॥ समोहक्ष
यंकरोति ॥ सः कहियेसोजीवमोहक्षयंकहियेमोहकानासंकरोतिकहियेकरैहै ॥भावार्थ॥ जोजीवचै
तन्यभावकरिपरस्वभावतैभिन्नआपकौजानैहै ॥ परकौजडस्वभावकरिपरजानैहै ॥ सोजीवस्वपरवि
वेकीहै ॥ सोईभेदविज्ञानीमोहकाक्षयकरैहै ॥ तातेस्वपरविवेकनिमित्तमैयत्नकरौहो ॥ आगेसर्वथास्व

प्र.सा परविवेककौंसिद्धिजिणप्रनीतिआगमतैंकरनीजोग्यहै॥ऐसाकहिइसकथनकौंसंखेपकरैहै॥गाथा॥त
५८ म्हाजिणमागादो॥गुणेहिंआदंपरंचदव्वेसु॥अभिगछदुनिम्मोहं॥इछदिजदिअप्पणोअप्पा॥९०॥तस्मा
ज्जिणमार्गाद्गुणैरात्मानंपरंद्रव्येषुअभिगच्छतुनिर्मोहमिच्छतियद्यात्मनःमात्मा॥टीका॥तस्मात्
जिणमार्गात्तिगुणैद्रव्येषुआत्मानंचपरंअभिगच्छतु॥तस्मात्कहियेतिसकारनतैंजिनमार्गात्क
हियेवीतरागकथितआगमतैंगुनै॥कहियेविसेषगुननिकरिद्रव्येषुकहियेछद्रव्यनिविषैंआत्मानंक
हियेआपकौंचकहियेबहुरि॥परंकहियेअन्यद्रव्यनिकेविषैंअभिगछतुकहियेजानहु॥यदिआत्माआ
त्मनः॥निर्मोहंइछतियदिकहियेजोआत्माकहियेयहजीवआत्मन॥कहियेआपकौंनिर्मोहंकहियेमोहरहित
वीतरागभावकौंइछतिकहियेचाहैहै॥जोयहआत्माअपनेंसुद्धस्वरूपकौंचाहैहै॥तौजिनमार्गकौंसेयस्वपर
विवेकीहोहु॥द्रव्यनिकेगुनदोइप्रकारहैं॥एकसामान्यगुनहै॥एकविसेषगुनहै॥तिनमैंसामान्यगुननिकरि ५८
द्रव्यनिकाभेदकौंकरै॥सोईस्वपरभेदकाप्रकारकहियेहै॥सोयहअनादिनिधनकाहूतैंउतपंन्ननांहीहै
अंतरबाहिरदेदीप्यमानस्वपरकाजाननहारामेराज्ञहैचैतन्यगुन॥तासौंअन्यजीवद्रव्यअथवा॥अ

जीवद्रव्यरतनहिजुहैकरिमैंआपविषैतीनकालअविनासीअपनेस्वरूपकौंजानौहौं॥ औरजुहैंआकासधर्म्मअ
धर्म्मकालपुद्गलअन्यजीवतिनिकैंभिंनभिंनविशेषलक्षनकरिआपनैंआपनैंविषैतीनकालअविनासी॥ इनकै
स्वरूपकौंमैंजानौंहौं॥ तातैंमैंआकासनाहीं॥ धर्मनाहीं॥ अधर्मनाहीं॥ कालनाहीं॥ पुद्गलनाहींअन्यआत्मानांहीं॥ मैंजुहौं
सोमैंहौं॥ जैसैंएकघरमैंअनेकदीपकबालिधरेहैं॥ तिनसबनिकाप्रकासतिसएकघरमैंएकठाहै॥ एकहूद्रव्यएकक्षेत्र
विषैहै॥ तथापिमेराद्रव्यइनतैंभिन्नहै॥ जैसैंसबदीपकनिकाप्रकासैखरौकैंमिलापसारीसैंहै॥ जौसूक्ष्मदृष्टिविचारि
देखियैतौजिसदीपककाप्रकासहैसोतिसहीकाहै॥ तैसैंयहमेरास्वरूपसबतैंमोकौंजुदादिखावैहै॥ इसिप्रकारस्वपरविवेककैं
आत्माकैंपरमोहरूपअंकूरेकीउत्पत्तिनहोइ॥ आगैंयहकहैहै॥ किवीतरागकथितपदार्थकीश्रद्धाविनाइसकैंध
र्मकालाभनहोइ॥ गाथा॥ सत्तासंबंधेदेसवि॥ सेसेजोहिणेवसामण्णेसद्दहदिणसोसवणोतत्तोधम्मोणसंभव
दि॥९१॥ सत्तासंबंधानेतान्सविसेषान्योहिनैवश्रामण्येश्रद्दधातिनसश्रमणःततोधर्मोनसंभवति॥ टीका॥ यः
कहियैजोश्रामण्यकहियेयतिअवस्थाविषैसत्तासंबंधान्कहियेसत्ताभावकरिसामान्यअस्तित्वसंयुक्तहै॥ औरस
विसेषानकहियेअपनेंअपनेंविसेषभावनिकरिविसेषअस्तित्वसंयुक्तहै॥ ऐसेंजुएतान्कहियेछहद्रव्यनिकौंनै

प्र॰ वकहियेनांहीअरधातिकहियेनांहीअरहैहै॥ भावार्थ॥ अस्तित्वदोयप्रकारहै एकसामान्यअस्तित्व। एकविसे
५९ षअस्तित्वहै जैसेजलजातिकरिअरुएकहै॥ आम्रनीमादिकभेदकरिजुदेजुदेहै तैसेद्रव्यसामान्यअस्तित्वकरिएक
है॥ विसेषअस्तित्वकरिअपरोंनुदेजुदेस्वरूपकोंलियेहै॥ जोजीवमुनिअवस्थाधरिकेंऐसेसामान्यविशेषभावक
रियुक्ति। द्रव्यनिकोंनजानेहै॥ स्वपरभेदलियेनअरहैहै॥ सअमनःसकहियेसोजीवअमनकहिये॥ मुनिनकहियेनाही
है॥ सोजीवविनाकार्ययोहीसम्यक्तभावविना॥ द्रव्यलिंगअवस्थाधरिकेंखेदखिन्नहोयहै ततःधर्मनसंभवति ततः
कहियेतिसद्रव्यलिंगीमुनिकेंधर्मकहिये॥ सुद्धोपयोगरूपआत्मीकधर्मसोनकहियेनांहीसंभवतिकहियेहोयहै।
॥भावार्थ॥ जैसेधूलिकाधोवनवालापुरुषन्यारियासोरोंकीकरिकाकापिछाननवालानहोय॥ सुवर्णनहीकरु
करैपरंतुतिसकैसोंगौंकालाभनाहोइ तैसेलक्षननिकरिस्वपरभेदविनांवीतरागआत्मातत्वकीप्राप्तस्वधर्म
इसिजीवकेंउपजेनांही॥ वहुतेरासंयमादिविषयेखेदकरौ॥ एवंहीआचार्यनेठवसंपयामिसम्मं॥ इसिगाथाकरिसाम्य
भावमोक्षकाकारनअंगीकारकीयाथा॥ ओरचारित्रंखलुधम्मोइसिगाथाकरिसाम्यधर्मकीसिद्धिहैनोंकोसुद्धो ५९
पयोगअधिकारआरंभ्याथासोसुद्धोपयोगभलीभांतिदियाथा॥ इसकेमतियच्छीजुयेसंसारकेकारणसुभअसुभो

पयोगतैमलतैविध्वंसकिए। औरसुद्धोपयोगकेप्रसादतैंउत्पन्नभयेजुअतींद्रियज्ञानसुखतिनकासरूपकरि

अबमैसुधोपयोगकेप्रसादतैपरभावभिंन्नआत्मीकभावकरिएगोउत्कृष्टपरमात्मदशाकौप्राप्तहूवाजुकछु

करनाथासोकिया। अत्यंतआकुलतातेरहितहोइ। संसारभेदवासनातैमुक्तहूवाआपमैसाक्षातधर्मस्व

रूपहोइतिष्टोहै॥गाथा॥जोणिहदमोहदिट्ठी। आगमकुसलोविरागचरियम्मि। अब्भुट्ठिदोमहप्पा। धम्मो

त्तिविसेसिदोसमणो॥९२। यानिहितमोहदृष्टि। रागमकुसलोविरागचरिते। अभ्युत्थितोमहात्मा। धर्मइ

तिविशेषतः। श्रमनः॥अर्थ॥यौनिहितमोहदृष्टि। यः कहियेजोपुरुषनिहतः कहियेघातीहै। मोहदृष्टिः

कहियेदर्सनमोहदृष्टि॥जिननैऐसासाक्षातसम्यग्दृष्टीहै। औरआगमकुसलः आगमकहियेजिनप्रनीत

सिद्धांतासविषैकुसलकहियेप्रवीणहै। सम्यगग्यानीहै। बहुरिविरागचरितेअभ्युत्थित। विरागकहियेरा

गभावरहितचरितेकहियेचारित्रतिसविषै। अभ्युत्थितः कहियेसावधानहै। वीतरागचारित्रविषैउद्यमी

है॥बहुरिमहात्माकहियेबडाहै। उत्कृष्टकहियेमोक्षपदार्थसाधिवेकौप्रधानहै ऐसाजोहैसश्रमणधर्म

इतिविसेषतः। श्रमनः कहियेसोमुनीस्वरधर्मइतिकहियेधर्मऐसेनामविसेषतः कहियेविशेषणनिकरि

प्र ९० कह्यौहै॥ भावार्थ॥ यहआत्मावीतरागभावनियरणयासतासास्वतधर्मस्वरूपहोयहै॥ इसिआत्मौधातर
कमोहदृष्टिहै सोतौआगमप्रमांण॥ आत्मज्ञानकरिविनासहुईतातेमेरैबहुरिउपजैगीनाहीं॥ वीतरागचा
रित्रकरियहमेराआत्माशत्रुरहितसदाकालधर्मरूपनिःकंपतिष्ठैहै॥ बहुरिविस्तारकीश्रोताहोइ॥ स्यात्पदग
र्भितजिनप्रनीतसद्जयवंतहोउ॥ जिसकेप्रसादतैआत्मतत्वकीप्राप्तिहुई॥ तिसआत्मकाप्राप्तितैअनादि
कालतैंबाधीमोहगांठिछूटी॥ परमवीतरागचारित्रस्वरूपसुद्धोपयोगजयवंतहोउजिसकेप्रसादतैयहआ-
त्माधर्मरूपहूवा॥ इतिश्रीप्रवचनसारसिद्धांतस्यबालावबोधटीकायांपंडितहेमराजविरचितेज्ञानतत्वप्र
पनाधिकारः॥ ॥१॥ ॥अथज्ञेयतत्वकथनंप्रारभ्यते॥ ॥आगेज्ञेय
तत्वकथनकरैहै॥ तिसहीविषैप्रथमहीपदार्थकाद्रव्यगुनपर्यायस्वरूपकहैहै॥ गाथा॥ अत्थोखलुदव्वम
उ॥ दव्वाणिगुणप्पगाणिभणिदाणि॥ तेहिंपुणपज्जाया॥ पज्जयमूढाहिपरसमया॥१॥ अर्थः॥ खलुद्रव्यम ९०
यो द्रव्याणिगुणात्मकानिभणितानि॥ तैस्तुपुनः पर्याय॥ पर्ययमूढाहिपरसमया॥ टीका॥ खलुआर्थः द्रव्यम
यः॥ खलुकहियैनिश्चयस्यौअर्थकहियैज्ञानगोचरज्ञेयपदार्थसोद्रव्यमयकहियै॥ सामान्यस्वरूपवस्तुमय

है।तुद्रव्याणिगुणात्मकाणिभणितानि॥तुकहियेएवहरिद्रव्याणिकहियेसमस्तद्रव्यतेगुनात्मकानिकहिये।अनं
तगुनात्मकहै।पुनः तैः पर्यायाः गुणाः गुणाः कहियेवहरितेकहियेतिनद्रव्यगुनकेपरिणामनकरिपर्यायकहियेद्र
व्यपर्यायगुणपर्यायऐसेदोयभेदसंयुक्तपर्यायहै॥पर्ययमूढाहिपरसमयापर्ययमूढाः कहिये।असुद्धपर्याय
केविषैमूढहै।जेआत्मबुद्धिकरिअज्ञानीपर्यायहीकौंद्रव्यमानेहैतेजीवपरसमयाकहियेमिथ्यादृष्टीहै
॥भावार्थ॥जोज्ञेयपदार्थहैसोसमस्तगुणपर्यायसंयुक्तहै॥जातेंद्रव्यकहियेद्रव्यजुहैतेएकआधारभूतअ
नंतगुनात्मकहै॥गुनकानामविस्तारभीहै॥औरपर्यायकानामआयतहै॥विस्तारचौडाईकहिये॥आयतल
वाईकहिये॥एगुनजुहैतेचौडाईरूपहै॥जुअविनासीसदासहभूतहै॥पर्यायलंवाईरूपहै॥जातेंअतीतअना
गतवर्त्तमानकालविषैक्रमवर्त्तीहै॥पर्यायजुहैतेदोयप्रकारहै॥एकद्रव्यपर्यायहैएकगुणपर्यायहै॥इनिवि
षैंअसुद्धद्रव्यपर्यायकालक्षनकहियेहै॥अनेकद्रव्यमिलिकरिएकपर्यायकाजुहोनासोद्रव्यपर्यायकहिये
सोद्रव्यपर्यायदोयप्रकारहै॥एकसमानजातीय॥एकअसमानजातीय॥समानजातीयपर्यायसोकहियेजु
अनेकपुद्गलमिलिकरिएकस्कंधहोइ॥द्व्यणुकत्र्यणुकइत्यादि॥एकजातिद्रव्यमिलिहोइअसमानजातीयप

प्र॰ ६१ र्यायसो कहिये। जु जीव पुद्गल मिली देव मनुष्यादि पर्याय होहि। भिन्नजाति द्रव्यके संयोगतें गुणकी परनति
रूप गुणपर्याय कहिये। सो भी दोय प्रकार है। एक स्वभावगुणपर्याय। एक विभावगुणपर्याय। स्वभावगुणप
र्याय सो है जो समस्त द्रव्यनि अपने अगुरुलघुगुननिकरि समय समय षट्गुनी हानिवृद्धिरूप परणवै। विभावगुण
पर्याय सो कहिये जो वर्णादिगुण पुद्गलखंधविषैं ज्ञानादिगुण जीवविषैं पुद्गलके संयोग पहली। आगली दसाविषै
हीन अधिक होइ परणवै॥ आगें इनिका दृष्टांत दिखावै है॥ जैसैं वस्त्र स्थूल आदि गुणनिकरि अपनी परणतिरूप प
र्यायकरि सिद्ध है तातैं गुणपर्यायमय है। तैसैं द्रव्य गुणपर्यायमय है। जैसैं वस्त्र स्थूल आदि गुणपर्यायनितैं जुदा नांही है तै
सैं द्रव्य गुणात्मक है। जैसैं वस्त्रका दोय पाटतीरा पाट मिलि समानजातीय होय है तैसैं पुद्गलीक द्व्यणुक अणुका
दि अनेक समानपर्याय होय है जैसैं वस्त्र रेसमके कपासके दोय तीरा पाट मिलि करि असमानजातीय द्रव्यप
र्याय होय है तैसैं जीव पुद्गल मिलि देव मनुष्यादि असमानजातीय द्रव्यपर्याय होइ है जैसैं वस्त्रविषैं स्थूल अप
नै अगुरुलघुगुणनिकरि कालक्रमसेती नानाप्रकार परिणमन तें। अनेकता लिये स्थूलादि गुणनिका स्वभाव ६१
पर्याय है तैसैं ही समस्त द्रव्यनिविषैं सूक्ष्म अपणै। अपणै अगुरुलघुगुणद्वारकरि समय समय षट्गुनी हानि।

वृद्धि करि नाना रूप स्वभाव गुण पर्याय है ॥ जैसे वस्त्र विषै अन्य द्रव्य के संयोग तै वर्णादि गुणनि कू रक्त पीतादि भेदनि करि पू
र्व उत्तर अवस्था विषै हीण अधिक रूप विभाव गुण पर्याय है तैसे ही पुद्गल विषै वर्णादि गुण की आत्मा विषै ज्ञाना
दिक की परसंयोग तै पूर्व उत्तर ॥ अवस्था विषै हीण अधिक विभाव गुण पर्याय होइ है इस भांति सब द्रव्यनि के गुण
पर्याय भगवान की बानी दिखावै है ॥ अन्यमती नाही दिखावै है ॥ जातै अन्यमत एक एक नय अवलंबी है ॥ तातै सर्व द्रव्य
गुण पर्याय के स्वरूप कौ नाही दिखावै ॥ केई एक जीव असुद्ध पर्याय ही कौ आपमौ मानि मिथ्या मोह कौ प्राप्त हुए परसम
य होइ है ॥ आगै इसी व्याख्यान का संयोग पाय स्वसमय का स्वरूप कहै है ॥ गाथा ॥ जे पज्जएसु णिरदा ॥ जीवा परस
मय त्ति णिद्दिट्ठा ॥ आदसहावम्मि ठिदा ॥ ते सगसमया मुणेदव्वा ॥ २ ॥ ये पर्यायेषु निरता जीवाः परसमयका इति नि
र्दिष्टाः ॥ आत्मस्वभावे स्थिताः ॥ ते स्वकसमया ज्ञातव्याः ॥ टीका ॥ जे जीवाः पर्यायेषु निरताः ॥ ये जीवाः कहिये अ
ज्ञानी जीव पर्यायेषु कहिये मनुष्यादि पर्याय विषै निरताः ॥ कहिये अहंकार ममता करि लगे है ॥ ते परसमयकाः इ
ति निर्दिष्टाः ॥ ते कहिये ते जीव परसमयक कहिये परसमयरत इति कहिये ऐसे निर्दिष्टा कहिये भगवंत देव नै दिखा
ए है ॥ जे आत्मस्वभावे स्थिताः ते स्वकसमया ज्ञातव्याः ॥ जे कहिये जे सम्यग्दृष्टी जीव ॥ आत्मस्वभावे कहिये ॥ अ

प्र. परोरसैगात्मस्वभावविषैस्थिताकहियेए आत्मसभावजोनानितिहैहै॥ तेकहियेतेजीवसकसमयकहिये॥ सस्समयर
६२ तज्ञातव्याकहियेजाणणाजोग्यहै॥ जेजीवद्रव्यपहलात्मकअसमानजातीपद्रव्यपर्यायकैआश्रभएहै॥ जोअ
समानजातीयपर्यायसमस्तअविद्याकामूलहै॥ ताकैआत्मभावनाणआश्रभएहै॥ आत्मस्वरूपभावना
विषैणपंगुकहै॥ पर्यायनिविषैहीलागेहै॥ तेजीवदुर्णिवारएकांतदृष्टीहै॥ मैमनुष्यहौयहमेरासरीरहै ऐसेअ
हंकारममताभावणिकरिविपरीतज्ञानीहै॥ अखंडितहैचैतन्यविलासरूपआत्मव्यवहारजोगिरैहै॥ अंगीकार
कियाहै समस्तनिघकियाकासमूह॥ पुत्रमित्रकलत्रादिमनुष्य व्यवहारकौआश्रितहोइरागीद्वेषीहोयरहै॥ पर
द्रव्यरूपकर्मनिस्यौमिलेहै॥ तातैपरसमयहोयहै॥ जेजीवअपणेद्रव्यगुणपर्यायनिकीभिन्नताएकताकरिथिरहै
भगवंतआत्माकास्वभावसमस्तविद्यानिकामूलतिसहीविषैआश्रभएहै॥ आत्मस्वभावकीभावनाकरिय
पोपरतिनाही॥ आत्मस्वभावविषैथिरतावधावैहै जेजीवसारजीवकुअणेकांतदृष्टिकरिदूरिकीनाहै॥ एक
तद्दृष्टिरूपपरिग्रहजिणाहूणोऐसेहै॥ मनुष्यादिगतिनिविषैतिनिविषैतिनिकेसरीरनिविषै॥ अहंकारमम ६२
ताभावकरिरहितहै॥ अणेकग्रहणविषैसंचारितहै॥ जैसैरत्नकादीपकएकरूपहै॥ तैसेआत्माकोएकरू

पराश्रभया है। अविचलित चैतन्यविलास आत्मव्यवहारकौ अंगीकार करै है। यो रीतिक्रियाकलापनो है मनुष्यविव
हार तिसके आश्रित नांही होइ है। रागद्वेषके अभावतें परमउदासीन है। समस्तपरद्रव्यकी संगति दूरि करिकें केवलस्व
द्रव्यविषै प्राप्त भए हैं। तातें स्वसमय है। स्वसमय आत्मभाव है। तिसविषै जे रत हैं ते धन्य हैं॥ आगें द्रव्यका लक्षन कहै हैं॥
गाथा॥ अपरिच्चत्तसहावेणुप्पादव्वयधुवत्तसंबंधं। गुणवं च सपज्जायं जं तं दव्वं ति वुच्चंति॥ ३॥ अपरित्यक्तस्वभावेनोत्पा
दव्ययध्रुवत्वसंबंधं गुणवच्च सपर्यायं यत्तद्द्रव्यमिति ब्रुवंति॥ टीका॥ यत् अपरित्यक्तस्वभावेन उत्पादव्ययध्रुवत्वसंबंधं
यत् कहियै जो अपरित्यक्त नांही। छुट्यौ है। स्वभावेन कहियै अपना अस्तित्वभाव। ताकरि उत्पादव्ययध्रुवत्वसंबंधं कहियै
जो उत्पादव्ययध्रुवसंयुक्त है। गुणवत्सपर्यायं च कहियै बहुरि जो गुणवत् कहियै। अनंतगुनामय है। सपर्यायं कहियै
पर्यायसंयुक्त है॥ तत् द्रव्यं इति ब्रुवंति॥ तत् कहियै तिसकौ आचार्य द्रव्यं इति कहियै द्रव्य असे नाम ब्रुवंति कहियै कहै
है॥ जो अपनै अस्तित्व करि आगें कहियैगा॥ तिस द्रव्यके लक्षण दोय है॥ एक उत्पादव्ययध्रौव्य। दूसरा गुणपर्याय। उ
त्पाद कहियै उपजना। व्यय कहियै विनासना॥ ध्रुव कहियै थिरता॥ गुण दोय प्रकार है। एक सामान्य है एक विसेष है।
अस्तित्व नास्तित्व॥ एकत्व॥ अन्यत्व॥ द्रव्यत्व॥ पर्यायत्व॥ सर्वगतत्व॥ असर्वगतत्व॥ सप्रदेशत्व॥ अप्रदेसत्व॥ मूर्तत्व

प्र अमूर्त्तत्व ॥ सक्रियत्व ॥ अक्रियत्व अचेतनत्व ॥ कर्त्तृत्व अकर्तृत्व ॥ भोक्तृत्व ॥ अभोक्तृत्व ॥ अगुरुत्व ॥ लघुत्व ॥ इत्या
६३ दि सामान्यगुण हैं ॥ अवगाहहेतुत्व ॥ गतिनिमित्तता ॥ स्थितिकारणत्व वर्त्तनायतनत्व ॥ रूपादिमत्व ॥ चेतनत्व ॥ इत्या
दि गुणविसेष हैं ॥ द्रव्यगुणकी परिणति के जु भेद ते पर्याय हैं ॥ द्रव्य इनि अन्यान्य द्रव्य यकुच गुणपर्याय करि लषियै है
ताते लक्ष कहिये ॥ इनि करि लषियै है ॥ ग्ल लक्षण कहिये ॥ इन स्यौं लक्ष्य लक्षण भेद करि जद्यपि भेद है ॥ तथापि
स्वरूपते द्रव्यविषै भेद नाही ॥ स्वरूपते लक्ष्य लक्षण एक ही है ॥ सोई दृष्टांत करि दिषाईये है ॥ जैसें वस्त्र पूर्वे ही म
लिणथा ॥ धोये उज्जलता करि उपज्या सो उपज्या कहिये ॥ तिस उत्पाद स्यौं वस्त्र कौं जुदा घगीना ही वस्त्र ही उ
ज्जलभाव करि परनया है ॥ तैसें द्रव्य बाहिरंग अंतरंग निमित्त पाइ एक पर्याय करि उत्पन्न है ॥ तिस उत्पाद स्यौं जु
दा नाही ॥ स्वरूप ही सै तिस पर्याय कौं परिनया है ॥ जैसें सोई वस्त्र निर्मलावस्था करि तौ उपज्या है ॥ मलिनप
र्याय करि नास भया है ॥ तिस नास स्यौं वस्त्र जुदा नाही ॥ आप ही मलिनभाव के नास कौं परणाया है ॥ तैसें सो ६३
ई द्रव्य आगली पर्याय करि तौ उत्पद्यमान है ॥ प्रथम अवस्था करि विनसै है तिस नास स्यौं जुदा नाही ॥ नासस्व
रूप कौ परणाया है ॥ जैसें सोई वस्त्र एक काल निर्मल अवस्था करि उत्पद्यमान है ॥ मलिनावस्था करि व्य

यहै॥ थिररूपवस्तुस्वभावकी अपेक्षा ध्रुवहै॥ तिसध्रुवस्यौं स्वरूपभेदकौं नाहीं धरैहै॥ आपहीताकौं परणावैहै
तैसैं द्रव्य एककालउत्तरअवस्थाकरि उपजैहै॥ पूर्वअवस्थाकरि विनसैहै॥ द्रव्य अवस्थाकरि ध्रुवहै॥ तिसध्रौ
व्यतें जुदोनाहीं॥ आपही ध्रौव्यभावकौं अवलंबैहै॥ जैसैं सोरवस्तुउज्वलकोमलादिगुणनिकरिलखियैहै ति
णगुणतें स्वरूपभेदकौं नाहीं धरैहै॥ स्वरूपहीतैं गुनात्मकहै तैसें द्रव्यनिजगुननिकरिलखियैहै तिणस्यौं भि
न्ननाहीं॥ स्वरूपतैं पर्यायभावकौं अवलंबैहै द्रव्यका उत्पादव्ययध्रौव्यलक्षणकह्या॥ औरगुणपर्यायलक्षण
कह्या॥ आगैं अस्तित्वदोयप्रकारकरिकहियैहै प्रथमस्वरूपास्तित्वदिखाइयैहै॥ मूल॥ सब्भावोहिसहावो गुणे
हिंसगपज्जएहिंचित्तेहिं दव्वस्ससव्वकालं उप्पादव्वयधुवत्तेहिं॥ ४ ॥ सद्भावोहिस्वभावोगुणैः स्वपर्यायैः॥ चित्रैः द्र
व्यस्यसर्वकालमुत्पादव्ययध्रुवत्वैः॥ अर्थ॥ द्रव्यस्यसर्वकालसद्भावः हिस्वभावद्रव्यस्य कहियै॥ गुणपर्यायात्मकजु
हैवस्तु तिसकासर्वकालकहियै तीनिकालविषैसद्भावकहियै अस्तित्व॥ हिकहियैनिश्चयस्यौंस्वभावकहि
यैसत्वभूतस्वभावहै॥ किनसंयुक्तहै द्रव्य अस्तित्वस्वभावगुणैःश्चित्रैः स्वकपर्यायैउत्पादव्ययध्रौवत्वैगुनैः
कहियैअपणेगुननिकरिसंयुक्त॥ चित्रैः कहियैनानाप्रकारस्वकपर्यायैकहियैसकीपरपर्यायनिकरि औरउत्पा

प्र॰सा ६४ व्ययध्रौव्यत्वैकरि हियै उत्पादव्ययध्रुवनिकरि संयुक्त है ॥ भावार्थ ॥ यह द्रव्यका अस्तित्वस्वभाव किसही करि निमत्ति
पाइ उपज्या नहीं ॥ अनादि अनंत एकरूप प्रवृत्तिकरि अविनासी है ॥ विभावस्वभावरूप नांही स्वाभाविक वि
भाव है गुणगुनीकै भेदकरि यद्यपि द्रव्यतें अस्तित्वगुणका भेद कीजियै है ॥ तथापि प्रदेसका भेद नांही ॥ तातें द्रव्य
सो एक है ॥ जैसें एक द्रव्यतें अन्य द्रव्यनिका अस्तित्व जुदा है ॥ तैसें एक द्रव्यविषै गुणपर्यायनिका अस्तित्व जुदा
नांही एक ही है ॥ काहेतें ॥ तातें द्रव्यकै अस्तित्वकरि गुणपर्यायनिका अस्तित्व है ॥ गुनपर्यायनिकै अस्तित्व
करि द्रव्यका अस्तित्व है ॥ यहै कथन सोनेके द्रष्टांत दिखाइयै है ॥ जैसें द्रव्यक्षेत्रकालभावनिकरि सुवर्णतें जुदा
नांही ॥ ऐसें जु पीततादिक गुन कुंडलादिक पर्याय तिनका कर्त्ता साधन आधार सोना है ॥ तातें सोनेका
अस्तित्वकरि तिनका अस्तित्व है ॥ जो सोना न होइ तौ पीततादि गुन कुंडलादि पर्याय भी न होइ ॥ सोना स्व
भाववंत है ऐसा स्वभाव है ॥ तैसें द्रव्यक्षेत्रकालभावनिकरि द्रव्यतें जुदे नांही ॥ ऐसें जु गुणपर्याय तिनके कर्त्ता
साधन आधार द्रव्य है ॥ तातें द्रव्यकै अस्तित्वकरि गुणपर्यायनिका अस्तित्व है ॥ जो द्रव्य न होइ तौ गुणपर्याय ६५
भी न होइ ॥ और जैसें द्रव्यक्षेत्रकालभावकरि पीततादि गुन कुंडलादि पर्याय है ॥ तातें पीततादि गुणकुंडला

रिपर्यायनिकीअस्तित्वतेंसोनेंकाअस्तित्वहै। जोपीततादिगुणकुंडलादिपर्यायनिकीअनहोहितोसोनाभीन
होइ तैसेंद्रव्यक्षेत्रकालभावनिकरिगुनपर्यायनितेंजुदानांही। ऐसाजुहैद्रव्यतिसकेंकर्त्तासाधनआधा
रगुणपर्यायहै। तातेंगुणपर्यायनिकेंअस्तित्वकरिद्रव्यकाअस्तित्वहै जोगुणपर्यायनहोइतौद्रव्यभीन हो
इ। औरतैसेंद्रव्यक्षेत्रकालभावकरिसोनेंतेंजुदेनांही। ऐसेंजुकडेका उत्पादकुंडलकाव्यय। पीततादिककाध्रौ
व्यएतीणभावतिनकाकर्त्तासाधनआधारसोनाहै। तातेंसोनेंकेंअस्तित्वकरिइनिकाअस्तित्वहै जोसो
नानहोइतोकटककाउत्पादकुंडलव्ययपीततादिध्रौव्यएनहोहि। तैसेंहीद्रव्यक्षेत्रकालभावकरिद्रव्यतेंजुदेनं
ही। ऐसेंजुउत्पादव्ययध्रौव्यइनितीनभावनिकाकर्त्तासाधनआधारसोनाहै। तातेंसोनेंकेंअस्तित्वका
रिइनकाअस्तित्वहै। जोसोनानहोइतौकटककाउत्पादकुंडलव्ययपीततादिध्रौव्यएनहोहि। तैसेंहीद्रव्यक्षे
त्रकालभावकरिद्रव्यतेंजुदेनांही। ऐसेंजुउत्पादव्ययध्रौव्यइनितीनभावनिकाकर्त्तासाधनआधार
द्रव्यहै। तातेंद्रव्यकाअस्तित्वकरिइनिकाअस्तित्वहै। जोद्रव्यनहोइतौउत्पादव्ययध्रौव्यभीनहोहि ऐ
रेंजैसेंद्रव्यक्षेत्रकालभावकरिकटककादिपर्यायकाउत्पादकुंडलादिपर्यायकाव्ययपीततादिगुणनिकरिध्रौ

ने

प्र·सा यनितीराभावनितेंजुदानांही ॥ ऐसाजुधोंनातिसकेकर्त्तासाधरा आधारएकदेशादिउत्पादकुंउत्पादिव्ययपर्य
६५ तितादिध्रौव्यएतीराभावहै ॥ तातेइनितीराभावनिके अस्तित्वकरिसोराका अस्तित्वहै ॥ जोएतीराभावन
होइतोसोनाभोनहोइ तैसेहीद्रव्यक्षेत्रकालभावकरिउत्पादव्ययध्रौव्यतेंजुदानांहो ॥ ऐसाजुद्रव्यातिसका
कर्त्तासाधरा आधारउत्पादव्ययध्रौव्यएतीभावहै ॥ तातेइनितीराभावके अस्तित्वकरिद्रव्यका अस्तित्वहै
जोएतीनिभावनहोहितोद्रव्यभीनहोय ॥ तातेयहवातासिधिभई ॥ द्रव्यगुनपर्यायका अस्तित्वएकहै ॥ ओर।
किसहीद्रव्यसोंमिलतानांही ॥ आगेसाद स्यास्तित्वकहैहै ॥ गाथा ॥ इहविविहलखराणं ॥ लखनमेगस
दन्निसब्बगदं ॥ उवदिसदाखलुधम्मं ॥ जिणवरवसहेणपणत्तं ॥ ५ ॥ इहविविधलक्षणानां ॥ लक्षणमेकं
सदित्तिसर्वगतं ॥ उपदिसताखलुधर्मंजिणवरवृषभेणप्रज्ञप्तं ॥ टीका ॥ इहाविविधलक्षणारां ॥ एकं
लक्षणसर्वगतंसत ॥ इतिजिणवरवृषभेनप्रज्ञप्तं ॥ यहकहिये इसलोकविषैविविधलक्षनानांकहियेना
नाप्रकारकेहैंलक्षणजिनके ऐसेंजुहैं अपनेंस्वरूपास्तित्वकरिजुदेजुदेद्रव्यातिनहूकाएकलक्षनंकहियेए
कलक्षणसर्वगतंकहिएसर्वद्रव्यनिविषेपाईये ॥ ऐसासतइतिकहियेसत ॥ ऐसेनामनिणवरवृषभे ६५

कहियेगणधरादिविषैवरतैजुहैवीतरागसर्वज्ञतिनकरिहुवौप्रगटसोकहियेकह्यौहै।कैसेहैंजिनवरवृषभधर्मकेउपदे
ष्टा।धर्मकहियेवस्तुकासुभावतिसकेउपदेष्टाकहियेउपदेशदाताहै॥भावार्थ॥स्वरूपास्तित्वजुहैसोद्रव्य
निकीविचित्रताविस्तारैहै।अन्यद्रव्यतैभेदकरिद्रव्यकीमर्यादाकरैहैविसेषलक्षनरूपहै।औरसत्ताऐसाजु
हैसादृश्यास्तित्वसोद्रव्यनिविषैभेदनाहींकरैहै।सबद्रव्यनिविषैप्रवर्तैहै।द्रव्यद्रव्यकीमर्यादाकोदूरिकरैहै।स
र्वगतहै।सामान्यलक्षणरूपहै।सत्ताऐसाजोहैसबदसोसबपदार्थकाज्ञानकरैहै।जोयोगमानियेतौकछु
पदार्थसतहोइ।कछुअसतहोइ।कछुसतअसतहोइ।कछुअवक्तव्यहोइ।सोयौतौनाहींसबपदार्थसत्तारू
पहै।यहदृष्टांतकरिदिखाइयेहै।जैसेवृक्षअपनेस्वरूपास्तित्वकरि।आम्रनीवादिभेदकरिअनेकप्रका
रहै।सादृश्यास्तित्वकरिवृक्षजातिकीअपेक्षाएकहैतैसद्रव्यअपनेस्वरूपास्तित्वकरिछहप्रकारहै।सा
दृस्यास्तित्वकरिसतअपेक्षासबएकहै।सतके।कहनेमैंछहोंद्रव्यआवैहै।जैसेजबवृक्षनिविषैस्वरूपा
स्तित्वकरिभेदकीजिये।तबसादृस्यास्तित्वरूपवृक्षकीजातिकरिएकतामिटिजायहै।औरजबसादृस्या
स्तित्वरूपवृक्षकीजातिकरिएकताकीजिये।तबस्वरूपास्तित्वतैउत्पन्ननानाप्रकारभेदमिटिजायहै

जैसेहीद्रव्यविषैस्वरूपास्तित्वकीअपेक्षासतरूपएकत्वमितिदिजायहै साद्रस्यास्तित्वकीअपेक्षानाना
प्रकारकेभेदमितिदिजायहै॥ भगवानकामतअनेकांतहै॥ जिसपक्षकीविवक्षाकीजियेसोईपक्षमु
ख्यहै॥ जिसकीविवक्षानकीजियेसोगौणहै॥ नयसबप्रमानहै॥ विवक्षाकीअपेक्षामुख्यगौणभेद
है॥ आगेद्रव्यनिकरिद्रव्यकीउत्पत्तिनिषेधैहै॥ औरद्रव्यतैसत्ताकीजुदायगीकोनिषेधैहै॥ गाथा
दव्वंसहावसिद्धं सदितिजिणातच्चदोसमक्खादो॥ सिद्धंतधआगमदोणेच्छदिजोसोहिपरसमउ॥ द्रव्यं
स्वभावसिद्धं॥ सदितिजिनास्तत्वतः॥ समाख्यातवंतः॥ सिद्धंतथागमतोनेच्छतिःयः सहिपरसमयः
टीका॥ द्रव्यस्वभावसिद्धं॥ द्रव्यकहियेगुणपर्यायात्मकवस्तुसोस्वभावसिद्धंकहियेअपणेस्वभावकरिनि
ष्पन्नहै॥ भावार्थ॥ द्रव्यजोहैसोअनादिनिधनहै॥ तातेद्रव्यकाहूकाकारनपायउपज्यानांही स्वयंसिद्ध
है॥ अपणेहीगुणपर्यायस्वरूपकोमूलसाधनअंगीकारकरिआपहीसिद्धहै॥ औरजोद्रव्यनिकरिकीजिये
है सोयहअन्यद्रव्यनांहीहोतापर्यायहोयहै॥ कहेतेंजातेंद्व्यापीताहैविणसिजायहै॥ जैसेपरमाणूनि
करिद्व्यणुकादिस्कंधहोयहै॥ जीवपुद्गलकरिमनुष्यादिहोयहै॥ एपर्यायहै॥ नौतनद्रव्यहोतेनांही॥ ताते

द्रव्यत्रिकालसिद्ध है ॥ सोइ स्वभावसिद्ध द्रव्य सत । इति जिना । तत्त्वतः समाख्यातवंत ॥ सत कहिये सत्तास्वरूप है ॥ इति कहि
ये ऐसा जिना कहिये भगवंतदेव ॥ तत्त्वतः कहिये स्वरूपतें समाख्यातवंतः कहियें कहे है ॥ भावार्थ ॥ जैसे स्वभावसिद्ध द्र
व्य है ॥ तैसे ही सत्ता भी स्वभावसिद्ध है ॥ परंतु सत्ता द्रव्यतें जुदी वस्तु नाही ॥ सत्ता गुण है ॥ इति सत्तागुणाके संबंध सो द्रव्य सत
कहिये है ॥ सत्ता गुण है ॥ द्रव्य गुनी है ॥ यद्यपि इनकै गुणगुनीभेद करि भेद है ॥ तथापि जैसे दंड दंडीकै भेद है ॥ तैसे नाही
भेद दोय प्रकार है ॥ एक प्रदेस करि भेद होइ है ॥ एक गुणगुनीभेद है ॥ सत्ता द्रव्य विषे प्रदेसभेद तौ नाही है ॥ कि सत्ताके प्र
देस जुदे है ॥ द्रव्यके जुदे है ॥ ऐसा भेद दंड दंडी विषे है सो तो मरोकिया ॥ सत्ता द्रव्य विषे गुणगुनीभेद है ॥ जो द्रव्य है सो गुण
नाही ॥ ऐसा संज्ञा संख्या लक्षणादि करि भेद कीजिए है ॥ सर्वथा प्रकार द्रव्य विषे भेद नाही कथंचित्प्रकार है ॥ कथंचित्प्र
कार नाही ॥ सोई द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नयके भेद करि दिखाई है ॥ जब पर्यायार्थिक नय करि द्रव्यका कथन कीजे ॥ त
ब द्रव्य गुणवंत है ॥ यह इसका गुण है ॥ जैसे वस्त्र द्रव्य है ॥ यह इसका उज्जल गुन है ॥ ऐसा गुणगुनीभेद दिखाई है ॥ इस भां
ति भेद दिखाइते गुनगुनीभेदरूप ज्ञानराग भी वदै है ॥ तिस ज्ञानके घुडते वस्तु अभेदके उछलते ॥ तिसका निमित्तिया पअभेद
रूप ज्ञानराग प्रगटै है ॥ तिस भेदरूप ज्ञानरागके उछलते गुणका भेद उछले है ॥ जैसे समुद्र विषै उछलते जलकल्लोल जु

प्र॰ जुदे नांही। तैसें पर्याय करि द्रव्यतें यह भेद जुदा नांही॥ पिसिभांति द्रव्यतैं सत्ता गुण जुदा नांही॥ द्रव्य सत्तस्वरूप है। गु-
६८ ण गुनी भेद है। स्वरूपतैं भेद नांही। द्रव्य सत्तस्वरूप है। जे ऐसा नांही मानै है। ते परसमय मिथ्यादृष्टी है॥ उत्पादव्यय
ध्रौव्ययुक्त जो है सो सत्त है। सत्त द्रव्य का लक्षन है। तातें आगें उत्पादव्यध्रौव्यस्वरूप के होतें संतें सत्त द्रव्य होइ है। पर
कथन करै है॥ गाथा॥ सद्ववट्ठिदं सहावे दव्वं दव्वस्स जो हि परिणामो। अत्थेसु सो सहावो ट्ठिदिसंभवणाससंब-
द्धो॥७॥ सदवस्थितं स्वभावे द्रव्यं द्रव्यस्य यो हि परिणामः। अर्थेषु स स्वभावः स्थितिसंभवनाशसंबद्धः॥ टीका॥ स्वभा-
वे अवस्थितं सत् द्रव्य स्वभावे। कहियै अपनी परणाति विषै अवस्थितं कहियै सदा काल तिष्ठै है। ऐसा जु सत् कहि-
ये सत्तारूप वस्तु सो द्रव्य कहियै गुणपर्यायनिविषै। यः कहियै जो हि कहियै निश्चयस्यो परिनामः कहियै परिनाम है। स
कहियै सो स्वभावः कहियै वस्तु का स्वभाव है। परिणाम कैसा है। स्थितिसंभवनाससंबद्धः। स्थित कहियै। ध्रौव्य सं-
भव कहियै उत्पाद। नास कहियै व्यय इन करि संबद्ध कहियै युक्त है॥ भावार्थ॥ द्रव्य का गुणपर्यायरूप जु परिण-
मन सो स्वभाव कहियै। सो स्वभाव उत्पादव्ययध्रौव्यसंयुक्त है। सो ई दिखाइए है। जैसे एक द्रव्य कै चौडाईरूप सू- ६८
क्ष्म प्रदेस अनेक हैं। तैसे ही समस्त द्रव्य कौ परनत्ति के प्रवाह करि लंबाईरूप अनेक सूक्ष्म परिणाम हैं। द्रव्य कौ चौडा-

ईप्रदेसहै। तेवाईयरनतिहैजातैसदाकालप्रदेसस्थायीहै। परंतुतिनप्रवाहरूपहैक्रमसोंहोइहै। तातैंलेवाईहैजे
सेद्रव्यकेप्रदेसजुदेजुदेहैं। तैसैहीत्रिकालसंबंधीपरिनामभीजुदेजुदेहैं। जैसेंतेप्रदेसअपनेअपनेस्थानविषै
पहिलेपहिलेप्रदेसनिकीअपेक्षाउत्पन्नहै। अगलेप्रदेसनिकीअपेक्षाव्ययरूपहै। एकद्रव्यसबप्रदेसनि।
विषै। तिसकीअपेक्षानउपजैहै। नव्ययहैध्रौव्यरूपहै। तातैंप्रदेसउत्पादव्ययध्रौव्यताकौंधरैहैं। तैसैंहीपरिना
मअपनेकालविषैपहिलेपिछलेपरिनामनकीअपेक्षाउत्पादव्ययरूपहै। सदाकालएकपरनतिप्रवाहकीअ
पेक्षाध्रौव्यहै। ऐसैंपरिनामउत्पादव्यय। ध्रौव्यतासंयुक्तहै। जोपरिनामहैसोईस्वभावहै। द्रव्यसभावकौंलियै
है। तातैंद्रव्यभीतीनिलक्षनसंयुक्तहै। जैसेंमोतीकीमालाअपनेतेजकरि। सोभायमानजुहैमुक्ताफल। तेयहि
पहिलेमोतीनिकीअपेक्षा। अगलेअगलेमोतीउत्पादरूपहै। सबविषैसूतएकहै। तिसकीअपेक्षाध्रौव्यहै। तै
सैहीद्रव्यविषैआगिलेपरिनामनकीअपेक्षाउत्पादरूपहै। पूर्वपरिनामनिकीअपेक्षाव्ययहै। द्रव्यप्रवाहकीअ
पेक्षाध्रौव्यहै। इसिभांतिद्रव्यतीनलक्षनसंयुक्तहै॥ आगैंकहैहैंकिउत्पादव्ययध्रौव्यएआपसमैंजुदेनाहींए
कहीहै॥ गाथा॥ णभवोभंगविहीणो। भंगोवाणत्थिसंभवविहीणो॥ उप्पादोवियभंगोणविणाधोव्वे।

प्र॰सा
६९

ध्रिणाश्रदेण ॥ ८ ॥ नभवोभंगविहीनो ॥ भंगोवानास्तिसंभवविहीणउत्पादोपिचभंगेणविनाध्रौव्येणार्थें
ण टीका ॥ भंगविहीनः भवः नभंगकहियेव्ययतिसकरिविहीणकहियेरहितहै ॥ भवः कहियेउत्पादसोनक
हियेनाहीहोयवाभंगः संभवविहीनः ॥ नास्तिवाकहियेवहुरिभंगः कहियेव्ययसोसंभवकहियेउत्पादति
सकरिविहीनकहियेरहितः ॥ नास्तिकहियेनहोय ॥ उत्पादःअपिचभंगः ॥ ध्रौव्येनअर्थेनविनानउत्पादकहियेउ
त्पत्ति ॥ अपिकहियेनिश्चयसो ॥ चकहियेवहुरिभंगकहियेनासएदोन्योंउत्पादव्ययध्रौव्येनकहियेनित्यथिर
रूप ॥ अर्थेणकहियेपदार्थतिसकरिविनाकहियेरहितनकहियेनहोयहै ॥ भावार्थ ॥ उत्पादव्ययविनानहोय
औरव्ययउत्पादविनानहोइ ॥ ध्रौव्यउत्पादविनानहोइ ॥ तातेजोईउत्पादसोईव्यय ॥ जोईव्ययसोईउत्पाद जे
उत्पादव्ययसोईध्रुव ॥ जोईध्रुवसोईउत्पादव्यय ॥ पहकथनदृष्टांतकरिदिखाईयेहै ॥ जोईघटउत्पादसोईमृत्पिं
डकानासहै ॥ काहेतैजातेंपर्यायकाउत्पादअन्यपर्यायकेनासतेंहोइहै ॥ जोईमृत्पिंडकानाससोईघटकाउ
त्पाद ॥ काहेतैजातेंपर्यायकानास ॥ अन्यपर्यायकेउत्पादतैहोयहै ॥ जोघटअरुपिंडकाउत्पादव्ययसोईमृ ६९
त्तिकाकीध्रौव्यताकाहेतैः जातैपर्यायविनाद्रव्यकाथितिदेखियतीनांही ॥ जोईमृत्तिकाकीध्रुवतासोईघट

अरु पिंडका उत्पादव्यय है। पर्याय द्रव्यकी थिरता होते नांही तातैं एक है। जो यौं न मानीयै तौ वस्तुका स्वभाव त्रिलक्ष
ण सधै नांही। जो केवल उत्पाद ही मानीयै तौ दोइ दूषन लागै। एक तौ कार्यकी उत्पत्ति न होइ। दूसरै असत्तका उत्पा
द होइ तेई दिखाईयै है। घटका न उत्पाद है। सो मृत्पिंडकी व्ययतैं है। जो केवल उत्पाद ही मानीयै। व्यय न मानियै। तौ उ
पादानके अभावतैं घटका उत्पाद न होइ। जैसैं घटकार्य न होइ। तैसैं समस्त पदार्थ न होहि। यह प्रथम दूषन। दूजा दू
षण दिखाईयै है। जो ध्रौव्य वस्तु विना उत्पाद होइ तौ असत्त वस्तुका उत्पाद होइ। आकाशके पुष्प ज्यौं उपजै। और जो
केवल व्यय ही मानियै तौ दोय दूषण लागै। एक तौ नास हीका अभाव होइ। मृत्पिंडका नास तौ घटका उत्पादतैं है
जो केवल नास ही मानीयै तौ नासका अभाव होइ। तातैं नास उत्पाद विना नांही। सर्वथा नासके मांनतै दूसरा दूषन य
ह है। असत्तका नाश होइ है। सत्तके नास होतैं सत्त ज्ञानादिककौ भी नास होइ। धारणा न होइ। और जो केवल ध्रुव ही
मानीयै तौ भी दोइ दोष होइ। एक तौ पर्यायका नास होइ दूसरै अनित्यकौ नित्यत्व होइ है। जो पर्यायका नास होइ
तौ पर्याय विना द्रव्य होत तौ नांही। तातैं द्रव्यका नास होइ। जैसैं मृत्तिकापिंड घटादि पर्याय विना न होइ। जो अनि
त्यकौं नित्यत्व होइ। तौ मनकी गतिकौ भी नित्यता होइ। तातैं अगले पर्यायका उत्पाद। पूर्व पर्यायका व्यय। च

प्र·सा स्वकी थिरता। इन तीनौंकी एकताकरि निर्विघ्न द्रव्यका लक्षण सधै है॥ आगें ई तीनभावनिकौं द्रव्यतें अभेद
७० दिखावै है॥ गाथा॥ उप्पादट्ठिदिभंगा। विज्जंते पज्जयेसु पज्जाया। दव्वं हि संति णियदं तम्हा दव्वं हवदि सव्वं॥ ९॥ उत्पाद
स्थितिभंगा विद्यंते पर्यायेषु पर्यायाः। द्रव्ये हि संति नियतं तस्माद्द्रव्यं भवति सर्वं। टीका॥ अर्थ उत्पादस्थितिभंगाः
पर्यायेषु विद्यंते॥ उत्पादस्थितिभंगाः कहिये॥ उत्पादव्ययध्रौव्य ते पर्यायेषु कहिये॥ द्रव्यके पर्यायनिविषै विद्य
ते कहिये प्रवर्त्ते है। हि पर्यायाः द्रव्ये संति हि कहिये निश्चयसों। पर्यायाः कहिये ते पर्याय द्रव्ये कहिये द्रव्यविषै सं
ती कहिये प्रवर्त्ते हैं। तस्मात् नियतं सर्वं द्रव्यं भवति। तस्मात् कहिये तीसकारन तें॥ नियतं कहिये निश्चयसेती। सर्वं क
हिये उत्पादादि सर्व पर्याय॥ सो सर्वं द्रव्यं भवति कहिये द्रव्य ही है जुदा कछु नांही॥ भावार्थ॥ उत्पादव्ययध्रौव्य ए तु
है भाव ते द्रव्याश्रित हैं। ते पर्याय द्रव्य के आधार है जुदे नाही॥ द्रव्य पर्यायात्मक है जैसे वृक्ष स्कंध मूल साखादि रूप है
स्कंध मूल साखादिक वृक्ष तें जुदे नाही॥ तैसे ही उत्पादिक तें द्रव्य जुदा नांही एक है॥ द्रव्य अंसी है॥ उत्पादव्ययध्रौ
व्य ए अंस हैं॥ जैसे वृक्ष अंसी है॥ बीज अंकुर वृक्षत्व अंस हैं॥ ए तीनि अंस उत्पादव्ययध्रौव्यनिकौं लियै है॥ बीजका ७०
नास अंकुरका उत्पाद वृक्षत्वकरि ध्रौव्यता॥ तैसे ही अंसी द्रव्यकै उत्पाद घमांण विनासो कौ थिररूप तीराग पर्यायरूप

ऐसे है तें उत्पादव्ययध्रौव्यनिकरि संयुक्त है ॥ उत्पादव्ययध्रौव्यभाव पर्यायनिकै है द्रव्यकै नाहीं ॥ जो द्रव्यकै होहि।
है ॥ तौ समस्तही का नाश होइ ॥ सो ई दिखाई है ॥ जो द्रव्यका नाश होइ तौ सब शून्य होइ जाइ ॥ जो द्रव्यका उत्पाद होय ॥
तौ समय समय विषै ॥ एक एक द्रव्य उपजतें द्रव्य अनंत होइ जाइ ॥ और जो द्रव्य ध्रौव्य होइ ॥ तौ पर्यायका नाश होय
है द्रव्यका अभाव होइ ॥ तातें उत्पादादिक द्रव्यकै नाहीं ॥ पर्यायकै आश्रित होइ है ॥ पर्याय उपजै भी है ॥ विनसै भी
है वस्तुकी अपेक्षा थिर भी है ॥ तातें पर्याय विषै है द्रव्य तें जुदे नाहीं ॥ तातें पर्यायकी अपेक्षा द्रव्य विषै उत्पादा
दिक ए तीनि भाव जाननें ॥ आगें इनि उत्पादादिकनिकै समय भेद नाहीं ॥ एक ही समय विषै होय है ॥ द्र
व्य तें अभेद रूप कहै है ॥ गाथा ॥ समवेदं खलु दव्वं संभवठिदिणाससण्णिदट्ठेहिं ॥ एकम्हि चेव समये ॥ त
म्हा दव्वं खलु तत्तियं ॥ १० ॥ समवेतं खलु द्रव्यं संभवस्थितिनाशसंज्ञितार्थैः ॥ एकस्मिन्नेव समये ॥ तस्माद्द्रव्यं खलु त
त्रितयं ॥ टीका ॥ संभवस्थितिनाशसंज्ञितार्थैः ॥ संभव कहियै उत्पाद स्थिति कहियै ध्रौव्य नाश कहियै व्यय इनि
करि संज्ञित कहियै नाम है ॥ जिनके ऐसे जु अर्थ कहियै तीनि भाव तिनि करि है भाव तिनि करि ॥ खलु द्रव्यं सम
वेतं ॥ खलु कहियै निश्चय सों ॥ द्रव्य कहियै वस्तु समवेत कहियै एकमेक है जुदा नाहीं ॥ एकस्मिन समये च कहि

पैंएकहीसमयविषैंइणउत्पादव्ययध्रौव्यसौं अभेदरूपद्रव्यपरणवैहै॥ तस्मात्खलुतत्त्रितयंद्रव्यं॥ तस्मात्क
हियेंतिसकारनतैंखलुकहियेंनिश्चयसौं॥ तत्त्रितयंकहियेउत्पादव्ययध्रौव्यत्रिकद्रव्यंकहियें॥ द्रव्यस्वरूपहै
एकहीहै॥ भावार्थ॥ इहांकोईवितर्ककरैहै॥ किउत्पादव्ययध्रौव्यएकसमयविषैं॥ सुघटवातसम्भवनांही॥ इसकासमय
जुदाजुदाहै। जोसमयउत्पादकाहै। सोसमयउत्पादहीकरिव्याप्तहै॥ ध्रौव्यव्ययकासमयनांही॥ जोद्रव्यकासमय
है सोउत्पादव्ययकेमध्यहै॥ तातेंजुदाहीसमयहै जोनासकासमयहै तिससमयउत्पादध्रौव्यकैसेहोइ॥ ताते
यहभीजुदाहै॥ इसिभांतिइनकेसमयजुदेजुदेसंभवैहै तिसकासमाधानकरैहै॥ आचार्यभगवान॥ जोद्रव्यआ
पहीउपजता आपहीथिरहोता॥ आपहीविणसता तौतीणसमयहोतेसोतौनांही॥ पर्यायकरिउत्पादव्यय
ध्रौव्यहोइहै॥ तातेंएकहीसमयमधैंहै सोईदृष्टांतकरिकहियेहै। जैसेदंडचक्रचीवरकुंभकारादिककेनिमि
त्ततेंजोघटकेउपजनेकासमयहै॥ सोईमृत्पिंडकेनासकासमयहै इनदोनोंअवस्थाकेहोतें॥ तिसहीसमय
मृत्तिकाअपनेस्वभावकौंनांहीछांडैहै॥ तातेंध्रौव्यहै॥ तैसैंहीअंतरंगबहिरंगकारनकेहोतसंतें जोकोईआगले
पर्यायकेउत्पादकासमयहै॥ सोईपूर्वपर्यायकेनासकासमयहै॥ इनकेहोतसंतेंद्रव्यअपनेस्वभावकौंछां

उत्तानांही ॥ तिसहियसमयध्रौव्यहै ॥ जैसेंमृत्पिंडकाद्रव्यविषैंघटमृत्पिंडमृत्तिकाभावइनिपर्यायनिकरिएकहीसमय
उत्पादव्ययध्रौव्यहोइहै ॥ तैसेंहीपर्यायनिकरिद्रव्यविषैंभीजाननें ॥ पूर्वपर्यायकानास ॥ आगलेपर्यायकाउत्पाद ॥ द्र
व्यत्वकरिध्रौव्यता ॥ एतीनौंभावएकहीसमयविषैंसधैंहै ॥ जोद्रव्यहीउपजनाविनासतातोएकसमयवनतैंनांही
पर्यायकीअपेक्षानीकैंसधैहैकोईसंदेहनांही ॥ औरजैसेंघटमृत्पिंडमृत्पिंडमृत्पिंडकाभावरूपउत्पादव्ययध्रौ
व्यमृत्तिकातेंजुदीवस्तुनांही ॥ मृत्तिकास्वरूपहीहै तैसेंद्रव्यतेंउत्पादव्ययध्रौव्यजुदेनांही ॥ द्रव्यस्वरूपहीहै ॥ आ
गेंअनेकद्रव्यकेसंयोगसेंतीनुहैंपर्यायनिसहारउत्पादव्ययध्रौव्यकहैहै ॥ गाथा ॥ पादुब्भवदियअण्णो ॥ पज्ज
ओपज्जओवयदिअण्णो ॥ दव्वस्सतंपिदव्वं ॥ णेवपणट्ठंणउप्पण्णं ॥ ११ प्रादुर्भवतिचान्यपर्यायाः ॥ पर्यायोव्येति
चान्यःद्रव्यस्यतदपिद्रव्यंनैवप्रणष्टंनोत्पन्नं ॥ टीका ॥ द्रव्यस्यअन्यपर्याय ॥ प्रादुर्भवतिद्रव्यएककहियेसमानजा
तीयद्रव्यकाअन्यःकहियेऔरपर्यायप्रादुर्भवतिकहियेउपजैहै ॥ चअन्यःपर्यायव्येति ॥ चअन्यपर्याय ॥ चक
हियेबहुरिअन्यपर्यायकहिये ॥ औरपर्यायव्येतिकहियेविनासहोइहै ॥ तदपिद्रव्यंनैवप्रनष्टंणउत्पन्नं ॥ तदपि
कहियेसोईद्रव्यकहियेसमानजातीय ॥ असमानजातीय ॥ द्रव्यनैवकहियेनांही ॥ प्रणष्टंकहियेनासहुवाहै

प्र.सा. या है। न करिये नाहीं उत्पन्न करिये उपज्या है। द्रव्यत्व करि ध्रुव है। भावार्थ। संयोगिक द्रव्यपर्याय दोय प्रकार है स-
७३ समानजातीय। एक असमानजातीय। जैसे तीनि परमाणूनि का समानजातीय घटपर्याय विनसै है। चारि प-
रमाणूनि करि खंध उपजै है। परमाणून करि उपजै है। न विनसै है ध्रुव है। तैसे ही समस्त समानजातीय द्रव्यपर्या-
य उत्पादव्ययध्रौव्यरूप जाननें। और जैसे ही जीव पुद्गल के संजोग सेती असमानजातीय मनुष्यरूप द्रव्यपर्याय।
विनसै है। देवपर्याय उपजै है। द्रव्यत्व करि जीव पुद्गल न उपजै है न विनसै है ध्रुव है। तैसे ही और सभी असमानजा-
तीय द्रव्यपर्याय उत्पादव्ययध्रौव्यरूप जाननें। इसि प्रकार एक द्रव्यपर्याय। पर्याय की अपेक्षा उत्पादव्ययस्व-
रूप है। द्रव्य की अपेक्षा ध्रुव है उत्पादव्ययध्रौव्य द्रव्य तें अभेद है तातैं द्रव्य ही है। अन्य वस्तुरूप नाहीं। आगे एक
द्रव्यपर्याय द्वार करि उत्पादव्ययध्रौव्य दिखाइये है। गाथा। परिणमदि सयं दव्वं गुणदो य गुणंतरं सदविसिट्ठं
तम्हा गुणपज्जाया भणिया पुण दव्वमेव त्ति॥ २५॥ परिणमति स्वयं द्रव्यं गुणतश्च गुणान्तरं सदविशिष्टं। तस्मात्
गुणपर्यायाः भणिताः पुनः द्रव्यमेवेति॥ टीका। द्रव्यं स्वयं गुणात् च गुणान्तरं परिणमति। द्रव्य कहिये सत्तारूप ७३
वस्तु स्वयं कहिये। आपही गुणात् कहिये एक ही गुण तें च कहिये बहुरि गुणान्तरं कहिये और गुणरूप परिणम-

तिकहियेपरिणावैहैकैसाहैद्रव्यसद्वसिद्धसतकहियेअपनांस्वरूपाम्नित्त।तिणकरिअवसिद्धकहियेअभेद
हैतस्मात्पुनःगुणाःपर्यायाद्रव्यमेवइतिभनिताः॥तस्मात्कहियेतिसकूंभनुतै॥पुनःकहियेबहुरिद्रतिकहियेअ
सेगुणपर्यायकहियेगुणानिकेपर्यायपतेद्रव्यकहियेद्रव्यहीहै॥अभेदकरिइतिकहियेऐसेभनिताकहियेकहै
है॥भावार्थ॥एकद्रव्यकैजेपर्यायहैतेगुणपर्यायहै॥जैसेंआंबकाफलहरीतगुणरूपपरनवैहै॥सोईफलांतरपाद
पीतभावपरणावैहै॥पूर्वउत्तरअवस्थाकरिआंबअन्यवस्तुहोतानांहीं।गुणपरिणामकरिभेदहै॥तैसैंहीद्रव्यपूर्वअव
स्याविषैतिष्ठतुहैगुणतिसतैंअन्यअवस्थारूपतुहै॥गुणानिसरूपपरनवैहै॥परंतुपूर्वउत्तरअवस्थाकरिअ
न्यरूपहोतानाही॥गुणपरिणामकरिभेदहै॥दोनोंअवस्थानिविषैद्रव्यसोईहै॥जैसेंआंबपीतभावकरिउपजेहै
हरितभावकरिविणसैहै॥आंबभावकरिध्रुवहै॥एउत्पादव्ययध्रौव्यएकद्रव्यपर्यायकरिआंबतैंजुदैनांहीं॥आं
वहीहै॥तैसैंहीद्रव्यउत्तरअवस्थाकरिविणसैहै॥द्रव्यत्वकरिध्रुवहै॥उत्पादव्ययध्रुवहै॥उत्पादव्ययध्रौव्यए
कपर्यायकरिद्रव्यतेंजुदैनांहीद्रव्यहीहै॥एगुणपर्यायविषैउत्पादव्ययध्रौव्यजाननै॥आगैसन्नाद्रव्यकोअ

प्र.सा भेददिखावैहै॥ द्रव्यतैसत्ताभिन्नवस्तुनाही॥ गाथा॥ णहवदिजदिसद्दव्वं॥ असद्धुवंहवदितंकधं॥ दव्वंहवदिपुणो

७५ अण्णंवा॥ तम्हादव्वंसयंसत्ता॥ २३॥ नभवतियदिसद्द्रव्यं असद्ध्रुवंभवति॥ तत्कथंद्रव्यंभवति॥ पुनरन्यद्वातस्मा

द्द्रव्यंस्वयंसत्ता॥ टीका॥ यदिद्रव्यंसत्नभवति॥ यदिकहियेजोद्रव्यकहियेगुणपर्यायात्मकवस्तुकहियै॥ अ

स्तित्वरूपणाभवतिकहियेनाहीहोइहै॥ तदाध्रुवंअसत्भवतितदाकहियै॥ ताध्रुवंकहियैनिश्चलसत्ता

रूपवस्तु॥ असत्कहियेवस्तुरूपणाभवतिकहियैहोयहै॥ तत्कथंद्रव्यंभवति॥ तत्कहियैसोसत्तारहितव

स्तुकहियै कथंकैसेद्रव्यंकहियैद्रव्यस्वरूपभवतिकहियैहोइहै॥ वापुनः अन्यत्भवति॥ वाकहियै अथवापु

नः॥ कहियैवहुरि अन्यत्कहियै सत्तातैद्रव्यभिन्नभवतिकहियैहोयहै॥ तस्माद्द्रव्यंस्वयंसत्तातस्मात्कहियै

तिसकारणतैद्रव्यंकहियैगुणपर्यायात्मकवस्तुसोस्वयंकहियै॥ आपहीसत्ताकहियैसत्तारूपंभेदनाही॥ भावा है

र्थ॥ जोद्रव्यसत्तारूपनहोइतौदोइदोषहोहि॥ कैतौद्रव्यअसत्होइ कैसत्तातैजुदाहोइ॥ जोद्रव्यअसत्हो

इतौसत्ताविनाध्रौव्यगहोइ॥ तौद्रव्यकानासहोइ॥ जौसत्तातैजुदाहोइतौसत्ताविनाद्रव्यअपणोसरू

कौं धरै । तव सत्ताका कछु प्रयोजन न होइ । सत्ता वा एक ही कारजे है जो द्रव्यके स्वरूपका अस्तित्व करै । जो द्रव्य ही अ
परौ स्वयमेव स्वरूपकौ जु धारै तौ सत्ताका कहा प्रयोजन है । इसलिये आप सत्ताका नास होइ । जो द्रव्य सत्तारूप होइ तौ अ
व्य होय । एकता के होतें द्रव्यका नास होइ । जौ सत्ता तें द्रव्य जुदा न होइ तौ द्रव्य अपने स्वरूपकौं धरता संता सत्ताके प्रयो
जनकौ प्रगट करै । और सत्ताका नास न होइ । तातें द्रव्य सत्तारूप है द्रव्य गुनी है । सत्ता गुन है गुन गुनी कौ प्रदेस भेद नाही
एक ही है सिद्धांत विषै भेद दोय प्रकार है । एक प्रथक्त्व एक अन्यत्व । आगें इनि दोनौ का लक्षन करै है । गाथा । पविभत्त
पदेसत्तं । पुधत्तमिदि सासनं हि वीरस्स । अण्णत्तमतब्भावो । ण तब्भवं भवदि कधमेकं ॥ १४ ॥ प्रविभक्तप्रदेसत्वं प्र
थक्त्वमिति सासनं हि वीरस्य । अन्यत्वमतद्भावो न तद्भवं भवति कथमेकं ॥ टीका । प्रविभक्तप्रदेसत्वं प्रथक्त्व
प्रविभक्त कहियै भिन्न है । प्रदेसत्वं कहियै द्रव्यके प्रदेसनि सविषै । ऐसा जो भेद सो प्रथक्त्व कहियै प्रथक्त्व नामा
है । इति वीरस्य सासनं हि कहियै । निश्चय सौं इति कहियै यह । वीरस्य कहियै वर्धमान तीर्थंकर का सासनं
कहियै उपदेस है । भावार्थ । भगवानकी यह आज्ञा है । जिहां प्रदेसनिकी जुदाइगी है । तिस भेदका नाम प्रथक्त्व
कहिए । जैसे दंड अरु दंडी विषै प्रदेस भेद है । सु यह सत्ता विषै नाही । काहे तें जातें सत्ता अरु द्रव्य विषै प्रदेस

सभेदनांही। जैसैंप्रदेसनिकाभेदवस्त्रअरुसुक्लगुणमैंनांही॥ तैसैंसत्ताद्रव्यअभेदहै॥ सत्ताद्रव्यविषैअन्यत्व
नामाभेदहै। सोईकहियेहै॥ अतद्भावः अन्यत्वं अतद्भावः कहियेसंज्ञालक्षनादिभेदकरिजोद्रव्यकाभाव
है सोसत्ताकास्वरूपनांही। जोसत्ताकास्वरूपहैसोद्रव्यकास्वरूपनांही॥ ऐसाजोगुनगुनीभेदसोअन्यत्व
कहिये। अन्यनामाभेदहै॥ जोकोईकहैकिंजैसैंसत्ताद्रव्यविषैप्रदेसभेदनांही॥ तैसैंही सत्ताद्रव्यविषैसरूपभे
दभीनांही अन्यत्वभेदकाहेकौंकहौहौतिसकाउत्तर॥ तद्रूपेणाभवति॥ तद्रूपंकहियेसत्ताद्रव्यविषैसोईना
वहै॥ एकसरूपहै ऐसोराभवतिकहियेनाहीहोयहै॥ सत्ताद्रव्यविषैसंज्ञालक्षनादिकरिअवस्यसरूपभे
दहै॥ तातैंकथंएकंभय कहियेकिसप्रकार एकंकहियेएकहोहि॥ अवस्यअन्यत्वभेदमाननाजोग्यहैजैसेंव
स्त्रअरुसुक्लगुणविषैअन्यत्वभेदहै॥ तैसैंसत्ताद्रव्यविषैभेदहै॥ जोवस्त्रविषैस्वेतगुनहैसोएकनेत्रइंद्रि
यकरिग्रहानाइहै॥ औरसमस्तनासिकादिइंद्रियनिकरिनांहीजानिएहै॥ सोगुनवस्त्रनांही। अरजो
वस्त्रहैसोनेत्रइंद्रियविना॥ औरनासिकाइंद्रियनिकरिजानियैहै॥ तातैंवस्त्रस्वेतगुणविषैअवस्यअन्यत्व
भेसोस्वेतगुणनांही। स्वेतगुणएकनेत्रइंद्रियकरिजानियै॥ वस्त्रऔरनासिकादिकासमस्तइंद्रियनि

करि जांनियेहै। तातैं वस्त्र स्वेत गुण विषैं अवस्य अन्यत्वभेद है। अरजौ भेद न मानीयै तौ। जैसैं नेत्र स्वेत गुणकौ जा।
नियेहै। तैसैं ही स्पर्स रस गंध रूप वस्त्र भी जांनिए ता हीनैं तातैं इंद्रियविषय भेद करि। अवस्य भेद है। तैसैं ही सत्ताद्र·
व्यविषैं अन्यत्वभेद है सत्ता गुण है सो द्रव्य के आश्रय रहै है। अन्य गुण रहित एक गुणरूप है। और द्रव्य के अनंत वि
शेषनि विषैं एक अपनें भेद करि दिखावै है और एक रूप पर्याय रूप है। द्रव्य गुण है सो काहू कै आधार नांही रहै है। और अ
नंतगुण संयुक्त है। अनेक विसेषनि करि विसेष है। अनेक पर्यायवंत है। तातैं सत्ता द्रव्य विषैं संज्ञा लक्षनादि
भेद करि अवस्य अन्यत्वभेद है। जो सत्ता का स्वरूप है सो द्रव्य का नांही। जो द्रव्य का स्वरूप है सो सत्ता का नांही। ऐसा
गुणगुनी भेद है। प्रदेसभेद नांही। आगे अन्यत्व का लक्षन विसेषता करि दिखावै है। गाथा। सद्दव्वं स च गुणो। स
च्चेव य पज्जउ त्ति वित्थारो। जो खलु तस्स अभावो। सो तदभावो अतब्भावो। १५। सद्द्रव्यं स च गुणः स चैव च पर्याय इ
ति विस्तारः यः खलु तस्याभावः स तदभावो तद्भावः। गाथा। सत् द्रव्य सत् कहियै सत्तारूप द्रव्य कहियै द्रव्य
है। च स त्गुणः। च कहियै बहुरि सत् कहियै सत्तारूप गुणः कहियै गुण है च एव स सत् पर्यायः। च कहियै बहुरि। एव
कहियै निश्चय स्यो सत् कहियै सत्तारूप पर्याय। कहियै पर्याय है। इति विस्तारः। इति कहियै पहु विस्तारः कहि

प्र· ७६ ऐसें सत्ताका तीन प्रकार विस्तार है ॥ भावार्थ ॥ जैसें एक मोतीकी माला हार सूत मोती ॥ इनि भेदनि करि तीन
प्रकार है ॥ तैसें एक द्रव्य ॥ द्रव्य गुण पर्याय ॥ इनि भेदनि करि तीन प्रकार है ॥ जैसें एक मोतीकी माला का स्वेत गु
न तीनि प्रकार है ॥ स्वेत हार स्वेत सूत स्वेत मोती इनि भेदनि करि ॥ तैसें ही एक द्रव्यका सत्ता गुण तीन प्रकार है ॥ सत द्रव्य
सत गुन सत पर्याय इनि भेदनि करि ए ॥ एतु तस्य अभावः पः कहिये जो पृथलु कहिये निश्चय स्यो ॥ तस्य कहिये ति
स सत्ता द्रव्य गुण पर्यायकी एकताका अभाव कहिये परस्पर अभाव है ॥ जो सत्ता गुण है सो द्रव्य नांही ॥ अन्य गु
न नांही ॥ पर्याय नांही ॥ द्रव्य और अन्य गुन पर्याय ॥ ए तीने सत्ता गुन नांही ॥ ऐसा जो परस्पर अभाव सो तद
भावः ॥ अतद्भावः सः कहिये सो तद्भावः ॥ तिस एकताका अभावः ॥ अतद्भाव कहिये अन्यत्व नामा भेद हो
है ॥ भावार्थ जैसें एक मोतीकी माला विषै भेद विवक्षा करि जो स्वेत गुन है ॥ सो हार नांही सूत नांही ॥ मोती
नांही ॥ अरु जे हार सूत मोती है ते स्वेत गुन नांही ॥ ऐसा परस्पर भेद है तैसें ही एक द्रव्य विषै जो सत्ता गुन
है ॥ सो द्रव्य नांही न और गुन है ॥ न और पर्याय है ॥ जुद्र गुण पर्याय है ते सत्ता नांही ॥ ऐसा परस्पर आपुस
मैं भेद है सत्ताके स्वरूपका अभाव द्रव्य गुण पर्याय विषै है ॥ द्रव्य गुण पर्यायके स्वरूपका अभाव सत्ता विषै ७६

है॥ऐसागुणगुनीभेदहैप्रदेसभेदनाही॥आगेसर्वथाअभावरूपगुनगुनीभेदकौंनिषेधेहै॥गाथा॥जंदव्वंतन
न्नगुणो॥जोविगुणोसोणतच्चमुत्थादो॥एसोहिअतब्भावो॥णेवअभावोत्तिणिद्दिट्ठो॥१६॥यद्द्रव्यंतन्नगुणो
योपिगुणःसनतत्वमर्थात्॥एषोह्यतद्भावोनेवाभावइतिनिर्दिष्टः॥अर्थ॥यत्द्रव्यंततगुणोणयत्कहियेजो
द्रव्यकहियेवस्तुहै॥ततकहियेसोगुनःनकहियेगुननाही॥यःअपिगुणःसत्अर्थात्ततत्वंन॥यःकहियेजोअपि
कहियेनिश्चयसोगुनःकहियेगुणहै सःकहियेसोअर्थात्कहियेस्वरूपकेभेदतै॥तत्वंकहियेद्रव्य॥नकहियेना
ही॥द्रव्यकास्वरूपअनंतधर्मात्मकएकरूपधर्महै॥गुनकास्वरूपएकधर्महै॥इसगुणगुनीभेदकरिजोद्रव्यहै
सोगुननाही॥जोगुणहैसोद्रव्यनाही॥एषःहिअतद्भावः एषकहियेयहगुणगुनीभेदरूपहिकहियेनिश्चयसो॥अ
तद्भावकहियेस्वरूपभेदहै अभावएवअभावः कहियेसर्वथाप्रकारअभावनेवकहियेनिश्चयसोनाही॥इति
निर्दिष्टः इतिकहिये॥ऐसाभेदनिर्दिष्टःकहियेदिषायाहैसर्वज्ञदेवनै॥भावार्थ॥एकद्रव्यविषैजोद्रव्यसोगुननां
ही।जोगुणहैसोद्रव्यनाही।ऐसाजोद्रव्यकौगुणरूपअणहोनासोअन्यत्वभेदव्यवहारकरिकहियेहै॥नविद्रव्य
काअभावगुनगुनकाअभाव॥द्रव्यऐसासर्वथाअभावरूपभेदहै॥ऐसेअभावकेहोतसंतेएकद्रव्यकेअनेक

प्र॰सा॰
७७

कत्व होय॥ और दोनों का नास होइ। और अपोहरूपत्व नामा दोष होइ। ए तीनों दोष होहि। ते ई कहिये। तैसें ही द्रव्यका
अभाव गुन होय। गुणका अभाव द्रव्य होइ। ऐसें एकत्वके अणेकत्व द्रव्य होहि। और जैसें सोनेके अभावतें सोने
के गुन का अभाव होइ। सोनेके गुनके अभावतें सोनेका नास होइ। ऐसें दोनोंका अभाव होइ। तैसें ही द्रव्यके अभा
वतें गुन का अभाव होइ गुनके अभावतें द्रव्यका अभाव होइ। ऐसें दोनोंका नास होइ। और जैसें घट का अभाव मा
त्र पट है। पट का अभाव मात्र घट है। इन दोनों के विषै किसही का रूप किसही विषै नाहीं। तैसें ही द्रव्य का अभाव मा
त्र गुन होइगा। गुनका अभाव मात्र द्रव्य होइगा। ऐसें अपोहत्व दोष लागेगा। तातें जो द्रव्य गुनकी एकता चाहै है —
और दोनों का नास चाहै है। और अनपोहत्व दोष नाहीं चाहै है। तो जैसा सर्वज्ञ देवनै गुणगुनी विषै व्यवहार करि अ
न्य भेद दिखाया है। तैसा ही अंगीकार करना योग्य है। सर्वथा अभावरूप मानना योग्य नाहीं॥ आगें सत्ता द्रव्यकै गु
णी भाव दिखावै है॥ गाथा॥ जो खलु दव्वसहावो परिनामो सो गुणो सदविसिट्ठो। सदवट्ठियं सहावे दव्वत्ति जिणोवदे
सोयं॥ १७॥ यः खलु द्रव्यस्वभावः। परिणामः स गुणः सदविसिष्टः। सदवस्थितं स्वभावे द्रव्यमिति जिनोपदेसोयं॥ टीका
यः खलु द्रव्यस्वभावः परिणामः सदविसिष्टगुणः। यः कहिये जो खलु कहिये निश्चयसौं द्रव्यस्वभाव कहिये॥ द्रव्यका ७७

सुभावभूतपरिनामकहिये ॥ उत्पादव्ययध्रौव्यरूपत्रिकालसंबंधीपरिनामसकहियेसोसदाविसिष्टकहियेसत्ता
तैंअभिन्नअस्तित्वरूपगुनकहियेगुनहै ॥भावार्थ॥ जोद्रव्यकाअस्तित्वस्वरूपस्वभावभूतपरिणामहै ॥ तिसकोस
त्तानामगुनकहिये जैअस्तित्वरूपसत्तानामगुनहै ॥ सोद्रव्यतैंअभिन्नद्रव्यकास्वाभाविकपरिणामहै ॥ स्वभावेअव
स्थितंद्रव्यंसत्सुभावेकहियेअस्तित्वसत्तारूपस्वभावविषेंअवस्थितंकहियेतिष्टेजुहैद्रव्यंकहियेवस्तु ॥ सोसत्कहि
येसत्ऐसेनामवुलाइये ॥भावार्थ॥ सत्तानामजुहैगुणसोद्रव्यविषैप्रधानहै सत्ताविषैद्रव्यतिष्टैहै ॥ तातेंसत्ताग
नहै ॥ द्रव्यकीआधीनतातैंद्रव्यकेंसत्कहिये ॥ सत्तागुणकीएसत्स्वरूपगुनीद्रव्यजानीयेहै ॥ तातैंसत्तागुनहै ॥ द्रव्यगुनी
है ॥ आगेगुणगुनीकाभेददूरिकरिकरैहै ॥गाथा॥ णत्थिगुणोत्तिवकोई ॥ पज्जाओत्तीहवाविणादव्वं ॥ दव्वत्तंपुणभावो तं
म्हादव्वंसयंसत्ता ॥ १९ ॥ नास्तिगुणइतिवाकश्चित्पर्याय इतीहवाविनाद्रव्यं ॥ द्रव्यत्वंपुनर्भावस्तस्माद्द्रव्यंस्वयंसत्ता ॥टीका॥
गुणइतिवाकश्चित्द्रव्यविनानास्तिगुणकहियेवस्तुकास्वभाव ॥ इतिकहियेऐसावाकहिये ॥ औरकश्चित्कहिये ॥ को
ईद्रव्यविनाकहियेद्रव्यविनानास्तिकहियेनाहीहै ॥ ऐसागुणकोईनाहीजुद्रव्यविनाजुदाहीहोइ ॥ वायहपर्यायइ
तिकश्चित ॥ द्रव्यंविनानास्तिवाकहिये ॥ अथवायहकहियेइसिजगतविषैपर्यायकहियेवस्तुकापरिनामइतिकहि

प्र॰सा
७८

हियेऐसा॥ कथंचित्‌कहियेकोई॥ द्रव्यंविनाकहियेवस्तुविनानास्तिकहियेनाही॥ ऐसाकोईपर्यायकभीनांहीजुद्रव्यतैजु
दाहीहोइ॥ तातेंगुणपर्यायद्रव्यतेंअभेदहै पुनः द्रव्यत्वंभावः पुनःकहियेवहुरिद्रव्यंत्वंकहियेजोद्रव्यकाअस्तित्वहै सो
भावः कहिये॥ वस्तुकास्वभावभूतगुनहै॥ सनातुहैसुवस्तुतैंअभिंनगुनहै॥ तस्माद्द्रव्यंस्वयंसनातनस्मात्‌कहियेतिस
कारनतैं॥ द्रव्यंकहियेवस्तस्वयंकहिये आपुसत्ताकहियेअस्तित्वरूपसत्ताहै॥ जैसेसोनतेंपीततादिगुणाकुंइत्यादि
पर्यायनुदेगपाईये॥ तैसेहीद्रव्यतेंगुणपर्यायनुदैनांही॥ तातेंअस्तिस्वरूपसत्तागुणद्रव्यतैजुदानाही॥ द्रव्यआप
सत्तास्वरूपहै॥ आगेंद्रव्यकेंद्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकनयकीविवक्षाकरिसत्‌उत्पाद॥ औरअसत्‌उत्पादऐसादो
यप्रकारउत्पादहोयहै॥ तिनविषैअविरोधदिखावैहै ॥गाथा॥ एवंविहंसहावे॥ दव्वंदव्वत्थपज्जयत्थेहिं॥ सदसब्भा
वणिबद्धं॥ पादुब्भावंसदालभदि॥ २२॥ एवंविधेस्वभावेद्रव्यंद्रव्यार्थपर्यायार्थाभ्यांसदसद्भावनिबद्धं॥ प्रादुर्भावंस
दालभते ॥टीका॥ एवंविहंसभावे॥ एवंविहंकहियेइसपूर्वोक्तप्रकारस्वभावेकहिये॥ अस्तित्वस्वरूपस्वभावविषैद्र ७८
व्यंकहियेवस्तुसोद्रव्यार्थपर्यायार्थाभ्यांकहिये॥ द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकदूनदोयनयकीविवक्षाकरिसद्भावनिब
द्धं॥ सत्‌कहियेसोईवस्तुहै असत्‌कहियेसोनांही॥ ऐसेजुभावकहियेहोइभावतिनिकरिनिबद्धकहियेसंयुक्तऐ

सादुर्भावंकहिये उत्पाद तिसहि सदा कहिये सदाकाल लभने कहिये प्राप्त होय है॥ भावार्थ॥ अनादि अनंत जु है द्रव्य
सो अपणे परिनाम स्वभावनि विषै सदा ऊपजै है सो उत्पाद। जो द्रव्यार्थिक नयकी विवक्षा करि कहिये। तब यो कहना आ
वै कि जो जो पर्याय द्रव्य धरै है तिनि निपर्यायनि विषै सो ई द्रव्य उपजै है। जो पूर्वे ही था इसका नाम सद्भाव उत्पाद कहावै। औ
र जो पर्याय की अपेक्षा सो उत्पाद कहिये। तो यो कहना आवै कि जो पर्याय द्रव्य धरै है। तिनि तिनि पर्यायनि विषै सो
ई द्रव्य और कहिये। अब करि दिखाई स्या की पलटनि तें और कछा जाइ है। इसका नाम असद्भाव उत्पाद कहिये। सो ई
दोय प्रकार दृष्टांत करि दिखाईये है। जैसे सोना अपणे अविनासी पीत स्निग्ध गुरुत्वादि गुननि करि अनेक कंकन कुं
डलादि पर्यायनि कौ प्राप्त होइ है। तहां जो द्रव्यार्थिक करि विचार कीजे तो जो जो कंकन कुंडलादि पर्याय है। तिनि ति
नि विषै सो ई सोना उपजै है। ऊ पूर्वे था और नां है। तहां सोना का सद्भाव उत्पाद कहिये। और जो तिन ही कंकन कुं
डलादि पर्यायनि विषै सो ही सोना पर्यायार्थिक नय की विवक्षा करि कहिये तो जो जो कंकन कुंडलादि पर्याय होय है
सो सो क्रम लिये है। तब यह कहना आवै है। कि कंकन कुंडलादि उपज्या है। कुंडल उपज्या है मुद्रिका उपजी है। औ
र और उत्पाद होइ है। जो पूर्वे न था सो उपजै है। इसका नाम असद्भाव उत्पाद कहिये। तैसे ही द्रव्य अपणे अवि

प्र.सा नासीगुणनिसंयुक्त अनेकपर्यायधरै है ॥ तहां जो द्रव्यार्थिकनयकरि कहिये तौ जो जो पर्याय है ॥ तिसतिसपर्यायविषै सोई
७८ द्रव्य उपजै है ॥ जो पूर्वैही था और नांही इसका नाम सत्तउत्पाद कहावै ॥ और जो पर्यायार्थिककरि विवक्षा कीजे तौ जो जो
पर्याय उपजै है सो और और है ॥ जो पर्याय नांही था सो उपजै है ॥ इसका नाम असत्तउत्पाद कहिये यह द्रव्यार्थिकप
पर्यायार्थिकनयनिकी विवक्षाकरि असत्त उत्पाद जानना ॥ और जैसे पर्यायार्थिककै कथनमें जो असत्तरूप कंकनकुंड
लादि पर्याय उपजै है ॥ तिनि पर्यायनिकी उपजावनहारी जे सुवर्णमें शक्ति है ॥ ते कंकनकुंडलादिपर्यायनकौ सुवर्ण
द्रव्य करै है । जैसे सोनेकै पर्याय है तैसे सोना है इस कारनतैं ॥ जातैं पर्यायतैं द्रव्य अभिन्न होइ है ॥ तैसेही पर्यायकथनविषै जे अ
त्तरूप द्रव्यकै पर्याय है ॥ तिनकी उपजावनहारी जे द्रव्यविषै सक्ति है ॥ ते शक्ति पर्यायनिकौ द्रव्य करै है जे जिस द्रव्यकै पर्या
य है ॥ ते सोई द्रव्य है जातैं पर्यायतैं द्रव्य अभिन्न है तातैं पर्याय जु है ते द्रव्य है ॥ और द्रव्यार्थिककथनकरि सत्तउत्पादविषै
जैसे सोना अपनी पीततादि शक्तिकरि कंकनकुंडलादि पर्यायनिविषै उपजै है ॥ तहां सोना कंकनकुंडलपर्याय
मात्र होइ है ॥ जो सोना है सोई कंकनकुंडलादिपर्याय है ॥ तैसेही द्रव्य अपनी सक्तिकरि अपने पर्यायनिविषै क्रम ७८
तैं उपजै है । तहां जो पर्याय धरै है तव तिस पर्यायमात्र है ॥ जो द्रव्य है सोई पर्याय है ॥ तातैं यह द्रव्यानसिद्ध भई असत्तउ

त्पादविषैजोपर्यायहैसोद्रव्यहीहै। सतउत्पादविषैजोद्रव्यहैसोपर्यायहीहै। द्रव्यपर्यायकैआपसमैभेदहै। नयभेदक
करिभेदहै॥ आगैसतउत्पादकोपर्यायनैअभेददिखावैहै॥ गाथा॥ जीवोभवंभविस्सदि। णरोमरोवापरोभवीयपु
णोकिंदव्वत्तंपजहदि। णजहंअणोकहंहोदि॥ २०॥ जीवोभवनभविष्यतिनरोमरोवापरोभूत्वा। पुनःकिंद्रव्यत्वंप्र
जहंतिनजहदन्यकथंभवति॥ गाथा॥ जीवःभवन्नरःअमरःवापरः भव्यष्यतीजीवः कहियेआत्मासोभवन्कहि
येद्रव्यस्वभावस्यपरनेवतासंतानरः कहियेमनुष्यअमरकहियेदेवता। अन्नवापरःकहिये। नारकतिर्यंचदेव
तामनुष्यसिद्धइणसमस्तपर्यायनिरूपभविष्यतिकहियेहोइगा॥ भावार्थ॥ जीवद्रव्यना। रकतिर्यंचदेवताम
नुष्यसिधनिकीअनेकपर्यायधरैहै पुनःभूत्वाकिंद्रव्यंत्वंप्रजहाति। पुनःकहियेनहरि। भूत्वाकहियेजीव
स्वरूपहोइकरिकिंकहियेकहा। द्रव्यत्वंकहिये अपनीद्रव्यत्वसत्तितिसहिप्रजहातिकहियेछांडैहैयद्यपिजी
वपर्यायनिकरिनानारूपहोयहै। तथापिअपनैजीवस्वभावकौछांडतानाहीनजहातअन्यकथंभवति॥ नन्न
हतकहियैजोजीवअपनेद्रव्यस्वभावकौनांहीछांडैहै तोअन्यःकहियेऔरस्वरूप। कथंकहियेकैसेभवति
कहियेहोइहैनहोइ॥ भावार्थ॥ जीवअनेकपर्यायनिकौधरतासंता जोअन्यद्रव्यसत्ताकौनछोडैहैतौ-अन्य

प्र· रूपहोतानांही॥ जोनारकीथासोईतिर्यंचहोहै॥ सोईमनुष्यहोयहै सोईदेवताहोइहै॥ तीनकालअविनासीसोई
८० द्रव्यहै॥ औरहोइजातानांही॥ सतउत्पादकौअपेक्षासर्वपर्यायनिविषैसोईअविनासीवस्तुहै॥ आगेअसतउ
त्पादकोऔरकरिदिषावैहै॥ गाथा॥ मणुवोनहोदिदेवो॥ देवोवामाणुसोवसिद्धोवा॥ एवंअहोज्जमाणो॥ अणण्णभा
वंकथंलहदि॥ २०॥ मनुजोनभवतिदेवो देवोवामानुषोवा॥ सिद्धोवा एवमभवन्ननन्यभावंकथंलभते॥ टीका॥ मनु
जः देवः वासिद्धः नस्यात॥ मनुजकहियेमनुष्य॥ सोदेवकहियेदेवतावाकहियेअथवासिद्धकहिये॥ मोक्षपर्यायरूप
सिद्धनभवतिकहियेहोइनांही॥ मनुष्यपर्यायरूपपरनयाजुहैजीवसोदेवपर्यायसिद्धपर्यायरूपनहोइ॥ वादेवः॥ म
नुजः सिद्धः॥ नभवतिवाकहियेअथवादेवः कहियेदेवतासोमनुजः॥ कहियेमनुष्यसिद्धकहियेसिद्धपरमेष्टी॥ नभव
तिकहियेनहोइ॥ देवपर्यायरूपपरणयाजुहैजीवसोमनुष्यपर्यायरूपसिद्धपर्यायरूपनहोइ॥ पर्यायार्थिककथन
करिअन्यपर्यायकैधरतैजीवद्रव्यभीअन्यकह्याजायहै॥ एवंअभवन॥ अनन्यभावंकथंलभते॥ एवंकहियेइसप्र
कारअभवनकहियेनांहीमनुष्यथासोईदेवताहै॥ सोईसिद्धपर्यायहै॥ ऐसाअन्यहोतसंताअनन्यभावकहियेऔ ८०
रपर्यायरूपनांही॥ एकहीहै ऐसेभावकौंकथंकहियेकिसप्रकारलभतेकहियेप्राप्तहोय॥ भावार्थ॥ जेदेवमनुष्या

पर्यायपर्यायहैते एककालविषै नाहीं होहि॥ जुदेजुदे कालविषै होहि॥ जबदेवपर्याय है॥ तिसकालमनुष्यादिपर्यायन होहि॥ ए
कहीपर्याय होइ॥ तातै जोपर्याय होय सोऔर होइ॥ पर्यायका अन्य स्वरूप है॥ तातै पर्यायका करता कस आधार द्रव्य है
सो द्रव्य पर्यायतै जुदा नाहीं पर्यायकै धरतै भी द्रव्य भी अन्य कहा जाय॥ कैसेजैसे मनुष्यपर्यायरूप जीव देवतापर्याय वि
षै पर्यायरूप न होइ॥ इसिभांति पर्यायकै भेदतै द्रव्यकै भी और और कहा जाय॥ तातै पर्यायार्थिकनय करि और रूप द्रव्य
कौ क्यौ न कहिये॥ अवस्यकहिये जैसै सोनाकंकनकुंडलादिपर्यायनिकै भेदतै कंकनका सोनाकुंडलका सोना॥ मुद्रिका
का सोना इसि भांति अन्य अन्य कहियेहै॥ तैसैही मनुष्यजीव देवजीव सिद्धजीव अन्य अन्य कहिए है॥ तातै असत उ
त्पादविषै द्रव्यकौ अन्यरूप कहियै है॥ आगै द्रव्यकै अन्यत्व अनन्यत्व ए दोऊ भेद है॥ एदोनों एकविषै कैसै होहि यह
विरोध दूरिकरै है॥ गाथा॥ दब्बठ्ठिएण सब्बं॥ तं दब्बं पज्जयठ्ठिएण पुणो॥ हवदि य अण्णमणण्णं॥ तक्कालें तम्मयत्तादो २२ त
द्रव्यार्थिकेन सर्वं तद्द्रव्यं पर्यायार्थिकेन पुनः भवति चान्यदनन्यत्॥ तत्काल तन्मयत्वात्॥ टीका॥ द्रव्यार्थिकेन त
त्सर्वं द्रव्यं अनन्यत्वं भवति॥ द्रव्यार्थिकेन कहिये द्रव्यार्थिकनयकै कथनकरि॥ तत् कहिये सो सर्वं कहिये समस्त द्रव्यं
कहिये वस्तु सो अनन्यत्व कहिये अन्य नाहीं॥ सोई भवति कहिये होय है॥ द्रव्यकथन करि नरनारकादिपर्यायनिवि

प्र.सा यै। और रूप द्रव्य स्वरूप होना नाहीं। पुनः पर्यायार्थिकेन अन्यत्वम्भवति। पुनः कहिये बहुरि पर्यायार्थिक नय करि
८१ यै पर्यायार्थिक नय की विवक्षा करि अन्यत्व कहिये और रूप भवति कहिये होइ है। पर्याय के कथन करि नर
नारकादि पर्यायनि विषै अन्य अन्य रूप ही कहिये। काहे तें। तत्कालेन तन्मयत्वात् तत्कालेन कहिये नर नारका
दि पर्याय होंगे के काल विषै तन्मयत्वात् कहिये द्रव्य तिस पर्याय रूप होय है। ॥भावार्थ॥ जो वस्तु है सो सामा
न्य विसेष स्वरूप है। इनि दोउ के देषन हारे है। तिनके दोय नेत्र कहिये। एक द्रव्यार्थिक एक पर्यायार्थिक। इनि दो
उ नेत्रनि विषै जो पर्यायार्थिक नेत्र कौ सर्वथा मूंदि अगले द्रव्यार्थिक नेत्र करि देखै। तब नारक तिर्यंच मनु
ष्य देव सिद्ध पर्यायनि विषै तिष्ठै है। जीव सामान्य। एक तिसे देषन हारे पुरुष कौ सब जाइगे जीव ही प्रतिभा
सै है। भेद नाहीं देखियै है। और जब द्रव्यार्थिक नेत्र कौ सर्वथा मूंदि करि अकेले पर्यायार्थिक नेत्र करि देखि
यै। तब जीव द्रव्य विषै नर नारकादि पर्यायनि विषै देषन हारे पुरुषनि के नर नारकादि पर्याय न्यारे न्यारे प्रतिभा
सै है। द्रव्य के जिस जिस पर्याय का काल आवै है। तिस तिस तिस पर्याय विषै जीव तन्मयी है। कैसे जैसे गोहा
त्रन पत्र काष्ट अनेक ईधनाकार आगि होय है। तैसे ती ही वह पर्याय धरै है। और जब दोनों द्रव्यार्थिक पर्या ८१

पार्थिंकूनेत्रकरि इसलिए उसितरफ देषियेंतव एकही कालनरनारकादिपर्यायनिविषें सोई एकद्रव्यदिषाई दे
है ॥ औरएकअन्यअन्यरूपदिषाई देहै तातें एकनयरूपनेत्रनिकरि देषनोएकअंगदेषनाहै ॥ औरदोउनयरूपनेत्र
करि देषनासर्वदेषनाहै ॥ तातेंसर्वदेषनेविषें द्रव्यकौं अन्यरूप अनन्यरूपके कथनका निषेधहोतानाहीं
आगें सर्वविरोधकी दूरकरनहारी सप्तभंगीवानी कहियेंहै ॥ गाथा ॥ अत्थित्ति य णत्थित्ति य ॥ हवदि अवत्तव्वमिदि
पुणोदव्वं पज्जाएण दु केणवि ॥ तदुभयमादिट्ठमण्णं वा ॥ २३ ॥ अस्तीति च नास्तीति च ॥ भवत्यवक्तव्यमिति
पुनर्द्रव्यं पर्यायेन तु केनचित्तदुभयमादिष्टमन्यद्वा ॥ टीका ॥ द्रव्यं अस्ति इति च भवति द्रव्यं कहियें वस्तु वा
अस्ति च कहियें कथंचित प्रकार अस्तिरूप ॥ इति कहियें ऐसा भवति कहियें होय है ॥ स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वका
ल स्वभाव इन अपने चतुष्टयकी अपेक्षा द्रव्य अस्तिरूप है च नास्ति इति ॥ च कहियें बहुरि सोई द्रव्य कथंचि
त्प्रकार नास्ति कहियें नाहीं है ॥ इति कहियें ऐसा है ॥ परचतुष्टयकी अपेक्षा द्रव्य नास्तिरूप है परद्रव्य परक्षेत्र
परकाल परभावकी अपेक्षा नास्ति है ॥ पुनः कहियें द्रव्य अवक्तव्य इति पुनः ॥ कहियें बहुरि द्रव्यं कहियें सोई द्र
व्य अवक्तव्यं कहियें वचनकरि न कहा जाइ ॥ इति कहियें ऐसा कथंचित प्रकार है ॥ एक ही काल द्रव्य अस्ति

प्र·सा स्तिकह्या जाता नाही। तातैं अवक्तव्य है तु केनचित् पर्यायेन तत् उभयं आदिष्टं तु कहिये वहुरि केनचित् कहिये
८२ किसही एक पर्यायेण। तु कहिये प्रकार एक करि। तत् कहिये सोई द्रव्ये उभयं द्रव्यं उभयं कहिये अस्ति नास्ति आदिष्टं
कहिये स्थापा है क्रमसौं वचन करि द्रव्य अस्ति नास्ति रूप कह्या जाय है। अनन्त वा कहिये अथवा अनन्त
कहिये अन्य तीन भंगरूप भी सो द्रव्य जानना। स्यात् अस्ति अवक्तव्य। स्यात् नास्ति अवक्तव्यं स्यात् अस्ति
नास्ति अवक्तव्यं। ए तीन भंग है स्यात् अस्ति अवक्तव्य। स्यात् कहिये कथंचित् प्रकार अस्ति कहिये स्वचतुष्ट
य करि और एक ही काल स्वपरचतुष्टय करि द्रव्य अस्तिरूप है। परंतु अवक्तव्यं कहिये वचनगोचर नाही। स्या
त् नास्ति अवक्तव्य स्यात् कहिये कथंचित् प्रकार नास्ति कहिये परचतुष्टय करि और एकही काल स्वपरचतु
ष्टय करि नास्तिरूप है। परंतु अवक्तव्य है। स्यात् अस्ति नास्ति अवक्तव्य। स्यात् कहिये कथंचित् प्रकार अस्ति
नास्ति कहिये स्वरूप करि अस्ति नास्ति है। पररूप करि कै नास्ति है। एकही काल स्वपररूप करि अस्ति ना
स्ति है। परंतु अवक्तव्य है। इसि प्रकार अनंतगुणात्मक द्रव्य सप्तभंग करि साधिये है विधिनिषेध की मु
ख्यगौणता करि सु यह सप्तभंगी वाणी स्यात् पदरूप सत्यमंत्र करि एकांत कुनयरूप ज्वर है विषमो हरति सकै। ८२

द्रिकरैहै॥ आगेजीवकैक्रियाएजुहैअसद्भूतमनुष्यादिकपर्यायपतैमोहक्रियाकेफलहैं॥ तातैवस्तुस्वभावतेजु
दियाईयैहै॥ गाथा॥ एसोत्तिणत्थिकोई॥ णणत्थिकिरियासहावणिव्वत्ता॥ किरियाहिणत्थिअफला॥ धम्मो
जदिणिप्फलोपरमः॥ २५॥ एषइतिनास्तिकश्चिन्ननास्तिक्रियास्वभावनिर्वृत्ता॥ क्रियाहिनास्तिअफलाधर्मो
यदिनिःफलःपरमः॥ टीका॥ एषइतिकश्चितनास्तिक्रियएषःकहियेयहपर्यायटंकोत्कीर्णअविनासीहै॥ इ
तिकहियेऐसाकश्चितकहियेनरनारकादिपर्यायनिविषैकोईभीपर्यायनिविषै॥ कोईभीपर्यायनास्तिक
हियैनाहीहै॥ संसारविषैकोईपर्यायनित्यनाहीहै॥ सर्वविनासीकहीहै स्वभावनिर्वृत्तानाक्रियानास्ति स्वभावकहि
येरागादिअसुद्धपरणतिरूपजुहैविभावस्वभावतिसकरिनिर्वृत्ताःकहियेउत्पन्नभई॥ ऐसीजुहैक्रियाकहि
ये जीवकैअसुद्धवर्ततितिसोनास्तिकहियेनाहीहै॥ ऐसेनकहियैनांह कैऊकहैगाकिजोनरनारकादिवि
षैकोउपर्यायनित्यनांहीतौरागादिपरनतिरूपक्रियाभीनहोयगीसोऐसेनांही॥ अनादिपुद्गलकर्मके
निमत्ततैआत्मानानारूपपरिनवैहै॥ तातैरागादिपरिनतिरूपक्रियाहै॥ तिसक्रियाकैफलनरनारका
दिपर्यायहै॥ तेपूर्वपूर्वपर्यायउत्तरउत्तरपर्यायनिकरिविनासीकहैहै॥ क्रियाहीअफलानास्ति॥ क्रियाक

प्र.सा ८३

हियेरागादिपरणतिरूपकरतंतिसोही कहियेनिश्चयफलो॥ अफला कहियेफलरहितनास्तिकहियेनाहीहै जै
सेस्निग्धरूक्षगुणपरणतिपरमानुकीक्रियाघणुकस्कंधरूपकार्यकौउपजावैहैतैसेमोहसोमिलितआ
त्माकीक्रियाअवस्यमेवमनुष्यादिपर्यायकौउपजावै॥ तातेंक्रियाफलवतीहै यहक्रियाफलवतीकाहेतेंजा
नियैहै॥ परिपरमधर्मोनेः॥ फलयदिकहियेजोपरमकहियेउत्कृष्टधर्मकहियेवीतरागभावनिःफलकहियै
नरनारकादिपर्यायरूपफलरहितहै॥ तौयहरागादिपरणतिरूपक्रियाफलवतीजानियैहै ॥भावार्थ॥ जैसे
बंधजोग्यस्निग्धरूक्षभावरहितपरमाणू॥ घणुकस्कंधकौनाहीउपजावै॥ तैसेपरमवीतरागभावमनुष्यादिप
र्यायनिकौकारननाही॥ तातैमोहसूंमिलतक्रियासंसारकाकारनहैमोहरहितक्रियावस्तुकास्वभावहै परम
धर्मरूपहै संसारकानासकरैहै॥ तातैनिःफलहै॥ आगेंजीवकेंमनुष्यादिकजेपर्यायहैतेक्रियाकेफलहैयहआगें
दिखावैहै॥गाथा॥ कम्मंनामसमक्खंसहावमधअप्पणोसहावेण॥ अभिभूयणरंतिरियं॥ णेरइयंवासुरंकुणदि
२५॥ कर्म्मनामसमाख्यंस्वभावमथात्मनःस्वभावेन अभिभूयनरंतिर्यंचंनैरयिकंवासुरंकरोति॥ टीका॥
अथनामसमाख्यंकर्मस्वभावेन॥ आत्मनःस्वभावंअभिभूय॥ अथकहियेवहुरिनामसमाख्यंनामकहि ८३

येनामकर्म है। समाख्यं कहिये संज्ञा जिसकी ऐसा जु है कर्म कहिये। नारकादिरूपकर्म सो स्वभावेन कहिये अपने
अपने नारकादिगतिरूप परणामन स्वभाव करि आत्मनः कहिये जीव का स्वभाव कहिये सुद्ध निःक्रियापरि
नामति सहि अभिभूय कहिये आछादित करि जीव कौ नरतिर्यंच नैरयिकं वा सुरं करोति नरं कहिये मनुष्य ति
र्यंच कहिये तिर्यंच नैरयिकं कहिये नारकी वा कहिये अथवा सुरं कहिये देवता इण चारि गति रूप करोति कहि
ये करै है। भावार्थ। रागादि परिनति रूप क्रिया आत्मा कूं रिहो इहै। तातै इसका नाम भावकर्म है। तिसका निमि
त्ति पाइ पुद्गलकर्म भाव परनवै है। तातै पुद्गलकर्म कौ भी कर्म संज्ञा है। तिसि कर्म कै फल मनुष्यादि पर्याय है। जीव
कै मूलकारण रागादिरूप क्रिया है। तातै इन कै प्रवृत्ति होय है। तातै ए क्रिया के फल हैं। जो रागादि क्रिया न हो
इ तौ पुद्गलकर्म भाव न परनमै जीव कर्म न होइ हि तौ नारकादि पर्याय न हो हि। जैसे दीपक। अग्नि स्वभाव करि तै
ल स्वभाव कौ हरि करि प्रकास रूप कार्य कौ धरै है। तैसे ज्ञानावरनादि कर्म जीव भाव कौ घाति करि मनुष्यादि पर्या
य रूप नाना प्रकार कार्य कौ करै है। आगै मनुष्यादि पर्याय निविषै जीव का स्वभाव नास नांही होय है। ऐसैं निर्धारि
करै है। गाथा। णरणारयतिरियसुरा। जीवा खलु नामकम्मनिव्वत्ता। नहि ते लद्धसहावा। परिनममाना स

र

सकर्म्माणि ॥२६॥ नरनारकतिर्यकसुराजीवा॥ षलुनामकर्मनिर्वृत्तानहि॥ तेलब्धस्वभावापरिणाममानास्वकर्मा
णि॥ टीका॥ नरनारकतिर्यकसुराजीवाः षलुनामकर्मनिर्वृत्तोनरक कहियेमनुष्यनारक कहियेनारकीजीव॥ तिर्य
क कहियेतिर्यंक सुर कहियेदेवता ऐसेजुहेजीवा कहियेचारिगतिसंबंधीएजीवते षलु कहियेनिश्चयस्यो ना
मकर्मनिर्वृत्ता कहियेनामकर्मकरिउपजाएहे॥ चारिगतिकेजीव नामकर्मकेउदयस्योहोयहे॥ हि ते स्वकर्मा
णिपरिणाममानालब्धस्वभावनही कहियेनिश्चयस्यो ते कहियेते चारिगतिसंबंधीजीव स्वकर्माणि कहि
येअपणेंउपजाएजुहेकर्मतिनहिपरिनममानाः कहियेपरनवतेसंते लब्धस्वभावाः कहियेपरणवतेसं
ते लब्धस्वभावाः कहियेप्राप्तहूवाहे॥ चिदानंदस्वभावजिनकों ऐसेण कहियेनाहीहे॥ भावार्थ॥ मनुष्या
दिपर्यायनामकर्म्मनिर्मापितहे॥ परंतु इनकरिजीवकेस्वभावकानासनांहीहोत्ता॥ तेसेहीजीवकानामनां
ही॥ तिनिपर्यायनिविषैजीवजुसोचिदानंदसुद्धस्वभावकोंनांहीपावेहै॥ सुअपनेकर्मनकेपरिणामनतें
जेसेजलप्रवाहवनविषेअपने॥ प्रदेसअरुस्वादकरिनीमचंदनादिवृक्षरूपहोयपरनवेहै॥ तहांवहजलअ
पनेद्रव्यस्वभावअरुस्वादस्वभावकौंनाहीपावेहे॥ तेसेंहीयहआत्माअपनेप्रदेसअरुभावनिकरिक

मेंभावहोयप्रगटनवेंहै। तहांयहआत्माअमूर्त्तवअरूपीतरागचिदानंदस्वभावतिसकोंनाहींपावेंहै।तातेंजीवकेस्व
भावकानासनाहीं।परिणामनदोषतेंनानाप्रकारहोयहै।।आगेंजीवकोंद्रव्यत्वकरिएकपणौंएकअवस्थाहै।तथा
विपर्ययपनिकरिअनवस्थितदिखावेंहै।।गाथा।।जायदिणेवणणस्सदिखणभंगसमुब्भवेजणेकोई।जोहिभवोसो
विलउ।संभवविलयत्तितेणाणा।।२७।।जायतेनैवननश्यतिक्षणभंगसमुद्भवेजनेकश्चित्योहिभवःसविलयःसंभववि
लयसंभवविलयावितितेनाना।।टीका।।क्षणभंगसमुद्भवेजनेकश्चित्नएवजायतेननश्यतिक्षणभंगकहियेसमयस
मयविनासकासमुद्भवकहिएउपजनाहै।जिससकेंऐसाजुहैजनेकहियेजीवलोकतिसविषेंकश्चित्।कश्चितक
हियेकोईजीवनकहियेनाहींएवकहियेनिश्चयस्योंजायतेकहियेउपजेहै।ननश्यतिकहियेविनसै
हैसिविनासीकसंसारविषेंजोद्रव्यदृष्टिकरिदेखियेतो।नकोऊउपजेहैनकोऊविणसैहै।इसिविनासीकसंसारवि
षेंजोद्रव्यदृष्टिकरिदेखियेतो।योहिभवःसविलयकहिये।जोद्रव्यहीकहियेनिश्चयस्योंभवःकहियेउत्पादरूपहैस
कहियेसोईवस्तुविलयकहियेविनासरूपहै।तातेंद्रव्यार्थिकनयकरिउत्पादरूपहै।सकहियेसोईवस्तुविलयःक
हियेविनासरूपहै।तातेंद्रव्यार्थिकनयकरिउत्पादव्ययअवस्थाविषेंद्रव्यएकनित्यहीहै।संभवविलयेइति

प्र.सा इतिनामा। संभवकहियेउत्पाद। विलयकहियेनास। इतिकहियेऐसेदोयपर्यायनानाकरियेभेदलियेहै। पर्यायार्थि

८५ कनयकीअपेक्षाउत्पादव्ययजुदेहै॥ भावार्थ। उत्पादव्ययविषैएकताऔरअनेकताऐसेभेदहै। जोद्रव्यकीदे

खियेतौएकताहै। औरजोपर्यायकरिदेखियेतौअनेकताहै। सोईदिखाइयेहै जैसेसोईघटहैसोईकुंडाहै। ऐसे

कहतेघटअरकुंडेकोएकताहोयनोहै। तातेइनिदोनोसरूपकाआधारम्रतिकाहै सोजोलीजियेतौएकताहै

इतेसेउत्पादव्ययविषैद्रव्यस्वरूपकरिदोनोकाआधारध्रौव्यद्रव्यआवैहै। तातेजीवकेदेवादिपर्यायकेउत्पादहो

ते। मनुष्यादिपर्यायकाविनासहोतैजोईउपजैसोईविनसैइनिदोनोअवस्थाकाआधारध्रौव्यजीवद्रव्यआवैहै

तातेसर्वदाकालजीवद्रव्यस्वरूपकरिदेखतेंकोएकतादीसैहै। तातेसबअवस्थानिविषैएकताहै। अबभेददिखाइयेहै

जैसेघडाऔरहै कुंडाऔरहै। ऐसेकहतेजोइनदोनोकाआधारमृत्तिकालियेहैतौभेदनहोय। तातेघट

कुंडादिपर्यायकेभेदतैभेदहोइहै। जैसेऔरहीउपजैऔरहीविनसैहै। ऐसेकहतेजोइनदोनोकाआधारद्र ८५

व्यलीजियेतौभेदनहोइ। तातेउत्पादव्ययपर्यायकेभेदहोइहै। तातेदेवादिपर्यायकेउपजतेमनुष्यादिपर्यायके

विनसतेऔरउपजैहैऔरविनसैहै। ऐसाभेदहैवमनुष्यादिपर्यायकरिकहियेहै। तातेसमयसमयविषैपर्याय।

निकरिजीवअनवस्थितहै ॥ आगेंजीवकैअथिरभावकाकारनदिखाईयेहै ॥ गाथा ॥ तम्हादुणत्थिकोई ॥ सहावसमव
ट्ठिदोत्तिसंसारेसंसारोपुनकिरिया ॥ संसरमानस्सदव्वस्स ॥ २० ॥ तस्मात्तुनास्तिकश्चित्स्वभावसमवस्थित ॥ इतिसंसारे
संसारः पुनः क्रियासंसरतोद्रव्यस्य ॥ टीका ॥ तस्मात्तुनास्तिकश्चित्स्वभावसमवस्थित ॥ इतिनास्ति ॥ तस्मात्कहिये ॥ ताते
जीवद्रव्यतकरियद्यपिटंकोत्कीर्णथिरहै ॥ तथापिपर्यायनिकरिअथिरहै ताँतेंतुकहियेवहुरिसंसारमेंकहियेइससंसारवि
षैकश्चित्कहियेकोईभीस्वभावसमवस्थितः कहियेस्वभावकरिथिरइतिकहियेऐसानास्तिकहियेनाहींहै संसार
विषैमनुष्यादिरूपकोईभीपर्यायअविनासीनाहीं ॥ स्वभावहीतेंसवअथिररूपहै संसारकास्वरूपकहियेहै ॥ पुनःसं
सरतः द्रव्यस्यक्रियासंसार ॥ पुनःकहियेवहुरिसंसरतःकहियेचारिगतिरूपपरिनमनतेंभ्रमनकरैजुद्रव्यस्यक
हियेद्रव्य ॥ तिसकीजुक्रियाकहियेपूर्वदसाकात्यागउत्तरदसाकाग्रहन ॥ ऐसीजोपरिनतिरू
पक्रियासोसंसारः ॥ कहियेसंसारकास्वरूपहै ॥ आगेंकहैहैकिअसुद्धपरनतिरूपसंसारकेविषैपुद्गलकासंबंधक
हेतहैजिसकरिमनुष्यादिपर्यायहोयहै ॥ गाथा ॥ आदाकम्ममलिमसो ॥ परिणामंलहदिकम्मसंजुत्तं ॥ तत्तोसि
लिसदिकम्मं ॥ तम्हाकम्मंतुपरिणामो ॥ २१ ॥ आत्माकर्ममलीमसः परिणामंलभतेकर्मसंयुक्तं ॥ ततः श्लिष्यति

प्र·
९६

कर्म्मंतस्मात्त कर्म्मंतु परिणामः ॥ टीका ॥ कर्ममलीमस ॥ आत्मा कर्म्मसे पुष्टं परिनामें लभंते कर्म्म कहिये अना
दियो पुद्गलीक कर्म तिसकरि मस ॥ कहिये मलीन ऐसा हूवा है आत्मा कहिये जीव सो कर्म्मसे पुष्टं कहिये मिथ्यात्व रागादि
रूप नुहे कर्म तिसकरि संयुक्त है ॥ परिनाम कहिये असुद्ध विभाव रूप परिनाम तिसहि लभंते कहिये पावे है ॥ ततः कर्म्म
श्लिष्यति ॥ ततः कहिये तिस रागादि विभाव परिनाम ते कर्म कहिये पुद्गलीक द्रव्य कर्म श्लिष्यति कहिये जीव के प्र
देशनिविषे आस्रव धे है ॥ ततस्मात्परिनाम कर्म कहिये बहुरि तस्मात कहिये तिसकारण ते परिनाम कहिये ॥ रागा
दि विभाव रूप नुहे परिनाम सो कर्म कहिये पुद्गलीक बंधकौ कारन भाव कर्म है ॥ भावार्थ ॥ जो आत्मा के रागादि
रूप असुद्ध संसार नामा परिनाम है ॥ सो द्रव्य कर्म बंधका कारन है ॥ और रागादि विभाव परिनाम कौ द्रव्य कर्म बं
धका कारन है ॥ द्रव्य कर्म के उदै होतै भाव कर्म होय है ॥ ताते द्रव्य कर्म कारन है ॥ सो कोउ कहै है कि इहां इतरेतराश्रय
दोष है ॥ विभाव परिनाम ते द्रव्य कर्म होय है ॥ द्रव्य कर्म ते विभाव परिनाम होय है ॥ इन दोनो मे पहिले कौन है ॥
तिसका उत्तर ॥ अनादि द्रव्य कर्म करि युह आत्मा बंधै है ॥ ताते पूर्व बंध द्रव्य कर्म तिस विभाव कौ कारन होय है ९६
विभावता द्रव्य कर्म कौ कारण है ॥ ताते दोष नाही ॥ इस भांति नौतन पुरातन द्रव्य कर्म ॥ नौतन द्रव्य कर्म कौ

प्र·सा कारणहै॥ आत्मा निश्चयकरि अपने विभावकर्म रागादिभावकर्मका कर्त्ता है द्रव्यकर्मका कर्त्ता उपचारकरि है॥ आगे
८७ निश्चयनयकरि आत्मा भावकर्मका कर्त्ता है यह कहै है॥ परिनामो सयमादा। सा पुन किरियत्ति होइ जीवमया। की
रिया कम्मत्ति मदा। तम्हा कम्मस्स ण दु कत्ता॥ ३० परिणामः स्वयमात्मा सा पुनः क्रियेति भवति जीवमयी। क्रिया
कर्मेति मता तस्मात्कर्मणो न तु कर्ता॥ टीका॥ परिणामः स्वयं आत्मा परिनाम कहिये जो आत्माका परिनाम है
सो स्वयं कहिये आप आत्मा कहिये जीव ही है परिनामी अपने परिनामका कर्त्ता है। तातै परिनाम परिनामी
कै भेद नाही। तातै जो जीवका परिनाम है सो जीव ही है। पुनः सा जीवमयी क्रिया इति भवति। पुनः कहिये बहुरि सा
कहिये सो परिनामरूप जीवमयी कहिये आत्माकरि कीनी तातै जीवमयी क्रिया कहिये करतूति। इति कहिये ऐसा भ
वति कहिये होय है जो आत्माकै परिनाम है सोई आत्माकी करतूति है काहेतै जातै निसद्रव्य कै जो परिनामरूप क्रि
या है सो द्रव्यत्तिसा क्रिया स्यौ तन्मय है। तातै परिनामरूप क्रिया स्यौ जीव तन्मय है। तातै जीवमयी है। क्रिया कर्म इति म
ता क्रिया कहिये जो जीवकी करतूति सोई कर्म कहिये भावकर्म। इति कहिये ऐसे नाम मता कहिये कह्यौ है जो क्रिया
है सो स्वाधीन होइ आत्माने कीनी है। तातै तिसा क्रिया ही कौ कर्म कहिये। तातै यह भा ८७

तसिद्ध भई ॥ जो आत्मा कै रागादि विभाव परिनाम है ॥ सो जीव कै स्फुरन्ति है ॥ जो वृत्ति सक्रिया स्यो तन्मय है ॥ सो ई जी
वकै भावकर्म है ॥ तातैं निश्चय करि आत्मा अपनै भावकर्म का कर्त्ता है ॥ तस्मात्कर्म्मनः न तु कर्त्ता ॥ तस्मात् करिये
तिसतैं तातैं आत्मा अपनै भावकर्म का करता है ॥ तातैं कर्मनः करिये द्रव्यकर्म का न तु करिये ना ही है ॥ कर्त्ता करि
ये करनहारा ॥ आत्मा पुद्गलपरनामरूप द्रव्यकर्म का कर्त्ता नाही ॥ तो द्रव्यकर्म का कर्त्ता कोन है ॥ असी जो पूछै है तो सु
नु ॥ पुद्गल का जु है परिनाम सो पुद्गल ही है ॥ परिनामी जु है सो अपनै परिनाम का कर्त्ता है ॥ तातैं परिनाम परिनामी ए
क है ॥ जो पुद्गल परिनाम है सोई पुद्गलमयी क्रिया है सर्व द्रव्यनि कै परिनामरूप क्रिया कै तन्मयपना है ॥ जो क्रिया है
सो ई कर्म है ॥ स्वाधीन पुद्गल नै कीनी है ॥ तातैं पुद्गल अपनै द्रव्यकर्मरूप परिनाम का कर्त्ता है ॥ जीव का परिनाम जु है
भावकर्म तिसका कर्त्ता नाही ॥ तातैं आत्मा अपनै स्वरूप परिनमै है ॥ भावकर्म का कर्त्ता है ॥ पुद्गल स्वरूपना ही परिनमै
है ॥ तातैं द्रव्यकर्म का कर्त्ता नाही ॥ आगैं जिस स्वरूप आत्मा परिनमै सोई दिखाईये है ॥ गाथा ॥ परिणमदि चेदना
ए ॥ आदा पुण चेदना तिधाभिमदा ॥ सा पुण णाणे कम्मे ॥ फलम्मि वा कम्मणो भणिदा ॥ ३१ ॥ परिनमति चेतन
यात्मा पुनश्चेतना त्रिधाभिमता सा पुनर्ज्ञाने कर्मनि फले वा कर्मनो भनिता ॥ टीका ॥ आत्मा चेतनया प

प्र.सा मति आत्मा कहिये । जीव सो चेतनया कहिये अपणे चेतना स्वभाव करि परिणामति कहिये परणामै है जीव का
८८ स्वरूप चेतना है । ताते जीव को जो परिनाम है । सो चेतना को छांडता नांही । ताते जीव चेतना भाव परिणामै है । पुन
सा चेतना त्रिधाभिमता पुनः कहिये बहुरि सा चेतना कहिये सो चेतना परिणति त्रिधा कहिये तीन प्रकार । अ
भिमता कहिये भगवान देवनें कही है ज्ञाने कर्मणि वा कर्मणः फले न भनिता ज्ञाने कहिये ज्ञान परिणति वि
षै । वा कहिये अथवा कर्मन । फले कहिये कर्म की फल परनति विषै । भणिता कहिये सो चेतना तीन प्रकार कही
है । ज्ञान चेतना कर्म चेतना । कर्म फल चेतना ए तीन भेद हैं ॥ आगे इस तीनि प्रकार चेतना का स्वरूप कहिये है ॥
॥ गाथा ॥ णाणं अट्ठवियप्पो कम्मं जीवेन जं समारद्धं । तमणेगविधं भणिदं फलं ति सोक्खं व दुक्खं वा ॥ ३२ ॥ ज्ञा
नमर्थविकल्पः कर्म जीवेन यत्समारब्धं तदनेकविधं भणितं फलमिति सौख्यं वा दुःखं वा ॥ टीका ॥ अर्थविकल्पं
ज्ञानं अर्थ कहिये जीवादिक स्वपर भेद लिये समस्त पदार्थ तिनका विकल्प कहिये भेद संयुक्त तदाकार जानना
सो ज्ञान कहिये ज्ञान भाव है । जैसे आरसी भेद लिये घटपटादि पदार्थनकौ तदाकार प्रतिभासै है । तैसे ज्ञान
एक ही काल स्वपर पदार्थनिकौ प्रगट करै है । ऐसे ज्ञानभाव रूप आत्मा का परिनमन सो ज्ञान चेतना कहिये ८८

जैं।वैराग्यसमारब्धेंनततकर्मजीवेनकहियेआत्मानेपनकहियेजोअपनीकरतत्तिकरिसमयसमपवियेजोभा
वसमारब्धंकहियेकीनीहै।ततकहियेसोकर्मकहियेभावरूपकर्मकहिये।सोकर्मआत्माकेपरिनामकीअपेक्षा
यद्यपिएकप्रकारहै।अैसेसुभअसुभकर्मरूपजुआत्माकापरिनमनसोकर्मचेतनाकहिये।सौख्यवादुषेवाइति
फलंसोख्यंवाकहियेअथवासुषरूप।दुषंवाकहियेअथवादुषरूपइतिकहिये।इहफलकहियेतिसकर्मका
फलहै।सुभद्रव्यकर्मकेसंबंधतेंजुआत्माकैसाताउदयहोइसोअनाकुलरूपइंद्रियाधीनसुषरूपकर्मफलक
हिये।औरजोअसुभद्रव्यकर्मकेसंबंधतेअसाताहोइ।सोसुषभावतेरहितविकाररूपदुःषनामकर्मकेफलक
हिये।अैसेकर्मफलकेवेदनरूपजुआत्माकापरिनमसोकर्मफलचेतनाकहिये।इसिभांतिज्ञानचेतनाकर्मफ
लचेतनाकेस्वरूपकानिश्चयपज्ञानन्नो।।**आगेज्ञानकर्मफलअभेदनयकरिआत्माहीदिषाईयेहै।।गाथा।।**अ
प्पापरिनामप्पा।परिनामोनाणकम्मफलभावी।तम्हानाणंकम्मं।फलंचआदामुणेपद्वा।।३४।।आत्मापरिणाम
त्मा।परिणामोज्ञानकर्मफलभावीतस्मात।ज्ञानंकर्मफलंचात्माज्ञातव्यः।।**भावार्थ**।।आत्मापरिनामात्मा
आत्माकहियेजीवसोपरिनात्माकहियेपरिनामहै।आत्मास्वरूपजिसकाअैसाहै।आत्मापरिणामगास्व

प्र·सा भावकौसहालियैहै ॥ तातेंपरिनामआत्माहीहै ॥ परिनामज्ञानकर्मफलभावीपरिनामकहियें ॥ परिनामतुंहे
९८ सोज्ञानकर्मफलभावीकहियैं ॥ ज्ञानरूपकर्मरूपकर्मफलरूपहोयवेकोसमर्थहै ॥ ज्ञानपरिनामकर्मपरिना
म ॥ कर्मफलपरिनाम तीनप्रकारपरिनामहै ॥ परिनामतेंआत्मा जुदानांही ॥ परिनामपरिनामीकेंएकतांहै
तस्मातज्ञानंकर्मफलंचआत्माज्ञातव्या ॥ तस्मातकहियेजातें परिनामपरिनामीएकहै ॥ तातेंज्ञानकहि
येज्ञानपरिनामकर्मकहियेकर्मपरिनामचकहियैबहुरिफलंकहियेकर्मफलपरिनाम ॥ एतीनहीपरिनामआ
त्माकहियै ॥ जीवस्वरूपज्ञातव्यकहियेजाननेजोग्यहै ॥ अभेदनयकीअपेक्षाकर्मपरिनामकर्मफलपरिनाम
सोएकताहै ॥ शुद्धद्रव्यकथनविषैआत्माकेपरद्रव्यकेसंबंधकाअभावहै तहांअसुद्धपरिनामनिकाकथनकहां
आवै ॥ तातेंसुद्धद्रव्यकेकथनविषैसुद्धपर्यायभीद्रव्यहीकेंअभ्यंतरअंतरलीनहोयहै ॥ तहांसुद्धद्रव्यएकताप
कमात्रतिष्ठेहै आगेंइसजीवकेंसुद्धभावकीटीकतातेंज्ञानभावकीसिद्धिहोयहै ॥ तबस्वज्ञेयरूपआत्माकै
सुद्धस्वरूपकालाभहोयहै ॥ ऐसाकथनकरिसर्वहीकीया ॥ जुद्रव्यकासामान्यवर्णनतिसकौप्रगटकरेहै ॥ गा
था ॥ कत्ताकरणंकम्मं । फलंचअप्पातिनिछिदोसमनो ॥ परिनमदिनेवअणपंजदिअप्पाणंलहदिसुद्ध ॥ ३४ ॥ ९८

कर्त्ताकरणंकर्मचफलंचात्मेति॥ निश्चित्यमनः परिणमतिनैवान्यद्यद्यात्माणंलभतेशुद्धं॥टीका॥कर्त्ताकरणंक
र्मचफलेआत्माइतिनिश्चितःश्रमनःयदिअन्यत्नैवपरिणमति॥कर्त्ताकहियेकर्मकाकरणहारा॥करणकहिये
जिसकरिकीजियैकर्मकहिये॥जोवकर्त्ताकरिकीजियैहैचकहियेवहुरिफलकहियेकरततिकाफलएच्यारिभेदआ
त्माहीहै॥आत्मातैजुदेनाही॥इतिकहिये॥ऐसानिश्चितःकहियेनिश्चयकीयाहैजिनि॥ऐसाजुहैश्रमनकहिये
भेदविज्ञानीमुणिसोयदिकहियेजोअन्यत्कहियेपरद्रव्यरूपनैवकहिये॥निश्चयस्यौंनाहीपरिनमतिकहियेप
नमतैततदासुद्धंआत्माणंलभते॥तदाकहियेतिसकालसुद्धंकहियेकर्मोपाधिरहित॥आत्मानंकहियेसुद्धचिदानं
द॥आत्माकौलभतेकहियेपावैहै॥भावार्थ॥जबजीवपरद्रव्यकेसंबंधसेतीआत्माकौजुदाजानैहैज्ञाणव
रिसुद्धकरणसुद्धकर्मसुद्धफलइणिच्यारिभेदनिस्यौंआत्माकौअभेदजानैहै॥इनिस्यौंएकताकानिश्चयकरिका
हूकालविषैभीपरद्रव्यस्यौंएकतामानैनाहीपरिणमैहै॥इनिस्यौंएकताकानिश्चयकरिकाहूकालविषैभीपरद्रव्य
स्यौंएकतामानैनाहीपरिणमैहै॥सोजीवअभेदरूपज्ञायकमात्रअपनैसुद्धस्वरूपकौप्राप्तहोयहैसोईकथनविसे
षताकरिकहियैहै॥आगैजैसैआररूपथ्याव्हेसंजोगसेतीउत्पन्नहोयहै॥फटिकमनिविषैरागविकार॥ते

प्र.सा
९०
सेंअनादियुद्गलकर्मबंधरूपउपाधिकेसंयोगसौंउत्पन्नभईहै रागअग्निजिसके॥ ऐसामेंप्रकृतिविकारसंयुक्तप्र
र्वेंही अज्ञानदसाविषैसंसारीहोताभया॥ तिसकालविषैभीमेरा औरद्रव्यकोईहूवानाहीं॥ तहांभीमेंएकहीअ
पनेंहीभावकरिसरागचैतन्यभावकरिस्वाधीनकर्ताहोताहूवा॥ औरमैंएकसरागचैतन्यभावकरिअज्ञानभा
वकासाधकहूवा॥ तातेंमैंहीकरनहोताहूवा औरमैंहीएकसरागचैतन्यपरिणतिस्वभावकरिआपकरिअपनें
असुद्धभावकोप्राप्तहूवा॥ तातेंमैंहीकर्महोताहूवा॥ औरमैंहीएकसरागचैतन्यस्वभावकरिउत्पन्नआत्मीकसु
खतेंविपरीतदुखरूपकर्मफलहोताहूवा॥ औरअज्ञानदसाविषै॥ जैसेंथाअरूपुण्यकेसंयोगकेविनासतेंनि
र्मलसाहजीकसुद्धएकमनिहोयपरै॥ तैमैंसर्वथापरकृतविकारतेंरहितमैंनिर्मलमोक्षमार्गविषैप्रवर्ततोहोतो
अबहूमेरा औरकोईनाही॥ अबमैंहीएकनिर्मलचैतन्यभावकरिस्वाधीनकर्ताहौं॥ औरमैंहीएकनिर्मलचैत
न्यपरिणामनस्वभावकरि॥ अपनेंसुद्धस्वरूपकौप्राप्तहोयहौं॥ तातेंकर्ममैंहौं औरमैंहीएकनिर्मलचैतन्यस्वभाव
कोउत्पन्नअनाकुलआत्मीकसुखरूपकर्मफलहौं॥ तातेंज्ञानदसाविषैभीमैंहीएकईनिस्यारिभेदनिसौंअ ९०
भेदरूपपरणामोंहौं॥ औरकोईनाही॥ इसिप्रकारइसिजीवकेबंधपद्धतिकेहोतेंसंतें॥ भोएकआत्मस्वरूपकीभा

चनोंतेपरद्रव्यरूपपरणतिकाहूकालविषैभीणाहोइ। जैसेएकभाववर्यपरिनतिपरमानकोअन्यपरमानैस्योसंयोगनहो
इ। तातैअसुद्धपर्यायनिस्योसंबंधनहोइ। तातैज्ञानीनिर्मलहोयहै। तातैअन्यद्रव्यनिकेसम्हतेभिन्नस्वरूपसम
लकर्तोकरणकर्मफलआदिजुहै। समस्तभेदतिसतैरहित। अभेदरूपसुद्धनैपकीमोहकाविनासवै। औसाप्रका
सरूपज्ञाणतत्वसोभागसमाणहै। जबइसिजीवकैपरपरनतिमिटैहै। कर्त्ताकर्मभेदरूपभ्रमकानासहोयहै। त
वसुद्धस्वरूपकोपावैहै। ज्ञाणमात्रनिर्मलआत्मीकप्रकासविषैमाहजीवकर्माहिमांसपुतसदाकालमुक्तहूवाति
ष्टैहै। इतिश्रीप्रवचनसारसिद्धांतकीटीकाविषैसामान्यज्ञेयाधिकार ३ आगेद्रव्यविसेष
कथनकाअधिकारकहियैहै। तहांप्रथमहीद्रव्यकेजीवअजीवऐसेदोइभेदरहियाईगहै। गाथा। दव्वंजीवमजी
वं। जीवोपुणचेदनोवउगमऊ। पोग्गलदव्वप्पमुहं अचेदनंहवदिअजीवं। १। द्रव्यंजीवोजीवः पुनश्चेतनोपयोगम
य। पुद्गलद्रव्यमुखोचेतनोभवतिअजीवः। टीका। द्रव्यंजीवः अजीवः द्रव्यंकहियेसत्तारूपवस्तुसोजीव। अजीवक
हियेजीवअजीवऐसेदोयभेदलिसैहै। पुनः जीवचेतनोपयोगमय। पुनः कहियेबहुरि। जीवकहियेजीवद्रव्यसो-
चेतनोपयोगमयःकहियै। चेतनाअरुज्ञानदर्सनउपयोगनिस्योतन्मयहै। पुद्गलद्रव्यप्रमुखअचेतनअजीव

प्र.सा भवति॥ पुद्गलद्रव्यमनुयक्कहिये॥ पुद्गलद्रव्यआदिलेकरिपंचद्रव्यअचेतनकहिये। चेतनतारहितनउस्वरूपअजीवकहि
८९ ये॥ अजीवद्रव्यभवतिकहियेहोइहै॥ भावार्थ॥ द्रव्यदोयप्रकारहै॥ एकजीवएकअजीव। तिणमेंजीवएकहीप्रकारहै
अजीवकेपुद्गलधर्मअधर्मकालआकासऐसेपंचभेदहैं॥ जीवकालक्षनचेतनाऔरउपयोगहै। जोस्वरूपकरिस
दाप्रकासमानहै। अविनासीप्रगटहै॥ जीवकासर्वस्वहै॥ जाननमात्रहैसोचेतनाकहिये॥ तिसहीचेतनाकापरिनाम
है॥ पदार्थकेजाननरूपव्यवहारविषेप्रवर्त्तेहै॥ सोज्ञानदर्शनरूपउपयोगकहिये॥ तातैंजोचेतनाउपयोगमयीहै
सोजीवहै॥ औरजोचेतनाउपयोगकरिरहितहैसोअजीवहै॥ आगेलोकअरुअलोकऐसेभेददिखावैहैं॥ गाथा॥
पुग्गलजीवणिवद्धो॥ धम्माधम्मत्थिकायकालड्ढो। वट्टदिआयासेजो॥ लोगोसोसव्वकालेदु। २ पुद्गलजीव।
निवद्धोधर्माधर्मास्तिकायकालाढ्या। वर्त्ततेआकासेयोलोकः ससर्वकालेतु॥ टीका॥ यः आकासेपुद्गल
जीवनिवद्धधर्माधर्मास्तिकायकालाढ्याः वर्त्तते॥ ससर्वकालेतुलोकः यकहियेजोक्षेत्रआकासेकहिये
अनंतआकासविषैपुद्गलजीवनिवद्धकहिये॥ जीवपुद्गलकरिसंयुक्तहैऔरधर्माधर्मास्तिकायकालढ्याः
कहियेधर्मास्तिकायअधर्मास्तिकाय॥ औरकालइनकरिआढ्यकहियेभर्याहै॥ ससर्वकालेतुलोकसकहिये ८९

सो क्षेत्र सर्व कालेतु कहिये ॥ अतीत अनागति वर्तमान कालविषै ॥ लोक कहिये लोक ऐसे नाम होइ है ॥ भावार्थ
आकाश द्रव्य लोक अलोक के भेद तें दोय प्रकार है ॥ अनंत सर्व व्यापी आकाश विषै जितना आकाश पुद्गल जीव
धर्म अधर्म काल द्रव्यानि करि व्याप्त है ॥ सो लोकाकाश कहिये ॥ न होइ केवल आकाश है ॥ और ए पंच द्रव्य नाहीं ॥ सो अ
लोकाकाश कहिये ॥ आगे षट् द्रव्य विषै क्रियावंत के द्रव्य है ॥ और भए व वंन के है ॥ ऐसा भेद दिखाइये है ॥ मूल ॥ उप्पा
दट्ठिदिभंगा ॥ पुग्गलजीवप्पगस्स लोगस्स ॥ परिनामा जायंते ॥ संघादादो व भेदादो ॥ ३ ॥ उत्पादस्थितिभंगाः पुद्गल
जीवात्मकस्य लोकस्य परिनामा जायंते ॥ संघाताद्वा भेदात ॥ अर्थ ॥ पुद्गल जीवात्मकस्य लोकस्य उत्पादस्थि
तिभंगा परिणामा जायंते ॥ पुद्गल जीवात्मकस्य लोकस्य कहिये पुद्गल द्रव्य और जीव द्रव्य इनकै गति स्थिति
परिणतिरूप जु है लोक ॥ तिसके उत्पाद कहिये उपजना स्थिति कहिये ध्रौव्यता ॥ भंगा कहिये व्यय ऐसे
परिणामाः ए तीनि परि ॥ नाम जायंते कहिये उपजै है ॥ ए तीन इ परिनाम जीव पुद्गल के काहे तें होय है ॥ सं
घातात् वा भेदात् संघातात् कहिये ॥ मिलाप तें वा कहिये ॥ अथवा भेदात् कहिये विछुरने ॥ भावार्थ
क्रिया और भाव ऐसे दोय भेद रति करि द्रव्यनि विषै भेद है ॥ तहां पुद्गल अरु जीव ए दोइ द्रव्य क्रियावंत

प्र.सा. ६२

तहै। औरभाववंतभीहै। औरयांकीधर्मअधर्मआकासअरुकालएच्यारिद्रव्यभाववंतहीहै। क्रियाकातौलक्ष-
णहलनाचलना। भावकालक्षणपरिणमनमात्रहै। परिनमणमेरूपभाववरिसमस्तहीद्रव्यउत्पादव्ययध्रौ-
व्यतासंयुक्तहै। तातैसमयसमयविषैपर्यायतैपर्यायांतररूपहोइहै। औरएक्रियाजुहैसुजीवपुद्गलहीविषैहै। पु-
द्गलनिकाहलनचलनस्वभावहै। तातैस्कंधसौमिलैभी औरविछुरैभी। तातैमिलनाविछुरणकीअपेक्षाउत्पाद-
व्ययध्रौव्यतासंयुक्तहै। क्रियावंतहै। तैसैहीजीवभीकर्मसंयोगतै। हलनचलनक्रियारूपहोयहै। तानकर्मनोकर्म-
पुद्गलसौमिलैभीहै औरछूटतनसौविछुरैभीहै तातैउत्पादव्ययध्रौव्यतासंयुक्तक्रियावंतहै। तातैयहबातसिद्ध
भईजीवपुद्गलक्रियावंतभीहै। औरभाववंतभीहै। औरिद्रव्यभाववंतहीहै। आगैगुणनिकैभेदतैद्रव्यनिकाभेद
हैयहदिखावैहै॥गाथा॥ लिंगेहिजेहिदव्वं जीवमजीवंचहवदिविण्णादं। तेतब्भावविसुद्धा। मुत्तामुत्तागुणाणे-
या॥४॥ लिंगैर्यैर्द्रव्यंजीवोजीवश्चभवतिविज्ञातं। तेतद्भावविसिष्टामूर्त्तामूर्त्तागुणाज्ञेया॥टीका॥ यैःलिंगैःजीवः
चअजीवः। द्रव्यंविज्ञातंभवति यैःकहियेजिनिलिंगैः। कहियेजिनिचिह्ननिकरिजीवः। कहियेआत्मवस्त- ८२
हियेवहरि-अजीवः। कहियेपुद्गलधर्मअधर्मकालआकासद्रव्यनकहियै। ऐसेजीवअजीवद्रव्यभेदनिकरि

दोयप्रकारद्रव्यविद्वांतेंकहियेजान्याहुवाभवतिकहियेहोइहै ॥ जिनिलक्षननकरिजीवअजीवभेदजानेंहैंतेतद्भाववि
शिष्टाः मूर्त्तामूर्त्ताः गुणाः ज्ञेयाःतेकहियेते ॥ वेलक्षणसद्भावकहियेतिनहीजीवअजीवद्रव्यनिकाजुहै ॥ स्वरूपतिस
करिविसिष्टाकहियेविसेषतालियें ॥ मूर्त्ताकहियेमूर्त्तीकअमूर्त्ताकहियेअमूर्त्तीकगुनाः कहियेयाप्रकारकेगु
नज्ञेयाकहियेजाननें ॥ भावार्थ ॥ जैसेंसकैंयद्रव्यकेंआधारतिष्ठेहै ॥ तेगुनकहियेतेवेगुनद्रव्यकेंचिहनहै ॥ द्रव्यनि
कास्वरूपगुणनिकरिजान्याजायहै ॥ तातेंद्रव्यलक्ष्यहै ॥ गुणलक्षणहै ॥ इनिलक्ष्यलक्षननिविषैकथंचितभेद
भीहै ॥ औरअभेदभीहै सोईदिखाईएहै जोद्रव्यहै ॥ सोगुणनाहीं जोगुनहैं सोद्रव्यनाहीं ॥ ऐसेंगुणगुनीभेदक
हियेतौभेदहै ॥ औरवस्तुकेंस्वरूपतेंजोदेखियेतौलक्ष्यलक्षणभेदनाहीं ॥ काहेतेंप्रदेसभेदनाहीं एकहीहै औ
जिसद्रव्यकास्वभावहै ॥ सोअपनोअपनोविशेषतालियेंहै ॥ तातेंमूर्तीकद्रव्यकेंमूर्त्तगुनहोयहि ॥ अमूर्तीकद्रव्य
केअमूर्त्तगुनहोहि ॥ एपुद्गलद्रव्यमूर्त्तीकहै ॥ औरजीवधर्मअधर्मआकासकालएपंचद्रव्यअमूर्त्तीकहै ॥ आ
गेमूर्त्तअमूर्त्तगुननिकालक्षनसंबंधकहैहैं ॥ गाथा ॥ मुत्ताइंदियगेज्झा ॥ पुग्गलदव्वम्मिअणेगविधा ॥ दव्वाणा
ममुत्ताणं ॥ गुणाअमुत्ताणमुणेदव्वा ॥ ५ ॥ मूर्त्ताइंद्रियग्राह्यापुद्गलद्रव्यात्मकाअनेकविधा ॥ द्रव्याणाममूर्त्ता

प्र॰सा॰ ८४ नां। गुणाअमूर्त्ताज्ञातव्या ॥टीका॥ मूर्त्ताइंद्रियग्राह्यामूर्त्तीकहियेजेमूर्त्तीकगुणहै। तेइंद्रियग्राह्याः कहियेइंद्रि
यनिकेग्रहणेजोग्यहै ॥भावार्थ॥ अमूर्त्तीकगुणइंद्रियनिकरिनाहीग्राह्यहै। मूर्त्तीकगुनकिसद्रव्यकेहै। एपद्गु
लद्रव्यात्मकाकहियेपुद्गलद्रव्यकेहै। तेपुद्गलद्रव्यकेमूर्त्तीकगुनकैसेहै। अनेकविधाकहिये। वर्णगंधरसस्प
र्शादिभेदनिकरिअनेकप्रकारहै। अमूर्त्तीकगुनमंचद्रव्यकेसंबंधतेकहेहै। अमूर्त्तानांद्रव्याणांगुणाः अमूर्त्ता
ज्ञातव्या। अमूर्त्तानांकहियेअमूर्त्तीकहैजेद्रव्यानांकहिये। धर्मअधर्मआकाशकालजीवद्रव्यतिणकेगुनाः क
हियेगुणतेअमूर्त्ताकहिये। अमूर्त्तीकज्ञातव्याकहियेजाननै ॥आगैमूर्त्तपुद्गलद्रव्यकेगुनकहेहै॥गाथा॥ वर्णरस
गंधफासा। विज्जंतेपुग्गलस्ससुहुमादो। पुढवीपरियंतस्सयसद्दोसोपोग्गलोचित्तो। १ वर्णरसगंधस्पर्शाविद्यंते
पुद्गलस्यसूक्ष्मत्वात्। पृथिवीपर्यंतस्यचशब्दसपौद्गलश्चित्र ॥टीका॥ पुद्गलस्यवर्णरसगंधस्पर्शाविद्यंते। पु
द्गलस्यकहियेपुद्गलद्रव्यकेवर्णरसगंधस्पर्शाकहियेपंचप्रकारवर्णपंचप्रकाररसदोयप्रकारगंध। आठप्रकार
स्पर्शएच्यारिप्रकारकेगुणविद्यतेकहियेएवर्त्तमानहैकैसाहैपुद्गलद्रव्यसूक्ष्मात्। पृथ्वीपर्यंतस्यसूक्ष्मात्क ८४
हियेपरमाणूतेलेकरिपृथ्वीपर्यंतसकहिये महास्कंधपृथ्वीताईअनेकप्रकारहैपुद्गलघटप्रकारहै। सूक्ष्म

सूक्ष्म॥ सूक्ष्म॥ सूक्ष्म॥ स्थूल॥ स्थूल॥ सूक्ष्मस्थूल॥ स्थूलस्थूल परमानू॥ सूक्ष्मतैं सूक्ष्म है॥ कार्मांणवर्गणा सूक्ष्म है॥ स्पर्श
रसगंधवर्णशब्द सूक्ष्मस्थूल है॥ नेत्र करि नाहीं देखिये है॥ तातैं सूक्ष्म है॥ चारि इंद्रियनि करि ग्रहे जाइ है॥ तातैं स्थूल है॥
छाया सूक्ष्मस्थूल है॥ नेत्र करि देखिये है॥ तातैं स्थूल है॥ हस्तादि ग्राह्य नाहीं॥ तातैं सूक्ष्म है॥ जल तैलादिक स्थूल है
छेदे भेदे तैं फिरि मिलै है॥ स्थूलस्थूल पृथ्वी पर्वत काष्ठादि छिन्ना नने॥ इनि भेदनि करि पुद्गल अनेक प्रकार है॥ पः सच्छ
रूपो पुद्गल॥ पः कहिये जो शब्द कहिये स्कंधनि के व्याघात तैं उत्पन्न होय है॥ शब्दसः कहिये सो पोद्गलः कहिये पोद्गल काय
पर्याय है॥ कैसा है सर्व चित्रः कहिये भाषा अभाषादि भेदनि करि अनेक प्रकार है ॥भावार्थ॥ स्पर्श रस गंध वर्ण ए चारि गु
ण इंद्रियनि करि ग्रहे जाय है ॥जो कोई पूछै॥ कि परमानूं कार्मांन वर्गनादिक विषै ए चारि गुण है तिनकी अत्यंत सूक्ष्म
ता है॥ ते इंद्रियनि करि नांही ग्रहे जाय है॥ सो इनिकौं इंद्रियग्राह्य क्यौं कहौ हौ॥ ॥तिसका उत्तर॥ कि जो परमानू आदि पु
द्गल इंद्रिय करि नांही ग्रह्या जाय है॥ तथापि परमानू विषै इंद्रियग्रहन जोग्य शक्ति है॥ जब स्कंध के संबंध स्यौं स्थूल
ता धरै है॥ तब इंद्रियनि करि ग्रहे जाय है॥ तातैं व्यक्तशक्ति की अपेक्षा ग्रहे जाइ है॥ अथवा मति ग्रहे जाइ परंतु इंद्रि
यग्राह्य कहिये॥ समस्त ही सर्व प्रकार के पुद्गल कै ए चारि गुण पाइये॥ अमूर्त द्रव्य कै ए गुन नांही तातैं ए पुद्गल

प्र.सा कैंचिन्तहै॥ सब्दभीकर्णइंद्रियग्राह्यहै॥ परंतुसब्दपुद्गलकापर्यायहै गुणनांही॥ काहेतेंजातेंअणेकपौद्गलस्कंध
८५ निकेसंयोगतैंउपजैहै॥ तातेंपर्यायहै॥ जेमतीसब्दआकाशकागुणमानैहै तिन्हअप्रमाणहै॥ काहेतेंजातेंआकाश
द्रव्यअमूर्तीकहै इंद्रियग्राह्यनांही॥ शब्दकर्णइंद्रियकरिग्रहियेहै जिसकाकारणइंद्रियग्राह्यनहोय॥ तिसका
कार्यइंद्रियग्राह्यकैसेंहोइ॥ जोइंद्रियग्राह्यसब्दहोयहै॥ तौअमूर्तीआकाशभीकर्णइंद्रियकरिग्राह्यहोउ॥ अ
रुगुणहै॥ आकासगुनीहै॥ गुणगुनीकेप्रदेसजुदेहोतेनांही॥ तातेंसब्दकेग्रहनतेंआकासभीकर्णइंद्रियकरि
ग्रहनहोउ॥ आकासतैंइंद्रियग्राह्यहैनांही तातेंसब्दआकासकागुननांही॥ जोकोईकहैगाकिपुद्गलमूर्तीक
है॥ तौसकागुणसब्दहोउ॥ पुद्गलकापर्यायक्याहेकौकहोहो॥ तिसकाउत्तर॥ पर्यायकालक्षननित्यहै॥ जौसब्द
कौपुद्गलद्रव्यकागुणकहियेतौपुद्गलशब्दरूपपाइ॥ येजववंधनिकासंयोगहोयहै॥ तवसब्दहोयहै॥ तातेंप
र्यायहीहै॥ गुननांही॥ यहवातदृष्टांतकरिजानीजो कोईकहैकिजैसेंपुद्गलकापर्यायहै॥ स्पर्शनादिचारिइंद्रियनि
करिग्रहीजायहै॥ तैसैंसब्दभीचारिइंद्रियनिकरिग्रह्यानाइ॥ एककर्णइंद्रियकरिक्योंग्रहियेहै॥ तिसकाउत्तर ८५
किजलपुद्गलकापर्यायहै॥ नासिकाकरिनांहीग्रहियेहै॥ अग्निनासिकाजीभकरिनांहीग्रहियेहै॥ पवननासि

कौंजीभनेत्रकरिनाहींग्रहियेहै ॥ तातैंतिसइंद्रियकाजोविषयहै ॥ तिसकरिसोग्रहिये ॥ इहनियमतौनाहींहैकिजोपु
द्गलकापर्यायहैसोसवइंद्रियनिकरिग्रहियेहै ॥ तातैंसर्वएककरणइंद्रियनिकरिग्रहियेहै ॥ औरच्यारइंद्रियनकरिग्र
हनाहीं ॥ जोकोईअन्यमतीयोंकहैहैकिजलविषैगंधगुणनाहींहै तातैंनासिकाजलकौंनाहींग्रहैहै ॥ अग्निविषैगंधर
सगुणनाहीं ॥ तातैंनासिकाजीभअग्निकौंनाहींग्रहैहै ॥ पवनविषैगंधरसरूपनाहीं ॥ तातैंनासिकाजीभनेत्रपवनकौं
नग्रहैहै ॥ तिसकाउत्तर ॥ ऐसापुद्गलकोईनाहीं ॥ जोस्पर्शरसगंधवर्णइनिच्यारिगुणनिविषैएककरहैयतीनगुण
निकाधारककरहै ॥ काहेतैं जातैंसर्वपुद्गलविषैच्यारिगुणअवश्यहोय ॥ तातैंगुणकमीहोयनाहीं ॥ यहजिनाज्ञाहै
तातैंपृथ्वीजलअग्निवायुइणविषैस्पर्शादिच्यारहीगुणजाननैमुख्यगौणकाभेदहै ॥ पृथ्वीविषैस्पर्शरसगंधवर्ण
च्यारिगुणप्रगटपाईयेहै ॥ जलविषैस्पर्शादिसवहीच्यारहीगुणप्रगटपाईयेहै ॥ जलविषैगंधकैगौणताहै ॥ अ
ग्निविषैगंधरसकैगौणताहै ॥ पवनविषैगंधरसवर्णकैगौणताहै यातैंगौणमुख्यकाभेदहै ॥ सवहीपुद्गलविषैच्या
रिगुणहैंयहि ॥ औरयुक्तिकरैहै ॥ चंद्रकांतपाषाणपृथ्वीकायतैंजलश्रवैहै ॥ जलतैंपृथ्वीकायमोतीउपजैहै ॥ अ

रनीलकहींतैअग्निउपजै है । जवऐसाअन्नकेषायेतैपेटमांहिवायुहोय है । तातैप्रथ्वीजलअग्निवायुकेपुद्गलनिवि
षैभेदनांही परिनामभेदकरिभेद है । सबहीविषैस्पर्शादिच्यारिगुणपाइयै ॥ आगैअमूर्तीकपचद्रव्यनिकेगुन
कहै है ॥ गाथा ॥ आगासस्सवगाहोधम्मद्दव्वस्सगमणहेदुत्तं । धम्मेदरदव्वस्सदु गुणोपुणोठाणकारणदो ॥ ७ ॥ का
लस्सवट्टणासे गुणोवओगोत्तिअप्पणोभणिदो । णेयासंखेवादो गुणाहिमुत्तिप्पहीणाणं । ८ युग्म ॥ आकाश
स्यावगाहो ॥ धर्मद्रव्यस्यगमनहेतुत्वं ॥ धर्मेतरद्रव्यस्यतुगुणः पुनः स्थानकारणता कालस्यवर्तमानास्यात्उपयो
गइत्यात्मनोभनितः ज्ञेयः संक्षेपाद्गुणाहिमूर्तिप्रहीणानां ॥ टीका ॥ आकासस्यअवगाहः । आकासस्यकहियै
आकाशद्रव्यकाअवगाहः कहियै । एकहीकालसमस्तद्रव्यनिकौजायगादेनेकाकारणऐसाविशेषअवगाह
गुन है । तुधर्मद्रव्यस्यगमनहेतुत्वं । तुकहियैबहुरिधर्मद्रव्यसकहियैधर्मद्रव्यकागमनहेतुत्वंकहियै । एकहीकाल
गतिभावकौपरणयेजुहैजीवपुद्गलतिनकौगमनकारणऐसागतिहेतुत्वविशेषगुण है । पुनः धर्मेतरद्रव्यस्य
गुणस्थानकारणता पुनः कहियैबहुरि । धर्मेतरद्रव्यसकहियैअधर्मद्रव्यतिसकागुणकहियैविसेषगुनस्थान

कारणकहिये॥ एकहीकालस्थितिभाकौवपररायेजुहैजीवपुद्गलतिनकौस्थितिकारणहै ---------
जुहैजीवपुद्गलतिनकौस्थितिकारणहै॥ कालस्पर्द्धमानस्मात ---------- कालद्रव्यकावर्त्तनाकहियेसम
स्तहोद्रव्यनिकेपर्यायनिकेपरिनम ---------- कारण अैसावर्त्तनानामागुणस्मात्कहियेवर्त्तेहै॥ आत्मन
---------- आत्मनःकहियेजीवद्रव्यकागुनकहिये विसेषगुणउपयो ---------- नामभणितनकहि
येकह्याहै भगवंतदेवनै॥ हियेजेगुणाःसंक्षेप ---------- गुणया हिकहियेनिश्चयस्योएतेगुणाःकहियेएवं
होकहेजुविसेषतेसंक्षेपात्कहियेविसेषाविसेषविस्तारविनामूर्त्तिप्रहीनानांकहियेमूर्त्तिरहितजेपंचद्रव्यहैति
नकेजेयाकहियेजाननै॥ भावार्थ॥ अवगाहननामागुणआकासहीद्रव्यकाचिहनहै॥ काहेतेजातेअन्यपंचद्रव्य
सर्वगतिनांही॥ आकाशसर्वगतहै॥ तातेपंचद्रव्यकाअवगाहणगुणनांही॥ आकासस्वकाभाजनहै॥ सर्वद्रव्यदस
होदिसिविषैरहैहै॥ तातेइसकाअवगाहनगुणचिहनहै॥ सोगुणआकासकेआस्तित्वकौप्रगटकरिदिखावैहै॥ जीवपुद्गले
कौगतिकौसहाकारीगतिहेतुत्वनामागुणधर्मद्रव्यहीकाचिहनहै॥ अन्यपंचद्रव्यवननांही॥ काहेतै जातेकालपुद्ग
लअप्रदेसीहै॥ तातेकालपुद्गलकातौगुननांही॥ जोद्रव्यअपंडलोकपरिमाणहोय॥ सोईजीवपुद्गलकौसवनागेनि

प्र.सा
९
तिसगतिकौसहाईहोय॥ समुद्घातविनाजीवद्रव्यलोकके असंख्यातमेंभागविषैरहैहै॥ तातैजीवद्रव्यकाभीनांही
आकासलोकालोकव्यापवरिहै॥ जोआकासकागुणहोयतौजीवपुद्गलअलोकविषैभीगमनकरैं॥ तातैआका
सकाभीनाही॥ अधर्मद्रव्यजीवपुद्गलकीथितिकौसहाईहै॥ तिसकैगतिसहाईविरूपहै॥ तातैअधर्मकागुनभी
नाही॥ यहगतिहेतुत्वगुणएकधर्मद्रव्यहीकैप्रगटकरिदिखावैहै तैसैंहीएककारथितिभावकैपरणएजुजीव
पुद्गलतिणकौंथितिकाहेतुत्वएकअधर्मद्रव्यहीकैहै॥ काहेतैंजातैकालपुद्गलपुअप्रदेसीहै॥ एदोऊषंडद्रव्यहै॥ इ
नकागुननाही॥ अरुजीवसमुद्घातविनालोकपरिमाननहोतानांही॥ तातैजीवकाभीगुणनांही॥ आकासलो
कालोकप्रमाणहै॥ जोआकासकागुणहोइतौअलोकविषैभीजीवपुद्गलकीथितिहोइ लोकालोककाभेदमै
टै॥ तातैआकाशकाभीनांही॥ तातैथितिहेतुत्वनामागुणअधर्मद्रव्यकेअस्तित्वकौप्रगटकरैहै॥ औरसमस्त
द्रव्यनिकेपर्यायनिकौंसमयकीप्रवृत्तिकाकारणकालद्रव्यकागुणहै॥ काहेतै॥ जातैअन्यपंचद्रव्यनितैसमयप
र्यायकीउत्पत्तिनाही॥ तातैपंचद्रव्यनिकावर्त्तनाहेतुत्वगुननांही॥ तातैसमयप्रवृत्तिनामागुणएककालकेअस्ति ९
त्वकौंकहैहै॥ तैसेहीचेतनागुणजीवहीकाहै॥ काहेतै जातैअन्यपंचद्रव्यकाभेदज्ञाननना॥ आगैषट्द्रव्यनिवि

षैको अचेतन है। तातै चेतनागुण एक जीव ही कै अस्तित्व कौ प्रगट करि दिषावै है। इस भांति गुण के भेदतै द्रव्य
का भेद जानना। आगै षट् द्रव्यनि विषै कौण द्रव्य प्रदेसी है यह दिषावै है। गाथा। जीवा पुग्गलकाया। धम्मा
धम्मा पुणो य आगासं देसेहिं असंषादा णत्थि पदेसोत्ति कालस्स। ८। जीवाः पुद्गलकायाः धर्माधर्मौ पुन
आकाशं प्रदेसैः संख्याताः णासंति प्रदेशा इति कालस्य। टीका। जीवाः कहिये जीवद्रव्य पुद्गलकायाः। कहिये पुद्गल
षंध पुनः कहिये बहुरि। धर्माधर्मौ कहिये धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य च कहिये बहुरि। आकासं कहिये आकासद्रव्य ए
च द्रव्य प्रदेसैः असंख्याताः प्रदेसैः कहिये प्रदेसनि करि असंख्याता कहिये गणतीरहित है। केई असंख्यात प्रदे
सी है। केई अणंत प्रदेसी है। कालस्य प्रदेशाः न संति। इति कालस्य कहिये काल द्रव्य के प्रदेसा कहिये अणेक प्रदे
सा ण संती कहिये नांही। इति कहिये यह बात भगवान ने कही है। काल द्रव्य प्रदेसमात्र है तातै प्रदेसी है। आचार्य
जीव द्रव्य पुद्गल धर्म अधर्म आकास ए अणेक प्रदेशी है। तातै प्रदेसवंत कहिये। जीव द्रव्य लोकाकास परिमाण
असंख्यात प्रदेस है। संकोच विस्तार विषै भी अपणे प्रमाणतै घटि वधि होता नांही। पुद्गल द्रव्य यद्यपि परमाणु द्रव्य
करि एक प्रदेसमात्र है प्रदेसी है। तथापि परमाणु विषै मिलनि सक्ति है। तातै दोय परमाणु निबंधतै लेकरि संख्यात अ

अ

प्र॰स ९८ संख्यात अनंतपरमानूंबंधातोंईमप्रदेसभेदजानना। संख्यातप्रदेसी असंख्यातप्रदेसी अणंतप्रदेसो पुद्गलद्रव्य जाननें
व्यवहारनयकरि धर्म्म अधर्म्म द्रव्य लोकाकासप्रमानहै तातें असंख्यातप्रदेसी जानने। आकासद्रव्य सर्वगतहै॥ ता
तें अणंतप्रदेसी है। कालाणुद्रव्य करिकै प्रदेसमात्र है तातें अप्रदेसी है। औरकालानविषे आपसमें मिलनकी सक्ति
नाही। तातें पुद्गलकीसी नांई उपचारकरि भी प्रदेसी नांही॥ तातें यह बात सिद्ध भई। पंचद्रव्य प्रदेसवंत है। कालद्रव्य
अप्रदेसी है॥ आगें प्रदेसी अप्रदेसी द्रव्य कहां तिष्ठै है गाथा॥ लोगालोगेसु णभो। धम्माधम्मेहि आददो लोगो
सेसे पडुच्च कालो जीवा पुण पुग्गला सेसा॥ ९०॥ लोकालोकयोर्णभो धर्माधर्माभ्यामाततो लोकः॥ सेषौ प्रतीत्य
कालो जीवाः पुनः पुद्गलाः शेषा॥ टीका॥ लोकालोकयोर्णभः। लोकालोक ये कहिए लोक अरु अलोकके विषैं नभ
भः कहियै आकाश द्रव्य तिष्ठै है॥ धर्माधर्माभ्यां लोकः आततः धर्माधर्माभ्यां कहियै धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य इनि दो
नौं द्रव्यनि करि लोक कहियै। लोकाकास सो आततः कहियैं व्याप्त है। धर्म अधर्म ए दोऊ लोकाकास विषै तिष्ठै है
शेषौ प्रतीत्य कालः। शेषौ कहियै जीव पुद्गल द्रव्य इनकी प्रतीत्य कहियै प्रतीति करिकै काल कहिए कालद्रव्य तिष्ठै
है। सेषा जीवाः पुनः पुद्गलाः सेषा कहियै। औ याकी जीवा कहियै जीव द्रव्य पुनः। कहियै बहुरि पुद्गलाः कहियै पु ९८

लद्रव्य ए दोऊ द्रव्य लोकाकास विषै तिष्टै है ॥भावार्थ॥ आकास सर्वत्र सर्वका भाजनरूप है। तातैं लोक अलोक विषै है। धर्म
अधर्म लोक मैं है। इनाकै निमित्ति तैं जीव पुद्गल की गति स्थिति लोक तैं बाहिर एक प्रदेस भी नांही। तातैं लोक ही मै है
कालद्रव्य का समयादि पर्याय जीव पुद्गल के परिनामनि करि प्रगट होय है। तातैं काल भी लोक ही मै है। जीव पुद्गल लोक
मै प्रगट ही है। जीव कै संकोच विस्तार सक्ति है। तातैं जीव लोक परिमान भी है। पुद्गल के बंध का कारण स्निग्ध रूक्ष गुण परिना
म है। तातैं इनकौ भी सर्व लोक परिमान है। तातैं ए दोनूं द्रव्य लोक के प्रदेसनि विषै भी है। सर्व लोक विषै भी है। और काल द्रव्य जी
व द्रव्य पुद्गल द्रव्य ए अपणैं अपणैं अणेक द्रव्य है। इनकी अपेक्षा जो देषियै तौ समस्त लोक भरि रह्यौ है। जैसै कज्जलो
दी अंजन चूर्नि करि भरी होय है। तैसैं अणेक द्रव्य पेक्षा इनि तीन द्रव्यनि करि सर्व लोक भरया है। आगे इनि द्रव्यनि के
प्रदेसवत्व अप्रदेसवत्व पनां है ते हेतु है सो कहै है ॥गाथा॥ जइ ते ण णभप्पदेसा। तह प्पदेसा हवंति सेसाणं। अपदेसो
परमाणू। तेण पदेसुब्भवो भणिदो ॥११॥ यथा ते नभः प्रदेशास्तथा प्रदेशा भवंति शेषाणां। अप्रदेश परमाणुस्तेन
प्रदेशोद्भवो भणितः ॥टीका॥ यथा ते नभः प्रदेसा तथा सेषाणां प्रदेसा भवंति यथा कहियै जैसैं ते नभः प्रदेसाः क
हियै एक परमाणू बराबरि कहियै है। जे आगै आकास के प्रदेस तैं आकास के प्रदेस जे से परमाणू करि अनै ते गाहि

प्रा॰ ९९

गाहियेहै। तथाकहियेतैसेसेषाणांकहियैधर्म अधर्म एकजीव इनितीणाद्रव्यणिकैप्रदेसाकहियै। असंभवतिकहियै
परमानंरूपगजकीणिनैअसंख्यात असंख्यात है परमान अप्रदेशापरमनकहियै॥ अविभागीपुद्गलपरमानंसोअ
प्रदेसकहियै ऐसअएप्रदेसनिकरिरहितहैप्रदेसमात्रहै। तेराप्रदेसोद्भवः। भनितते नकहियैतिसपरमानेकरिप्रदे
शोद्भवकहियैप्रदेसकीउत्पत्तिभनितः कहियेएकहीहैसवतैसूक्ष्मनिविभागपरिमानंजितनोक्षेत्रविषेमाय ति
तनेक्षेत्रकानामप्रदेसकहियै॥ ऐसेअणंतप्रदेसआकासकेहै तैसेहीएकपरमानूवराबरिप्रदेसकरिजोधर्म
अधर्मएकजीवएतीणगनिएतोअसंख्यात असंख्यात प्रदेसी होहिंगे। धर्मअधर्मसंकोचविस्तारतैरहितस
दाथिररूपहै॥ जीवद्रव्यसंसारविषैसंकोचविस्तारकरिअथिरहै॥ जैसेसकाआलाचाम अणवस्थितहै। तो
यहजीवयद्यपिअणवस्थितहै॥ तथापिअपणेप्रदेसनिकरिकमीयादाहोनानाहीं॥ तातेअसंख्यातप्रदेसीहैके
ऊकहैगाकिआत्माअसर्वतहै। तिसकैसंकोचविस्तारकैसेहोइ ॥तिसकाउत्तर॥ किंजैसेकोईपुरुषमोगहै॥ सोपु
रुषखीणहोइहै। कोईसीनंतेमोटाहोइहै। तिसपुरुषकेमोटेक्षीनहोतेसाथहीआत्माकेप्रदेसभीसकुचैविस्तरै ९९
है॥ बालकजवजुवानहोइहै। तिसपुरुषकेमोटेक्षीनहोतेसातवआत्माकेप्रदेसभीविस्तरैहै॥ तातेआत्माकेसं

कोऊ च विस्तार समय मैं भली भांति आवै है संदेह नांही ॥ पुद्गल द्रव्य परमानं की अपेक्षा यद्यपि एक प्रदेसी है ॥ तथापि द्वि
नुकादि होंगा कौ इस विषै शक्ति है ॥ तातै द्वनुकादि खंधपर्यायनकी अपेक्षा संख्यात असंख्यात अनंत प्रदेसी पुद्गल
द्रव्य है ॥ आगै कालानूं कौ अप्रदेसी दीखावै है ॥ गाथा ॥ समउ प अप्पदेसो ॥ पदेसमेत्तस्स दव्वजादस्स ॥ वदिवददं
सो वट्टदि ॥ पदेसमागासदव्वस्स ॥ ९२ ॥ समयस्तु अप्रदेसः ॥ प्रदेसमात्रस्य द्रव्यजातस्य ॥ व्यतिपततः स वर्त्तते प्रदेसमाकाशद्र
व्यस्य ॥ टीका ॥ समयः तु अप्रदेसः समयः कहियै कालद्रव्य सो ध्रुतु कहियै बहुरि अप्रदेसः कहियै प्रदेस तै रहित है
प्रदेसमात्र है ॥ यद्यपि कालानूं लोक प्रदेस परिमान असंख्यात है ॥ तथापि आपस मैं पुद्गल परमानूं की नाई
मिलते नांही ॥ तातै अप्रदेसी है ॥ प्रदेसमात्रस्य द्रव्यजातस्य वर्त्तते ॥ स कहियै सो कालानू प्रदेसमात्र है ॥ एक प्र
देसरूप जु है द्रव्यजातस्य कहियै ॥ पुद्गल द्रव्य जाति परमानं तिसके निमित्त तै समय पर्याय की प्रकटता करि वर्त्तते
कहियै प्रवर्त्तै है ॥ कैसा है पुद्गल परमानू आकास द्रव्यस्य प्रदेस व्यतिपततः ॥ आकास द्रव्यस्य कहियै आकास द्र
व्य का प्रदेस कहियै ॥ निर्विभाग क्षेत्र रूप प्रदेस प्रति व्यतिपततः कहियै मंद गति करि चल्या है ॥ भावार्थ ॥ लोका
कास के असंख्यात प्रदेस है ॥ एक एक प्रदेस विषै एक एक कालानूं तिष्ठे है ॥ भिन्न भिन्न थिरता लिये आपस मैं मि

लगागक्रितें रहित है। ऐसी असंख्याती है जब पुद्गल परमानू एक आकासके प्रदेसतें दूसरे प्रदेसविषै मंदगति करि
जाय है तब तिस आकासके प्रदेसविषै तिष्टै नु है कालानू। तिसका समयपर्याय पुद्गल परमानूकी मंदगति करि प्रग
ट होय है। जातें एक कालानू एक प्रदेसमात्र है। तातें अप्रदेसी है॥ आगे कालपदार्थके द्रव्यपर्याय दिखावै है॥ गाथा॥
वदिवदरो तं देसं। तस्सम समउ तदो परो पुव्वो॥ जो अत्थो सो कालो। समउ उप्पण्णपद्धंसी॥ २७॥ व्यतिपततस्तं देसं
तत्समः समयस्ततः परः पूर्वो योर्थः स कालः समय उत्पन्नप्रध्वंसी॥ टीका॥ तं देसं व्यतिपततिनः॥ तत्समः समयः तं
प्रदेसं करि हियेमंद गतिकरि जाय है॥ पुद्गल परमानू तिसमें तत्समः कहिये एक प्रदेसतें दूसरे प्रदेसविषै पुद्गलानूको
जातें जितना कछु सूक्ष्म काल होइ तितसमान कालपदार्थका समय नामा पर्याय है॥ भावार्थ॥ एक आकासके
प्रदेसविषै जो कालानू है। तिससूं जो नाहीं मिले है। तातें एक प्रदेसतें जब दूसरे प्रदेसविषै पुद्गलानू जाय है। तहां
प्रथम प्रदेसवर्ती कालानूतें दूसरे प्रदेसवर्ती कालानूकौ भेद है। संयोग नाहीं मिलना सन्नके अभावतें। तातें सू
क्ष्म कालका समय नामा पर्याय पुद्गलकी मंदगति करि प्रगट जानो एक है। जो कालानू भिन्न भिन्न होता और मिल
नेकी होती तो समयपर्याय न होता॥ अथवा एक द्रव्यके परिनमनतें भिन्न भिन्न कालानू न होते तो समयमें द होय

है पुद्गलपरमाणु एककालाणुतैं तिहसरे कालाणु विषै जाय है तहां भेद होय है तातैं कालद्रव्य का समयपर्याय पुद्गलपरमा
णूकी मंदगति करि प्रगट होय है ॥ ततः परः पूर्वः यः अर्थः सः कालः ततः कहिये तिस समय तैं परः कहिए आगे पूर्वः कहि
ये पहिलें यः कहियेजोंगनित्यस्मृतः अर्थ कहिए पदार्थ सः कहिये सो कालः कहिये कालनामा द्रव्य है ॥भावार्थ॥ जो
समयपर्याय के उपजतैं न उपजै है न विनसतैं न विनसै है ॥ आगे पाछै सदा नित्य है सो कालाणुरूप द्रव्यसमय कहिये
समय उत्पन्नप्रध्वंसी समय कहिये ॥ जो पर्याय समय है सो उत्पन्नप्रध्वंसी कहिये ॥ उपजै है अर विनसै है ॥ पर्याय सम
य विनसै है ॥ कालाणुरूप द्रव्यसमय नित्य है ॥ पर्यायसमय तैं ॥ और सूक्ष्म कोई काल का भेद नाहीं तातैं समय निरंसी है
और जो समय के अंस कीजै तौ सूक्ष्म आकास प्रदेस के भी अंस होहि ॥ प्रदेस तौ सब तैं सूक्ष्म क्षेत्र है ॥ तिस विषै अंस
कल्पना कैसे होइ ॥ तैसे समय भी सूक्ष्म काल है ॥ इस विषै भी अंस कल्पना होती नाहीं ॥ और जो कोई कहै है कि एक स
मय विषै परमाणू लोक के अग्रभाग जाइ तिष्टै है ॥ चौदह राजू ताई अनौबध जेते आकास के प्रदेसनि विषै कालाणू है
तितने सब परसै है ॥ एक समय विषै गमन करतें तहां जेते आकास प्रदेसनि विषै कालाणू है ॥ तेते ही समय के अंस भे
द होइ तिस का उत्तर ॥ क्षिप्र गमन विषै कोई एक रीति परिनाम की विसेष नाहै ॥ तातैं जैसें ज्ञान काल करि चौदह राज जाय

प्र.स
१०१ है समयकै अंसहीतें नाही ।। समयतौ परमसूक्ष्मकाल है ।। वहकोई परमानुगतकीकौ विसेषतातैं है ।। जैसें एक परमानू बराबरि आ
कासका प्रदेस है ।। तिस विषै अनंत परमानूका खंध रहै है ।। तहां प्रदेसकै अनंत अंस होतें नाहीं जातैं परमानू निरंस है ति
स विषै और अंस सधतो ही ।। तातें तिस आकासकै प्रदेस विषै कोई एक अवगाहसक्ति ऐसी है जु तिस विषै एक परमानू
बराबरि अनंत परमानूके खंध रहै है ।। अनंत परमानूका प्रदेसकै अनंत अंस होतें नाही ।। कोई अवगाहसक्तिकी विसेष
ता है ।। तातें प्रदेस निरंस है ।। जैसें है ग्यातिपनामकी विसेषतातें एक समय विषै परमानू लोककै अंत जाइ है ।। तहां असंख्या
त कालानूकौ उलंघै है ।। तौभी समयकै असंख्यात अंस सिध होतें नाहीं ।। समयातौ स अंस रूप है ।। तिस विषै औरअं
स कैसें होइ ।। आगें आकासकै प्रदेसनिका लक्षन कहै है ।। गाथा ।। आगासमणुणिविट्ठं आगासपदेससण्णया
भणिदं ।। सव्वेसिं च अणूणं सक्कदि तं देदुमवगासं ।। १४ ।। आकाशमनुनिविष्टमाकासप्रदेससंज्ञया भणितं ।। सर्वेषां
चाणूनां शक्नोति तद्दातुमवकासं ।। टीका ।। अनंनिविष्टं आकासं आकाशप्रदेससंज्ञया भणितं ।। अनं कहियै प
रमानू तिसकरि निविष्टं कहिए व्याप्त असा नु है आकासक कहियै ।। आकासद्रव्य सो आकासप्रदेससंज्ञा कहियै १०१
आकासकै प्रदेस असैं नाम भनितें कहियै भगवान देवने कहा है ।। भावार्थ ।। जेते आकासकौ एक परमानूं रोकि

वैहै। तितै आकासनाम प्रदेस कहिये इसितैं औ सूक्षम क्षेत्र नाहीं॥ ऐसा यह प्रदेस सरूप है॥ जु इसि विषै औ अंस कल्पना
न होइ। तातै सर्वे या व अनंतो आकास दातुं समर्था ति॥ तातें कहिये सो आकास एक प्रदेस सर्वे सो अन्य समस्त पंच द्रव्यनिके
प्रदेसनि कौं च कहिये वहुरि अनंतो कहिये परम सूक्ष्म भाव कूं प्राप्त जु है। अनंतानंत पुद्गल स्कंध तिनकौं अवकास क-
हिये वहुरि अनंतो कहिये पना गहद्रातु कहिये देनें कौं शक्तिको ति कहिये समर्थ है. तिसि सूक्ष्म आकास के प्रदेस विषैं अव-
गाहि देनें की ऐसी सक्ति है॥ जु पंच द्रव्य के प्रदेस रहै है॥ अनंतानंत परमानू औ अनंतानंत पुद्गल स्कंध रहै है वाधा नाही॥ आ-
कास विषैं अवगाह देवे कौं कोई एक ऐसी ही बडी सामर्थि पै सक्ति है॥ तहां कोई प्रश्न करै है॥ कि आकास द्रव्य तौ अखं-
ड एक वस्तु है॥ तिस विषै प्रदेस रूप अंस कल्पना कैसें होइ॥ ताका समाधान॥ निर्विभाग एक वस्तु विषै भी अंस क-
ल्पना वनै है॥ औरकहौ कि कैसें होइ तौ अपनै हाथ की दोइ अंगुली आकास विषै राखै॥ अव कहौ इनि दोअंगुलीन-
एक क्षेत्र है कि अनेक क्षेत्र है। जो कहौगे कि अपने एक आकास की अपेक्षा एक क्षेत्र है तौ यह तौ कथ-
न भलै ही है॥ और जो दोइ अंगुलीनि भिन्न तातें दोय अंस आकास के कल्पिए है तिनकी अपेक्षा भी तौ एक क्षेत्र क्यों हो-
गे। जिसहि अंसकरि एक अंगुली का क्षेत्र है॥ तिसही अंसकरि दूसरी अंगुली का क्षेत्र है॥ और अंसनिका अभाव

प्र॰सा॰ होइ। ऐसे दोइ आदि आकासके अंसनिके अभाव होतैं एक अंगुलमात्र आकास रहैगा। और जौ दोइ क्षेत्र मानौंहीं तौ
१०२ एक आकासके अणोक अंसनिकरि मानौंहो। किंभिन्नभिन्न हीं अणेक अंस मानौं हो जौ भिन्नभिन्न हीं अणेक अंस
मानौंगे तौ अणंत आकासद्रव्य होंहिंगे। और जौ एक आकासके अणेक अंस हौंहिं तौ एकखंडका आकासवि
षे अंसकल्पना सिद्ध हुई॥ आगे तिर्यक्‌प्रचय ऊर्द्धप्रचय इनि कालस्वरूप कहै है॥ गाथा॥ एगो व दुगे बहुगा। संखातीतं
दा तदो अणंता य। दव्वाणं च पदेशा संति हि समय त्ति कालस्स। १५। एको वा द्वौ बहवः संख्यातीतास्ततो-
ऽनंतश्च द्रव्याणां च प्रदेसाः संति हि समया इति कालस्य॥ टीका॥ द्रव्याणां प्रदेसाः एकः वा द्वौ बहवः संख्याती
तास्ततः अनंताः संति। द्रव्याणां कहियै काल द्रव्य विना पंच द्रव्यनिके प्रदेसाः कहियै निर्विभाग अंस ते एकः क
हियै एक वा कहियै। अथवा द्वौ कहियै दोइ बहवः कहियै अणेक संख्याता तातें ई संख्यातीताः कहियै असंख्याते ए हू त
असंख्यात च कहियै बहुरि। ततः कहियै तिसतैं आगे अनंता कहिए अनंत असे प्रदेस यथायोग्य संति कहियै सदा
काल होइ है॥ भावार्थ॥ जिनि द्रव्यनिकै बहुत प्रदेस होत है। तिनकैं तिर्यक्‌प्रचय कहियै प्रदेशनिका जु समूह सो तिर्य
क्‌प्रचय है। अणेक समयनिका नाम ऊर्ध्वप्रचय कहियै। सु इह ऊर्द्धप्रचय सब द्रव्यनिकै है। काहेतें जातैं अतीत १०२

तथ अनागत वर्त्तमाण काल विषै अणेक समयनि विषै सब द्रव्य परनवै है॥ तातैं समय समूहरूप उर्द्ध प्रचय सबनि कैं है
तिर्यक्प्रचय एक काल विना सबनि कैं जाननां॥ आकास द्रव्य कैं निश्चल अणंत प्रदेस है॥ धर्म अधर्म द्रव्य कैं निश्चल
असंख्यात प्रदेस है॥ जीव कैं संकोच विस्तार की अपेक्षा अथिर असंख्यात प्रदेस है॥ पुद्गल कैं यद्यपि द्रव्यत्व करि एकप्र
देस है॥ तथापि मिलन सक्तिरूप पर्याय की अपेक्षा होय तैं ले संख्यात असंख्यात अणंत प्रदेस जाननें॥ कालद्रव्य
एकप्रदेसमात्र है॥ इस विषै कालानूनि स्यो मिलन शक्ति नाही॥ तातैं यंच द्रव्यनि कैं बहुत प्रदेस तैं तिर्यक्प्रचय है
कालप्रदेसमात्र है॥ तातैं काल कैं तिर्यक्प्रचय नाही॥ ऊर्द्ध प्रचय सर्व द्रव्यनि कैं है समय समय विषै सब ही परणवैं है
इतना विशेष जाननां॥ पंच द्रव्य का तौ ऊर्द्ध प्रचय है॥ सो काल कै ऊर्ध्व प्रचय करि जानिये है॥ काहे तैं जातैं कालद्रव्य स
र्व द्रव्यनि कै परणति कौ सहकारी है॥ तातैं काल कैं समय पर्याय तैं सब द्रव्य की परिणति का समयभेद गनिये है का
ल कै ऊर्द्ध प्रचय करि अन्य पंच द्रव्य का ऊर्ध्व प्रचयरूप भेद गननां॥ काल का ऊर्ध्व प्रचय अन्य करि नांही॥ काल की प
रिनति का भेद काल ही कै समय पर्याय तैं गणिए है॥ तातैं काल कै ऊर्द्ध प्रचय कौ निमित्त उपादान आप काल ही जाननां
अन्य पंच द्रव्य अपणे ऊर्द्ध प्रचय कौ उपादान है॥ काल का ऊर्ध्व प्रचय निमित्त॥ आगै कहै है॥ यद्यपि समय सेती नरू

प्र.सा पर्जइ प्रच्चपकरि कालपदार्थ उपजै विणासै है। तथापि द्रव्यत्वकरि ध्रौव्य है। गाथा। उप्पादो पद्धंसो विज्जदि जदि
१०३ जस्स एससमयम्मि॥ समयस्स सोवि समउ सहावसमवट्ठिदो हवदि॥ ९६॥ उत्पादप्रध्वंसो विद्यते यदि य
स्यैकसमये॥ समयस्य सोपि समयः स्वभावसमवस्थितो भवति॥ टीका॥ यस्य समयस्य एकसमए यदि
उत्पादः प्रध्वंसः विद्यते यस्य कहियै जिस समयस्य कहियै कालाणुरूप द्रव्य समयपका एक समयै कहियै॥ एक
ही वृत्ति सस्य कालसमयविषै यदि कहियै जो उत्पाद कहियै उपजना॥ प्रध्वंस कहियै विनसना विद्यते कहियै
प्रवर्त्ते है॥ भावार्थ॥ जो एकसमयविषै कालद्रव्य उत्पादव्ययभावकौं धरै है। तदा सोपि समयः स्वभावस्थितः
भवति॥ तदा कहियै तो सोपि कहियै सोई समयः कहियै कालपदार्थः स्वभावसमवस्थितः कहियै अविनाशीस्व
भावविषै थिररूप ऐसा भवति कहियै प्रवर्त्ते है॥ भावार्थ॥ कालपदार्थका समयपर्याय है। तिस समयविषै
पूर्वपर्यायका नाश। उत्तरपर्यायका उत्पाद अर्थव्यय होय है। कांई तेजातें जव एक कालपरमानु पूर्वकालानकौं त्या
गि अगली कालाणुप्रति मंदगति करि जाय है। तहां समयपर्याय। उपजै है तातें पूर्वपर्यायका नाश है। उत्तरप
र्यायका उत्पाद है। एक ही समयविषै होय है॥ इहां जो कोई पूछै॥ त्रिकालद्रव्यकै उत्पादव्ययका हेतौ कहो हो १०३

समयपर्यायहीकैउत्पादव्ययहोय।तिसकासमाधान॥जोसमयपर्यायकैउत्पादव्ययकहियेतोएकसमयमैंउत्पाद
व्ययनाहोहि।काहेतैंजातैंउत्पादव्ययप्रकाशअंधकारकीसीनांईविरोधीहैं।तातैंएकपर्यायसमयकाउत्पादएक
समयविषैकैसेहोइ।जोयौंकहियेकिएकसमयविषैक्रमसौंसमयपर्यायकैउत्पादव्ययहोइहैतौभीनाबणैका
हेतैंजातैंसमयअतिसूक्ष्मकालहै।तिसविषैक्रमसौंभेदहोतानाहीं।तातैंएकसमयविषैसमयपर्यायकाउत्पा
दव्ययनाहीं॥कालानुरूपद्रव्यसमयकेअंगीकारकरतेंउत्पादव्ययएकहीसमयविषैभलीभांतिसधैहै।तातैंकाला
नुरूपद्रव्यसमयकेअविनाशीध्रौव्यअंगीकारकरनाजोग्यहै।तिसद्रव्यकालाणुकेएकसमयविषैपूर्वसमयपर्याय
कानाशहैउत्तरसमयपर्यायकाउत्पादहै।द्रव्यत्वकरिध्रौव्यहै॥इसिप्रकारद्रव्यकेध्रौव्यभलैसधैहै।जोकालाणुद्रव्य
नांमानियेतोतीनिभावसधैनाहीं।जैसैहाथकीअंगुलीवांकीकरैतौतिसअंगुलीकेपूर्वसरलपर्यायकानाशहै
वक्रपर्यायकाउत्पादहै।अंगुलीभावकरिध्रौव्यहै।एतीनभावएकहीकालहैं।तैसैंकालद्रव्यकेउत्पादव्यय
ध्रौव्यभावजानने॥आगेंकहैहैंकिसबसमयपर्यायनिविषैकालपदार्थकेउत्पादव्ययध्रौव्यसधैहै॥गाथा॥एकम्मि
संतिसमए॥संभवठिदिणाससंण्णिदाअट्ठा॥समयस्ससव्वकालं।एसहिकालाणुसब्भावो॥५७॥एकस्मिन्संति

प्र.सा समयेसंभवतिस्थितिनाससंज्ञिता अर्थाः समयस्यसर्वेकालेयेघाहिकालाणसद्भाव ॥टीका॥ एकस्मिन्समयेसमय
१०४ स्यसंभवस्थितिनाससंज्ञिताः अर्थासंति॥ एकस्मिनसमएकहिएएकसमयपर्यायविषैसमयस्यकहियेकालानरूप
कालपदार्थकेसंभवस्थितिनाससंज्ञिताकहियेउत्पादथितिनासएहेनामजिनकें॥ ऐसेजुहेंअर्थ॥ कहियेएतीनिभा
वतेसंतिकहियेप्रवर्त्तेहें॥भावार्थ॥ एकहीसमयकालपदार्थकेउत्पादव्ययध्रौव्यएतीनिभावहोयहि॥ एषः कालान
सद्भावः॥ सर्वकालंहीकहियेनिश्चयस्योएषः कहियेयहउत्पादव्ययध्रौव्यरूपकालानसद्भावःकहियेकालद्रव्यका
अस्तित्वसर्वकालंकहियेसदाकालहे॥भावार्थ॥ एकहीसमयकालपदार्थकेउत्पादव्ययध्रौव्यएतीनिभाव होहि
एषः॥ कालाणसद्भावः॥ सर्वकालंहिकहियेनिश्चयस्योएषः कहियेयहउत्पादव्ययध्रौव्यरूपकालानूंसद्भावः कहि
येकालद्रव्यकाअस्तित्वसर्वकालंकहियेसदाकालहै॥भावार्थ॥ जैसेंकालद्रव्यएकसमयविषैउत्पादव्ययध्रौव
भावपरणमेहे॥ तैसेसर्वसमयनिविषैपरणमेहे॥ कालाणतोद्रव्यध्रौव्यहेश्वेंसमयकानासहे॥ आगलेसमयकाउ
त्पादहे॥ एतीणभावसदाकालसधेहें॥ आगेकालपदार्थप्रदेसमात्रजोकालानरूपनहोइतोउत्पादव्ययध्रौव्यरूप १०४
अस्तित्वनहोइयहसाधेहें॥गाथा॥ जस्सणसंतिपदेसा॥ पदेसमेत्तंवतच्चदोणादु॥ सुण्णंजाणतमत्थं॥ अत्थंतरत्तम

क्षादो ॥२८॥ यस्य ण संति प्रदेसा प्रदेसमात्रं च तत्त्वतो ज्ञातुं । सून्यं जानीहि तमर्थमर्थांतरभूतमस्तित्वात् । यः
स्य प्रदेसा ण संति । यस्य कहिये जिस द्रव्य के प्रदेसा कहिये क्षेत्र के निर्विभाग अंस अनेक ते न संति कहिये नाहीं हैं । च प्र
देसमात्रं तत्त्वतः ज्ञातुं च कहिये वहुरि प्रदेसमात्र के कहिये । एक प्रदेसमात्र भी तत्त्वतः कहिये । स्वरूप ते ज्ञातुं कहिये जा
णवे कौं नाहीं ॥ जिस द्रव्य के अणेक प्रदेस नाहीं हैं ॥ और एक भी प्रदेस न मानीए तो तं अर्थ सून्यं जानीहि । तं कहिये
सो द्रव्य सून्य कहिये ॥ अस्तित्व रहित अवस्तुभूत जानीहि कहिये तं जान जो द्रव्य एक प्रदेस अथवा बहु प्रदेसनि ते रहित है
सो द्रव्य नाहीं है सून्य है । काहे तें जाते अस्तित्वात ॥ अर्थांतरभूतं अस्तित्वात कहिये उत्पाद व्यय ध्रौव्य रूप सत्ता ते रहित अ
र्थांतरभूत कहिये ॥ अन्य पदार्थ अस्तित्व रूप होय है पदार्थ कौं अस्तित्व उत्पाद व्यय ध्रौव्य ते होय है ॥ सो अ
स्तित्व जो द्रव्य के प्रदेस न होंहि तौ होइ नाहीं । ताते काल के जो एक भी प्रदेस न मानिये तौ काल पदार्थ कौं नास होइ ॥ जो को
ई कहै कि समय पर्याय ही मानौ ॥ प्रदेसमात्र कालाणु द्रव्य मति कहौ तौ पर्याय पर्यायवंत ध्रौव्य विना समय पर्याय कैसे होइ । जो
कहोंगे कि द्रव्य विना ही समय पर्याय उपजै है ॥ तौ उत्पाद व्यय ध्रौव्य की एकता एक काल कै कैसे होइगी ॥ जो कहोंगे कि अ
नादि अणंत निरंतर अणेक समय पर्याय अंसनि की परंपराय है तिस विषे पूर्व पूर्व समय अंस कौं नास है ॥ अगले

॥प्र.सा॥ अैसैं निका उत्पाद है पर्याय समंतातागादरि ध्रौव्य है॥ अैसैं ध्रौव्य विना ही ए तीनि भाव सधै है॥ यों ही मांगभाव एक समयवर्त्ता
॥२०५॥ सधै॥ जिस अैसका नास है तिसका नास ही है॥ जिसका उत्पाद है सो उत्पादरूप है॥ ए उत्पादव्यय एक समयविषैं कैसे होहि
और ध्रौव्यता कहा रही॥ यौं कहतै इनि तीनि भावनिका नास है॥ और बौधमतका प्रवेस होय है॥ नित्यताका अभाव
होय है॥ द्रव्यलक्षणाय रहोइ है॥ इत्यादि अनेक दोष लागै है॥ तातैं अवस्य समयपर्यायका आधारभूत प्रदेसमा
त्र कालद्रव्य अंगीकार करना जोग्य है॥ प्रदेसमात्र द्रव्यविषैं एक समयसु अैसौ उत्पादव्ययध्रौव्य सधै है॥ जो कोई क
है कि कालद्रव्य के प्रदेसकी स्थापना कीनी तौ असंख्यात कालानूं भिन्न भिन्न मानिक हो॥ एक अखंड लोकपरमाण द्रव्य
मानौ तिस ही सें समयपर्याय उपजैंगा॥ तिसका समाधान॥ अखंड कालद्रव्य होइ तौ समयपर्याय उपजै नाहीं॥ एक कालानूं कौ छोड़
नवद्रसरी कालानूं प्रति पुद्गलानूं मंद चालि करि जाय है॥ तहां दोउ कालानूं भिन्न भिन्न है॥ तातैं समयका भेद होय है॥ तौ
येक अखंड लोकपरमित कालद्रव्य हो॥ इतौ समयपर्याय सिद्ध कहा तैं होइ॥ जो कहैंगे कि कालद्रव्य लोकपरमित काल
द्रव्य होय तौ समयपर्याय सिद्ध कहा तैं होइ॥ जो कहैंगे कि कालद्रव्य लोकपरमान असंख्यात प्रदेसी है तिसके एक प्रदेसतैं
दूसरे प्रदेस प्रति जब पुद्गलपरमानूं जाय तब समयपर्याय कैं सिद्धि होइ॥ तिसका उत्तर॥ अैसैं कहैं तौ बडा दोष है॥ सो ईक १९१

हियेहैजोएकअणुकालद्रव्यकेएकप्रदेसतैंदूसरेप्रदेसजातेंसमयपर्यायहोइ तौसमयकाभेदनहोइ ॥ अणुद्रव्यतौएक
प्रदेसविषैसमयपर्यायकेहोतें ॥ सर्वजाइगैसमयपर्यायहोइ ॥ कालकीएकतातैंसमयकाभेदमिटिजाइ ॥ सर्वतैंसूक्ष्मका
लपर्यायसमयहै ॥ कालानंकीभिन्नभिन्नतातैंसिद्धिहोयहै ॥ एकतातैंनांहीहोता ॥ औरकालकेअणुमांनतैंदोष
है ॥ कालाणुकैंतिर्यक्प्रचयनाहीं ॥ ऊर्ध्वप्रचयहैजोकालअसंख्यातप्रदेसीमानौएतौकालकैंतिर्यक्प्रचयहोइ ॥ सोइं
तिर्यक्प्रचय ॥ ऊर्द्धप्रचयहोइनांइ ॥ वैसैहोइसोकहियेहै ॥ असंख्यातप्रदेसीकालप्रथमहीसबप्रदेसकरिप्रवर्त्तैहै
तातैंआगै औरप्रदेसकरिप्रवर्त्तैहै ॥ तातैंभीआगैऔरप्रदेसअन्यअन्यकरिप्रवर्त्तैहै ॥ ऐसैंक्रमस्यौंअसंख्यातप्र
देसनिकरिप्रवर्त्तै ॥ तौतिर्यक्प्रचयहीऊर्द्धप्रचयहोइ ॥ एकएकप्रदेसविषैकालद्रव्यकौक्रमस्यौंप्रवर्त्तैतैं ॥ कालद्र
व्यभीअप्रदेसमात्रहीआपदेहराहै ॥ तातैंजोपुरुषतिर्यक्प्रचयकौंऊर्द्धप्रचयकौंऊर्द्धप्रचयदोषनांहीचाहैहै ॥ सोपु
रुषपहिलैहीप्रदेसमात्रकालद्रव्यठहरावो ॥ यातैंकालद्रव्यकीसिद्धिभलीभांतिहोइ यहपर्यायक्रिविसेषद्रव्य
तत्वकावर्ननकिया ॥ आगैंज्ञाताज्ञेयकरिआत्माकीटीकताकरि ॥ आत्माकौंसमस्तपरभावनितैंजुदादिखाइ
वैकौंव्यवहारजीवकाकारणबतावैहै ॥ गाथा ॥ सपदेसेहिंसमग्गो ॥ लोगोअट्ठेहिंणिट्ठिदोणिच्चो ॥ जोतंजाणदि

प्र.सा. जीवो॥पाणचउक्काभिसंबद्धो॥१०९॥सप्रदेशैःसमग्रोलोकोर्थैर्निष्ठितोनित्यः॥यस्तंजानातिजीवःप्राणचतुष्काभिसंव
१०९ द्धः॥टीका॥सप्रदेशैः अर्थैः समग्रः लोकः नित्यः निष्ठितः सप्रदेशैः कहियेअपणेअपणेप्रदेशनिकरिसंयुक्तहै
अर्थैः कहियेआकासपदार्थतेलेकालपदार्थतांईसमस्तपदार्थतिनिकरिसमग्रकहियेभरलोककहियेयह
त्रिलोकनित्यकहियेअनादिअनंतनिष्ठितकहियेनिश्चलतिष्ठेहै॥भावार्थ॥यहलोकषट्द्रव्यनिकरिनिर्मा
पितहै॥सदाअविनासीहै॥यःतंजानातिसजीवःयः कहियेजोद्रव्यतंकहियेतिसषट्द्रव्यात्मकलोककौंजानातक
हियेजानैहै॥सकहियेसोद्रव्यजीवकहिये॥चेतनालक्षनजीवनामाजानना॥भावार्थ॥इसलोकविषैषट्द्रव्यनि
विषैअचेतनमात्रस्वपरकाजाननहारएकजीवद्रव्यहै।औरनाही॥तातेयहवातसिद्धहुई॥अन्यपंचद्रव्यज्ञेयहै॥जी
वद्रव्यज्ञाताभीहै॥औरज्ञेयभीहै॥यहज्ञाताज्ञेयकाभेदजानना॥कैसाहैसोजीवप्राणचतुष्काभिसंबद्धः प्रा
नचतुष्ककहिये॥इंद्रियबलआउउस्वासनिस्वास॥इनिच्यारिप्राणनिकरिअभिसंबद्धःकहियेसंयुक्तहै॥भावा
र्थ॥यद्यपियहजीवनिश्चयनयकरिवस्तुरूपतैंसहजोत्पन्नअनंतज्ञानादिसक्तिसंपन्न॥तीनकालसर्वदा
अविनासीटंकोत्कीर्नहै॥तथापिसंसारअवस्थाविषैअनादिपुद्गलसंजोगकरिदूषितहुवा॥च्यारिप्राणनिकरिसं १०९

धहै ॥ तिए च्यारिप्राण व्यवहारजीवकै कारणहै ॥ इनि च्यारिप्राणनि सेती इसिजीवका भेद करना जोग्य है ॥ जातें इह जीव सा
हई कनिजनिश्चयसत्यभावकौ प्राप्त होइ है ॥ आगें व्यवहारजीवकै कारन तें प्राणकै गणहे यह कहै है ॥ गाथा ॥ इंदियपा
णोयतधा बलपाणोतह य आणपाणो य ॥ आणप्पाणप्पाणो जीवाणं होंति पाणा ते ॥ ३५ ॥ इंद्रियप्रानश्च तथा ॥ ब
लप्रानस्तथा चायुःप्राणश्च ॥ आनापानप्रानो जीवानां भवंति प्राणास्ते ॥ टीका ॥ जीवाणं ते प्राणा भवंति ॥ जीवा
णं कहियै संसारी जीवनिकै ते प्राणाः कहियै ते वे व्यवहारजीवकै कारन पूर्वें ही कहै थे जे प्राण ते भवंति कहियै एद प्र
कार है ॥ ते कौन कौन है ॥ ते ई इंद्रियादि पैहे इंद्रियप्राण कहियै ॥ स्पर्सन रसना घ्राण चक्षु कर्ण ए पंच प्रकार इंद्रियप्राण ॥
जानें च तथा बलप्रान ॥ च कहियै बहुरि तथा कहियै ॥ तैसे ही बलप्राण कहियै काय वचन मन ॥ इनि तीनि भेदनिकरि ब
लप्राण तीनि प्रकार जानने ॥ च तथा आयुप्राण च कहियै ॥ बहुरि तथा कहियै ॥ तैसे ही आयुः प्राण कहियै मनुष्यादि
पर्यायकी स्थितिका कारण ॥ आयुनामा प्राण जाननां ॥ च आनापानप्राणाः च कहियै बहुरि आनपान प्राणाः कहियै उस्सा
सनिस्वासनामा प्राण जाननां ॥ एदस भेद प्राणनिके है ॥ और इहां ए ई प्राण सामान्य कथनकी अपेक्षा च्यारि प्रकार है
इंद्रिय बल आउ उस्वास निस्वास इनि भेदनिकरि ॥ आगें इनि प्राणनिकौ व्यवहारजीवकै कारनता कहै है ॥ और इहां

प्र.स लीकरियावैहै गाथा॥ पाणेहिंचदुहिंजीवदिजीवस्सदिजोहिजीवदेपुव्वं।सोजीवोपाणापुण।पोग्गलदव्वेहिणिव्वत्ता

१०७ २१॥प्राणैश्चतुर्भिर्जीवतिजीविष्यति योहिजीवितः पूर्वंसः जीवः प्राणापुनः पुद्गलद्रव्यैर्निर्वृत्ताः॥टीका॥यः हिचतुर्भिः

प्राणैः जीवतिजीविष्यतिपूर्वंजीवितः सः जीवः यः कहियेजोचेतनस्वरूपआत्माहैसोकहियेनिश्चयसेजोचतुर्भिः प्रा

णैः कहियेपूर्वकहेजेइंद्रियबलआयुउस्वासएचारिप्राणनिकरिजीवतिकहियेजीवद्रव्यहै॥भावार्थ॥यद्यपियह

आत्मानिश्चयकरिआत्मीकनिजलक्षणरूपसुयसत्तावोधचेतन्यरूपप्राणनिकरिसदाअविनासीजीवैहै।तथापिसं

सारअवस्थाविषैअनादिपुद्गलद्रव्यसेंतानकेसंवंध।तेत्रिकालवर्तीचतुर्गतिसंबंधीपर्यायनिविषैजीवतव्यताकेकारणए

व्यवहारप्राणहै।प्राणापुनः पुद्गलद्रव्यैः निर्वृत्ताः प्राणाः कहियेएचारिप्राण।पुनः कहियेपहरिपुद्गलद्रव्यैः कहिये

पुद्गलद्रव्यकरिनिर्वृत्ताः कहियेनिपजावैहै॥भावार्थ॥एचारिप्राणआत्माकेनिजस्वभावनाहीं।पुद्गलद्रव्यनिर्मा

पितहै।परभावहै॥आगैप्राणनिकौपुद्गलीकरियावैहै॥गाथा॥जीवोपाणणिवद्धो मोहादीएहिकम्मेहि।उ

पभुंजंकम्मफलं वज्झदिअण्णेहिंकम्मेहिं॥२२॥जीवः प्राणनिवद्धोमोहादिकैः कर्मभिः उपभुंजानः कर्मफलंव १०७

ध्यतेऽन्यैः कर्मभिः॥टीका॥मोहादिकैः कर्मभिः वद्धः जीवः प्राणनिवद्धः मोहादिकैः कहियेमोहरागद्वेषभावआदि

निकरि जु है कर्मभिः कहिये पुद्गलीक अगोक कर्मनि करि वद्धः कहिये बंध्या जु है जीव कहिये आत्मा सो प्राणानि वद्दक
हिये। इनि चारि प्राणानि बंध्या है ॥भावार्थ॥ जातें यह आत्मा राग द्वेष मोह। भावनि परणवै है। ताही तें पुद्गलीक च्यारि
प्राणानि कौं धरै है। तिनि प्राणानि के संयोग सौं कर्म फल भुंजानः कहिये उदय रस कौं प्राप्त हुवा जु है कर्मनि सकानुप
न्नति महिउप भुंजानः कहिये भोगवता संता अन्यैः कर्मभिर्वध्यते अन्यैः कहिये और नौतन कर्मभिः कहिये ज्ञाना
वरनादिक कर्मनि करि बध्यते कहिये बंध्या है ॥भावार्थ॥ जातें यह आत्मा पुद्गलीक मोहादि भावनि करि बंध्या हुवा प्रा
णानि करि बंध होय है। तातें इनि प्राणानि कौ कारण पुद्गल है। कारण सदृश कार्य होय है। तातें ए प्राण पुद्गलीक है। और
इनि प्राणनि करि उदयागत कर्म कौं भोगवतें नौतन पुद्गलीक कर्म बंध होय है। तातें ए प्राण पुद्गल के कारन है। यो भी
प्राण पुद्गलीक है ॥आगें नौतन पुद्गलीक कर्म के कारण प्राननि कौं दिखावै है॥ गाथा॥ पाणाबाधं जीवो। मोहपदेसे
हि कुणदि जीवाणाजदि सो हवदि हि बंधो। णाणावरणादिकम्मेहि। ॥ ७ ॥ प्राणाबाधं जीवो मोहप्रद्वेषाभ्यां करो
ति जीवयोः यदि सः। भवति हि बंधो ज्ञानावरणादिकर्मभिः ॥टीका॥ यदि सः जीवः मोहप्रद्वेषाभ्यां जीवयोः प्राना
बाधं करोति। यदि कहिये जो सः कहिये सो प्राणसंयुक्त जीव कहिये संसारी जीव आत्मा सो मोहप्रद्वेषाभ्यां कहिये

प्र·सा रागद्वेषभावनिकरिजीवयोः कहियेसुनोव । औरपरजीवतिनिकेप्राणाबंधकहिये । प्राणानिकाघाततसहितकरेतिन

१०८ हिंसाकरैहै ॥भावार्थ॥ यहजीवप्राणानिकरिकर्मफलकौंभोगवैहै । तिसफलकौंभोगवतासंताइष्टअनिष्टविषै

रागद्वेषकरैहै । तिरागद्वेषभावनिकरिअपनेज्ञानप्राणकानाशकरैहै । अन्यजीवनिकेद्रव्यप्राणनिकाघात

करैहै । यहजीवजबजबरागद्वेषभावपरणमैहै । तबअन्यजीवद्रव्यकेप्राणकाघातहोउअथवामतिहोउहै । आ

पनेंअपनेस्वरागीद्वेषीहुवाआपकौंघातैहै । इतराज्ञानावरनादिकर्मभिर्बंधभवतीतिहिकहियेनिश्चयसेतिहा

कहियै । तवज्ञानावरणादिकर्मभिः कहिये । ज्ञानावरनादिआठकर्मनिकरिबंधकहियेप्रकृतिस्थितिअनुभागप्रदे

शरूपबंधः भवतीकहियेहोयहै ॥भावार्थ॥ जबइहरागीद्वेषीहोइहैतबअणेकप्रकारबंधकरैहै जातैयहजीवप्राणनि

केसंबंधतैपुद्गलीकबंधकौंउपजावैहै । तातैयहपुद्गलीककर्मकेकारणहै ॥आगैइनिप्राणसंतानकीउत्पत्तिकौंअंतरंगका

रणदिखावैहै ॥गाथा॥ आदाकम्ममलिमसो । धारदिपाणेपुणोपुणोअण्णे । णजहदिजावममत्तिं । देहपधाणेसुवि

सयेसु ॥२५॥ आत्माकर्ममलीमसोधारयतिप्राणान्पुनःपुनःरन्यान् । ननहातिजावन्ममतांदेहप्रधानेषुविषयेषु । टीका

कर्ममलीमसः आत्मातावत्पुनःपुनः अन्यान्प्राणान्धारयति कर्ममलीमसः । कहिये । अनादिकालतेलेकरिमेला १०८

जुहै आत्मा कहियै जीव सो तावत कहियै तव तांई पुनः पुनः कहियै वारवार । अस्मान् प्राणान् कहियै । ओ अ ओरनै तण
प्राणधारयन्ति कहियै धारै है । तव तांई इनि प्राणनि कौ वारवार धरै है सो ई कहै है ॥ यावत ॥ देहप्रधानेषु विषयेषु ममत्वं न
जहाति । यावति कहियै जब तांई देहप्रधानेषु कहियै देह है प्रधान जिनि विषै ॥ असे जु है विषयेषु कहियै संसार सरीर भोग
आदिक विषयनि तिणविषै ममता करिये । ममत्व बुद्धि तिसहि न जहाति कहियै नाही छांडै है ॥ भावार्थ ॥ जब तांई इस जीव
कै विषय भोग शरीरादि ममत्व बुद्धि छूटती नाही तब तांई चतुर्गति संसार का कारण प्राणनि का संतान धरै है । ताते अंतरंग
प्राणनि का कारण ममता भाव है । सो ई सबंध्या त्याग जोग्य है ॥ आगै इनि प्राणनि की प्राणासंतान वेणाश का अंतरंग का
रण कहै है ॥ गाथा ॥ जो इंद्रियादि विजई । भविय उवओगमप्पगं झादि । कम्मेहिण सो रज्जदि कधं ते पाणा अणुचरंति ॥ य
य इंद्रियादि विजयी भूत्वोपयोगमात्मकं ध्यायति कर्मभिर्न स रज्यते कथं प्राणा अनुचरंति ॥ टीका ॥ यः इंद्रियादिविज
ई भूत्वा पः । कहियै जो पुरुष इंद्रियादि कहियै । इंद्रिय कषाय अव्रतादिक विषयानि को विजई कहियै जीतन हारो
भूत्वा कहियै होयकरि आत्माकौ उपयोग ध्यायति आत्माकौ कहियै अपना उपयोग कहियै समस्त परभावनितै भिन्न
शुद्धचैतन्य स्वरूप तिसहि ध्यायति कहियै एकाग्रचित्त होय अनुभवै है ॥ स कर्मभिः न रज्यते सः कहियै सो पुरुष द्विज्ञानी व

मोभिः कहियेसमस्तसुभासुभकर्मनिसोंरज्यतेकहियेरागीनांहीहोयहै जैसैंजलविषेकमलतैंसेहीअलिप्र

है तेप्रारणाः॥कथंअन्वरंतिकहियेतिसमहात्माकेंप्राराणाः॥कहियेसेसारसंताराणकारणपुद्गलीककर्मान
कथंकहियेकैसेंअनुचरंतिकहियेआपकरिसंबंधकरहिंगे॥किसहीप्रकारभीनकरहिंगे॥भावार्थ॥पुद्गलसं
तानकेंअभावकाकारणएकवीतरागभावहै॥जैसैंफटिकमनिकीसुद्धताकाकारननिकरिवरतीस्यामपीततर
क्तादिवस्तुकाअभावहोयहै॥तैसैंहीसकलइंद्रियविकारनितैंरहितहोइ निजस्वरूपविषेथिरहोइसुद्धस्वरूपकेंप्रा
प्तहोयहै तैसेंहीसकलइंद्रियविकारनितैंरहितहोइ फिरिआगेंप्राणधारनरूपजन्मांतरनांहींधरैहै॥तातैंइष्टानिष्ट
विषयरागभावत्याज्यहै आगेंफिरिपरभावनितैंजुरहितभयाऐसेंकेंव्यवहारजीवकेंकारण॥चारिगतिकेपर्यायनिकू
स्वरूपकहेहैं॥गाथा॥अस्तित्वनिश्चितस्य हि॥अर्थस्यार्थान्तरे संभूतः॥अर्थःपर्यायः सः॥संख्यानादिप्रभेदैः
९६ अस्तित्वनिश्चितस्य हार्थस्यार्थांतरे संभूतअर्थः पर्यायः सः संख्यानादिप्रभेदैः॥टीका॥अस्तित्वनिश्चित
स्यअर्थस्यअस्तित्वकहिये॥अपनासाइजोवस्तुभावरूपगुणहैसरूपकाअस्तित्वतिसकरिनिश्चितस्यकहियेनिश्च
लहैजुअर्थस्यकहियेजीवपदार्थतिसकैंहिप॥अर्थांतरसंभूतः अर्थः॥हिकहियेनिश्चयस्यों॥पःकहियेजोअ १०९

र्यांतरकहिये॥ अन्यपदार्थपुद्गलद्रव्यतिसकेसंयोगतेंसंभूतः कहियेऐसाअनुअर्थकहियेआगेंकह्याआत्मकपदार्थ
सः संस्थानादिप्रभेदैः पर्यायः सकहियेसोमंजोगजनितभाव॥संस्थानादिकहियेसंस्थानसंहननादिभेदकरिपर्या
यकहिये॥नरनारकादिरूपविभावपर्यायकहिये॥भावार्थ॥ जीवकेजेपुद्गलसंजोगतेंनरनारकादिविभावपर्यायउ
पजेहैं॥ तेपर्यायविभावजीवकोकारनहै॥सर्वथाअविनासीकहे॥रहेहैजोजीवकेपुद्गलसंयोगतेंभिन्नअसंख्यातप्रदे
सीअंतरंगकेविषेप्रकाशमाननित्यअखंडितपर्यायहै सोउपादेयहै॥आगेंएईद्रव्यपर्यायकेभेददिखाईयेहैगाथा
णरणारयतिरियसुरा॥संठाणादीहिंअण्णहाजादा॥पज्जायाजीवाणं॥उदयादुहिंणामकम्मस्स॥७५॥नरनारकतिर्यक्
सुराःपर्यायाःसंस्थानादिभिः॥अन्यथाजाताः॥पर्यायाः जीवानामुदयादिनामकर्मणः॥टीका॥हिजीवानांनरनारक
तिर्यक्सुराः पर्यायाः संस्थानादिभिः॥अन्यथाजाताः हिकहियेनिश्चयसोजीवानांकहियेसंसारीजीवनिकेनरनार
कतिर्यक्सुराः पर्यायाः कहियेमनुष्यनरनारकतिर्यंचदेवताऐसेजुनानाप्रकारपर्यायतेसंस्थानादिभिः कहियेसं
स्थानसंहननस्पर्सरसगंधवर्णादिभेदनिकरिअन्यथाजाताकहियेजीवकेस्वभावरूपपर्यायनांही॥विभावरू
पहै॥काहेतेंजातेउपजेहैनामकर्मणः उदयात्कहिये पुद्गलविपाकीजुहैनामकर्म॥ताकेसंयोगसेतीआगेक

प्र.सा द्रव्यात्मक एवविभावपर्यायरूपहोयहै॥भावार्थ॥ जैसेअग्निकैगोसालकडीतृणकाष्ठइत्यादईंधणकेसंयोगतेनाना
११९ प्रकारकेआकाररूपगुरुविभावपर्यायहोयहै। तैसैहीसंसारीजीवकेपुद्गलसंयोगसौनानाविकारउपजैहैहै॥आगे
पर्यायपरिद्रव्यानिस्योआत्माभिन्निरहोहैतथापिस्वपरभेदकेनिमित्तस्वरूपास्तित्वदिखाईयेहै॥गाथा॥ तंसब्भाव
णिबद्धंदव्वसहावंतिहासमक्खादं। जाणदिजोसवियप्पं। णमुहदिसोअण्णदवियम्हि। २९। तंसद्भावनिबद्धं। द्र
व्यस्वभावंत्रिधासमाख्यातं। जानातियःसविकल्पंनमुह्यतिसोन्यद्रव्ये॥टीका॥ यः तंसद्भावंनिबद्धंद्रव्यस्वभावं
सविकल्पंजानाति। यःकहियेजोपुरुषतंकहियेसोजोपूर्वहीकहासद्भावकहियेद्रव्यकास्वरूपास्तित्व। तिसक
रिनिबद्धंकहियेसंयुक्तहै। द्रव्यस्वभावंकहियेद्रव्यकानिजलक्षणसविकल्पकहियेभेदसंयुक्तजानाति। कहियेजा
णैहै। द्रव्यकास्वभावकैसाहै। त्रिधासमाख्यातंकहियेद्रव्यगुणपर्याय। अथवाउत्पादव्ययध्रौव्यभेदसेतीनाभेद
निकरिसंयुक्तहै॥भावार्थ॥ जोपुरुषद्रव्यगुणपर्यायभेदनिकरि। औरउत्पादव्ययध्रौव्यभेदनिकरिस्वस्वरूपअरु
परस्वरूपकोभलीभांतिजाणैहैसअन्यद्रव्येनमुह्यति। सकहियेसोभेदविज्ञानीअन्यद्रव्येकहियेअचेतनाद्र ११९
व्यनिविषैनमुह्यतिकहियेनाहींमोहकौप्राप्तहोयहै॥भावार्थ॥ स्वरूपास्तित्वकाजाननहारास्वपरकाज्ञायकहै

तातैस्वरूपकाग्राहकहोयहै॥परविषैरागद्वेषीमोहीहोनानांही॥एहीस्वपरभेदविसेषतांकरिदियाईयै
है॥जोजीवकाललब्धिपाइकरिदर्सणमोहकाउपसम॥अथवाक्षयकरैहै॥तिसजीवकैऐसाभेदवि
ज्ञाणहोइहै॥जैचैतन्यवस्तुरूपद्रव्यहै॥ओरजोचैतन्यपरनितिरूपपर्यायहै॥औरचैतन्यरूपगुणहैसोमे
रारूपहै॥सोइयहमेरास्वरूप अपणैचैतन्यपरिनामकरिउत्पादव्ययध्रुवतालियैअपणैस्वरूपास्तित्वसंयु
क्तहै॥औरजोयहमूर्त्तपदार्थहै॥सोअचेतणद्रव्यहै॥अपनैअचेतनगुणासंयुक्तहै॥अपणैअचेतणपर्याय
निपरणावैहै॥उत्पादव्ययध्रौव्यतालियैअपणैअचेतनस्वरूपास्तित्वसंयुक्तहै॥तातैमेरेस्वरूपतैभिन्नपुद्
गलविकारयहमोहहै॥मेरास्वरूपनांहीनांहीनांहीयहमेरैनिश्चयहै॥इसप्रकारज्ञानीकैस्वपरकाभेदहोइहै
आगैसर्वथाप्रकारआत्माकूंभिन्नहोइवैकूंपरद्रव्यकेसंयोगकाकारणदियावैहै॥गाथा॥अप्पाउवउग
प्पाउवओगोणाणदंसणंभणिदो॥सोहिसुहोअसुहोवा॥उवओगोअप्पणोहवदि॥२८॥आत्माउपयोगा
त्माउपयोगोज्ञानदर्सणंभणित॥सोहिसुभोअसुभोवाउपयोगआत्मानोभवति॥टीका॥आत्माउप
योगात्माआत्माकहियैजीवद्रव्य॥सोउपयोगात्माकहियैचैतन्यस्वरूपहै॥उपयोगज्ञाणंदर्सनेभणित:

प्र॰सा उपयोगकहियेचेतनापरिणाम। सोज्ञाणदर्सणंकहियेजो ननं॥ अरु स्यनां अेसेदोइभेदनिकरिभिणितः क
११२ हियेकह्याहै॥ सच्यात्मनः उपयोगः हि सुभः वा असुभः भवति। सकहियेसोज्ञाणदर्सणरूपदोयप्रकारआत्म
नः कहियेआत्माकाउपयोग। कहियेचेतनापरिनामहि कहियेनिश्चयस्यो सुभः वाअसुभः कहियेसुभरूप
अथवाअसुभरूपभवतिकहियेहोइहै॥भावार्थ॥ जीवकेपुद्गलीककर्मवर्गणानिकेबंधकोकारणअसुद्धचे
तन्यात्मकउपयोगहै॥ उपयोगआत्माकाज्ञांणदर्सणरूपचेतन्यपरिनामहै दर्सणसामान्यचेतनाहै॥ ज्ञा
णविसेषचेतनाहै॥ यहज्ञाणदर्सनरूपउपयोगदोयप्रकारहै सुद्धअसुद्धभेदनिकरिजोवीतरागउपयोगहै
सोतोसुद्धोपयोगहै॥ औरजोसरागहैसोअसुद्धोपयोगहै सोअसुद्धोपयोगसंक्लेसविसुद्धभेदनिकरिदो
यप्रकारहै॥ विसुद्धरूपसुभोपयोगहै॥ संक्लेसरूपअसुभोपयोगहै॥ आगेसुभोपयोगअसुभोपयोग इनिदो
नोविषेपरद्रव्यकेसंबंधकाकारणदिखावेहै॥गाथा॥ उवउगो जदि हि सुहो पुण्णं जीवस्स संचयं जादि असु
होवातधापावंतेसिमभावेणचयमस्थि॥३५॥ उपयोगो यदि हि सुभः पुण्यं जीवस्य संचयं याति॥ असुभो वा त
था पापं॥ तयोरभावे न चयोऽस्ति जीवस्य यदि हि सुभः उपयोगः तदा पुण्यसंचयं याति॥ जीवस्य क ११२

ये आत्माकै ॥ परि कहियै जो ॥ हि कहियै निश्चयस्यौ ॥ सुभः कहियै दानपूजादिक्रियादि सुभरूप उपयोग ॥ कहियै
चैतन्यविकाररूप असुद्धपरिणाम होय है ॥ तदा कहियै ॥ तिसकाल पुन्य कहियै ॥ साताका उपजावणहार पु
द्गलपिंडसो ॥ संचय कहियै ये कठोर होइ ॥ आत्माप्रदेसानि विषै बंधभावकौ ॥ याति कहियै प्राप्त होइ है ॥ वा अ
सुभ तथा पाप ॥ वा कहियै अथवा ॥ असुभः कहियै जिसकाल आत्माकै मिथ्यात्वविषयकषायादिरूप अ
सुभोपयोग होय ॥ तिस कहियै ॥ तिस ही प्रकार संचय होय ॥ पाप कहियै असाताका देणहार पुद्गलवर्गणापिंड्या
यरूप आइ बंधै है ॥ भावार्थ ॥ यह दोऊ प्रकार सुभासुभरूप असुद्धोपयोग बंधका कारण जानना तयो: अ
भावेन चय: अस्ति तयो कहियै तिनि सुभासुभोपयोग परिणामकै ॥ अभावे ॥ कहियै नास हूए न कहीए ॥ न
कहीए नाही चय: ॥ कहियै परद्रव्यका संचयरूप बंध अस्ति कहियै होइ है ॥ भावार्थ ॥ इसि आत्माकै जो सुभा
सुभरूप ॥ असुद्धोपयोगका अभाव होय ॥ औरनिर्मल सुद्धोपयोगभावरूप परिणमै तो इसिकै परद्रव्यका सं
चय न होइ ॥ तातै यह स्वात्मसिद्ध भई ॥ सुभासुभरूप असुद्धोपयोग परद्रव्यकै संयोगका कारन है सुद्धोपयोग मो
क्षका कारण है ॥ आगै सुभोपयोगका स्वरूप दिखावै है ॥ गाथा ॥ जो जाणादि जिणिंदे ॥ पेछदि सिद्धे तहेव अणागा

प्र रिजीवेपराग्गुरुकंयो उवऊगोसोसुहोतस्स ॥ ७९ ॥ योजानातिजिणेंद्रान् ॥ पश्यतिसिद्धांस्तथैवानगारान् ॥ जीवेच
११३ सानुकंपः उपयोगः सशुभस्तस्य ॥ टीका ॥ यः जिणेंद्रान् जानाति यः कहिये जो जीव जिनेंद्रान् कहिये परम
देवाधिदेव परमेश्वर वीतराग सुं है देवा तिनि के स्वरूप कौं जानाति कहिये जानै है ॥ और सिद्धान् पश्यति कहिये
अष्टकर्मोपाधिरहित सिद्ध परमेष्ठी तिनकौं ज्ञाननेत्र दृष्टि करि देखै है ॥ तथैव अनगारान् तथैव कहिये तैसे ही अन
गारान् कहिये ॥ आचार्य उपाध्याय साधु तिनकौं भी देखै जानै है ॥ जो जीवेच सानुकंपः च कहिये बहुरि जीवे
कहिये समस्त प्राणीनि विषै सानुकंपः कहिये दयाभाव संपन्न है तस्य शुभोपयोगः तस्य कहिये तिस जीवकै
स कहिये ॥ सो शुभोपयोगः कहिये शुभरूप चैतन्यविकाररूप परिनाम जाननां ॥ भावार्थ ॥ जिस जीव के दर्सणमो
ह अथवा चारित्रमोह की विशेषरूप संपाय समदसा नाही हुई है और शुभराग का उदय हो इतिस
जीवकै भक्तिपूर्वक पंचपरमेष्ठी के देषन जानन रूप धारणरूप परनाम होय है और सब जीवनि विषै दयाभा
व होय है यह शुभोपयोग का लक्षण जाननां ॥ आगै अशुभोपयोग का स्वरूप दिखावै है ॥ गाथा ॥ विसयक
साऊगाढो ॥ दुस्सुदिदुच्चित्तदुट्ठगोट्ठिजुदो उग्गो उम्मग्गपरो उवऊगो जस्स सो असुहो ॥ ८० ॥ विषयकषायाव ११३

गाढोदुस्श्रुतिदुश्चित्तदुस्गोष्ठीयुक्तः उग्रउन्मार्गपरः। उपयोगोयस्यसोसुभः ॥टीका॥ यस्यउपयोगः विषयकषा
यावगाढः यस्यकहियेजिसजीवकाउपयोगकहियेअसुद्धचिद्विकारपरिणामऐसाहोइकैसाहोइ। विषयक
षायावगाढः कहियेइंद्रियविषयअरुक्रोधादिकषाय। इनिकरिअतिगाढहोय। औरकैसाहोइ। दुःश्रुति
दुश्चित्तदुस्गोष्ठीयुक्तः दुःश्रुतिकहियेमिथ्याशास्त्रकाश्रवणदुश्चित्तकहियेआर्तरौद्रध्यानरूपमनदुस्गो
ष्ठीकहियेपरनिंदादिवार्ता। इनिकरिजोउपयोगयुक्तः कहियेसंयुक्तहोय बहुरिकैसाहोइ। उग्रः कहियेहिंसादि
आचारकैकरनविषैमहाउद्यमीहोइ। बहुरिकैसाहोइ। उन्मार्गपरः कहियेवीतरागसर्वज्ञप्रणीतमार्गतैविप
रीतमिथ्यामार्गतिसविषैसावधानहोयकहियेसोअसुभोपयोगहै ॥भावार्थ॥ जबइसिजीवकैदर्सनमोह
चारित्रमोहकातीव्रउदयहोइ तबअसुभरागकेअरहंततैपंचपरमेष्ठीतावपैरुचिनकरै। मिथ्यामार्गकाश्रद्धा
नीहोइविषयकषायविषैप्रवर्त्तै। मिथ्यासिद्धांतकाश्रवणकुत्सितआचारकाआचरणकरै। पापक्रियावि
षैरतअसुभोपयोगीजीवहोइ ॥आगैपरद्रव्यसंयोगकेकारणमुहैसुभासुभभावतिनिकेनाशकाकारणादि
खावैहै ॥गाथा॥ असुहोवओगरहिदो। सुहोवजुत्तोणअण्णदवियम्मि। होज्जंमज्झत्थोहं। णाणप्पगम

प्र·सा ष्पगेद्याए ॥ ६७ ॥ असुभोपयोगरहितः सुभोपयुक्तोनान्यद्रव्ये भवन्मध्यस्थोहं ज्ञानात्मकमात्मकं ध्यायामि ॥ टी-
११५ का ॥ अहं ज्ञानात्मकं आत्मानं ध्यायामि ॥ अहं कहियै मैं शुद्ध हौं स्वपरविवेकी सो ज्ञानात्मकं कहियै ज्ञानस्व-
रूप है ॥ आत्मानं कहियै शुद्ध जीवद्रव्य ताहि ध्यायामि कहियै परमसमरसीभावविषै मग्न हुवा अनुभवौ हौं ॥
कैसा हौं मैं ॥ असुभोपयोगरहितः कहियै ॥ मिथ्यात्व विषय कषायादि अशुभ परिनामनि तैं रहित हौं ॥ बहुरि कैसा
हौं मैं सुभोपयुक्तः न कहियै सुभ आचार के आचरणरूप जु सुभभाव ॥ तिसारूप भी उपयोगी मैं नाहीं हौं ॥ मैं कै-
सा हौं तसें तें स्वरूप का अनुभवी हौं ॥ परद्रव्ये मध्यस्थः भवन् ॥ परद्रव्ये कहियै समस्त ही सुभासुभ द्रव्यभावरूप
जु है पर भाव तिनि विषै मध्यस्थः कहियै मध्यवर्ती भवन् कहियै होन संता ॥ भावार्थ ॥ ए सुभासुभरूप कर्म मेरै दो-
नौ समान है ॥ अपने पर से कैसे हैं ॥ मैं मध्यस्थ हौं ॥ इसि प्रकार कहियै अपरोक्ष स्वरूप का ध्यान करनहारा हौं ॥ पर-
जु परसंजोग का कारन सुभासुभरूप अशुद्धोपयोग होइ है ॥ सो मोहकर्म की मंद तीव्र दशा के आधीन होय
प्रवर्त्ते है ॥ सुद्ध आत्मीक भाव तें विपरीत है ॥ परद्रव्यरूप है ॥ तातें इनि सुभासुभ दोनौ भावविषै मेरी समान बुद्धि
है ॥ तातें मैं मध्यस्थ हौं परद्रव्य का मैं अंगीकार नाहीं करौं हौं ॥ तातें अशुद्धोपयोग तें रहित होइ ॥ केवल स्वरूप ११५

कीअवर्तनकरिसुद्धोपयोगहोइ॥ आत्माविषैसदाकालनिश्चलहोइ इतिसैंहोय हस्तुमेरै आत्मालीनसुद्धोपयोग
वृत्तिहै॥ सोईपरद्रव्यसंयोगकारनविनाशतिसकाअभ्यासहै॥ एहीमोक्षमार्गहै॥ औरएहीसाक्षातजीवराग
कहै॥ औरएहीकर्त्तव्य॥ भोक्तव्य॥ आश्रवबंधभावदूसारहितसिद्धस्वरूपसुद्धभावहै॥ आगेसरीरादिपरद्र
व्यविषैभीमध्यस्थभावदिखावैहै॥ गाथा॥ णाहंदेहोणमणो णचेववाणीणकारणंतेसिं॥ कत्ताणणका
रैदा॥ अणुमंताणेवकत्तीणं॥ २४॥ नाहंदेहोनमनो॥ नचैववाणीनकारणंतेषां॥ कर्त्तानानकारयि
ता॥ अनुमंतानैवकर्तृणां॥ टीका॥ अहंदेहः नमनः नचएववाणीन॥ अहंकहियेमैंसुद्धचिन्मात्रवस्
तुसपरकाविवेकीसोदेहः नकहियैशरीररूपनाहीहौ॥ मनः नकहियैमनयोगरूपभीनांहीहौ॥ वच
हियेवहुरि॥ एवकहियैनिश्चयसौं॥ वांनीनकहियैवचनयोगरूपभीनांहीहौ तेषांकारनंन तेषांकहियैते
हुहैमनवचनकाय॥ तिनकाकारणंन कहियैउपादानकारणरूपपुद्गलपिंडसोभीमैनांहीहौ॥ वहु
रिमैंकर्त्ताण॥ कहियैतिनतीनयोगनिकाकर्त्ताभीनांहीहौ॥ मुझकर्त्ताविनांहीवेयोगपुद्गलपिंडकरि
कीजिएहै॥ वहुमैंकारयिताकहियैतिनियोगनिकाप्रेरकहोइकरावनहारभीनांहीहौ॥ मेरेप्रेरैविना

प्र·सा हीपुद्गलद्रव्यतिनकाकर्त्तानहीहोयहै। व्यवहारिमैकर्त्तृणां अनुमंतानैव। कर्तृणांकहियेतिनियोगनकेकरनहारेजु
११५ हैपुद्गलतिनकाअनुमंतानवैकहिये। अनुमोदनहाराभीनांहीहों। मेरीअनुमोदनाविनांहीपुद्गलपिंडति
णाकाकर्त्ताहै। तातेंमैंअत्यंतपरद्रव्यसौंमध्यस्थहों॥भावार्थ॥स्वपरविवेकीजीवसबद्रव्यनिकेस्वरूपका
ज्ञानहै। तातैंइनितीनजोगनिकेंपुद्गलकेंजाणैहै। इनिविषैकृतकारितअनुमोदभावनाहींकरैहै। प
रद्रव्यभावजाणित्यागीहोयहै। स्वरूपविषैनिश्चलतिष्ठैहै। सुभासुभअसुद्धोपयोगकौंविनासिनिराश्रव
होइ सुद्धोपयोगीहोइहै॥आगेंइनिशरीरवचनमनकौंनिश्चयकरिपरद्रव्यदिखावैहै॥गाथा॥देहोयमणो
वाणीपोग्गलदव्वप्पगत्तिणिदिट्ठा। पोग्गलदव्वंपियपुणो। पिंडोपरमाणदव्वाणं। ७५। देहश्चमनोवाणीपु
द्गलद्रव्यात्मकाइतिनिर्दिष्टाः देहः चमनः पुद्गलद्रव्यमपिपुनःपिंडः परमाणुद्रव्याणां॥टीका॥देहःचम
नः वाणीपुद्गलद्रव्यात्मकाइतिनिर्दिष्टाः देहःचमनः वाणीकहियेशरीरवहुरिमनवचनएतीनहूंजोगपु
द्गलद्रव्यात्मकाकहिये। पुद्गलद्रव्यस्वरूप इतिकहिये। ऐसेंनिर्दिष्टाःकहियेवीतरागदेवनेंदिखायाहै। पु
नःपुद्गलद्रव्येअपिपरमाणुद्रव्याणांपिंडः पुनःकहियेवहुरिपुद्गलद्रव्यकहियेजीराजोगरूपजुहै। प ११५

हपुद्गलपिंड।सोअपिकहियैनिश्चयसो।परमाणुद्रव्याणांकहियैतस्मअविभागीरूपजुहैपुद्गलपरमाणु।ति
नकापिंडकहियैस्कंधरूपपिंडहै॥भावार्थ॥एतीनहूजोगनिश्चैकरिपुद्गलद्रव्यकास्वरूपहै अणंतपरमाणू
मिलिकरि।एकपिंडरूपविभावपर्यायहोइहै।तातेएजोगपुद्गलपर्यायहै।यद्यपिजोगरूपपुद्गलपर्याय
निविषैअपनेस्वरूपास्तित्वकरियरमानजुदेजुदेजुदेहै।तथापिस्निग्धरूक्षगुणाकेवंधपरिनामकीअपेक्षा
करिएकपिंडरूपप्रतिभासैहै॥आगैआत्माकैपरद्रव्यकाअभाव॥औरूपरद्रव्यकेकर्तृत्वकाअभाव
ऐसासाधिदिखावैहै॥गाथा॥नाहंपोग्गलमईउणातेमयापोग्गलाकयापिंडं।तम्हाहिनदेहोहं कत्ता
वत्तस्सदेहस्स॥३६॥नाहंपुद्गलमयाननेमयापुद्गलाःकृताःपिंडं।तस्माद्हिनदेहोहंकर्त्तावातस्यदेहस्य॥गा
था॥अहंपुद्गलमयानअहंकहियैमैजुहौं।सुहूचैतन्यमात्रवस्तुसौ।पुद्गलमयानकहियै।अचेतनपुद्गल
द्रव्यरूपनाहींहै।तेपुद्गलाःमयापिंडनेकृता।तेपुद्गलाःकहियेतेजुहैस्कंधपरमाणरूपपुद्गलतेमया
कहियैस्वरूपगुप्तजुहैं।चैतन्यतत्तनैपिंडकहियैस्कंधरूपपिंडतेनकृताकहियैकीएनाहींहै।अपनीही
शक्तिसोंपिंडरूपहोइहैं।तस्मातहिअहंदेहः।तस्मातकहियैतिसकारणातैहिकहियैनिश्चैसोअहंवे

प्र.सा. कहियेमेराज्ञानस्वरूपदेहनकहियेपुद्गलविकारशरीरमईनांहीहौं ॥ मैंअमूर्त्तचेतन्यरूपहौं ॥ वानस्पदेहस्पकर्त्तापणा ॥ वाक
११६ हियेअथवा ॥ तस्यदेहस्यकहियेतिसपुद्गलमयीदेहकाकर्त्ताणकहियेउपजावणहाराभीनांहीहौं ॥ भावार्थ ॥
परन्तुहैमनवचनसंयुक्तशरीरसोअवस्यमैंपुद्गलीहोइहैसदेहनांही ॥ ऐसामेरीकर्त्तानांहै ॥ तातेमैंइसिकाका
तकारितअनुमोदनाभावणिकरिकर्त्तानांहीहौं ॥ काहेतेजातेपरशरीरअनंतपरमाणुनिकरिपिंडहै ॥ मोविर्षे
अनंतपरमानरूपपरिनमननिसक्तिनाही ॥ तातेमैंकैसेइसकाकर्त्ताहोऊं ॥ पुद्गलहीकीसक्तिसोपुद्गलपर्यायपहो
यहै ॥ मोकौंऔइसशरीरकैमहाविरोधहैतातेमैंभिन्नद्रव्यहौं ॥ आगेंकहैहैकिपरमानुद्रव्यनिविर्षेकिसिप्रकारबं
धपर्यायहोइहैपरमार्थदेहहरिखोरेहै ॥ गाथा ॥ अपदेसोपरमानू पदेसमेत्तोयसयमसद्दोणे णिद्धोवालुक्खोवा दुपदेस
दित्तमणुहवदि ॥ ७१ ॥ अप्रदेसः परमाणुः प्रदेसमात्रश्चस्वयमशब्दः ॥ यन्नस्निग्धोवारूक्षोवा ॥ द्विप्रदेशादित्व
मनुभवति ॥ टीका ॥ परमानुः अप्रदेसः परमानुः कहियेसूक्ष्मअविभागीजुहैपुद्गलपरमानुसोअप्रदेसक
हियेदोइआदिप्रदेसप्रदेसनिकरिरहितहै ॥ एकप्रदेसमात्रहै ॥ चस्वयंअशब्द ॥ चकहियेवहुरिकैसाहै स्वयंकहिये
आपही ॥ वहपरमानुअशब्दकहियेशब्दपर्यायरहितहै ॥ शब्दजुहैसोअनंतपुद्गलपरमानुकैस्कंधनितेउपजे ११६

है। तातें परस्पर असरहै यत स्निग्ध वा रूक्षः वा पत कहिये निसवासतें यह परमाने। स्निग्धवा कहिये। सचिक्कणपरिना
मसंयुक्त भी होय है। और रूक्ष वा कहिये रूक्ष परिणाम संयुक्त भी होइ है। तिसवासतें है प्रदेसादित्वं अनुभवति
हि प्रदेसमात्रत्वे कहिये। दोइ आदि ले अनेक प्रदेशभावनिकौ अनुभवति कहिये प्राप्त होय है। भावार्थ। यह
परमानू अविभागी प्रदेस मात्र है। और इस विषै वर्णादिक पंच गुण अविरोधी पाईये है। और सप्रगट शब्द पर्याय
रहित है। तातें यह सुद्ध परमानू कहिये। इस विषै स्निग्ध रूक्ष है। तिनि गुणनि के परिनामनि तें अन्य परमानूनि स्यों मि
लै है। तातें पिंडरूप स्कंध पर्याय है। तातें अनेक प्रदेसी होइ है। आगे परमानू के स्निग्ध रूक्ष रूप गुन कैसे है यह क
हे है। गाथा। एगुत्तरमेगादी। अणुस्स निद्धत्तणं च लुक्खत्त। परिणामादो भणिय। जाव अणंतत्तमणुभवदि
रूप। एकोत्तरमेकाद्यणोः। स्निग्धत्वं वा रूक्षत्वं परिणामाद्भणितं। यावदनंतत्वमनुभवति॥ टीका॥ अणोः ए
काद्येकोत्तरं स्निग्धत्वं वा रूक्षत्वं भणितं। अणोः कहिये परमानू के एकादि कहिये एक तें लेकरि एकोत्तर क
हिये। एक बढती स्निग्धत्व कहिये चिक्कणभाव। वा कहिये अथवा रूक्षत्वं कहिये रूक्षभाव भनितं कहिये कहा
है। कहे ते परिणामात कहिये स्निग्ध रूक्ष गुण विषै अनेक प्रकार परिणमन शक्ति है। तातें एक तें लेकरि

प्र·मा कहांतांईस्निग्धरूक्षगुणकेएकएकवरतीभेदहोइहैयावतअणंतलंअनुभवति॥यावत्कहियेजवतांईअ
११२ णंतलकहिये॥अणंतभेदनिकोअनुभवतिकहियेप्राप्तहोयहै॥भावार्थ॥परमाणूविषैस्निग्धरूक्षगुणकी
अणंतधापरणितिहै॥तातैस्निग्धरूक्षगुणकेएकतैलेकरिअणंतभेदहोयहै तेअणंतभेदऐसेहै॥जिस
काहूसराअसनहोइ॥जैसैवकरीगाइ॥भैसिऊंटिणीकेदूधमै॥अथवाधन्नारिकमैवरतैचिकणाईकेभेदहो
यहै॥तैसैस्निग्धगुनकेअणंतभेदहोइहै॥औरजैसैधुलिएघरेतइत्यादिवसनिविषैरुखाईअधिकीअधि
कीहोयहै॥तैसैरूक्षगुणकेअणंतभेदजाणनै॥आगैकिसिजातिस्निग्धरूक्षगुनकेपरिनामतेवंधहोइहै॥
हरियाविहै॥गाथा॥णिद्धावालुक्खावा॥अणुपरिणामासमाचविसमावांसमदोदुगाधिगातदि॥बद्ध
दिहिआदिपरिहीणा॥२४॥स्निग्धावारूक्षावा॥अणुपरिनामाः समावाविषमाचा॥समतोद्व्यधिकाय
दि॥बध्यंतिहिआदियरिहीना॥टीका॥अणुपरिणामाः स्निग्धावारूक्षावा॥समावाविषमावा॥अणु
परिणामाः स्निग्धावारूक्षावा॥समावाविषमावा॥अणुपरिणामाः कहियेपरमानकेपर्यायभेदस्नि
ग्धावाकहियै॥अथवास्निग्धहोउ॥रूक्षावाकहियेअथवारूखेहोउ समावाकहिये॥अथवाऐसगिन ११२

तौकरिसमांणाहोउ॥ दोयचारिछहआठदसइसिप्रकारविषमाधाकहियें॥ अथवाअंसनिकरिविषम
होउ॥ तीणपांचसातनवग्यारहइसिप्रकारसमतः॥ यदिअधिकःसमतः कहियेबराबरिगणाती
तैं॥ यहिकहियेजोअधिकः कहियेदोअंसअधिकहोहि॥ तौबंधतिकहियेआपसमैंबंधै॥ औरुप्रका
खंधजोग्यनाहीं॥ कैसेंआपुसमैंस्निग्धरूक्षगुणपरिणतिपरमानूकेपर्यायबंधजोग्यहोइहै॥ आ
दियरहीनाकहियेजघन्यअंसतेरहिततबंधैहै॥ भावार्थ॥ स्निग्धरूक्षगुणविषयअनंतअंसभेदहै
एकपरमानूतेइजेयपरमानूस्योतबबंधै॥ तबदोइअंसअधिकस्निग्धअथवा॥ रूक्षगुनकापरिनाम
होइकाहेतें॥ जातेंदोइहीअंसकीअधिकाई तैबंधकीयोग्यतापरमागमविषेदिखाईहै॥ औरुप्रका
खंधहोतानाहीं॥ ऐसाहीबंधहोणेकापरणामहै॥ एकअंससस्निग्धरूक्षभावपरणितिपरमानूस्यों
बंधनहोय॥ अतिजघन्यभावकाबंधपरिनामहोइबेकीअजोग्यताहै॥ तातेंएकअंसकरिबंधनहोइ
॥आगैंकिसिप्रकारबंधहोयहैसोईदिखावैहैं॥ गाथा॥ णिद्धत्तणेणदुगुणो॥ चदुगुणणिद्धेणबंधमनु
हवदि॥ लुक्खेणवतिगुणिदो॥ अणुबज्झदिपंचगुणजुत्तो॥ ७५॥ स्निग्धत्वेनद्विगुणश्चतुर्गुणस्निग्धेनबं

प्र॰सा ११८

धमनुभवति ॥ रूक्षेणवात्रिगुणातोवध्यतेपंचगुणयुक्त ॥ टीका ॥ स्निग्धत्वेनद्विगुण ॥ चतुर्गुणेणस्निग्धेणाबं
धअनुभवतिरूक्षेणवात्रिगुणात्तोवध्यते ॥ स्निग्धत्वेणकहियेचिकनाईभावकरि ॥ द्विगुणः कहियेदोइ
अंसपरनयाजुहै ॥ परमानुसो ॥ चतुर्गुणणस्निग्धेणकहियेचारिअंसचिकणाई ॥ परिणतपरमाणस्योबंध
अनुभवतिकहियेबंधअवस्थाकौप्राप्तहोयहै ॥ भावार्थ ॥ एकपरमानूविषैदोइअंसस्निग्धगुनहै ॥ औ
रएकपरमानूंविषैचारिअंस ॥ स्निग्धगुणहोतौदोऊपरमानूकाबंधहोइ ॥ अथवाएकमैचारिअंसहै
औरएकमैछहअंसहै ॥ तौभीबंधहोइ ॥ अथवा ॥ एकमैआठअंसहै ॥ एकमैदशअंसहै ॥ तौभीबंध
होइइसिप्रकारअपरीणअगणितअंसभेदताई ॥ दोइअंशअधिकस्निग्धतासैंस्निग्धताकरिपरमानूनिका
अथवाबंधनिकाबंधजाननां वारूक्षेणात्रिगुणातः ॥ पंचगुणयुक्तः अनुवध्यतेवाकहिये ॥ अथवारू
क्षेनकहियेरूषाईभावकरि ॥ त्रिगुणातः कहियेतीनि ॥ अंसपरनयाजुहै ॥ परमानुतास्यौपंचगुणयुक्तः
कहियेपंचअंसरूक्षभावसेंयुक्तहै ॥ परमानूंसोअनुवध्यतेकहियेवधैहै ॥ भावार्थ ॥ एकपरमाणूतीनि
अंशरूक्षहोइ ॥ औरएकपरमानूंपंचअंसरूक्षहोइ ॥ तोबंधहोयहै ॥ अथवाएकपंचअंसहोइ ॥ ए ११८

कसात अंस होइ तौ भी वंध होइ है ॥ अथवा एक सात अंस होइ ॥ एक णव अंस होय तौ भी वंध होइ ॥ इसि प्र
कार अपरोगै अणंत अंस भेद तांई ॥ दोइ अंस अधिक रूक्षता सो रूक्षता करि परमानूनि का अथवा वंध
निका वंध जाननां ॥ एक परमानू विषै दोइ अंस रूक्षाई है ॥ और एक परमानू विषै चारि अंस स्निग्धता है तौ
भी वंध होइ इसि प्रकार दोइ ॥ अंस अधिक स्निग्ध रूक्ष गुणनि कै भी अणंत स्यो परमानू स्कंधनि का वंध
जाननां तातैं यह वार्त्ता सिद्धि भई ॥ स्निग्धता सौं दोइ अंस अधिक स्निग्धता करि वंध होइ ॥ और रूक्षता
सौं दोइ अंस अधिक रूक्षता करि वंध होय ॥ और रूक्षता स्निग्धता भी दोइ अंस की अधिकाई स्यो वं
ध होइ जो दोनों परमानू विषै अंस वरावरि होइ तौ वंध न होइ ॥ और जो एक अंस अधिक होइ तौ भी वं
ध न होइ ॥ जो दोइ अंस अधिक होइ ॥ तो ही वंधै और प्रकार वंध की जोग्यता नाहीं ॥ और जो एक अंस
चिकनाई ॥ अथवा रूखाई होय तौ भी वंध न होइ ॥ एक अंस अतिजघन्य है ॥ तातैं वंध जोग्य नाहीं ॥ ता
तैं दोय अंस तैं लेकरि आगै अणंत भेद तांई ॥ दोय अंस अधिक चिकनाई जो होइ तौ वंध होइ ॥ एक
अंस सौं वंध का अभाव ही जाननां ॥ कैसैं जैसैं एक परमानू एक अंस चिकनाई ॥ अथवा तीनि अंस

प्र.सा. सूक्ष्माईयपरणायाहै॥ तौभीबंधणाहोइ॥ यद्यपिदोयअंसअधिकभीहै॥ तथापिबंधकीजोग्यतानोहीत
११२ तैएकअंसस्निग्धोबंधणाहोइ॥ आगैआत्माकैपुद्गलपिंडकेकरतापणाकाअभावदिखावैहै॥ गाथा॥ दुपदे
सादीखंधा॥ सुहमावावादरा ससंठाणा॥ पुढविजलतेउवाऊसगपरिणामेहिंजायंते॥ ७५॥ द्विप्रदे
शादयस्कंधाः सूक्ष्माः वाबादराः ससंस्थानाः॥ पृथिवीजलतेजोवायवः॥ स्वकपरिणामैर्जायंते
टीका॥ द्विप्रदेशादयः स्कंधाः स्वकपरिनामैः जायंते॥ द्विप्रदेसादयः कहियेए दोइप्रदेशआदिलेक
रिजेहै॥ स्कंधकहियेपरमाननिकेबंध॥ दोइपरमानकाबंधतीनिपरमानूकाबंध॥ च्यारिपरमानका
बंध॥ इत्यादिअनंतपरमानूकेबंधपर्यंततेपर्यायउपजेहै॥ तेसबस्वकपरिनामेकहिये॥ अपनेहीस्नि
ग्धरूक्षगुणकेपरिणमनकीजोगतासौं॥ जायंतेकहियेउपजैहै॥ वासूक्ष्माः वादराः॥ पृथ्वीजल
तेजोवायवः॥ वाकहिये॥ अथवा॥ सूक्ष्माकहियेसूक्ष्मजातिवादराकहियेबादरजाति॥ जैसेंहप्र
थ्वीजलतेजोवायवः वाकहियेपृथ्वीकाय॥ जलकाय अग्निकाय॥ वायुकाय॥ एभिन्नभिन्नस्निग्धरू
क्षभावकेपरिनामतैपुद्गलात्मकबंधपर्यायउपजैहै॥ केसेंएपुद्गलपर्यायहोइहै॥ ससंस्थानाः कहियै ११६

तिष्टे॥ चौष्टे॥ वरत्ले॥ इत्यादिक्ष्यणीकअकारसंयुक्तहोयहै॥ भावार्थ॥ दोयपरमानंकेस्कंधतेलेकरिअ
णंतपरमाणस्कंधपर्यंतनानाप्रकारकेंअकारधरिसूक्ष्मवादररूपजेपुद्गलपर्यायहोयहै॥ औरूपरस
गंधवर्नकीमुष्यगौनतालियै॥ प्रथ्वीजलतेऊवायरूपपिंडहोयहै॥ तिनिसबपर्यायनिकाकर्त्ताेपुद्गलद्रव
जाननां तातेयहत्र्यापणीकअषधारियैहै॥ आत्मापुरुषपुद्गलकाकर्त्तानांही॥ पुद्गलद्रव्यहीविषैपि
डहोयवेकास्निग्धरूक्षशक्तिहै॥ तातेंअपणेपरिनामकरितेंनानाप्रकारहोयहै॥ आगेआत्मापुद्गल
पिंडकाग्रहकभीनांही॥ यहनिश्चकरैहै॥ गाथा॥ ओगाढगाढणिचिदो॥ पोग्गलकाएहिंसव्वदोलोगो
सुहमेहिंबादरेहिय॥ अप्पाओग्गेहिंजोग्गेहिं ४७॥ अवगाढगाढनिचित्तः॥ पुद्गलकायैः सर्वतोलोकः।
सूक्ष्मैर्वादरैश्च॥ आत्मप्रयोगायोग्यै लोकः सर्वतः सूक्ष्मैश्चवादरैः॥ आत्मनः प्रयोगयोग्यैकरि
येंआत्माकेग्रहवेकोंजोग्यहैकार्मणवर्गणाभावपरणमनहैनअतिसूक्ष्महै॥ नअतिस्थूलहै॥ अष्ट
कर्मरूपहोयवेकोंयोग्यहै॥ जोअतिसूक्ष्मस्थूलहोइ॥ तोकर्मरूपहोयवेकोंयोग्यनहोय॥ ऐसेजुहैपुद्
लकायैः॥ कहियेपुद्गलद्रव्यकेपिंडतिनिकरि॥ अवगाढगाढनिचितकहियेकिजानोंतमसाहै॥ ऐसा

प्र·सा अतिगाढभरिरह्या है ॥भावार्थ॥ यह लोक सव जायगै एक एक प्रदेस विषै अनंत अनंत कार्माण व
१२० र्गनानकरि भरि रह्यो है अवगाहना करि हवा था हो तानो ही ॥ तातै इस लोग विषै सर्वत्र जीव तिष्ठै है औ
र कर्म बंध जोग्य वर्गना भी तिष्ठै है ॥ जिस जाति कै जीव कै परनाम होइ है ॥ तिस ही जाति का आत्मा कै
कर्म बंध होय है ॥ यौ ना ही कि कहुं तै फेरि कै कार्माण वर्गनानि कौ पर आत्मा आप आणि करि बांधै
है ॥ जिस जायगै जीव है ॥ तिस ही जायगै अनंत वर्गना भी है ॥ तहां ही परस्पर बंध होय है ॥ तातै आत्मा पुद्गल
पिंड का प्रेरक नाही ॥ आगै पुद्गलपिंड कर्म का अकर्ता आत्मा दिखावै है ॥ गाथा ॥ कम्मत्तणपाउग्गा ॥ खं
धा जीवस्स परिणइं पप्पा गच्छंति कम्मभावं नहु ते जीवेण परिनमिदा ॥ ८४ ॥ कर्मत्व प्रयोगाः स्कंधा जीव
स्य परिणतिं प्राप्य कर्मभावं गच्छंति ॥ कर्मत्व प्रयोग्याः कहियै अष्ट कर्मरूप होयवै कौ जोग्य ॥ ऐसे जु र
स्कंध कहियै पुद्गल वर्गनानि के पिंड है ते जीवस्य कहियै संसारी आत्मा की परिणति कहियै अशुद्ध परि
णति तिसहि प्राप्य कहियै पाय करि कर्मभाव कहियै अष्ट कर्मरूप परिनाम कौ गच्छंति कहियै प्राप्त होय है
ते जीवेण न तु परिणामिताः कहियै ॥ ते वे कर्म जोग्य बंध आत्मा ने नाही परणाया ए है ॥ अपनी सक्ति सौ ॥ १२०

परणाए है ॥ भावार्थ ॥ जिसही क्षेत्र विषे कर्मवर्गना है तिसही क्षेत्र विषे जीव भी है ॥ अनादि बंध संयोग तें जी
व असुद्ध भाव परणामै है ॥ तिस असुद्ध परनाम का बहिरंग निमित्त पाइ ॥ कर्मवर्गना अपनी ही ॥ अंतरंग स्वश
क्ति सों अष्ट कर्म भाव परणामै है ॥ तातें तिस का आत्मा कर्त्ता नांही ॥ आगें आत्मा कै नोकर्म शरीर का अक
र्तापणौ दिखावै है ॥ गाथा ॥ ते ते कम्मत्तगदा ॥ पुग्गलकाया पुणो हि जीवस्स संजायंते देहा ॥ देहंतरसंकमं पप्पा ॥ ४४ ॥ ते
ते कर्मत्वगताः पुद्गलकायाः पुनर् हि जीवस्य ॥ संजायंते देहाः ॥ देहांतरसंक्रमं प्राप्य ॥ टीका ॥ ते ते कर्मत्वगताः
पुद्गलकायाः पुनर् हि जीवस्य ॥ ते ते कहिये ते ई ते ई कर्मगताः ॥ कहिये द्रव्य कर्मभाव कौ परणए थे जे पुद्गल
काया कहिये कर्मवर्गना पिंड ते पुनः ॥ हि जीवस्य देहाः संजायंते ॥ पुनः कहिए बहुरि हि कहिये निश्चै सों जीवस्य
कहिये आत्मा कै देहाः कहिये सरीर का रूप संजायते कहिये उपजै है ॥ कहा करि सरीर रूप होय है देहांतरसंक्रमं
प्राप्य कहिये ॥ और पर्याय का संबंध पाइ कै ॥ भावार्थ ॥ जीव के परिनाम का निमित्त पाइ द्रव्य कर्मबंध रूप जे
पुद्गल भए थे ते ई अन्य पर्याय विषै शरीराकार होइ है ॥ अपनी ही स्वसक्ति सों द्रव्यकर्म का नोकर्म शरीर रूप
है तातें नोकर्म का भी कर्त्ता पुद्गल ही है आत्मा नांही ॥ आगें आत्मा कै पंच शरीर का अभाव दिखावै है ॥ गाथा ॥

प्र·सा
२२१

ओरालिऊपरेहो ॥ देहोवेउधिऊपतेजरऊ ॥ आहारयकम्मइऊ पुग्गलदव्वप्पगासव्वे ॥ ४५ ॥ औदारिकश्चदेहा
देहोवैक्रियकश्चतैजसः आहारकः कार्मणपुद्गलद्रव्यात्मकाः सर्वे ॥ गाथा ॥ औदारिकदेहकहियै ॥ मनु
ष्यतिर्यंचसंबंधी औदारिकदेहचकहियै ॥ बहुरिवैक्रियकः देहकहियैनारकदेवतासंबंधीवैक्रियकसरीरच
कहियैबहुरि ॥ तैजसः कहियैसुभासुभरूपतैजसशरीर आहारकः कहियै आहारकपुतलिकासरीरकार्मणः
कहियैअष्टकर्मरूपसरीरएजुपंचप्रकारजुहै सरीरतेसर्वेपुद्गलद्रव्यात्मकाः कहियैसमस्तहीपुद्गलमईहै
तातेंपंचसरीररूपआत्मानाहीं ॥ आत्माइनतेंभिन्नस्वरूपहै । आगैजीवकाशरीरादिपरिद्रव्यतैंभि
न्नस्वरूपअन्यविषैनपाईयै ॥ ऐसालक्षणकेणाहै ॥ सोईदिखाईयैहै ॥ गाथा अरसमरूवमगंधं ॥ अ
व्वत्तंचेदणागुणमसदं ॥ जाणअलिंगग्गहणं ॥ जीवमणिदिट्ठसंठाणं ॥ ४६ ॥ अरसमरूपमगंधं ॥ अव्यक्तं
चेतनागुनमशब्दं जानीह्यलिंगग्रहनं ॥ जीवमनिर्दिष्टसंस्थानं ॥ टीका ॥ त्वंजीवंजानीहि ॥ त्वंकहियै
भव्यजीवतंजीवंकहियैसुद्धस्वरूपआत्माऐसाजानीहिकहियैजाणि ॥ कैसाहै आत्मा अरसंकहियै २२१
पंचप्रकाररसगुणतेंरहितहै ॥ बहुरिकैसाहै ॥ अरूपंकहियैपंचप्रकारवर्णगुणतेंरहितहै ॥ बहुरिकैसाहै

अगंधंकहियैदोयप्रकारगंधगुणतैरहितहै॥ बहुरिकैसाहै॥ अव्यक्तंकहियैअष्टप्रकारस्पर्शगुणतैरहितहै। तातै
अप्रगटहैबहुरिकैसाहैचेतनागुनकहियैज्ञानदर्शनहैगुणनिसकूं॥ बहुरिकैसाहै॥ असब्दंकहियैसातप्रका
रस्वरपर्यायतैरहितहै॥ बहुरिकैसाहै अलिंगग्राहनंकहियैपुद्गलसंबंधीजुहै॥ चिह्नतिसकरिनांहीग्रह्याहै ब
हुरिकैसाहै॥ अनिर्दिष्टसंस्थानंकहियै॥ सर्वसंस्थाननितैरहितहै निराकारस्वभावहै॥ ऐसाजोसुद्धनिर्विका
रद्रव्यसोजीवद्रव्यजानना॥ भावार्थ॥ जातैयहआत्माअमूर्त्तस्वभावहै॥ तातैरसरूपगंधस्पर्शसंस्थानादि
पुद्गलीकभावनितैरहितहै॥ औरअपणैचेतनागुणकरिधर्मअधर्मआकासकाल॥ इनिचारिअमूर्त्त
द्रव्यनितैभीभिन्नहै॥ औरस्वजीवसत्ताकीअपेक्षाअन्यजीवद्रव्यनितैभिन्नहै॥ अपणैआस्तित्वकरि
सचिद्रूपवस्तुमात्रहै॥ औरइहांसिनागैजोकह्याकिआत्माअलिंगग्रहणहै॥ किसाहीचिह्नकरिनांहीग्र
ह्यानायहै॥ तिसकेबहुतअर्थहै॥ तेबहुकरिदिखाइयैहै॥ लिंगनाइंद्रियानिकाहै॥ तिनिकरियपदार्थनिकायह
आत्माग्रहणहारानांही॥ अतींद्रियसुभावकरिपदार्थनिकौंजाणैहै॥ तातैअलिंगग्रहणहै॥ औरलिंग
गुहै॥ इंद्रियानितैनिकरिअन्यजीवभीइसिआत्माकाग्रहणनांहीकरैहै॥ यहआत्माअतींद्रियस्वसंवेद

प्र·सा द्रियज्ञानगम्य है ॥ तातैं भी अलिंगग्रहन है ॥ और यह आत्मा जैसैं धूमचिह्नकौं देखिकरि अग्नि जानियै है
१२२ तैसैं अनुमानज्ञानकरि ॥ लिंग कहियै चिह्न तातैं सकरि अन्यपदार्थनिका ग्रहन कहियै ॥ जाननहारा नां
हीं है ॥ अतींद्रियप्रत्यक्षज्ञानकरि जानियै है ॥ तातैं भी अलिंगग्रहन है ॥ और इसि आत्माकौं कोई जीव इं
द्रियगम्य चिह्ननिकरि ॥ अनुमान करना नाहीं ॥ इंद्रियज्ञानजनित अनुमान ग्रहा जाता नांही ॥ तातैं भी
अलिंगग्रहन है ॥ इत्यादि अलिंगग्रहण शब्दके अनेक अर्थ है ॥ ते अमृतचंद्र आचार्यकृत प्रवचनसा
रटीकातैं जानने ॥ यह सुद्ध आत्मा केवल अनुभवगम्य है ॥ वचनकरि कह्या जाता नांही ॥ कहतैं असुद्धता
आवै है ॥ तातैं सुद्ध जीवद्रव्य ज्ञानगम्य है ॥ जे अनुभवी है ॥ तेई सांतरसके आस्वादी है ॥ यांकी और कथन है
सु व्यवहारमात्र है ॥ जिनके काललब्धि निकट होय है ॥ तेई व्यवहारमात्र शब्दब्रह्मका निमित्त पाइ स्वरू
पलीन होय है ॥ तातैं अवाच्य सुद्ध जीवद्रव्य अनुभवजोग्य है ॥ आगैं अमूर्त आत्माकौं स्निग्धरूक्षगुणका
अभाव है ॥ तातैं बंध कैसैं होय यह तर्क करै है ॥ गाथा ॥ मुत्तो रूवादिगुणो ॥ बज्झदि फासेहिं अण्णमण्णेहिं
तव्विवरीदो अप्पा ॥ बंधदि किध पुग्गलं कम्मं ॥ ४७ ॥ मूर्त्तो रूपादिगुणो बध्यते ॥ स्पर्शैरन्योन्यैः ॥ तद्विपरी १२२

आत्मा बध्नाति कथं पौद्गलं कर्म ॥ टीका ॥ रूपादिगुणः मूर्तः अन्योन्यैः । स्पर्सैः बध्यते रूपादिगुन कहिये रूपरस
गंध स्पर्स है गुण जिस विषै । ऐसा जु मूर्त । कहिये बंधवायरमानु रूप पुद्गल सो अन्योन्यैः कहिये परस्पर जु है
स्पर्सैः कहिये स्निग्ध रूक्ष रूप स्पर्स गुन तिन करि बध्यते कहिये बंधै है । तद्विपरीत: आत्मा पौद्गलं कर्म कथं
बध्नाति । तद्विपरीतः कहिये तिस पुद्गल के स्निग्ध रूक्ष गुन तै रहित जु है अमूर्त । आत्मा कहिये जीव द्रव्य सो पौद्ग
लं कर्म कहिये पुद्गलीक कर्म वर्गणा । तिसहिं कथं कहिये कैसे बध्नाति कहिये बांधै है ॥ भावार्थ पुद्गल द्रव्य मूर्तीक है
सो अपरोपरि स्निग्ध रूक्ष गुनन करि आपसमै बंधै है । आत्मा अमूर्तीक है । स्निग्ध रूक्ष गुण लिये कर्म वर्गना
सो कैसे बंधै । यह बड़ा है संसय है । एक तरफ तो स्निग्ध रूक्ष गुण लिये कर्म वर्गना है एक तरफ स्निग्ध रूक्ष गुण र
हित आत्मा है आपसमै कैसे बंध होइ । ऐसी सिष्य ने प्रस्न कीनो है ॥ आगै अमूर्त आत्मा कै बंध होइ है ॥
ऐसा उत्तर कहै है ॥ गाथा ॥ रूवादिएहिं रहिदो पेछदि जाणादि रूवमादीणि दव्वाणि गुणे य जधा । तह बंधो ते
ण जाणीहि ।४५। रूपादिकैः रहित: । पश्यति जानाति रूपादीनि द्रव्याणि गुणांश्च यथा । तथा बंधस्तेन जानी
हि ॥ भावार्थ रूपादिकै रहितः यथा रूपादीनि द्रव्याणि च गुणान् जानाति पश्यति तथा तेन बंधः जानी

प्र·सा हिरूपादिकैः कहियेरूपरसगंधस्पर्सकरिकै रहितकहियैसन्यजुहै ॥ यह आत्मासोयथाकहियै ॥ जिमिप्रका
रूपादीनिद्रव्यानिकहियैरूपरसगंध ॥ स्पर्सगुणासेयुक्तजुहै ॥ घटपटादिरूपअणेकपुद्गलद्रव्यतिनहिंच
१२२ कहियेवहारिगुणानकहियैतिणद्रव्यानिकै सेतपीतरक्तादिगुणातिनाहै ॥ जानातिकहियैजाणैहै ॥ पस्पाति
कहियैदेखैहै ॥ तथाकहियेतिसहीप्रकार ॥ तेणकहियैतिसहीदृष्टांतकरिबंधकहियैपुद्गलद्रव्यसौ ॥ आत्मा
कैबधजानौहिकहियैसिष्यतुंजानि ॥भावार्थ॥ आत्माअमर्तीकहै ॥ परंतुमर्तीकद्रव्यकादेषनजाननहा
रहै ॥ देषनाजाननाइसिकास्वभावहै ॥ तिसदेषणैजाननैहीकरिमर्तीकद्रव्यस्यौबंधैहै ॥ जोदेषताजानता
नाही ॥ तौबंधभीनहोतौ ॥ ज्योंदेखैजाणैहैत्यौंहीबंधैहै ॥ येहीबाततदृष्टांतकरिप्रगटदिखाईयेहै ॥ जैसेएक
बालकहै ॥ तिणमाटीकैबयलकौंअपनाकरिदेखैहै ॥ जानैहैमारौहैसोवयलतिसबालकस्योंजुदाहै ॥ क
छुसेबंधानाही ॥ जोतिसवमलकौकोईफोडैतोडैअथवालेजाइ ॥ तौवहबालकअतिदुषपावै ॥ औरतैसे
हीगुवालीयासांचैवयलकौंअपनाकरिदेखैजाणैमारौहै ॥ सोसांचावयलभीतिसगुवालियेतेजुदाहै १२२
कछुसंबंधनांही ॥ जोतिसवतिससांचैवयलकौंभीजोमारैतोडै अथवालेजाइतौवहगुवालौपाभीअति

दुखपावै॥इसिजानैविचारिएतौमाटीकावपलनअरुसांचाखपलवालगोपालतैंजुदेहै॥तिणकेजातेवालक
पुचालियाक्योंदुखीहोइहै॥तौयहविचारआवैहै॥तेवालगोपालतिनिवपलनिकौंआपनादेखिजानिरहेहै
तातेंअपरांहीपरिनामनिसोंवधरहेहै॥तिनिकाज्ञाणतिनिवपलनिकेंनिमित्ततैनटाकारएपरनयाएसा
है॥तातैपररूपवपलनिसोंसेवेधकाव्यवहारआवैहै॥तैसैहीइसिआत्माकेंपुद्गलसोंनकछुसंबंधनांहीं॥पर
तुअनादिकालतैंलेकरिएकक्षेत्रावगाहकरितिष्ठैजुहै॥कर्मपुद्गलतिनिकानिमित्तपारणयहुयोजुहै॥रागदोष
मोहरूपअसुधोपयोगसोभाववंधहै॥तिसहीसोंआत्मावंध्याहै पुद्गलीककर्मवंधव्यवहारमात्रहै॥तातैंयह
वातसिद्धभई जुयहआत्मापरद्रव्यकौंरागीदोषीमोहीहोयदेखैजानैहै॥सोईअसुद्धोपयोगवंधकाकारण
है॥अथरागीहैअसुद्धपरिनामकरिवंधैहै॥ आगेंभाववंधकास्वरूपदिखावैहै॥गाथा॥उवऊगमऊजीवो
मुज्झदिरज्जेदिवापदुस्सेदि॥पप्पाविविधेविसए॥जोहिपुणोतेहिंसोबंधो॥८६॥उपयोगमयोजीवो॥मुह्यतिर
ज्यतिवाप्रद्वेष्टिप्राप्यविविधानविषयान्योहिपुनःतैःसोबंध॥टीका॥यःउपयोगमयोजीवो॥विविधा
णविषयानप्राप्य॥मुह्यतिवारज्यतिप्रद्वेष्टिसःकहियेजोउपयोगमयकहियेज्ञानदर्सनमई॥जीवःक

प्र.सा हियैआत्माविविधान्कहियै॥नानाप्रकार॥विषयानकहियैइष्टअनिष्टरूपइंद्रियविषयप्राप्यकहियै
१२३ प्राप्यकरिमुह्यतिकहियैमोहीहै॥वाकहियैअथवारज्यतिकहियैरागीहोयहै॥अथवाप्रद्वेष्टिकहियैद्वे
षीहोयहै॥सपुनः॥तैः॥बंधःकहियैसोरागीद्वेषीमोहीजीवः पुनःकहियैवहुरि॥तैःकहियैतिहिरागद्वेष
भावनिकरिबंधःकहियैबंध्याहै॥भावार्थ॥यहसंसारीजीवइंद्रियैविषयनिकाउपयोगीहोइकरिरागद्वे
षमोहभावनिकोंप्राप्तहोयहै॥तेरागद्वेषमोहभावपरकेनिमित्ततेहोयहै॥यहआत्माएकस्वभावपु
एकेनिमित्ततेहोयहै॥यहआत्माएकहै॥परंतुरागद्वेषमोहभावकेपरिनामतें॥द्वैतभावहुवाहै॥तिसतैंबंधै
है॥जैसेस्फटिकमनिस्वभावकरिएकसेतस्वभावहै॥नीलपीतादिरूपवस्तुकेसंबंधतैं॥नीलपीतरक्तरूपद्वैतप
रिणामकोंप्राप्तहोइ॥तदाकारसंबंधकोंधरैहै॥तैसेहीयहआत्मापरसंयोगतैंरागद्वेषमोहरूपभावबंध
करिबंधैहै॥आगेंभावबंधकेअनुसारिद्रव्यबंधकास्वरूपदिखावेहै॥गाथा॥भावेणजेणजीवो॥पेच्छ
दिजाणादिआगदंविसए॥रज्जदितेणेवपुणो॥बज्झदिकम्मत्तिउवएसो॥५५॥भावेनयेनजीवः॥प्रेक्ष १२३
तिजानात्यागतंविषयेरज्यतितेनैवपुनः बाध्यतेकर्मेत्युपदेशः॥टीका॥जीवः येनभावेनविष

आगतं पश्यति जानाति। जीवः कहिये आत्मा सो येणभावेण कहिये। जिस रागद्वेषमोहभाव करि विषये
आगतं कहिये इंद्रियविषय आप्राप्तु इष्टानिष्टपदार्थ तिसहि पश्यति जानाति कहिये देखै जाणै है। तेण
एव रज्यते तेणएव कहिये। तिसही रागद्वेषमोहरूप भाव करि। रज्यते कहिये तदाकार होय अनुरक्त होय है
॥भावार्थ॥ आत्मा ज्ञानदर्सनस्वभावसंयुक्त है। सो जीव रागदोषमोहभाव करि। ज्ञेयपदार्थ को देखै जानै है ते
वइसि कै चिद्विकाररूप रागदोषमोहपरिनाम होय है। सो जीव रागदोषमोहभाव करि ज्ञेयपदार्थ को देखै जा
णै है। तब इसि कै चिद्विकाररूप रागदोषमोहपरिनाम होय है। तिनि असुद्धोपयोगरूप परिनामनि का जु हो
नासो ई भावबंध है। पुनः तेनैव कर्म बध्यते पुनः कहिये बहुरि तेनैव कहिये तिसही भावबंध के निमित्ति करि क
र्म बध्यते कहिये। ज्ञानावरनादि अष्टप्रकार द्रव्यकर्म बंध है ॥भावार्थ॥ यह जु आत्मा कै रागादिरूप असुद्धो
पयोग है। सोई भावबंध जाननां इसही भावकर्म कै अनुसारि द्रव्यकर्म बंधै है। यह भावबंध जु है सो स्निग्ध
रूक्षभाव की नांई गिनै है। तातै इसि कै निमित्ति सो द्रव्यकर्म बंधै है। इति उपदेसः कहिये। यह भगवंत का उपदे
स है। सो मन मै धारनां जोग्य है। आगै पुद्गलकर्म का बंध पुद्गलकर्म सौ होइ है। जीव का बंध असुद्ध रागादि

प्र· कर्मभावनिसौंहोयहै ॥ औरुजीवपुद्गल ॥ इनदोनौंकाभीपरस्परबंधहोयहैं ॥ इतिप्रकारबंधदिखावैहै ॥ गाथा
१२५ फासेहिं पोग्गलाणं जीवस्स रागमादीहिं ॥ अण्णोण्णमवगाहो ॥ पुग्गलजीवप्पगो भणिदो ॥ ५१ ॥ स्पर्शैः पुद्ग
लानां बंधो जीवस्य रागमादिभिः ॥ अन्योन्यमवगाहः पुद्गलजीवात्मको भणितः ॥ टीका ॥ स्पर्शैःपुद्गलानांबं
धोजीवस्य स्पर्शैः कहियेयथायोग्य ॥ स्निग्धरूक्षगुणहैंस्पर्शगुनकेभेदतिनकरिपुद्गलानां कहियेपुद्गलकर्मवर्ग
नानिकापरस्परबंधकहियेमिलिकरिएकरूपपिंडबंधहोइहै ॥ रागादिभिः जीवस्यरागादिभिः ॥ कहियेपरउ
पाधितैउत्पन्नचिद्विकाररूप ॥ ऐसेजोरागदोषमोहपरिनाम ॥ तिनकरिजीवस्य कहियेआत्माकाबंधहो
यहै अन्योन्यं अवगाहः पुद्गलजीवात्मकः भणितः अन्योन्यंकहियेपरस्परपरिनामनिकानिमित्तपा
य ॥ अवगाहः कहियेएकक्षेत्रविषैजीवकर्मकानुसंबंधहोना ॥ सोपुद्गलजीवात्मकाकहियेपुद्गलक
र्मअरुजीव ॥ इनदोऊकाबंधभणितः कहियेभगवंतदेवनेकहाहै ॥ भावार्थ ॥ जवजीवकैनौतनकर्मबंध
होय ॥ तवयहतीनिजातिकाबंधहोयहै ॥ जीवकेप्रदेशनिविषैपूर्वबंधवर्गनाहै ॥ तिनसौंतौनौतन १२५
नकर्मवर्गनास्निग्धरूक्षभावकरिबंधैहै ॥ औरुजीवकैजेरागादिअसुधोपयोगपरिनामबंधजो

ापहोयहै। तिनिसौजीवबंधैहै। औरुजीवपुद्गलकेपरिनामनिकरिनिमित्तनैमित्तकभावसौंजुदोऊकाएक
क्षेत्रावगाहहै। सोपरस्परजीवपुद्गलकाबंधहोयहैइसिप्रकारतीननातकाबंधनाननां।। आगेंद्रव्यबंधकाका
रणभावबंधप्रगटिकरिदिखावेहै।। गाथा।। सपदेसोसोअप्पा। तेसुपदेसेसुपोग्गलाकाया। पविसंतिजहाजोग
तिट्ठंतियजंतिबज्झंति।। ५८।। टीका।। सप्रात्मासप्रदेसाः सकहियेसोजुहै। आत्माकहियेजीवनामापदा
र्थ।। सोप्रदेस। कहियेलोकप्रमांणअसंख्यातप्रदेसीहै। तेषुप्रदेसेषुपुद्गलाः कायाः। यथायोग्यंप्रविसंति
तेषुप्रदेसेषुकहियेतेजुहैंवे। असंख्यातप्रदेसतिनविषै। पुद्गलाः कायाः कहिये पुद्गलकर्मवर्गनापिंडतेय
थायोग्यंकहियेमनवचनकायवर्गणानिकेअवलंबकरि। जोआत्माकेप्रदेसनिकाबंधरूपजोगपरिनम
नहोयहै। तिसमाफिकप्रविसंतिकहियेजीवकेप्रदेसनिविषै। आयकेप्रवेशकरैहै। चबध्यंतेतिष्टंतियांति
चकहियेवहांबध्यंतेकहियेपरस्परएकक्षेत्रावगाहकरिबंधैहै। बहुरितेकर्मवर्गणातिष्टंतिकहियेरागद्वे
षमोहभावकेअनुसारिअपनास्थितिलेकरितिष्टैहै। पाछेयांतिकहियेअपनाविपाकदेकरिखिरिजाइ
है।। भावार्थ।। जोप्रथमहीजीवकैरागादिअसुद्धोपयोगरूपभावबंधहोयहै। तौद्रव्यबंधहोइ। ताते द्र

प्र॰ द्रव्यबंधका कारन भावबंध जाननौं प्रकृतिप्रदेसबंध जोगपरिणामतें होय है॥ थिति अनुभाग रागदोषतें
१२५ होय है॥ आगें जातें द्रव्यबंधका कारण रागादिभाव है तातें रागादिभाव ही कौं निश्चैबंध दिखावै है ॥गाथा
रत्तो बंधदि कम्मं॥ मुच्चदि कम्मेहिं रागरहिदप्पा॥ एसो बंधसमासो॥ जीवाणं जाण णिच्छयदो॥ ८७॥ रक्तो
बध्नाति कर्म मुच्यते कर्मभिः रागरहितात्मा॥ एषो बंधसमासो॥ जीवानां जानीहि निश्चयतः ॥टीका॥ र-
क्तः कर्म्म बध्नाति रक्तः कहियै जो जीव परद्रव्यविषै मगन होय है॥ सोई कर्म्म बध्नाति कहियै ज्ञानावरनादिक कर्म
पिंड बांधै है॥ रागरहितात्मा कर्मभिः॥ मुच्यते रागरहितात्मा कहियै जो रागभावकरि रहित है॥ सो कर्मभिः
कहियै॥ सकल कर्म्मकलंकनि करि मुच्यते कहियै मुक्त होय है॥ जीवानां निश्चयतः एष बंधसमासः जा-
नीहि जीवानां कहियै॥ संसारी आत्मानिकैं निश्चयतः कहियै निश्चयनय करि॥ एषः कहियै यह रागादि
विभावरूप असुद्धोपयोगभाव बंध सो बंधः समासः कहियै बंधका संक्षेपकथन जानीहि॥ कहियै है
सिष्य तूं जानि॥ भावार्थ जो जीव रागादिभाव परिनमै है सो नौतन कर्म करि बंधै है॥ जो वैराग्यभाव परिणा-
ति है सो नाहीं बंधै है॥ रागपरिणत जीव नौतन द्रव्यकर्म करि छूटता नाहीं॥ वैराग्यपरिणत जीव थे नौतन १२५

कर्मकरि छूटे है ॥ औरउ रागत राकर्मतें भी छूटे है ॥ रागपरिणति जीव नौतन कर्मसो भी वधै है ॥ औरु रूप रागनन कर्मे
सो भी वधरह्या है ॥ वैराग्यपरिणत जीव वंधअवस्था के होनेसौं अवंध है ॥ तातें यह वात सिद्ध भई द्रव्यकर्मका
कारण रागादि अशुद्धोपयोग है ॥ सोई निश्चै वंध है ॥ द्रव्यवंध उपचारमात्र है ॥ आगे द्रव्यवंधका कारण जु है प
रिनाम ताके रागभाव की विसेषता ई दिखावै है ॥ गाथा ॥ परिनामादो वंधो परिणामो रागदोसमोहजुदो ॥ असुहो
मोहपदेसो सुहो व असुहो हवदि रागो ॥ ८८ ॥ परिणामातो हि बंधः ॥ परिणामो रागद्वेषमोहयुतः ॥ असुहौ मोहप्रद्वेषौ
सुभो वा असुभः ॥ भवति रागः ॥ टीका ॥ परिणामात् हि बंधः ॥ परिनामात कहियै असुद्धोपयोगरूप योगरूप परिना
मतें वंधः कहियै पुद्गलकर्मवर्गनारूप द्रव्यवंध होय है ॥ परिनाम रागद्वेषमोहयुत ॥ परिनाम कहियै जिस परि
नामकरि वंध होय है ॥ सो परिनाम कैसा है ॥ रागद्वेषमोहयुत ॥ कहियै रागदोषमोहभावसंयुक्त है ॥ भावार्थ
जो परिनाम रागदोषमोहकरि विसेषता लिये होय सोई परिनाम वंधका कारन है ॥ सो परिनाम सुभ अशुभ भे
दकरि दोय प्रकार है ॥ मोहप्रद्वेषौ असुभौ कहियै मोहभाव द्वेषभाव ॥ ऐ दोनो असुभभाव है ॥ रागः सुभवा
असुभं भवति राग कहियै रागभाव जु है ॥ सो सुभः कहियै पंचपरमेष्ठी भक्ति आदिरूप सुभ है ॥ वा कहियै औ रअ

प्र·सा सुभः भवतिकहियेविषयरतिरूपअसुभहै। मोहत्तीणप्रकारहै। रागद्वेषमोहभेदनिकरितिणामैद्वेषमोह
९२६ तौअसुभभावहै। रागद्वेषप्रकारहै॥ सुभासुभभेदनिकरिजोधर्म्मानुरागसोसुभहै। जोविषयानुरागसो
असुभहै एसुभासुभदोऊप्रकारकैपरिनामबंधकेकारणहै॥ आगैबंधकाकारणरूपविसेषतासंयुक्त
है। सुभासुभभावऔरबंधविसेषतारहितसुद्धभावइनिकौकारणविषैकार्यकाउपचारकरीकार्यरूप
दिखावैहै॥ गाथा॥ सुहपरिणामोपुण्णंअसुहोपावंत्तिभनियमण्णेसु। परिणामोणण्णगदो॥ दुखखयक
रणंसमये ५५॥ सुभपरिणामः पुण्यमसुभः पापमित्तिभणितमन्येषुपरिनामोनन्यगतेदुखक्षयका
रणंसमये॥ अर्थ॥ अन्येषुपरसुभपरिनामः पुण्यंइतिभनितं। अन्येषुकहियेअपनीआत्मसत्तातेभिन्न
रूपहै॥ पंचपरमेष्ठीआदितिनविषै। पः कहियेजोभक्तिआदिकहियेसुभपरिनामः कहियै। प्रसस्तराग
रूपपरिणामः सकहिए॥ सोपुण्यंइतिभणितंकहियै॥ पुन्यऐसेनामभगवंतदेवरौकह्याहै। पः असु
भः सपापइतिप॥ कहिएजोअसुभकहियेसरीरइंद्रियादिपरद्रव्यविषैममत्वविषयानुरागरूपअप्रस
स्तरागपरिणामः सकहियेसोपरिनामपापइतिकहियेपापऐसेनामकह्याहै। अनन्यगतः परिनां १२६

मःसमयेदुषक्षयकारणंभणितंअनन्यगतः॥ कहियेंअन्यद्रव्यविषेप्रवर्त्तेतातनहोय॥ ऐसाजोपरिनामः
कहियेवीतरागसुद्धोपयोगरूपभाव॥ सोसमयेकहियेपरमागमविषे॥ दुषक्षयकारणंभणितंकहिये॥ दुःखके
नासकाकारणरूपजुहै॥ मोक्षतिसरूपकह्याहै॥ भावार्थ॥ परिनामदोयप्रकारहै॥ स्वपरिनामपरद्रव्यवि
षेप्रवर्त्तैहै॥ जोपरद्रव्यविषेप्रवर्त्तैहैसोवंधकाकारनरूपविसेषतासेयुक्तहै॥ तातेंविसेषपरिनामकहिये
औरजोस्वरूपविषेप्रवर्त्तेहै॥ सोवंधकारणरूपविसेषतातेंरहितहै॥ तातेंअविसेषपरिनामकहिये॥ वि
सेषपरिनामकेसुभासुभदोयभेदहै॥ जोपुन्यरूपपुद्गलवंधकाकारणसोसुभपरिनामजाननो॥ जोपापरूप
पुद्गलवंधकाकारणसोअसुभपरिणामजाननां॥ एसुभासुभपरिणामपुन्यपापकहिये॥ पुन्यपापकेकार
णहै॥ तातेंकारनकेविषेकार्यकाउपचारहोयहै॥ तिसकीअपेक्षापुन्यपापकहिये॥ औरजुअविसेषपरिनां
मजुहै॥ सोसुद्धएकभावहै॥ तातेंइसविषेभेदनांहि॥ संसारविषेदुःखरूपपुद्गलकाकारनहै॥ सकलकर्मक्षयल
क्षणमोक्षकाबीजभूतहै॥ इहांभीकारणविषेकार्यकेउपचारकीअपेक्षा॥ यहसुद्धोपयोगमोक्षरूप
होजाननां॥ आगेंस्वजीवद्रव्यविषेप्रवृत्तिपरद्रव्यतेंनिवृत्तिइसिकेंनिमित्तस्वपरभेददिखावेहै॥ गाथा॥

प्र·सा भनिदा पुढविप्पमुहा ॥ जीवणिकाया थावरा य तसा ॥ अण्णा ते जीवादो जीवो वि य तेहिं दो अण्णो ॥ पध भ
१२७ णिताः प्रथ्वीप्रमुखाः जीवनिकायाः ॥ अथ स्थावराश्च त्रसाः ॥ अन्यते जीवात ॥ जीवोपि च तेभ्योऽन्यः ॥ टीका ॥ जे
प्रथ्वीप्रमुखाः जीवनिकायाः अथ स्थावराः ॥ च त्रसाः भणिताः ॥ जे कहिये जे आगमकथित प्रथ्वीप्रमुखाः
कहिये ॥ प्रथ्वी आदि लेकरि जीवणिकायाः कहिये जीवके छहकायन है हैं अथ कहिये ॥ अथ चास्था
वराश्च त्रसाः भणिताः कहिये थावर अरु त्रस ॥ ऐसे दोइ भेद जीवके कहे हैं ॥ ते जीवात अन्यते कहिये ते
सब भेद ॥ जीवात कहिये चेतनालक्षण जीव तें अन्य कहिये ॥ अचेतन पुद्गलपिंडरूप हैं ॥ च जीवः ॥ अपि ते
भ्यः ॥ अन्य च कहिये बहुरि जीव ॥ कहिये आत्मद्रव्य ॥ सो अपि कहिये निश्चय सों तेभ्यः कहिये ॥ तिनि षट्
प्रकार त्रस थावर के भेदनि तें ॥ अन्यः कहिये जुदा है क्योंकि एक ज्ञायक स्वभाव है ॥ भावार्थ ॥ जितने कछु कर्म
जनित सामग्री है ॥ सो सब परद्रव्यरूप है ॥ तिसतें निश्चिंत होय करि स्वद्रव्य विषै प्रवृत्ति करनी योग्य है ॥ आगे
जीवके स्वद्रव्यकी प्रवृत्ति करि भेदविज्ञान होय है ॥ परद्रव्यकी प्रवृत्ति करि स्वपरिभेदविज्ञानका अभाव है
य है ॥ ऐसा कथन करै है ॥ गाथा ॥ जे ण विजाणदि एवं ॥ परमप्पाणं सहावमासेज्ज ॥ कीरदि अज्झवसाणं १२७

अहंममेदंतिमोहादो॥५७॥ जोणविजाणातिएवंपरमप्पाणंसभावमासाद्य॥ कुरुतेअध्यवसाणं॥ अहंम
मेदंतिमोहात॥ टीका॥ यः एवंपरमात्मानंनजानाति॥ यः कहियेजोजीव॥ एवंकहियेपूर्वोक्तप्रकारकरि
चेतनअचेतनस्वभावनिकीटीकनाते॥ परंकहियेपुद्गलः॥ आत्मानंकहियेसुद्धजीवतिनाहिनजानातिक
हियेनाहीजानेहै॥ कहाकरिनाहीजानेहै॥ स्वभावंआसाद्यस्वभावंकहिये॥ सच्चिदानंदरूपसुद्धनित्य॥ आ
त्मीकभावतिसहि॥ आसाद्यकहियेउपादेयरूपअंगीकारकरिके॥ भावार्थ॥ जोजीवस्वरूपकोअंगी
कारकरिस्वपरिकाभेदजाणतानाहीं॥ सोपरद्रव्यविषेमोहात॥ अहंइदंममइदंइतिअध्यवसाणंकुरुते
मोहातकहियेरागदोषमोहते॥ अहंइदंकहियेमेंशरीरादिरूपहौंममइदंकहियेशरीरादिमेरेहै॥ इतिअ
ध्यवसाणंकुरुतेमोहात्तकहियेरागदोषमोहतेकहिए॥ ऐसामिथ्यातपरिनामकरैहै॥ भावार्थ॥ जोजी
वभेदविज्ञानीनाहीं॥ सोईपरद्रव्यविषैअहंकारममकारकरैहै॥ ताथैयहवातसिद्धिभईपरद्रव्यकीप्रवृ
त्तिकोस्वपरभेदकाअज्ञानपनाकारणहै॥ स्वद्रव्यकीप्रवृत्तिकोस्वपरभेदकाजाणपनाकारणहै॥ आ
गेआत्माकेकौनकर्महैऐसाकहैहै॥ गाथा॥ कुव्वसहावमादा॥ हवदिहिकत्तासगस्सभावस्स॥ सो

प्र॰सा॰ णालदव्वमयाणं । णादु कत्ता सव्वभावाणं ॥ ५५ ॥ कुर्वणस्वभावमात्माभवतिहिकर्त्तास्वकस्यभावस्य
१२८ पुद्गलद्रव्यमयाणां नतु कर्त्ता सर्वभावानां ॥ टीका ॥ आत्मास्वभावंकुर्वन् । स्वकस्यभावस्य । कर्त्ताहि
भवति । आत्मा कहिए । जीवद्रव्य । सो स्वभावं कहिये अपना चेतनात्मक परिनाम तिसहि । कुर्वन् कहि
ये करता संता । स्वकस्यभावस्य कर्त्ता कहिये अपने चेतनात्मक भाव का कर्त्ता । ही कहिये निश्चय सो । भव
ति कहिये होय है । नतु पुद्गलद्रव्यमयानां सर्वभावानां कर्त्ता नतु कहिये वह पुद्गलद्रव्यमयानां कहिये
पुद्गलद्रव्यमयी है । जे सर्वभावनां कहिये समस्त ही द्रव्यकर्म शरीरादिक भाव । तिनका कर्त्ता न कहिये । कर
ता हारा नाही है ॥ भावार्थ ॥ जीवद्रव्य अपने परिनाम का कर्त्ता है काहे ते । जाते वह परिनाम जीव का स्व
भाव है । जीव विषै तिस भावरूप होते संता है । ताते परिनाम कार्य है । तिस कार्य को स्वाधीन हुवा कर्त्ता
संता आत्मा कर्त्ता होइ है । आत्मा करि कीजिये जु है परिनाम रूप कार्य सो आत्मा का कर्म है । यह आ
त्मा के परिनाम परिनामी भावरूप कर्त्ता कर्म है । आत्मा द्रव्यकर्मादिक पुद्गली क भावनि का कर्त्ता ना
ही । ते नैव परद्रव्य के स्वभाव है । आत्मा कै तिनि भावरूप होय वे की सक्ति का अभाव है । ताते तिनि भाव १२८

निकाश्रकर्त्ता होत संत संता पर श्रात्मा श्रकर्त्ता है ॥ ताते वे भाव श्रात्मा करि नांही कीनिये है ॥ ताते श्रा
त्मा के कर्म नांही ॥ तिनि भावनि स्यो कर्त्ता कर्म भाव पुद्गल कै है ॥ ताते यह वात सिद्ध भई ॥ पुद्गल परिनां
म श्रात्मा का कर्म नांही ॥ श्रागै श्रात्मा का पुद्गल परिनाम कैसै नांही यह संदेह दूरि करै है ॥ गाथा ॥ गिरा
हदि रोव रा मुंचदि ॥ करेदि न हि पुगालानि कम्माणि ॥ जीवो पुग्गल मझे ॥ पवट्टमाणो वि सव्वकालेसु ५
॥ ग्रन्हाति नैव न मुंचति ॥ करोति न हि पुग्गलानि कर्माणि ॥ जीवः पुद्गल मध्ये ॥ प्रवर्त्तमानोपि सर्वकालेषु
॥ टीका ॥ जीवः सर्वकालेषु पुद्गल मध्ये प्रवर्त्तमानः ॥ श्रपि पुद्गलानि कर्माणि नैव ग्रन्हाति न मुंचति न हि क
रोति ॥ जीवः कहियै श्रात्मा सो सर्वकालेषु कहियै सर्वदा काल पुद्गल मध्ये कहियै ॥ एक क्षेत्रावगाह करि पु
द्गल के बीचि ॥ प्रवर्त्तमानः श्रपि कहियै यद्यपि प्रवर्त्तै है ॥ तथापि ॥ पुद्गलानि कर्माणि कहियै ॥ पुद्गलीक
द्रव्य कर्म आदिक कौ नैव ग्रन्हाति कहियै नांही ग्रहै है ॥ न मुंचति कहियै न छोडै है ॥ न हि करोति कहियै न ति
न्हरूप स्यो करै है पुद्गलीक परिनाम श्रात्मा का नांही ॥ का हेतै जातै ॥ श्रात्मा के परद्रव्य का ग्रह
राा छाडरा नांही ॥ जैसै श्रग्नि स्वभाव तै लोह पिंड कौ ग्रहता नांही ॥ तैसै श्रात्मा स्वभाव तै परद्रव्य

प्र· व्यकोग्रहताछोडतानाहीजोद्रव्यजितिसकापरिनमावणाहाराहोइ॥सोतिसकाग्रहणाहाराछोडनहाराअ
१२९ वस्यहोइ॥तातेजोजिसकोपरिणामावै॥सोतिसकाग्रहणाहाराछाडणाहाराहोय॥औपुद्गलकापरणाम त्मा
वणाहारानाही॥तातेणपुद्गलकोग्रहैहै॥नछाडैहै नकरैहै॥तातेपुद्गलाकपरिनामहै॥आत्माकानाही
आगेआत्माकैपुद्गलमयीकर्मनिकाग्रहणात्यागकैसैहोयहैयहकहैहै॥गाथा॥सद्दानीकत्ता सं॥स
गपरिणामास्सपवजादस्स॥आदीयदेकदाई॥विमुच्चदेकम्मधुलिहि॥८८॥सद्दानीद्रव्यजातस्ससकप
रिणामस्यकर्त्तासनकर्मधुलीभिः विमुच्यतेकर्मधलीभिः॥टीका॥सद्दानीद्रव्यजातस्ससकपरिणामम।
स्यकर्तासनकर्मधलीभिः विमुच्यतेकर्मआदीयतेकदाचित्रविमुच्यतेसकहियेसोनोपरद्रव्यकेग्रहण
त्यागतेरहितजुहै॥आत्मासोइदानीकहियै॥अबसंसारअवस्याविषैपरद्रव्यकानिमित्तपाइ॥द्रव्य
जातस्यकहियैआत्माद्रव्यतेउपज्याजुहै॥सकपरिणामस्यकहिये॥चिद्रूकारूपअसुद्धअपनापरि
णाम॥तिसकाकर्त्तासनकहियै॥करताहोतसंताकर्मधलीभिकहिए॥तिसअसुद्धचेतनारूपआ १२९
त्मापरिनामकानिमित्तपाय॥ज्ञानावरणादिकर्मभावपरणएजुहै॥कर्मरूपपरनतिनकरिआदेयतो

कहियेग्रहियेहै ॥ औरकदाचित्कहिये ॥ काहूकालविषैअपनारससेंदेकरि ॥ विमुच्यतेकहिये ॥ कर्मरूपधूलि
छाडियेहै ॥ भावार्थ ॥ संसारअवस्थाविषैयहजीवपरद्रव्यसंयोगकेनिमित्ततैं ॥ असुद्धोपयोगभावनिपर
नवैहै ॥ तिनअसुद्धभावनिकायहकर्त्ताहै परिनामकीअपेक्षा असुद्धोपयोगरूपभाव आत्माकेपरिणा
महै ॥ तिसतैंतिनकाकर्त्ताहै ॥ पुद्गलकर्मकाकर्त्तानाहीं इसिआत्माकेअसुद्धपरिणामाकानिमित्तपाइ
पुद्गलद्रव्यअपनीहीस्वशक्तिसोंज्ञानावरनादिकर्मभावपरणाइकरिआत्मासेंएकक्षेत्रावगाहकरि
आपहीबंधैहैअपनारससेंदेकेआपहीखिरिजाइहै तातैंयहबातसिद्धिभई ॥ पुद्गलकर्मकाआत्माग्रहणा
हाराछाडनहारानाहीं ॥ पुद्गलहीग्रहैहै ॥ आगेंपुद्गलकर्मकारिकाणानानाप्रकारस्वभावहोतकर्मकैंजियैहै
ऐसाकथनकरैहै ॥ गाथा ॥ परिणमदिजदाअप्पा ॥ सुहम्मिअसुहम्मिरागदोसजुदो ॥ तंपविसदिकम्मर
यं ॥ णाणावरणादिभावेहिं ॥ ९५ ॥ परिनमतियदात्मा ॥ सुभेअसुभेरागद्वेषयुत: ॥ ततप्रविशतिकर्मरजो
ज्ञानावर्णादिभावैः ॥ टीका ॥ यदारागद्वेषयुतः ॥ आत्मासुभेअसुभेपरिणमति ॥ यदाकहियेसकालरा
गद्वेषयुत:कहिये ॥ रागद्वेषभावनिकरिसंयुक्तहै ॥ आत्माकहियेजीवद्रव्यसोसुभेअसुभेपरिणमति

प्र. कहियै॥ सुभासुभभावनिविषै परिणवै है॥ तिसकाल ज्ञानावरनादिभावैं तिनकर्मरजप्रवसंति॥ ज्ञानावरणा
१३० दिभावें॥ कहियै ज्ञानावरनावरनादि अष्टकर्मरूपभावनिकरि तिनकर्मरज कहियै ऐसा ईगुहै॥ कर्मरूप धूलि
सो प्रविसंति कहियें॥ आत्माकै योगद्वारकरि प्रवेश करै है॥ भावार्थ॥ जैसें वर्षाकालविषै नौतन रागमेघज
लनवभूमिविषै संजोगकरै है तब तिसमेघजलका निमित्त पाइ॥ और पुद्गल स्वआपहीतैं निजसामर्थ्यकरि
भूमि छतां हरितद्रव॥ और हरितपीतादिरूप पत्रअंकुरादिभावकरि परिणवै है॥ तैसैं जिसकाल यह॥ आत्मा
सुभरागदोषभावनिपरिणामै है॥ तब आत्माकै तिनसुभासुभपरिणामनिका निमित्त पाइ॥ अपनेंस्व
क्तिसौं पुद्गलद्रव्य आपहीतैं॥ नानाप्रकार ज्ञानावरनादि॥ अष्टकर्मरूप होइ परिणामै है॥ तातैं पुद्गलद्रव्य
स्वभावहीतैं कर्मकी विचित्रता ईहां कर्त्ता है॥ आत्मा कर्त्ता नांही॥ आगें अभेदनयकरि विवक्षाकरि एक
आत्माकौं बंधरूप दिखावै है॥ गाथा॥ सपदेसो सो अप्पा॥ कसायिदो मोहरागदोसेहिं॥ कम्मरजेहिं सिलि
ट्ठो॥ बंधो त्ति परूविदो समये॥ ८८॥ सप्रदेशः स आत्मा कषायितो मोहरागद्वेषैः॥ कर्मरजोभिः श्लिष्टो बंध
इति प्ररूपितः समये॥ टीका॥ स आत्मा सप्रदेशः स आत्मा कहियै सो आत्मा संसार अवस्थाविषै जीव सप्रदे १३०

देशाः कहियेलोकमात्रअसंख्यातप्रदेसमलिनहै तातेमोहरागद्वेषः कषायिनः कहियेमोहरागदोषरूपरं
जितः। भावनिकरिकषायइलाभयाहै। तातेकर्मरजोभिः श्लिष्टः कर्मरजोभिः कहियेः। ज्ञानावरनादिआठकर्म
रूपधूलिनिकरि। श्लिष्टः कहियेवध्याहै इतिसमयेबंधः प्ररूपितः इतिकहियेएहसमयेकहियेसिद्धांतविषेबंध
कहियेबंधरूपआत्माप्ररूपितः कहियेकह्याहै। भावार्थ। जैसेवस्त्रसप्रदेसीहै। सोदफिटकरी। आदिकरिक
सेलाहोइहै। पाछैमजीठरंगादिकरिएकवस्तुहीलालहोयहै। तैसेयहआत्माप्रदेशीहै। बंधकालविषे
रागद्वेषमोहभावनिकरिरंजितहुवाकसेलाहोयहै। तबकर्मरूपधूलिकरिबंधअवस्थाकोप्राप्तहोयहै राग
द्वेषमोहभावरूपपरिणामननिश्चयबंधहै। कर्मबंधरै कर्मवर्गणारूपव्यवहारबंधहै। निश्चैनयएकद्रव्यकेप
रिनामकेंदिखावैहै। व्यवहारनयअन्यद्रव्यकेपरिनामकेंदिखावैहै। आगैंनिश्चयव्यवहारइनिदोऊनयाँव
केअविरोधदिखावैहै। गाथा। एसोबंधसमासो जीवाणंणिच्छएणणिद्दिट्ठो। अरहंतेहिंजदीणं। ववहा
रोअणपहाभणिदो। ९२। एषः बंधसमासोजीवानांनिश्चयेननिर्दिष्टः। अर्हद्भिर्यतीनांव्यवहारोन्य
थाभणितः। टीका। एषः समासः एषः कहियेपूर्वोक्तप्रकाररागद्वेषपरिणामहीनिश्चयबंधहै। अमा

बंधसमास: ॥ कहिये बंधका संक्षेप कथन ॥ जीवाणां निश्चयेण अर्हद्भिः यतीनां निर्दिष्टः ॥ जीवानां कहिये संसारि
प्र॰सा॰ १३१ जीवनिके ॥ निश्चयेण कहिये निश्चयनयकरि ॥ अर्हद्भिः कहिये अरहंतदेवहूनें यतीनां कहिये मुनीश्वरनिकौं
निर्दिष्टः कहिये दिखाया है ॥ अन्यथा कहिये इसतैं निश्चयबंधतें ॥ और प्रकार जु है ॥ जीवनिकें एकक्षेत्रावगाह
रूप द्रव्यकर्मबंध सो ॥ व्यवहार कहिये उपचारबंध मानितः कहिये भगवानदेवनें कह्या है ॥ भावार्थ ॥ पुन्यपापरू
प जु है आत्माके राग ॥ परिणाम सो आत्माका कर्म है ॥ तिसका आत्मा कर्त्ता है तिस राग परिनामकौं अपरोही परि
णामन करि ग्रहे है ॥ अपरोही परिनाम करि छाडे है ॥ तातें यह सुद्धद्रव्यका कथनहारा निश्चयनय जाननां ॥ औ
र जो पुद्गलपरिनाम द्रव्यकर्मरूप आत्माका कर्म है ॥ और पुन्यपापरूप पुद्गलपरिनामका आत्मा कर्त्ता है ॥ औ
र तिसका आत्मा ग्रहणहारा छाडणहारा है ॥ सु यह असुद्धद्रव्यका कथनहारा व्यवहारनय जाननां ॥ ऐ
सा संसारी जीवकें निश्चयव्यवहारनयनिकरि बंधका स्वरूप सुद्ध असुद्ध दोय प्रकार दिखाया है ॥ विसेषक
तना जु निश्चयनय ग्रहणे योग्य है ॥ काहेतें ॥ जातें एकद्रव्यके परिनामकौं दिखावे है ॥ तातें साध्यरूप जु है
सुद्धद्रव्य तिसके एक सुद्धस्वरूपकौं दिखावे है ॥ इसवास्तै ग्रहणे योग्य है ॥ व्यवहारनय परद्रव्यके परि १३१

नामकौआत्माकौदिखावैहै॥तातैंद्रव्यकौअसुद्धदिखावैहै॥इसवासतैग्रहनायोग्यनांही॥इहांजोकोईपूछै
किरागपरिणामतुम्हांनेनिश्चयबंधकहा॥औरइसकौसुद्धद्रव्यकाकथनकहा॥औरइसकौग्रहणयोग्यकहा
सोकिसवासतैयहरागपरिणामतौद्रव्यकौअसुद्धताकौकरैहै॥सोग्रहणयोग्यकैसैहोइ॥तिसकासमाधान॥
रागपरिणामतौआत्माकीअसुद्धताकौकरैहै॥इसमैंसंदेहनांही॥परंतुइसिजांणौ॥औरएविवक्षाकरिकथनकिया
है॥सोईदिखाईयैहै॥सुद्धद्रव्यकाकथनएकहैएकद्रव्याश्रितपरिनामकीअपेक्षाकरिजांननां॥औरअसुद्धद्र
व्यकाकथन॥औरद्रव्यकापरिनामऔरद्रव्यकौलगावनांजाननां॥औरइहांवंधरूपनिश्चैनयग्रहनायो
ग्यकहा॥सुइसवासतै॥जोयहजीवअपणांहीपरिणामकरिआपकौवंधावसमुझै तौआपहीकरिआपकौ
छुडावै॥तातैंऐसासमुझकैवासतैग्रहणयोग्यकहा॥औरजोआपकौऔरकरिवंधामानै तौकवहूंछु
टवेकैइलाजमैंनहोय॥आपकौआपकरिवंधामानैंतैं॥रागादिपरिणामनिकात्यागीहोय॥अपणौवी
तरागभावकौधरैहै॥इसनयकरिनिश्चयवंधसुद्धद्रव्यकासाधककहा॥आगैअसुद्धनयतैअसुद्धात्माक
लाभहोयहैयहीदिखावैहै॥गाथा॥णजहदिजोदुममत्तिं॥अहंममेदंतिदेहदविणेसु सोसामण्णंचत्ता

प्र. पडिवण्णो होइ उम्मग्गं ॥६४॥ न जहाति यस्तु समतां ॥ अहं ममेदमिति देहद्रविणेषु सः श्रामण्यं त्यक्त्वा ॥ प्र
१३२ तिपन्नो भवत्युन्मार्गं ॥टीका॥ यः देहद्रविणेषु अहं इदं तु मम इदं ॥ इति ममतां न जहाति ॥ यः कहिये जो
पुरुष देहद्रविणेषु कहिये ॥ मेरा सरीर द्रव्यादिक है ॥ इति कहिये इस प्रकार ममता कहिये मम स्वबुद्धि तिसहि
न जहाति कहिये नाही छांडे है ॥ सः श्रामण्यं त्यक्त्वा उन्मार्गं प्रतिपन्नो भवति ॥ सः कहिये सो पुरुष श्रामण्यं कहि
ये समस्त परद्रव्य सा रागरूप नु है सु मुनिपद वा ॥ तिसहि त्यक्त्वा कहिये छांडकरि ॥ उन्मार्गं कहिये असुद्ध परिणति रू
प विपरीत मार्ग ॥ तिसहि प्रतिपन्नो कहिये प्राप्त हुवा ॥ भवति कहिये होय है ॥भावार्थ॥ जो पुरुष सुद्धद्रव्य के स्व
रूप का दिखावणहारा ॥ ऐसा जो निश्चय नय ॥ तिस को छांडि असुद्ध द्रव्य के स्वरूप को कहै ॥ ऐसे व्यवहार नय
के अवलंब करि मोही हुवा ॥ देह द्रव्यादिक परद्रव्य भावनि विषे सम मेरे ॥ मैं इनि रूप हों ऐसे ममता भाव को धरता
संता मोह को छोडता नाही ॥ सो पुरुष सुद्ध परिणति रूप मुनिपद को छांड विपरीत मार्ग विषे प्रवर्त्ते है ॥ ता
तें यह निश्चय हुवा कि ॥ असुद्ध नय ग्रहन तें असुद्धात्मा का लाभ है यह दिखावे है ॥गाथा॥ णाहं होमि परेसिं १३२
ण मे परे संति णाणमहमेक्को ॥ इदि जो झायदि झाणे ॥ सो अप्पाणं हवदि झादा ॥६५॥ नाहं भवामि परेषां

णामेपरेसंतिज्ञाणामहमेकः इतियोध्यायतिध्याणेसआत्माणांभवतिध्याता ॥ टीका ॥ अहंपरेयांणभवामि
अहंकहियेमैसुद्धात्मापरेषांकहियेसरीरादिपरद्रव्यनिकानभवामिकहियेनाहीहौं। एवमेणांसंतिपरेकहि
येशरीरादियरद्रव्यसोमैनसंतिकहियेमेरेनाहीहै। अहंएकज्ञानेअहंकहियेमैशुद्धपरमात्मा। सोएकःक
हियेएममस्वपरभावनितेरहितएक ज्ञाणांकहियेज्ञाणस्वरूपहौ इतियः ध्याणेध्यायति इतिकहियेइसिप्रकार
यः कहियेजोभेदविज्ञानीजीवध्याणांकहियेएकाग्रतारूपध्याणविषेसमस्तममत्वभावतेरहितहोइ। ध्यायति
कहियेअयरोगानिजस्वरूपकोध्यावेहै। सआत्मानेध्याताभवति। सकहियेसोपुरुषआत्मानेकहियेआत्माप्र
ति। ध्यानाभवतिकहियेध्याणकाकारनहाराहोयहै ॥ भावार्थ ॥ जोपुरुषव्यवहारनयकेअसुद्धकथनविषेअ
विरोधीहोइमध्यवर्तीहोइहै। निश्चयनयकेसुद्धकथनकरिमोहकोहाणिकरेहै। सरीरादिपरभावमेरेनाहीमेइ
नकानाहो। असीभावनोकरिपरविषेस्वामित्वबुद्धकोछांडि। सुद्धज्ञाणमात्रअपनास्वरूपताणअंगीकारकरि
वाहिजतेनिवृत्तिहोइ। समस्तसंकल्पविकल्पत्यागिअन्यचिंताकानिरोधकरैहै। सोजीवएकाग्रतारूपध्याण
केसमयसुद्धआत्माहोइ। तातेयहवातसिद्धभई। सुद्धणयकेअवलंबतेसुद्धात्माकालाभहै। आगेयहक

प्र· हैहैकिआत्माग्राअविनासीध्रुवसुद्धवस्तुहैतातेंएहीग्रहनजोग्यहै॥गाथा॥एवंणाणप्पाणं।दंसणभूदंअदि
१३३ दियमहक्खं।धुवमचलमणालंबं।मण्णेहंअप्पगंसुद्धं। ६६।एवंज्ञानात्मानंदर्सनभूतमतींद्रियंमहार्थं।ध्रुव
मचलमनालंबं।मन्येहमात्मकंसुद्धं॥टीका॥अहंएवंआत्मानंसुद्धं।ध्रुवंमन्येअहंकास्यमेंजुहेंभेदविज्ञानी
सोएवंकहिये॥इसिप्रकारआत्मानंकहियेजीवद्रव्यतिसहि।सुद्धंकहियेनिर्मलपरभावतेंरहित।ध्रुवंकहि
येनिश्चलस्वरूपमन्येकहियेमानोंहों।केसाहैआत्मा।ज्ञानात्मानंकहिये।ज्ञानस्वरूपहै।वहुरिकेसाहै।द
र्सनभूतंकहियेदर्सनमयीहै।वहुरिकेसाहै।अतींद्रियमहार्थं।अतींद्रियंकहिये।अपनेअतींद्रियसुभाव
करि॥महार्थंकहिये॥सवकाज्ञातामहापदार्थहै।वहुरिकेसाहै।अचलंकहिये।अपनेस्वरूपकरिनिश्चलहै
वहुरिकेसाहै।अनालंबंकहिये॥परद्रव्यकेआलंबनतेंरहितहैस्वाधीनहै।इसिप्रकारसुद्धहैकोंतिसोंआत्म
कोंअविनासीध्रुवमानोंहों॥भावार्थ॥आत्माकाहूकारणतेंउपज्यानांहीं।तातेंअनादिअनंतस्वतः
सिद्धिअविनासीहै।औरअन्यवस्तुकछुध्रुवनांहीं।यहआत्माआत्मीकसुभावकरिएकस्वरूपहै।तातेंसुद्ध १३३
है।यहआत्माअपनेंज्ञानदर्सनमयहैतिसकेंपरद्रव्यसोंजुदाइगीहै।अपनेंधर्मसोंजुदाइगीनांहीं।तातें

एक है ॥ बहुरि निश्चित एक स्पर्श रस गंध वर्ण शब्द रूप विषयनिकै ग्राही एवं च इंद्रिय है ॥ तिणकौं त्याग करि अपने
अपने ज्ञान करि एक ही काल इनि पंच विषयनि करि ज्ञाता यह आत्मा महा पदार्थ है ॥ तातैं इसि आत्माकै पंच वि
षयरूप परद्रव्यनै जुदायगी है ॥ इनकै जानपनैरूप स्वभावतैं जुदाइगी नाहीं है ॥ तातैं भी यह एकरूप है ॥ बहुरि तैसे ही
यह आत्मा समयविनासीक जु है ते पर्याय ॥ तिनका ग्राहक त्यागी नाहीं ॥ अचल है तातैं इसकै ज्ञेयपर्यायरूप पर
द्रव्यसौं जुदाइगी है ॥ तिनिकै जानपनैरूप स्वभावतैं जुदायगी नाहीं ॥ तातैं भी एक है ॥ और अन्यभावसंयुक्त है ॥ तातैं ज्ञे
यपदार्थ है ॥ तिनकै अवलंबनका अभाव है ॥ यह अवस्था स्वाधीन है ॥ तातैं इसिकै ज्ञेयपदार्थनिसौं जुदाइगी है ॥ इ
नकै जानरूपभावतैं जुदाइगी नाहीं ॥ तातैं भी एक है ॥ इसप्रकार अनेक परद्रव्यनिकै भेदतैं अपनौ एकताकौं छो
डता नाहीं ॥ तातैं शुद्धनयकरि शुद्ध चिन्मात्र वस्तु है ॥ यह ही एक टंकोत्कीर्ण ध्रुव है ॥ अंगीकार करना योग्य है ॥ जैसे मा
र्गविषै चाले जाते पंथीजननिकै अनेक वृक्षनिकी छाया ॥ विनासीक अध्रुव होइ है ॥ तैसें इसि आत्माकै परद्रव्य
कै संबंधसौं अनेक अध्रुवभाव होइ है ॥ तिनिकरि कछू साध्यसिद्धि नाहीं ॥ एक ज्ञान नित्यस्वरूप है ॥ अवलंबन योग्य
है ॥ और सब त्याज्य है ॥ आगै कहै है कि आत्मा ध्रुव है ॥ तातैं और है अंगीकार करना योग्य नाहीं ॥ गाथा ॥ २०३

बादविणावा॥सुहदुयावाधमसत्तुमित्तजणाणा॥णोंवस्सणसंतिधुवा॥धुवोवउगयगोअप्पा॥६७॥देहावाद्रवि
प्र·सा णाणिवा॥सुषदुषेवाथसत्तुमित्रजनाः जीवस्यनसंति ध्रुवा॥ ध्रुवउपयोगात्मकआत्मा॥टीका॥देहावाद्र
१३४ विनानिवासुषदुषेवा॥अथसत्तुमित्रजना जीवस्य ध्रुवाणसंतिदेहाकहिये॥औदारिकादिपंचप्रकारशरी
रिवाकहियै॥अथवाद्रविणानिकहियेधनधान्यादिकवाकहियेअथवासुषदुषकहियेइष्टानिष्टपंचेंद्रिय॥वि
षयवाकहिये अथवा॥औरसत्तुमित्रजनाः कहियेसत्तुमित्रादिलोकएतेसमस्तहीसंजोगजनितपदार्थजी
वस्यकहिये॥आत्माकेध्रुवाः कहियेअविनासी॥नसंतिकहियैनाहीहे उपयोगात्मकः॥आत्माध्रुवउपयोगा
त्मककहियेज्ञानदर्सनरूपगुहे॥आत्माकहियेसुद्धजीवद्रव्यसो ध्रुवः कहियेअविनासीवस्तुहे॥भावार्थ॥
जेएदेहादिकभावपरद्रव्यसोंतन्मयीहै॥आत्मातेभिन्नहे॥असुद्धताकेकारनहे॥तेयाकेकछुभीनाहीविनासी
कहै॥औरजुयहआत्मासोअनादिनिधनहै॥उत्कृष्टतेउत्कृष्टहै॥सदासिद्धस्वरूपहै॥ज्ञानदर्सनमयी
हे॥सोएकध्रुवहै॥तातेंमैसरीरादिकअध्रुववस्तुकोअंगीकारनाहीकरौहौ॥सुद्धात्माकोपावतहौहै॥आगेसु
द्धात्माकीप्राप्तिनेकहाहोयहेयहकहैहे॥गाथा॥जोएवंजाणित्ता॥झादिपरंअप्पगंविसुद्धप्पा॥सागार १३४

णाणारेणवेदिसो मोहदुगाहिं ।९६। यः एवं ज्ञात्वा ध्यायति परमात्मानं स विसुद्धात्मा । साकारेणानाकारः क्षपयति सम्मो-
हदुग्रंथिं ॥टीका॥ यः साकारः अनाकारः एवं ज्ञात्वा परमात्मानं ध्यायति । यः कहियै जो पुरुष साकार कहियै-
श्रावग व्रतधारी श्रावक अथवा अनाकारः कहियै मुनीश्वर एवं कहियै पूर्वोक्त प्रकार करि ज्ञात्वा कहियै स्वरू-
पकौ ध्यान जानि परमात्मानं ध्यायति कहियै सचेत उत्कृष्ट गुरु है । सुद्ध आत्मा कौ एकाग्रता करि ध्यावै है सो विसु-
द्धात्मा मोहदुग्रंथि क्षपयति सम कहियै सो पुरुष विसुद्धात्मा कहियै निर्मल है । आत्मा जिस कौ ॥ अमोह वा मो-
हदुग्रंथि कहियै जु मोह की है । अनादि तें लै विपरीत बुद्धि रूप मोह रागादि तिन सहि । क्षपयति कहियै षिपावै है ॥ भा-
वार्थ ॥ जो पुरुष सुद्धात्मा कौ अविनासी स्वभाव कौ प्राप्त भया है । ताही विषै मैं है । तिस कौ पाछै अनंत चेतन्य स्व-
निसंपन्न परमात्मा एकाग्र ज्ञान ना रूप ध्याण होय है । तातें ग्रहस्थ अथवा मुनि । जो निश्चल होइ स्वरूप कौ ध्या-
वै तौ । अनादि बंध मोह रागादि कौ षोलै । तातें सुद्धात्मा कै भावना का फल मोह रागादि का षुलना है ॥ आगे मोह रा-
गादि कै षुलनै तें कहा होइ है सो कहै है ॥ गाथा ॥ जो णिहद मोहगंठी । रागपदोसे षवीय सामणे । होज्जं सम-
सुहदुखो । सोसोक्खं अक्खयं लहदि ।९७। यः निहत मोहः ग्रंथी । रागप्रद्वेषौ क्षपयित्वा श्रामण्ये भवेत् । समसु-

प्र.सा दुयः समीसौख्यं अक्षयं लभते ॥टीका॥ यः निहतमोहग्रंथिः यः कहिये जो पुरुष निहतमोहग्रंथिः कहिये दूरि की
१३५ नी है। मोह की गांठि जिण ऐसा होत संता समसुखदुःख भवति कहिये एवरावरि है। इंद्रियजणित सुख दुःख निमैं
ऐसा होय है। कस्यौ कि ऐसा होय है श्रामण्ये रागद्वेषौ क्षपयित्वा। श्रामणपणे करि पयाति अवस्था विषै राग
द्वेष को कहिये। इष्ट अनिष्ट पदार्थनि विषै प्रीति अप्रीति भाव को क्षपयित्वा कहिये छांडि करि। स अक्षयं सौख्यं लभ
ते स कहिये सुख दुःख विषै समान बुद्धि सोई। पुरुष अक्षयं कहिये अविनासी। सौख्यं कहिये अतींद्रिय आत्मीक
मोक्षसुख ताति महिं लभते कहिये पावै है ॥भावार्थ॥ मोह की गांठि के खुलने ते आत्मा के रागद्वेष का नास होय है।
जहां रागद्वेष का अभाव होय है। तहां सुख दुःख विषै समताभाव होय जहां समताभाव है तहां आकुलता रहित साधी
ण आत्मीक सुख अवस्था होइ। तातै मोह गांठि खुलणे का फल अविनासी सुख है ॥ आगे एकाग्रता करि निश्च
ल स्वरूप का देखनहारा ध्याता आत्मा की असुद्धता कौ दूरि करै है॥गाथा॥ जो खविदमोहकलुसो विसयवि
रत्तो मणो णिरुंभित्ता। समवट्ठिदो सहावे सो अप्पाणं हवदि धादा॥ ७१॥ यः क्षपितमोहकलुषो विषयवि
रक्तो मनो निरुध्य। समवस्थितः स्वभावे स आत्मानं भवति ध्याता ॥टीका॥ यः क्षपितमोहकलुषः। यः क १३५

हियेजौपुरुषक्षपितमोहकलुषः॥कहियेषियापाहेमोहरूपमैलाजिनिनिःशेषसाहै॥ऐसाविषयविरक्तः क
हियेपरद्रव्यरूपजुहै॥इसगनिष्ट इंद्रियविषयनितैरागसौविरक्तहै॥औरमनः निरुध्यस्वभावेसमवस्थि
तः मनःकहियेचंचलरूपचिन्नतिसाहिनिरुध्याकहियेवाहिरविषयनिरोधकरिस्वभावेकहिये॥अपणे
अनंतसहजचैतन्यस्वरूपविषैसमवस्थितःकहिये एकाग्रनिश्चलभावकरिजोतिष्ठैहै॥सआत्मान
ध्याताभवतिसःकहियेसोपुरुष॥आत्मानंकहियेनिजटंकोत्कीर्णसुद्धजीवद्रव्यकू॥ध्याताकहिये॥ध्या
णकाकारणहारा॥भवतिकहियेहोयहै॥भावार्थ॥जवयहआत्मानिर्मोहहोहेष्यहै॥तवमोहकेआधीण
जुहेपरद्रव्यविषैप्रवृत्ति॥तिसकाअभावहोयहै॥परप्रवृत्तिकेअभावतै॥इंद्रियविषयवैरागभावहोयहै त
वसहजहीमनकानिरोधहोयहै॥काहेतेंजातैयहमनइंद्रियविषयनितैचंचलहै॥जवइंद्रियविषयनितैवै
रागभावहोय॥तवविषयरूपआधारकैअभावतैआपहीचंचलतातैरहितहोइहै॥जैसेसमुद्रवीचिजहा
जकापक्षी॥चहुंदिसवृक्षादिआधारकेअभावतै॥उडि २॥आश्रयविनाजिहाजहीऊपरिआपहीतैं
निश्चलहोयतिष्ठैहै॥तैसेयहमनरागवैरागभावतैपरद्रव्यरूपइंद्रियविषयकेआधारविनानिराश्रयहूया

प्र॰
१३६ सहजहीनिश्चलहोयहै॥ तबचित्तिसमनकीचंचलताकेअभावतैंस्वरूपविषैंएकाग्रताहोयहै॥ तिसएका
ग्रताकरिअनंतचैतन्यरूपकास्वसंवेदनरूपध्यानहोयहै॥ तिसध्यानकरिआत्मासुद्धहोयहै॥ तातैंध्या
नपरमसुद्धताकाकारनहै॥ आगेकहैहैंकिजिनिकेवलज्ञानीनैंसुद्धस्वरूपपायाहै॥ तिसकोभीध्यानक
हाहै॥ सोवहकेवलीकहाध्यावैहैं॥ ऐसाप्रश्नकरैहै॥ गाथा॥ णिहदघणघादिकम्मो॥ पच्चक्खंसव्वभाव
तच्चण्हू॥ णेयंतगदोसमणो॥ झादिकिमट्ठंअसंदेहो॥ ७९॥ णिहदघणघादिकम्मा॥ प्रत्यक्षंसर्वभा
वतत्वज्ञः॥ ज्ञेयांतगतः श्रमणोध्यायतिकिमर्थमसंदेहः॥ टीका॥ श्रमणः किमर्थंध्यायति॥ श्रमणःक
हियैमहामुनिकेवलीसर्वज्ञवीतराग॥ सोकिमर्थंकहियेकिसनिमित्तध्यायतिकहियेध्यावकरैहै वे
सैहै॥ भगवानमहामुनि॥ निहतघनघातिकर्मा॥ निहतिकहियेहनिविगएहै॥ घनाकहियेनिबिडघा
तिकर्मकहियैं॥ च्यारिघातियाकर्मजिनतैंऐसाहै॥ बहुरिकैसाहै॥ प्रत्यक्षंसर्वभावतत्वज्ञः॥ प्रत्यक्षकहि
येपरोक्षतातैंरहितसाक्षात्जुहैसर्वभावतत्वकहियेसकलपदार्थनिकाज्ञःकहियेजाताहै॥ बहुरिकै
साहै॥ ज्ञेयांतगतः कहियेज्ञेयअंतजुहै॥ यदार्थ॥ तिनकेअंतरविषैंप्राप्तहुवाहै॥ सबकाप्रमानकरै १३६

है। वहुरि कैसा है असंदेह कहियै संसय विमोह विभ्रम तैं रहित है ॥भावार्थ॥ इस संसार विषै मोह कर्म के
उदय तैं ॥अथवा॥ ज्ञानावर्णी घातकर्म्म के उदय तैं ए संसारी लोक ऐसा भावें है। तातैं इन कै समस्त पदार्थ
प्रत्यक्ष नाहीं सब के अंतराय वैरी नाहीं इसवास्तै वांछित अर्थ कौं ध्यावै है। और जिस कौं जानने की इ
है। तिस ही कौं ध्यावै है। अथवा। जिस विषै संदेह होय है। तिस वस्तु कौं ध्यावै है। तातैं इन कै तौ ध्यान संभ
वै है। और केवली भगवान तौ घातियाकर्म रहित है। सकल पदार्थ साक्षात्कारी है। सकल प्रमाण कर
गहारी है॥ तातैं इस सर्वज्ञ कै कोई अभिलाष नाहीं है। कछु जानना रह्या नांहीं कछु संदेह नाहीं॥ तातैं केव
ली कै ध्यान कैसें होय ऐसा सिष्य नैं प्रश्न कीनी है ॥आगैं इस प्रश्न का उत्तर कहै है कि यद्यपि केवली स्वरू
प कौं प्राप्त भया है तथापि ध्यावै है ॥गाथा॥ सव्वाबाधविजुत्तो। समंतसव्वक्खसोक्खणाणड्ढो। भूदो अक्खा ई
दो झादि अणक्खो परं सोक्खं॥ ९८ सर्वाबाधवियुक्तः समंतसर्वाक्षसौख्यज्ञानाढ्यः भूतोऽक्षातीतो॥ ध्यायत्य
नक्षः परं सौख्यं ॥टीका॥ अक्षातीतः भूतः अनक्षः परं सौख्यं ध्यायति अक्षातीतः कहियै इंद्रियनि तैं रहि
त भूतः कहियै हुवा संता॥ अनक्षः कहियै अतींद्रिय स्वभाव संयुक्त जु है॥ केवली भगवान॥ सो परं सौख्यं क

प्र.सा कहियेउत्कृष्टआत्मीक॥सुष्यतिसहितध्यापतिकहियेएकाग्रताकरिवेदेहे॥अपरांसुषकोअनुभवे
१३२ हे॥कैसांहेभगवान॥सर्वबाधाविप्रमुक्तकहियेसमस्तहीजुहे॥आबाधाज्ञानावरनादिकर्म॥तिनांकरिर
हितहैवहांरहै॥सांहे॥समंतसर्वाक्षसौष्यज्ञान्याढ्यः समंतकहियेसर्वांग॥सर्वकहियेपरिपूर्णअक्षकहि
ये॥आत्माकेजुहेसौष्यज्ञानकहिये अनंतसुष॥अरुअनंतज्ञानगुननिकरिआद्यकहियेपरि
पूर्णहे॥भावार्थ॥यहआत्माजिससमय॥अनंतज्ञानसुषकेआस्वादिकजुहे॥एकदेसज्ञानसुषकेका
रन॥एइंद्रियनकेनामतेजवअतींद्रियरसाकोंपावेहे॥तबसमस्तअबाधातेरहितहुवा॥अनंतज्ञान
अनंतसुषसंपूर्नहोइहे॥ऐसेकेवलीभगवाननिविषैयद्यपिकछुप्राप्तहोनेकीअभिलाषानांही॥औरस
कछुज्ञानिवेकीभीअभिलाषानांही॥औरकछुसंदेहभीनांही॥तोभीयहभगवानएकाग्रताकरिअ
परांअनंतअनाकुलपरमसुषकोवेदेहे॥तातेंउपचारिध्यानावरेहे॥ऐसाकहियेहे॥ध्यानकरनेका
फलयहहे॥जुपूर्वबंधकर्मनिकीनिर्जरा होय॥आगामीकर्मबंधकापरमसंवरहोइ॥तातेंकेवलीभगवा
नकेअपरांअनंतसुषकेअनुभवतेंपूर्वकर्मनिर्जरैहे आगेंपरमसंवरहे॥तातेंउपचारमात्रकेवली १३२

कैथ्यानहै॥ ऐसेसाहजीकज्ञानानेरस्वभावरूपसिद्धत्वकी सिधिभगवाणाहीकैहै॥ **आगैसुधात्माकीअन**
भ्रसोईमोक्षमार्गहैऐसीटीकनाकरैहै॥ गाथा॥ एवंजिनाजिनंदा॥ सिद्धामग्गोसमुट्ठिदासमणा॥ जादानमं
सुजेसिं॥ तस्सयनिव्वाणमग्गस्स॥ ८२॥ एवंजिनाजिनेन्द्राः सिद्धामार्गसमुस्थिताः श्रमणाः जाताननमो
तेभ्यः॥ तस्मैनिर्वाणमार्गाय॥ **टीका॥** एवंमार्गसमुस्थिता॥ जिनाजिनेन्द्राः श्रमणाः सिद्धाः जाताः एवक
ह्रियेइसिभांतिश्वोन्नप्रकारकरिमार्गसमुस्थिताः॥ कहियेसम्यग्दर्सणज्ञानचारित्रमयीउदहेसुताः एवक
ह्रियेइसिभांतिश्वोन्नप्रकारकरिमार्गसमुस्थिता॥ कहियेसम्यग्दर्सणज्ञानचारित्रमयीजुहैसुद्धात्मप्रव
र्तरूपमोक्षमार्ग॥ तिसहजेउद्यमीहोइप्राप्तभएहै ऐसेजे॥ जिनाः कहियेतद्भवमोक्षगामी॥ सामान्यचरम
सरीरीजिन॥ ओरजिनेन्द्राः॥ कहियेतद्भवमोक्षगामी॥ अरिहंतपदधारकतीर्थंकर॥ ओरश्रमनाकहि
ये॥ एकदेसपर्यायलैकरिजेमोक्षजाहिंगे॥ ऐसाजोमोक्षाभिलाषीमुनि॥ तथासिद्धाः कहियेमोक्षविषैसिद्धअ
वस्थाकोंजाताकहियेउत्पन्नभएहै॥ नमोस्तुतेभ्य॥ तस्मैनिर्वाणमार्गाय णमोस्तु कहियेणमस्कारहोहु तेभ्यः
कहियेतिनसुनिहकोंअहं॥ तस्मैनिर्वाणमार्गायकहियेतिनसमोक्षमार्गकेताईनमस्कारहोउ॥ **भावार्थ**

सा॰ जे तीर्थंकर अथवा सामान्य केवली ॥ अथवा अन्य मुनि जे मोक्ष गए हैं ॥ ते केवल सुद्धात्मा की प्रवृत्तिरूप मोक्ष
१३८ मार्ग कौं पाय करि मुक्त भए हैं ॥ सुद्धात्मा के अनुभव विना अन्य कोई मोक्षमार्ग नाहीं है एही अरहंतौ पमार्ग
है ॥ आगें बहुत रचना कहां तांई कीजे ॥ जे सुद्धात्मतत्त्व विषै प्रवर्तै हैं ॥ तिन हू परमेष्ठीनि तिनकौं ॥ अहो सुद्धात्मतत्त्व
कौ प्रवृत्तिमयी अनुभवरूप जु है मोक्षमार्ग तिस ताकौं द्रव्यभावरूप नमस्कार होउ ॥ आगें श्रद्धै हीनै ॥ आचार्य
नें मति ज्ञानकीनी थी कि मैं ममताभाव कौं अवलंबौं हौं ॥ अब तिस ही का निस्वाह करता संता मोक्षमार्गरूप
सुद्धात्मा की प्रवृत्ति दिखावै है ॥ गाथा ॥ तम्हा तध जाणित्ता ॥ अप्पाणं जाणगं सहावेण ॥ परिवज्जामि ममत्तिं
उवट्ठिदो णिम्ममत्तम्मि ॥ ७४ ॥ तस्मात्तथा ज्ञात्वा ॥ आत्मानं ज्ञायकं ॥ स्वभावेन परिवर्जयामि ममत्वं ॥ मुपस्थि
तो निर्ममत्वं ॥ टीका ॥ तस्मात्तथा स्वभावेन ज्ञायकं ॥ आत्मानं ज्ञात्वा ममतां परिवर्जयामि ॥ तस्मात्
कहिये तिस कारणतैं ॥ जमुक्त हूए है ॥ ते सुद्धात्मा के अधारण ज्ञान आचारणतैं भए हैं ॥ तातैं तथा कहिये तिनि
सही प्रकार जैसैं तीर्थंकरादिकनै स्वरूप जानि ॥ सुद्धात्मा का अनुभव कीना तिस ही प्रकार मैं भी स्वभावेन कहि
ये अपने आत्मीक स्वभाव करि ज्ञायक कहिये ॥ सकल पदार्थनि का जाननहारा जु है ॥ आत्मानं कहिये १३८

सुद्ध जीव द्रव्य तिसही ज्ञानात्मा करि हियें समस्त परद्रव्यतें भिन्न जान करि । ममता कहियें परवस्तु विषे जु है । ममत्व
जु है । ताहि परवर्जेयामि कहियें सर्वथा प्रकार छोडो हो । निर्ममत्वे उपस्थितः । निर्ममत्व कहियें स्वरूप विषे
निश्चल है ऐसें करि वीतराग भाव कौ उपस्थितः कहियें प्राप्त करि तिष्ठो हो । ।भावार्थ। । जो पुरुष मोक्षाभिला
षी है । सो पुरुष ग्रंथ महिं ज्ञानात्मा स्वरूप आत्मा का ज्ञाननहारा होय है । पाछे ममता भाव का त्यागी होइ वीतरा
ग भाव कौ आचरे है । और काय सब मिथ्या भ्रमरूप जानि सर्वथा प्रकार उद्यमी होइ । सुद्धात्मा के विषे प्रव
र्ते है । कैसें प्रवर्ते है । सो ई कहियें है । मैं निज स्वभाव करि ज्ञायक हों । तातें समस्त परवस्तु सो मो को ज्ञेय ज्ञायक
संबंध है । वे पदार्थ मेरे हैं तिनि का मैं स्वामी हों । ऐसा मेरे संबंध नाहीं । तातें मेरें किसही परवस्तु विषे मम
त्व भाव नाहीं । सर्व विषे ममता भाव तें रहित हों । और मेरे जु है एक ज्ञायक भाव । तिसकें समस्त ज्ञेय पदा
र्थ का जानन स्वभाव है । तातें वे ज्ञेय पदार्थ समस्त मो विषे नानों कि उकेरि काढे है कैं लिखे हैं । कि मो वि
षैं समाइ गए है । किं कीलि गये है । किं डूबि गए हैं । किं लय परि रहे है । किं प्रतिबिंबित है । ऐसें मेरे विषे प्रतिभा
से है । ऐसा मेरे ज्ञेय ज्ञायक संबंध है । और सम्बंध कोई नाहीं सु मैं अब मोह कौ दूरि करि अपरोक्षया । (

प्र.सा स्थितिसरूपविषे॥ अडोलहोयकरिआपहीतेअंगीकारकरौंहौं॥ जिसमेंरैस्वरूपविषे॥ त्रिकालसंबंधीना-
१३९ नाप्रकार॥ अतिगंभीरसमस्तहीद्रव्यगुणपर्यायएककहीसमयविषेप्रत्यक्षहैं॥ औरजेमेरापृहस्वरूपज्ञेयपदार-
थसंबंधरि॥ यद्यपिसमस्तलोकालोककेस्वरूपहुवाहै॥ तथापिसाहजीकअरागतताइकसाक्षीकरिअपने-
कस्वरूपकौंछोडतानांही॥ औरयहमेरास्वरूपअनादिकालनैंलेकरिइसहीप्रकारया॥ परंतुमोहकरिओ-
रकाऔरमैंजान्याथा॥ तातैंमैंअज्ञानहुवा॥ अबमैंज्यौंकात्यौंजान्या॥ तातेअप्रमादीहोयकरिस्वरूपकौंअं-
गीकारकरौंहौं॥ सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानकरिअर्थपरितसुखविषेपरतनुहैसाक्षात्तसिद्धरूपभगवान्आपना-
आत्मा॥ तिसकौंहमाराभाववनमस्कारहोहु॥ औरजेअन्यजीवतिसपरमात्मभावकौंप्राप्तभएहैं॥ तिनकौंभी
त वहुंभांतिस्योंभाववनमस्कारहोहु॥ इतिश्रीप्रवचनसारटीकायांविशेषज्ञेयाधिकारःसमाप्तः॥ अथानंतरचा-
रित्राधिकारःप्रारंभ्यते॥ जोजीवमोक्षाभिलाषीहैं॥ तेद्रव्यकेस्वरूपकौंभीयथार्थजाणौहैं॥ औरचारित्रके-
स्वरूपकौंभीयथार्थजाणौहै काहेतैं जातैंद्रव्यकेजाननेकेअनुसारचारित्रहोइहै॥ चारित्रकेअनुसारद्र- १३९
व्यकाज्ञानहोयहै॥ तातैंएदोनोंएकहैं॥ इनदोनोंमेंजोएककनहोयतौमोक्षमार्गनहोय॥ तातेंइनदोनोंका

जाननायोग्य है ॥ तातै चारित्र का स्वरूप कहियै है ॥ आगै चारित्र के आचरण विषै अन्य जीवन कौं लगावै है जो द्रव्य
का ज्ञान होइ तौ चारित्र के आचरन की भली भांति सिद्धि होय ॥ और जो चारित्र होइ तौ द्रव्य का ज्ञान सफल होइ
तातै परस्पर इन दोनों की सिद्धि है ॥ तातै जे जीव क्रियाविषै प्रवर्त्तै हैं ॥ ते आत्मद्रव्य के जानने सौं अविरोधी क्रिया
आचरौ ॥ अरु ताकौ हू रहित निराभिलाषी होय आचरौ ॥ तातै और जीवनि के हित निमित्ति आचार्य यथा आचार कहै हैं
अरु ग्रंथ का आरंभ की आदि एस सुरासुरमणुसिंदं ॥ वंदिय धोदघाइकम्ममलं ॥ इत्यादि गाथानि करि ॥ पंच प
रमेष्ठीनि कौं नमस्कार किया ॥ तिनही गाथानि करि इस यत्याचार के आरंभ विषै नमस्कार आचार्य करै है ॥ और
पि जे आचार्य उपाल होय करि रहे हैं ॥ जैसें दुःषनास वेकैं निमित्त जैसें ॥ आत्मा गैं पंच परमेष्ठी कौं वंदना नमस्का
र पूर्वक निर्मल दर्शन ज्ञान रूप समताभाव नाम जु है पति मार्ग ॥ सो अंगीकार किया है ॥ तैसें ही और जीवन का
आजो दुःषनास वे निमित्त मोक्षाभिलाषी होइ ॥ तौ ताही समताभाव कौं आचरौ ॥ जे मा हमौ रो वह मोक्षमार्ग
अनुभया है ॥ तैसा ही उपदेस करते हैं ॥ आगे जो मुनि हुवा चाहै है सो प्रथम ही न्हा करै ॥ ऐसी परिपा
टी कू कथन करै है ॥ गाथा ॥ आपिच्छ बंधुवग्गं ॥ विमोइदो गुरुकलत्तपुत्तेहिं ॥ आसिज्ज णाणदंसण ॥ चरि

प्र.सा
१५०

त्रतववीरियाचारं ॥२॥ आप्रछबंधवग्गंविमोचितो ॥ गुरुकलत्रपुत्रै ॥ आसाघज्ञाणदंसणचारित्रतपोवीयो
चारं ॥ टीका ॥ बंधुवर्गं आप्रछ्य गुरुकलत्रपुत्रैर्विमोचितः बंधुवर्गं कहिये कुटंबका जुहै समूह ताहि आप्रछ
कहिये पूछीकरि गुरु कहिये मातापिता कलत्र कहिये स्त्रीजन ॥ पुत्रै कहिये पुत्रनिकरि विमोचितः कहिये मुक्त
होय यहै ॥ भावार्थ ॥ जो जीव मुनि हूवा चाहे है ॥ सो प्रथम ही कुटंबलोकको पूछै ॥ आपकौ छुडावै है सोई कहिये
है ॥ बंधुलोगनि सौ इसि प्रकार कहै है ॥ अहो इसि जनके शरीरके तुम भाई बंधु हो इसि जनका आत्मा तुम्हारा नां
हीं यो ॥ तुम निश्चय करि जानो ॥ तातै मैं पूछौ हों ॥ यह मेरा आत्मा ज्ञानज्योति करि प्रगट भया है ॥ अपना आत्मा
ही रूप जु है अनादि भाई बंधु तिसकौ प्राप्त होय है ॥ इसि जनके तुम मातापिता हो ॥ इसि जनका जु है तेने आत्मा
नाहीं उपजाया ॥ यह तुम निश्चय करि जानो ॥ तातै तुम इसि आत्माके विषै ममत्वभाव छांडने यह आत्मा
ज्ञानज्योति करि प्रगट भया है ॥ अपणा आत्मा ही रूप जु है मातापिता तिसकौ प्राप्त होय है ॥ अहो इ
सि जनके शरीरकी रमणाहारी जु है तं स्त्री ॥ इसि जनके आत्माकौ तं नाहीं रमावै है ॥ यह निश्चय करि तं
जाण ॥ तातै इसि आत्मा विषै ममत्वभाव छांड ॥ यह आत्मा ज्ञानज्योति करि प्रगट हुवा है ॥ तातै १५०

अपणौ आत्माही का जु है ॥ यह आत्मा अनादि पुत्र तिसकौ आप्त होय है ॥ इसिप्रकार माता पिता स्त्री पुत्रादिकु
देवतै आपकौ छुडावै नो कोई जो यमुनि भया चाहै है ॥ सो तौ सर्वथा कुटंबतै विरक्त ही है ॥ तिसकौ कछू कुटंबकै
ग्रहणा सौ कार्य रहा नांही परंतु जो कुटंब सौ विरक्त है ता सभाषणा की विधि आपु वरणंतौ ॥ इस प्रकार से राम्य
ताकै कारणा तिस कुटंबकै प्रतिबोधनकै निमित्ति ऐसे वचन विधि प्रवर्तौ ॥ और ऐसें मति जानौ कि विरक्त
होइ सो कुटंबकै राजी करि कैं होइ ॥ सु कुटंब राजी किसही प्रकार भी न होइ ॥ जो कुटंब कै भरोसे रहै तौ विरक्त कब
बहू रा होय ॥ तातें कुटंबकै पूछिवेका नियम नांही जो कहू काहूं जीवकै मुनि दसा धरते संभाषणा की विधि
आइ बनै तौ इसि प्रकार उपदेस रूप वचन धिरै ॥ ऐसें वैराग्य वचन सुनि कै जो निकट संसारी जीव कुटंब
विषैं है ति भी विरक्त होय ॥ बहुरि वहा कहिये मुनि होय है ॥ सो ज्ञान दर्सन चारित्र तप वीर्याचार ॥ आसा
घ ज्ञाणा कहियै आठ प्रकार ज्ञानाचार दर्सन कहियै आठ प्रकार दर्सनाचार ॥ चारित्र कहियै तेरह प्रकार चा
रित्राचार ॥ तप कहिये बारह प्रकार तपाचार वीर्याचार कहियै आत्म सक्ति का प्रगट करना सो वीर्याचार
इनि पंच आचारनकौ आसाध कहियै अंगीकार करिकैं विरक्त होय है ॥ भावार्थ ॥ सम्यग्दृष्टी जीव आपनै स्व

प्र० रूपकौं सिद्धसमानशुद्धध्यावै है। जाणै अनुभवै है। अरसमस्तहीव्यवहारभावनितै आपकौं भिन्नमानै है। परस्व
१५९ रूपजुहै। समस्तसुभासुभक्रियातिनकौं हेयजाणै है। अंगीकाररंचनकरतानाहीं। परंतुसोईसम्यग्दृष्टी
जीवसर्वबंधकर्मकेउदयतैनानाप्रकारकेविभावभावनिपरणवै है। विभावभावनिपरणवतासंताभी
तिनभावनिसौंविरक्तहैजानै है। किनबताई। इसिअशुद्धपरणतिकीथितिहै तबनाई। परद्रव्यअवस्यहोयपु
ष्टतातैआकुलताभावकीभीप्राप्तिनाहींहोयहै। यहतौसम्यग्दृष्टीजीवसकलद्रव्यभावरूपविभावनिक
नवहीत्यागीहूवा। जबइसिकैस्वपरविवेकरूपभेदविज्ञानप्रगटभया। औरजबहीद्रव्यकौंजाण्यांनिजस्वभा
वअंगीकारकीया। तातैसम्यग्दृष्टीकैनकछूत्यागवेकौंहैनकछूअंगीकारकरिवेकौंहै। परंतुसोईसम्यग्
दृष्टीजीवचारित्रमोहकेउदयतैसुभासुभभावनिपरणवैहैतिनपरिणामनिकौंअवसोत्यागैहै। अंगी
कारकरैहै। ऐसाकथनकानिर्णयहै। प्रथमहीगुणस्थानपरिपाटीक्रमकरिअसुभपरिणतिकौकमी
होयहै। पाछैसुभपरिणतिभीजायहै। तातैप्रथमहीअव्रतअवस्थाकुदेवकात्यागीहोइहै। पाछैप्रसस्तरागके
उदयतै। व्यवहाररत्नत्रयरूपमैंचाचारकाअंगीकारकरैहै। ज्ञाताभावकरिकैतौसमस्तहीसुभासुभ १५९

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

प्र॰ याकात्यागोहै ॥ परंतुप्रसस्तरागकेउदयतैंपंचाचारकौंअंगीकारकरैहै ॥ जिसप्रकारअंगीकारकरैहै ॥ सोई
१४२ दिखाईएहै ॥ अहोकालविनयउपधानबहुमानअनिन्हवअर्थव्यंजनतदुभयरूप ॥ आठप्रकार ज्ञाना
चारमैंजानोहो ॥ किंतुसुद्धात्मस्वरूपकौंप्राप्तनाहोउ ॥ अहोअनिश्चयकरिस्वभावनांही ॥ तथापमैंतोकौंत
बलाईअंगीकारकरोहो ॥ जबलाईतेरेप्रसादतैंसुद्धात्माकौंप्राप्तहोउ ॥ अहोअनसनऊनोदरवृत्तिपरि
संख्यानरसपरित्यागविविक्तसय्यासनकायक्लेसप्रायश्चितविनयवैयाव्रतस्वाध्याय ॥ ध्यानव्युत्सर्गरू
पबारहप्रकारतपाचार ॥ मैंनिश्चयकरिजाण्योहो ॥ किंतुसुद्धात्माकास्वभावनांहै ॥ परंतुतोभीतबलांईतौं
कौंमैंअंगीकारकरोहो ॥ जबलाईतेरेप्रसादतैंसुद्धस्वरूपकौंप्राप्तहोउं ॥ अहोसमस्तआचारकौंप्रवृतिके
बढावनकौंस्वसक्तिकैंप्रगटकरणहारवीर्याचारमैंनिश्चयकरिजानोहै ॥ किंतुसुद्धात्माकास्वरूपनांहीं ॥ प
रंतुतोभीजौंलौंमैंतबलाई ॥ अंगीकारकरोहो ॥ जबलाईतेरेप्रसादतैंसुद्धस्वरूपकौंप्राप्तहोउं ॥ इसप्रकार
ज्ञानदर्शनचारित्रतपवीर्यरूपपंचप्रकारआचारकौंअंगीकारकरैहै ॥ आगैंयाकैयाहीकेसाहैयहकथन १४२
करैहै ॥ गाथा ॥ समणंगणिंगुणड्ढं ॥ कुलरूववयोविसिट्ठमिट्ठदरं ॥ समणेहितंपिपणदो ॥ पडिच्छमंचे

दिश्रमणंगणिनंगुणाढ्यं कुलरूपवयोविशिष्टमिष्टतरं॥श्रमणैस्तमपिप्रणतः प्रतीछमां
चेत्यनुगृहीतः॥टीका॥तंश्रमणंगणिनंप्रणतः॥अपितेकहियेसोतुहैश्रमणकहियेपंचाचारआचरन
आचरावणविषैप्रवीणसाम्यभाववलीणः गणिनंकहियेपरमआचार्य॥तिसपैजायकरिप्रणतः
कहियेनमस्कारकरैहै अपिकहियेनिश्चयसोकैसाहै॥सोआचार्यगुणाढ्यंकहियेयतिपदवीकाआय
आचरणकरैहै॥औरनिकौंआचरावैहैअतिप्रवीनहै॥तातैगुणकरिपरिपूर्नहै॥वहुरिकैसाहै॥कुलरू
पवयोविसिष्टंकहिये॥कुलकरिरूपकरिविसेषतालियेहै॥अरुवयक्रमकरिविसेषतालियेहै॥भावार्थ॥
जोऊतमकुलविषैउत्पन्नहोयतिसकौंसकलजननि॥सेवहोयकरिसेवै॥औरजोउत्तमकुलविषैउ
त्पन्नहोइ॥तौकुलकर्मकैविषैचलेआएहैं॥क्रूरभावादिकदोषतिनकरिरहितहोय॥तातैआचा
र्यकुलकरिविसेषतालियेहोयहै॥औरआचारजकैवाहिररूपकरिविसेषताऐसीहोयहै॥जिसमुद्राकै
देषि॥अंतरंगकीसुद्धअनुभवरूपमुद्रापाइजाहै॥वाहिरकेसुद्धरूपकरिजानौकिअंतरंगकीसुद्धता
कावतावैहै॥तातैरूपकरिविसेषतासंपुन्नहै॥औरवयक्रमकरिविसेषतालियेहै॥वालवृद्धअवस्था

विषैनुहै। वुद्धिकीविकलतातातिसतैंरहितहै॥ अरुजोवणाअवस्थाविषैकामविकारकरिबुद्धिकीविकलताई
प्र· तैंरहितहै॥ तातैंवपुकीविसेषतासेंयुक्तहै॥ यहारिकैंसाहै अमरोगः इत्यतरंअमरोगकहियेंजेमुक्तथांछ
२४३ कहै॥ महामुनितातिनिकरि॥ इत्यतरंकहियेंअतिप्रियहै॥ भावार्थ॥ समस्तासिद्धांतउक्तमुनिकीक्रियातिस
केआचरणाअरुआचरावणाविषै॥ जोवहुपाछेदोषहुवाहोइ॥ तिसदोषकोआचार्यचुतावैहै॥ गुणा
काउपदेसकरैहै॥ तातैंमहामुनिआचारकोअंगीकारकरैहै तातैंअतिप्रियहै॥ इत्यादिअनेकगुन
विराजमानतातैंआचार्यतातैंजारकरियहदीक्षाकोअंगीकारकरणाहाराषुरषनमस्कारकरैहैं॥ वि
रितिसहीसुद्धात्मतत्वकेंसाधक॥ आचार्यसोंहाथहाथजोरिकरिविनतीकरैहैं॥ किहेप्रभोमांप्र
तीछमोकहियें॥ मुझकोंसुद्धात्मतत्वकीप्राप्तकरिप्रतीछकहिवेअंगीकारकरहु॥ मैंसंसारतैंभयभी
तहै॥ जवयहऐसीविनतीकरैहैं यइतिअनुग्रहीतः॥ चकहियेवहुरिइतिकहियेंइसप्रकारआचार्य
येंजवप्रार्थनाकरैहै॥ तवआचार्यकहैहैं॥ किंतोकोसुद्धात्मतत्वकीप्राप्तकीसिद्धियहभगवंतदेवाहै
ऐसीकहिकरिअनुग्रहीतकहियेंअंगीकारकीजियहै॥ आगैंताकेपाछेकैसाहोइहैयहकहैंहै॥ गा २४३

प्र या॥ णाहंहोमिपरेसिं॥ णामेपरेणात्थिमज्झमिहकिंचि॥ इदिणिछिदोजिदिंदोजादोजधजादरूवधरो॥२
१५४ णाहंभवामिपरेषां॥ णामेपरेनासंतिममेहकिंचिति॥ इतिनिश्चितोजितेंद्रिय॥ जातोयथाजातरूपधरः
टीका॥ अहंपरेषांनभवामि॥ अहंकहियेमैं॥ परेषांकहियेपुद्गलचिन्मात्रतेंनेपररूपअन्यद्रव्यातिनिकौ॥ नाभ
वामिकहियेनाहीहौं॥ नमेपरेकहियेनाहीहै॥ मेरेतेपरिद्रव्यनमेंपरद्रव्यकाहे॥ नामेरेतेपरद्रव्यहे॥ काहेतेंना
तेकोईद्रव्यकाहूद्रव्यस्यौं॥ अपनास्वरूपछोडिमिलतानाहीं॥ सबजुदेजुदेहै॥ नातेंपरहममकिंचनतिनास्ति॥ इ
हकहियेइसलोकविषैममकहियेमेराकिंचितिकहियेकछुभीनास्तिकहियेनाहीहै॥ जैसेमारामैंनोकर्मद्रव्यक
र्मभावकर्मरूपपरभावहै॥ औरसमस्तपरद्रव्यहै॥ तिनमैंमेरास्वरूपकछुभीनाहीं॥ मैंसबतैंभिन्नअविनासी
टंकोत्कीर्णवस्तुमात्रहै॥ इतिनिश्चितःकहियेइसप्रकारठीकजानासंपन्नहोइहै॥ जोपरमश्रमुनिहुवाचाहेहै॥ ति
सकेप्रथमहीमुनिपदवीकेधरतेंऐसेभावहोइहै॥ वहीऐसाहोइहै॥ जितेंद्रियःकहियेजीतेहैंपंचइंद्रियजि
निऐसाहै॥ ताकेयाछेकैसाहोयहै॥ यथाजातरूपधरःजातः यथाजातरूपकहियेजैसाकछुस्वयंसिद्धआत्म
द्रव्यकासुद्धस्वरूपहै तैसाहीअपणोघटविषैधराहै॥ औरदूसराअर्थ॥ जैसाकछुमुनिकास्वरूपहै॥ तैसाही

धस्याहै ॥ ऐसा यथाजातरूपका ॥ धर: कहिये धारक जात: कहिये भया है। आगें अनादिकालतें लेकरि कबहूं भी
जिसका अभ्यास न किया था ॥ ऐसा जु है यथाजातरूपधारक मुनिपद ॥ तिसकौं सिद्धिकौं जनावन हारे।
अंतरंग बहिरंग भेदकरि लिंगके द्वैतता दिखावे है। जिन चिह्ननि मुनिपदकौ भलीभांति जानी जाइ ॥ तहां द्रव्यभा
वलिंग कहे हैं ॥ गाथा ॥ जधजादरूवजादं ॥ उप्पाडिदकेसमंसुगंसुद्धं ॥ रहिदं हिंसादीदो ॥ अप्पडिकम्मं हवदि लिंगं
४ ॥ मुच्छारंभविजुत्तं ॥ जुत्तं उवजोगजोगसुद्धीहिं ॥ लिंगं ण परावेक्खं ॥ अपुणब्भवकारणं जोण्हं ५ युगलं ॥ यथाजात
रूपजातमुत्पाटितकेशश्मश्रुकं सुद्धं रहितं ॥ हिंसादितो अप्रतिकर्म भवति लिंगं ॥ मूर्छारंभवियुक्तं युक्तमुपयो
गयोगसुद्धिभ्यां ॥ लिंगं न परापेक्षं अपुनर्भवकारणं जैनं ॥ टीका ॥ लिंगं एतादृसं भवति लिंग कहिये ॥ द्रव्य
लिंग सो एतादृसं कहिये ऐसा भवति कहिये होइ है ॥ कैसा है द्रव्यलिंग यथाजातरूप ॥ जातें कहिये जैसा नि
ग्रंथ परमानमात्र परिग्रहसेती भी रहित मुनिका स्वरूप होय है ॥ तैसा ही उत्पन्न हूवा है ॥ बहुरि कैसा है उत्पाटित
केसस्मश्रुकं ॥ उत्पाटित कहिये लोंच करि डारे हैं ॥ केशस्मश्रुकं कहिये सिर डाढी के बाल जिस विषैं ऐसा है ॥ ब
हुरि कैसा है ॥ सुद्धं कहिये समस्त पापग्रहतें रहित है ॥ तातें निर्मल है ॥ बहुरि कैसा है हिंसादितें रहितं ॥ कहिये

प्र·सा हिंसाअसत्यादिजुहैपापयोगतिनतैंरहितहै॥ वहुरिकैसाहै अप्रतिकर्मकहियेनांहीहै॥ सरीरकेसवारनें
१८५ साजनैंकीक्रियाजिसविषै॥ ऐसामुनीस्वरकेलिंगहोयहै। यथाजाततरूपधरकैंरागवेराहारे॥ जे
रागदोषमोहभावहैं॥ तिनकाजवअभावहोयहै॥ तवयहआत्माआपहीकरियएपादोमापिकयथाजा
तरूपधारककहोयहै॥ औरसिरदाढीकेवालनिकीरक्षानांहीहोयहै औरनिःपरिग्रहरूसाहोयहै॥ औरए
पक्रियातैरहितहोइहै॥ औरसरीरमंडनादिक्रियातैरहितहोयहै॥ जैसामुनिकास्वरूपवाह्यदशाहोर
है तैसाहीहोयहै॥ यहद्रव्यलिंगकास्वरूपजाननां॥ आगेअंतरंगलिंगकहियै॥ एतावसंजैरगंलिंगंभव
ति॥ एतावसंकहियेऐसाजैनंकहियेजिणप्रनीतं॥ लिंगंकहियेअंतरंगभावरूपलिंगसोभवतिकहियै
होयहै॥ कैसाहैभावलिंगमूर्छारंभविजुत्तंकहियैपरद्रव्यविषैमोहकरिममतारूपपरिनामकाजुआरंभ
तिसकरिरहितहै॥ वहुरिकैसाहैउपयोगयोगसुद्धिसंजुत्तं॥ उपयोगकहियेज्ञानदर्सनरूपचेतन्यपरिनो
म योगकहियेमनवचनकायरूपक्रियातिनकीजुसुद्धितांकहियेनिश्चलता॥ तिसकरिजुत्तंकहियेसंयु १८५
क्तहै॥ सुभासुभरूपरंजकतातैंरहितजोभावहोइ॥ सोउपयोगसुद्धिकहिये॥ औरजिसहीउपयोगकीसुद्धता

तैजुयोगपरिणतिगणितकैनिश्चलता । सोयोगसुद्धिकहिये । ऐसीदोयप्रकारसुद्धतासंजुक्तहै । बहुरिकैसाहै प
रद्रव्यकैसंनकहियेपरद्रव्यकेआधीणहोइवेकेनाही । भवतेंहै । स्वाधीणसुषरूपहै । बहुरिकैसाहै । पराअपुण
र्भवकारनहै । अपुनर्भवः कहियेंनैमोक्षतिसकाकारणकहिये । उपजावणहारहै । ऐसाअंतरंगलिंगजानना
भावार्थ । इसिआत्माकैऐसाअंतरंगकेविषैमुनिपदप्रकटहोहै । तैसाहीअवस्थाकरिजुस्वरूपकाहोनातिसका
नामभावितयथाजातरूपलिंगकहियै । तिसकेरोकणहारे । जेरागद्वेषमोहभावहै । तिणकाजबअभाव
होयहै । तबइसिआत्माकैसाहजीकमोक्षकाकारन । अहंकारममकारभावरहितउपयोगयोगकीसुद्धतासं
युक्तस्वाधीणअंतरंगलिंगप्रगटहोयहै । इसिप्रकारजबयहआत्माबाह्यचिह्नजानिकरि । अरुअंतरंगचिह्नजान
करियथाजातरूपकाधारकहोहै । तबइसिकैमुनिपदकहनाहै । आगैदोयप्रकारकेलिंगकोंअंगीकारक
रिकै । औरभीक्रियाकरिकैमुनिहोइहै । ताकैकुटंबलोककेपूछनआदिक्रियातेलेकरि । आगेंजेसमस्ताक्रि
याहै । मुनिपदकीपूर्णतातांइ । तिससमस्तक्रियाकाजबयहएककर्त्ताहोयहै । तबइसिकेंनिश्चितमुनिपदवी
कीसिद्धिहोइहैयहकहैहै । गाथा । आदायतंपिलिंगं गुरुणापरमेणतंणमंसित्ता । सोच्चासवदकिरिय

उवहिदोहोइसिसोसमणो॥ ६॥ आदायतत्तदपिलिंगं॥ गुरुणापरमेणातंनमसित्ता॥ सुणाससव्रतोक्रिया॥ सुपस्थि
तोभवतिसश्रमणः॥ टीका॥ परमेणगुरुणातदपिलिंगआदाय॥ परमेणकहियेउत्कृष्टजेहैगुरुणाकहियेअ
र्हंतकेवली॥ अथवादीक्षादेणहारा॥ आचार्यगणतिणानेउपदेसकरिदीनाजुहैतदपिलिंगकहियेसोदोयप्रका
रका॥ द्रव्यभावभेदकरिलिंग॥ तिसहि आदायकहियेअंगीकारकरिकैवहुरि॥ तंनमस्कृत्यंतंकहियेसोदीक्षा
कादेनहारा॥ अर्हंत॥ अथवाआचार्य॥ तिसहि॥ नमस्कृत्यकहियेनमस्कारकरिकैं॥ वहुरिसव्रतांक्रियांश्रुत्वा म
व्रतांकहिये॥ पंचमहाव्रतसहितजुहै॥ मुनिकीक्रियाकहिये॥ आचारविहितिमहिश्रुत्वाकहिश्रुत्वाकहियै
सुणिकरिसउपस्थितः श्रमणः भवतिसकहियेसोमुनिपरकावाछकगुरुपैउपस्थितः कहियेमुनिपद
कोसकाव्रतापकरिअवलंवनकरतिसैहै॥ जवऐसाहोइहै॥ तवसववियेसमद्रष्टिकरिकैश्रमणः॥ भवतिक
हियेपरिपूर्णसाक्षात्मुनिहोयहै॥ भावार्थ॥ जोमुनिहुवाचाहैहै॥ सोप्रथमहीगुरुपैउपदेसतेदोयप्रका
रकेलिंगकौधरैहै॥ सोदोइप्रकारलिंगगुहणो॥ व्यवहारकरिदियाकहिये॥ काहेतेजातेगुरुणोद्रव्यभाव।
लिंगकीविधिवताई॥ तातेदाताकहियै॥ औरयहसिष्यजववरसिलिंगकौअंगीकारकरैहै॥ तवपीमानै

जो कदाचित । प्रमत्त कहिये प्रमादी होय अप्रमत्त । कहिये मुनि तौ छेदोपस्थापक भवति कहिये प्रमाद दूर
करि हाइ है संजम का छेद तिस कूं फेरि थापना हारा होइ है ॥ भावार्थ ॥ अट्ठाईस मूलगुणनि विकल्प
सामायक के भेद हैं । तातैं ए मुनि के मूलगुन हैं । इन ही तैं मुनिपद की सिद्धि है । जो कदाचित अट्ठाईस मूलगुन
निविषै काहू एक भेद विषै प्रमादी होय । तौ निर्विकल्प सामायक का भंग होइ । तातैं इनि भेदनि विषै साव
धान योग्य है । जो नाना भेदरूप इस भेद विषै संजम का भंग हुवा है । ता ही भेद विषै फेरि आत्मा कौं थापै । तातैं
छेदोपस्थापक होय है । जैसैं कोई पुरुष सोने का लाहक है । तिस पुरुष कौं जेते सोने के कंकन कुंडल मुद्रिकादि
क पर्याय के भेद हैं तेते सब ग्रहने का ल्यानका रो है । यौ नाहीं कि सोना ही ग्रहना योग्य है । तिस के भेद ग्रहणे
योग्य नाहीं । जो भेद कौं ग्राह्य है । तो सोने की प्राप्ति कदाचित न होइगी । सोना तौ तिनि भेदरूप है । तातैं सोने के स
व पर्याय भेद ग्रहणे योग्य है । तैसैं ही निर्विकल्प सामायक संयम का जो अभिलाषी । ताकौं तिस सामाय
क के भेद अट्ठाईस मूलगुण भी ग्रहने योग्य है । जातैं सामायक ही निर्मल गुणरूप है । तातैं इनि विषै साव
धान है । जो कदाचित भंग होय तौ फेरि थापै । आगें जैसे इस मुनि के दीक्षा का दायक आचार्य गुरु

प्र॰सा है॥ तैसैंइसिकैंसंयममैंभंगहूवाहोइ॥ तौउपदेसदेकरिसंयमकेभेदविषैथापै॥ ऐसाभेदकावनावणाहा
१४७ रा॥ ओरभीइसिकागुरुहोइहै यहकहैहै॥ गाथा॥ लिंगगहणेतेसिंगुरुत्तिपव्वज्जदायगोहोदि॥ छेदेसुअ व
ट्ठवगा॥ सेसानिज्जावयासमणा॥ १०॥ लिंगग्रहणे तेषांगुरुरितिप्रव्रज्यादायकोभवति॥ छेदयोरुपस्था
पका॥ सेषाः निर्यापकाःश्रमणाः॥ टीका॥ तेषांलिंगग्रहणे॥ गुरुःप्रव्रज्यादायकः इतिभवति॥ तेसांकहियेजे
सर्वविरतिमुनिकहेहैतिनिकेलिंगग्रहनेकहियै॥ मुनिलिंगकेग्रहनअवस्थाविषै गुरुः कहियेजोगुरुहोय
है॥ सोप्रव्रज्यादायकः॥ कहियेदीक्षाकादेनहारा॥ इतिकहिये ऐसाभवतिकहियेहोयहै॥ भावार्थ॥ प्रथम
हीजिसआचार्यपासितै॥ मुनिपदकीदीक्षालीजियेहै सोगुरुदीक्षादायकऐसानामकहियै॥ छेदयोउ
पस्थापकाकहियै॥ सेषाः श्रमणाः निर्यापकाः छेदयोःकहियै एकदेसकेभेदकरिदोयप्रकारजुहै॥ छेद
संजमकेभंग॥ तिनकेउपस्थापकाःकहियैफिरिउपदेसदेकरिथापनहारेजेहै॥ सेषाः कहियैओरुआ
चार्यश्रमनाः कहियै॥ पत्याचारकेविषैअतिप्रवीणमहामुनितेनिर्यापकाकहियैनिर्यापक॥ ऐसे
नामगुरुकहियै॥ भावार्थ॥ दीक्षालियेंउपरांतिअंतरंगएकदेसजोएकदेसंयमकाभंगहूवाहोय॥ पा १४७

कि गुरुनै मो कौं यह मुनिपद दीना ऐसी भावना करि तन्मय होय है। पाछै गुरु कौं परम उपकारी जानि नम
स्कार करै है। पाछै बहुत भक्ति स्यौं स्तुति करै है। बहुरि सर्व पापयोग की क्रिया के हरिकरनेहारे सु है। पंच महा
व्रतिनिन कौं पत्याचाररूप मूलगुण तातै सुगुण है। बहुरि जे सामिति हैं तिन विषै रंच की गौंण सुद्ध समित सादृश्य। आ
त्मा कौ स्वरूप कहा है। तिसा ही ज्ञान ताय कौ रागद्वेष तै रहित सामायक दसा कौं प्राप्त होय है। बहुरि प्रतिक्र
मण आलोचना प्रत्याख्यान का स्वरूप मूलगुण तातै सुगुण है। मुनि करि तीन काल वे कर्म हृत्त ।। भिन्न आपने
स्वरूप कौ अनुभवै है। तीन काल कै मन वचन काय की क्रिया तै रहित है। स्थिर रूप कै प्राप्त होय है। बहुरि
जि सिस्य रीसकी गृह्य पातै यातै पाप होय। ऐसें काय पयोग का त्यागी होय है। यथाजात स्वरूप कौं धारि एकाग्रता
करि तिष्ठै है। नव ग्रंथ संपूर्ण क्रिया होहि। तब मुनि पद कौं प्राप्त होय है। आगै ऐसी इन सामायक दसा
कौं। यद्यपि मुनि प्राप्त भया है तथापि काहू काल विषै छेदोपस्थापक होय है। यह कथन करै है। गाथा ।। व
दसमिदिंदियरोहो। लोचावस्सकमचेलमण्हाणं। खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥ ७
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता। तेसु पमत्तो समणो छेदोवट्ठावगो होदि ॥ ८ युगलं ॥

प्र° व्रतसमितींद्रियरोधो ‖ लोचावस्यकमचेलकमस्नानं ‖ क्षितिशयनमदंतधावनं ‖ स्थितिभोजनं
१८७ एकभोक्तं च ‖ एते खलु मूलगुणाः श्रमणानां जिनवरैः प्रज्ञप्ताः ‖ तेषु प्रमादे ‖ श्रमणश्छेदोपस्था
पको भवति ‖ टीका ‖ जिनवरैः श्रमणानां एते मूलगुणाः खलु प्रज्ञप्ताः ‖ जिनवरै कहिये सर्व वीतरा
गदेव तिहनि ‖ श्रमनानां कहिये मुनीस्वरनिके एते कहिये प्रत्यक्ष मूलगुणाः कहिये जिनि करि यतिपद
रहै है ‖ ऐसे अट्ठावीस मूलगुण सो खलु कहिये निश्चय सों ‖ प्रज्ञप्ता कहिये कहे है तेई मूलगुन कौंण
है ‖ व्रतसमतींद्रियरोध कहिये पापयोगनि ते रहित पंचमहाव्रत ‖ और इन ही पंच महाव्रत के
रक्षा निमित्त पंच समिति ‖ और पंच इंद्रियनिका निरोध ‖ और लोचावसयक कहिये बालनीका लोच
अरु षट आवास्यक क्रिया ‖ अचेलकत्व कहिये दिगंबरत्व ‖ अस्नान कहिये अंगप्रक्षालन क्रिया ते र
हित होना ‖ क्षितिसयन कहिये भूमि विषै सोवना ‖ अदंतधावन कहिये दातोंन का न करना
स्थितिभोजन कहिये खड़ा होइकै भोजन करना ‖ बहुरि एकभक्त कहिये एक बार भोजन ए अट्ठा
वीस मूलगुन जानने ‖ तेषु प्रमत्तश्रमनः छेदोपस्थापकः ‖ भवति तेषु कहिये तिनि मूलगुननि विषै १८७

छेदोजिसगुरुकेउपदेसतेफिरितिससंयमकीथापनाकीजैसौबहुगुणनिर्यापकऐसेनामकहियै॥ औरजे
संयमकासर्वथानासहोइजाहोय॥ सोसंयमजिसगुरुकेउपदेसतैंफिरिअंगीकारकियो॥ सोभीगुनिर्याप
ककहियै॥ आगेंयोसंजमरूपवृक्षकाभंगहुवाहोयपतो॥ निसकेजोरनैकरविधाणदियावेहै॥ गाथा॥ पयदं
ह्निसमारद्धे॥ छेदोसमणस्सकायचेट्ठम्मि॥ जायदिजदितस्सपुने॥ आलोयणपुव्विवियाकिरिया॥ १९॥ छेदा
विजुत्तोसमणो॥ समणंववहारिणंजिणमदम्मि॥ आसेज्जालोयचित्ता॥ उवदिट्ठंतेणकायव्वं॥ २०॥ युग्मं
प्रयत्नायांसमारब्धायां॥ छेदः श्रमणस्यकायचेष्टायां॥ जायतेयदितस्यपुनः॥ आलोचनपूर्विकाक्रि
या॥ छेदोपयुक्तःश्रमणः श्रमणंव्यवहारिणंजिनमते॥ आसाद्यालोच्योपदिष्टंतेनकर्त्तव्यं॥ टीका॥ प्रय
त्नायांसमारब्धायांकायचेष्टायां॥ कायचेष्टायां॥ परिश्रमणस्यछेदःजायते॥ प्रयत्नायांकहियेजतन
लियें॥ समारब्धायांकहियेआरंभीहै॥ कायचेष्टायांकहियेशरीरकीक्रियातिसकेहोतसं॥ यदिकहिये
जोश्रमणकहियेमुनिकेंछेदः कहियेसंयमकाभंगः जायतेकहियेउपजैहै॥ तदातस्यआलोचनपूर्विक
क्रिया॥ तदाकहियेतौतस्यकहियेतिसमुनिकै॥ आलोचनापूर्विकाक्रियाकहियेजैसीदछपत्याचारम

प्र.सा याविषै आलोचनादिक्रियाकरितेसौहीनुकरनीसोउपायहै ॥ ऐसेंप्रयुक्तः अथनः कहियेअंतरंगउप
१५८ योगरूपयतिपद ॥ जिसकैंभंगहुवाहोइ ॥ ऐसाजुहैमुनि ॥ सोजिणमत्ते ॥ ववहारेणं ॥ अमणं ॥ आसाध
आलोयनिणमत्तेकहियेवीतरागमार्गविषै ॥ ववहारेणंकहियै ॥ एयतिक्रियाविषैजुप्रवीनहै ॥ श्रमनं
कहियेमहामुनि ॥ तिसकैंआसाधंकहियेअंगीकारकरि ॥ आलोचयकहियेअपनादोषप्रकासिकरि
तेणाउपदिष्टकर्त्तव्यं ॥ तेणाकहियेतिसमहामुनिकरिजुउपदिष्टंकहिये ॥ उपदेस्याहै ॥ मुनिपदभंगदंड सो
कर्त्तव्यंकहियेकरनायोग्यहै ॥ भावार्थ ॥ संयमकाभंगदोयप्रकारहै ॥ एकबहिरंगहै ॥ एकअंतरंगहै ॥ उपयो
गविनारीरहोकैंगक्रियातेनोभंगहुवाहोइ ॥ सोबहिरंगकहियै ॥ औरजोउपयोगकरिभंगहूवाहोयसोअं
तरंगकहिये ॥ यहदोयप्रकारसंयमकाभंगहै ॥ जोमुनिअंतरंगविषैउपयोगकौंनिर्मलत्नाहैस्यासंयम
विषैसावधाणहै ॥ बहिरंगचलनाबैठनाउठनाउठना ॥ सोवनाइत्यादिशरीरकीक्रियाविषैयत्नसेतौ
प्रवर्त्तैहै ॥ औरजोयत्नकरतेसंते ॥ किसहीएकप्रकारतैशरीरमात्रहीकीक्रियातेंउपयोगविनाहीसंय १५८
मकाभंगहुवाहोयतौ ॥ तिसमुनिकैंसर्वथाप्रकारअंतरंगविषैसंयमकाभंगहुवानाहीं ॥ काहूजाति

कावहिरंगहै । तिसिमुनिकैं निसंसंयमकै थापणैकौ उपाय आलोचनादिक्रियाहै आलोचनादि
क्रियाहोसोतिसदोषकैनिवर्तहोयहै ॥ औरजोअंतरंगविषैउपयोगकरिसंयमकाघातहुवाहोयतो प्र
हस्राक्षात्संयमकाघातहै । तबमुनिइसिदोषकैनिवारनैकौं जो आचार्यमहामुनिभगवंतकथितव्य
वहारमार्गविषैप्रवीणहोय । तिसपासिनायकरि अपनादोषप्रकासै ॥ आलोचनादिकक्रियाकरै
औरजुवहआचार्यसंयमकैसाधणकौउपायक्रियाआचरनवतावैहै । तिसकौअंगीकारकरै इ
सिप्रकारसैनमकौथापै । यहदोषप्रकारअंतरंगवहिरंगसंयमकाछेदोपस्थापकजाननां ॥ आगैमु
निपदकैभंगकाकारनपरद्रव्यनिकैसंबंधहै । तातैपरद्रव्यातिकासंबंधनिषेधैहै यहकथनकरै
है ॥ गाथा ॥ आधिवासेवाविवास । छेदविहूणोभवीय सामराये । समणोविहरदुनिच्चं ॥ परि
हरमाणोणिबंधाणि ॥ १३ ॥ अधिवासेविवासेछेदविहूणोभूत्वाश्रामण्येसमनोविहरतुनित्यं । परिहरमा
णोनिबंधान ॥ टीका ॥ श्रमनः अधिवासेवाविवासेविहरतु ॥ श्रमनः कहियेजोसमताभावलीनताम
होमुनिहै सो अधिवासे कहिये आत्माकेविषै आत्माकौअंगीकारकरिवसो ॥ अथवानहांगुरुहैं

वासहोय। तहां तातैं निरन्यगुरुनि कौ संगति विषै रहौ वा विवासे कहियै। अथ वा तैं निगुरुनि के पासि तैं
और जागैं विहरत कहियैं विहार कर्म करहु। भावार्थ। जो मुनि अपनैं गुरुनि पासि रहै तौ बहुत भली है
अथ वा जो और जागें रहै तौ बहुत भला है। परंतु कैसा है तसे तो करहु है। नित्यं निबंधानं। परिहरमाणः
नित्य कहियै सदा काल निबंधाग। कहियै परद्रव्य रूप जु है स्थान तिहां विषय सबंध तिन नहीं। परिहरमानः
कहियै। त्यागत संता। वहुरि कहा करि कहु है। श्रामण्ये छेद विहीनो भूत्वा। श्रामण्य कहियै समताभा
वरूप यति। अवस्था विषै छेद कहियै अंतरंग बहिरंग के भेद करि दोय प्रकार मुनिपद का भंग तिस करि
विहीनो भूत्वा कहियै रहित होय करि। भावार्थ। मुनिपद के कारण परद्रव्य के संबंध है। काहे तैं जातैं
परद्रव्य कै संबंध तैं। अवश्यमेव। उपयोगभूमिका विषै रागभाव होय है जहां रागभाव होइ। तहां वीत
रागभाव रूप जु है यतिपद तिस का भंग होय है। तातैं परद्रव्य के संबंध करि उपयोग की अशुद्धता के कारण
है। तातैं मुनि को सर्वथा निषेध है। नव परद्रव्य का संबंध मुनि के दूरि होय। तब सहज ही अंतरंग बहिरंग
से नम का घात न होय। निर्दोष मुनिपद की सिद्धि होइ तौ। ऐसा पद रसतैं विरक्त वीतरागभाव लीराम

नीकहूंतोरहै॥ अथवा॥ औरज्ञागैरहै॥ सवज्ञागैनिरदोषहै॥ औरजेपरद्रव्यनिविषैरागादिदोषहोयतौ
सवज्ञागैसैयमकाघातीहै॥ अरुमहांसदोषीहै॥ तातैंपरद्रव्यकेसंबंधरूपनिकौसर्वथानिषेधहै॥ आगें
मुनिपदकीपूरणताकाकारण॥ अपनेआत्माकासंबंधहै॥ तातैंआत्माविषैलगनायोग्यहै॥ यहकथ
नकरैहै॥ गाथा॥ चरदिणिबद्धोणिच्चं॥ समणोणाणम्मिदंसणमुहम्मि॥ पयदोमूलगुणेसुय॥ जोसोपडि
पुण्णसामण्णो॥ २४॥ चरतिनिबद्धोनित्यं॥ श्रमणोज्ञानेदर्शनमुखेप्रयतोमूलगुणेषुच यःसपरिपूर्ण
श्रामण्यः॥ टीका॥ यः श्रमणः दर्शनमुखे ज्ञानेनिबद्धः नित्यंचरति यः कहियेजोश्रमणः कहियेमुनि
दर्सनमुखेकहियेसम्यग्दर्सनआदिअनंतगुणसंयुक्तहै॥ ज्ञानेंकहियेज्ञानस्वरूप॥ आत्मातिसवि
षैनिबद्धः कहियेरत ● नित्यंकहियेसदाकाल॥ चरतिकहियेप्रवर्तै॥ बहुरिजोमुनिमूलगुणेषुप्र
यतः॥ मूलगुणेषुकहिये॥ अठाबीसमूलगुणनिविषैप्रयतः कहिये॥ यतनसैंतीसावधानहै॥ जोऐसे
सामुनिहैसपरिपूर्णश्रामण्यः सःकहियेसोवहमुनिपरिपूर्णःकहिये॥ अंतरंगबहिरंगसैंयमभंगतैर
हितअखंडितहै॥ श्रामण्यः कहियेयतिपदजिसकैंऐसापरिपूर्णमुनिपदकाधारकहोयहै॥ भावार्थ

प्र॰सा अथ ऐसें आत्माविषै अनुरति होंना है। सो परिपूरण मुनिपदवी का कारन है॥ काहेतैं जातैं आपविषै जब पर
१५० रत होय है। तब इसकै परद्रव्यविषै ममत्वभाव छूटै है जहां परद्रव्यतैं विरक्त होय है तहां इसका उपयोग निर्मल
होय है। जहां उपयोग की निर्मलता है। तहां अवश्यमेव मुनिपद की सिद्धि होय है। तातैं आत्माविषै रत हों
ना परिपूरण मुनिपद का कारन है। यह जानि करि ज्ञानादर्शनादिक जे हैं अपने अनंत गुण तिनि विषै
अपना सर्वस्व जानि रत होंना योग्य है। और अट्ठावीस मूलगुणनिविषै यत्नसौं प्रवर्त्तना योग्य है
जातै यह बात सिद्ध भई। कि मुनिपद की पूर्णताई। एक आत्मविषै रति होंनेतैं है। अन्य परद्रव्य का संबं
ध त्याज्य योग्य है। आगें मुनिकै निकटवर्ती। यद्यपि सूक्ष्म परद्रव्य भी है। तथापि तिनविषै इस मुनिकौं
रागभाव करि संबंध निषेधै है। यह कहै है। गाथा। भत्ते वा खवणे वा। आवसधे पुनो विहारे वा॥ उवधि
म्हि वा णिबद्धं। णेच्छदि समणम्हि विकधम्हि॥ २५॥ भक्ते वा क्षपणे वा आवसथे वा पुनर्विहारे वा। उ
पधौ वा निबंधं नेच्छति। श्रमणे विकथायां॥ टीका॥ एतेषु निबंधं नेच्छति। जो महा मुनि है। सो एते सूक्ष
हियेइ इनि निकटवर्ती परद्रव्यरूप परिग्रह है। तिन विषै निबंध करिये। ममत्वभाव करि संबंध तिसा रहन १५०

ख्यातिकहियेनाहीचाहैहै। तेवेपरद्रव्यकौनकौनहै। तिनिविषैरागगृहवाससंबंधनांहीकरैहै भक्तेकहिये
आहारविषै। वाकहियैअथवाक्षपनेकहियेउपवासविषै। वाकहियैअथवा। आवासथकहियेगुफा
दिवासविषैवाकहियैअथवाविहारकहियेविहारकर्मविषै। वाकहियैअथवा। उपधीकहियेदेहमात्रपरि
ग्रहविषै। वाकहियैअथवाश्रमनेकहियेअन्यमुनिविषै। वाकहियैअथवाविकथाकहियेधर्मच
र्चाविषै। एतीजातिकेपरद्रव्यविषैसंबंधमुनिनाहीचाहैहै। भावार्थ। यद्यपिमुनिपदकानिमित्तकारन
सरीरहै। सरीरकाआधारआहारहै। तिसकौमुनिग्रहैहै। औरअपनेशरीरकीसक्तिमाफिकसुद्धात्म
कैविषैनिश्चलथिरताकेनिमित्तउपवासभीकरैहै। औरमनकीचंचलाईकेनिरोधवेकौएकांतपर्व
तकीगुफादिककावासअंगीकारकरैहै। औरसरीरकीप्रवृत्तिकेनिमित्तआहारक्रियाविषैविहार
कर्मभीकरैहै। औरमुनिपदवीकेनिमित्तकारनहै। ऐसासरीरमात्रपरिग्रहभीहै। औरयद्यपिगुरु
अथवासिष्यकेभेदकरिपठनपाठनअवस्थाविषैअन्यमुनिकाभीसंबंधहै। औरयद्यपिसुद्धात्म
द्रव्यकीविराधनीपुद्गलीकसब्दविलासकरिविकथाचर्चाभीहै। इत्यादिमुनिकेपरद्रव्यरूपपरिग्र

प्र॰सा हहै॥ तथापिईनिविषैममत्वबुद्धिरूपचिंतप्रतिकारसेवंधनिषेधहै॥ यद्यपिमुनीनेसकलपरद्रव्यकाः
१५१ त्यागग्रथमहीकियाहै॥ तथापिमुनिपदकेविषैभीईसिनातिकातत्त्वसम्परद्रव्यहै॥ तथापिईसिकेवि
षैममत्वभावनाहोकरहै॥ तोईसविषैभीममत्वभावकरैतो॥ शुद्धात्मप्रवर्त्तरूपमुनिपदकाभंग
होई॥ तातेंसूक्ष्मपरद्रव्यविषैभीसवंधनिषेधहै॥ आगेकहेहैंकिमुनिकेशुद्धोपयोगरूपयतित्वका
कौभंगहै॥ गाथा॥ १५ अपयत्ता वा चरिया॥ सयणासणठाणचंकमादीसु॥ समणस्ससव्वकाले
हिंसासासंततियत्तिमदा॥१५॥ अप्रयत्नावाचर्या॥ शयनासनस्थानचंक्रमणादिषु॥ श्रमणस्यसर्व
कालेहिंसासासंततेतिमता॥ टीका॥ वाश्रमणस्यशयनासनस्थानचंक्रमणादिषु॥ याअप्रयत्ना
चर्यासासर्वकालेसंतताहिंसा॥ इतिमता ऐकतोमुनिपदकेभंगकाकारणपरभावनिविषैममत्वकरि
संबंधकहा॥ अबऔरप्रकारभीसंयमघातबतावैहै॥ वाकहियेअथवाश्रमणस्यकहियेमुनिकै
शयनासनकहियेसोवना॥ स्थानकहियेबैठना॥ चंक्रमनादिषुकहियेचलनाईत्यादिअनेकक्रिया
निषै॥ याकहियेजुमुनिकेअप्रयताकहियेयतनबिनाही॥ चर्याकहियेप्रवर्त्तिहोईसाकहियेसोप १५१

तनरहितप्रवर्ति ॥ सर्वकालें कहिये सदाकाल संततता कहिये ॥ अर्थ इतिरूपहिंसा कहिये चैतन्यप्रानविना
सिनोहिंसाइतिकहिये ऐसेंनाम ॥ मता कहिये वीतरागसर्वज्ञदेवकहीहै ॥ भावार्थ ॥ संयमका घात असु
द्धउपयोग है काहेतें नातें मुनिपदसुद्धोपयोगरूपहै ॥ असुद्धोपयोगतें मुनिपदका नास है ॥ औरअसुद्धो
पयोगका जु होना सो ही हिंसा है ॥ काहेतें नातें असुद्धोपयोगके होतें सुद्धोपयोगरूप आत्मीकभावप्राणका
नास होय है तातें वडी हिंसा ज्ञानदर्सनरूप सुद्धोपयोगके घाततें होई है ॥ सो सुद्धोपयोग मुनिके निरंतर स
दाकाल तब जानिपैं ॥ जबमुनिसोवनाबैठनाचलना ॥ इत्यादिक्रियानिविषैं ॥ यतनसौं प्रवर्ते ॥ यतन
विनामुनिके क्रियाअहारादि समलगनकी घाततिनी है ॥ यतनतें तब हीनाही होती जब ईसकैं ॥ उपयोगकी
चंचलताई है ॥ जो उपयोगकी चंचलताई न होइ ना यतनतें अवस्य होय ॥ तातें उपयोगकी जु निश्चलता ई
सो सुद्धोपयोग है ॥ सो सुद्धोपयोग यतनसहित क्रियासैं भंग होता नाही ॥ यतनरहित क्रियासैं भंग होइ
है ॥ तातें यह वात सिद्धि भई ॥ जो मुनिकै यतनरहित क्रियानिविषैं प्रवृति है ॥ सो सवनिरंतर सुद्धोपयोगरू
पसंयमकी घात नहारीहिंसा होय है ॥ तातें मुनिकौं यतनस्यौं रहना योग्य है ॥ आगैं अंतरंगकेभेदकरि संयम०

प्र.सा केघातकेदोयभेददिखावैहै ॥गाथा॥ मरउवजीवदुजीवो॥ अयदाचारस्सनिछिदाहिंसा॥ पयदस्सणत्थि
१५२ बंधो॥ हिंसामित्तेणसमिदीसु॥ १६॥ म्रियतांवाजीवतुवाजीवो॥ अयताचारस्यनिश्चिताहिंसा॥ प्रयतस्य
नास्तिबंधोहिंसामात्रेणसमितिषु ॥टीका॥ जीवः म्रियतांवाजीवतुवा॥ अयताचारस्यानिश्चिताहिं
सा॥ जीवः कहिये आत्माजीवसमनिकौहलनचलनादिक्रियाकरि॥ म्रियतांवाकहिये॥ अथवामरो॥ जी
वतुवाकहियेअथवा॥ जीवहुअयताचारस्यकहियें॥ जोमुनियतनरूपोहलनचलनादिक्रियानिविषे
नाहीप्रवर्तेहै॥ आरयतनलियें॥ जिसकेआचारनांहीतिसिमुनिकें॥ निश्चिताहिंसाकहिये॥ होवतार
स्यौंहिंसाहोहोयहै॥ समितिषुप्रयतस्यहिंसामात्रेणबंधः नास्ति॥ समितिषुकहिये॥ पंचसमितिनिविषैप्र
यतस्यकहिये॥ जोमुनियतनरूपोप्रवर्तेहै॥ तिसिमुनिकेंहिंसामात्रेणकहियेबाहिरंगजीवकेघाततेमात्र
तैंबंधः॥ नास्तिकहियेबंधनांहीहै ॥भावार्थ॥ हिंसादोयप्रकारहै॥ एकअंतरंगएकबाहिरंग॥ असुद्धोपयो
गरूपजुप्रवर्त्तिसोतोज्ञानप्राणकोघातविनासनहारी॥ अंतरंगहिंसाकहियें॥ बाहिरअन्यजीवकेप्राननि
कानुघातहोनासोबहिरंगहिंसाकहियेंईनिदोऊभेदनिविषैअंतरंगहिंसाबलवतीहै॥ काहेतेंजातें १५२

चारित्रकेविषैअन्यजीवकाघातहोहु। वामतिहोउजोमुनिकैंपतनरहित। हलनचलनादिक्रियाहोइ तो
तिसमुनिकैंपतनरहितआचारकरिअवस्यमेव। उपयोगकीचंचलताहै। तातैंअसुद्धोपयोगहै। जहां
असुद्धोपयोगहैतहांआत्मीकचैतन्यप्राणकाघातहै। तातैंअवस्यमेवहिंसाहै। औरजोमुनियतनस्यो
पंचसमितिनिविषैंप्रवर्त्तैहै तोउपयोगकीनिश्चलतास्यौं। सुद्धोपयोगरूपसंयमकारक्षकहै। तातैंजोवाहि
रकदाचितपरजीवकाघातभीहोयहै। तोभीअंतरंगअहिंसकभावकेबलतेंबंधहोतानाहीं। तातैंसुद्धोपयो
गरूपसंयमकाविनासनहारीअंतरंगहिंसाबलवंतीहै। अंतरंगहिंसासोंअवस्यमेवबंधहोइ। औरजो
पतननहोइ। तोअवस्यबाहिरंगहिंसाभीबंधकौंकारनहै। औरबाहिरंगहिंसाभीजुमनकीनीहै। सोभीअंत
रंगहिंसाकेनिवारिबेकेंनिमित्त तातैंअंतरंगहिंसासर्वथात्याज्यहै। सुद्धोपयोगरूपअहिंसकभावअंगीका
रकरतव्यहै॥ आगेकहैहैंकिसर्वथाप्रकारअंतरंगहिंसासुद्धोपयोगरूपसंयमकीघातनहारीहैतातैंनिषे
धनीयोग्यहै॥गाथा॥ अयदाचारोसमणो। छस्सुविकाएसुवंधगोत्तिमदो। चरदिजदंजदिणिच्चं। कम
लंवजलेनिरुवलेवो॥१७॥ अयताचारःश्रमणः षट्स्वपिकायेषुवंधकइतिमतः। चरतियतंयदिनि

त्वंकमलमिवजलेनिरुपलेपः टीका॥ अयताचारः श्रमणः॥ षट्स्वपिकायेषुवधकः ईतिमतः अयताचार
प्र·सा कहियेनाहीहै॥ यत्नपूर्वकआचारक्रियानिसवै ऐसाजुहै श्रमनः कहियेमुनिसोषट्स्वपिकहियै छ
१५३ हूंहैं॥ कायेषुकहियेषट्जीवकायपारिछीवनिविषै॥ वधकः वधकाकरनहाराईतिकहियै॥ ऐसामतः क
हियेवीतरागदेवनेंकहाहै॥ भावार्थ॥ जबउपयोगरागादिभावकरिदूषितहोय॥ तबअवश्यमेवपतिक्रि
याविषैसिथिलहुवामूलगुननिविषैयतनरहितक्रियाहोयहै॥ जहांयतनरहितक्रियाहोय॥ तहांअवश्यमे
व॥ असुद्धोपयोगकाअस्तित्वहै॥ यतनरहितकरियेषट्कायकीविराधनाहै॥ तातेंअसुद्धोपयोगीमुनिकैं
हिंसाकेभावतेंबंधहोयहै॥ यदिनित्यंयतंचरति यदिकहियैजोमुनीस्वरनित्यंकहियैसदाकालयतंकहियै
यत्नक्रियाविषैयतनकरिचरतिकहियेआचरैहै॥ तदाजलेकमलमिवनिरुपलेपः तदाकहियेतौभ्या
मुनिजलेंकहियैपानीविषै॥ कमलमिवकहियैकमलकीनांई॥ निरुपलेपः कर्मबंधरूपलेपतेंरहितहै
है॥ भावार्थ॥ जबमुनिकाउपयोगरागादिभावकरिरंजितनहोयतबअवश्यमेव॥ पतिक्रियाविषैसा १५३
वधानहुवायतनसोंपरवर्त्तैहै तबसुधोपयोगकाअस्तित्वहोयहै॥ अरुयतनपूर्वकक्रियासोंजीव

की विराधना कैं ईसकैं अैसभी नांही ॥ तातैं अहिंसक भावतैं कर्मलेपनातैं रहित हैं ॥ और पतन करनैं सें तै
नो कदाचित परजीव का घात भी होइ जाइ ॥ तौभी सुद्धोपयोगरूप अहिंसकभाव के अस्तित्वतैं कर्मलेप
न लागै ॥ जैसें पद्मपत्र कमल जल मैं बूडि रहै है ॥ तथापि अपने अपने सुभाव निर्लेप रहै है तैसें यह मुनि रह
यहै ॥ तातैं सर्वथा प्रकार निजनिज निभावनि करि सुधोपयोगरूप अंतरंग संयम का घात होइ ॥ तैं तैं भावनि
वंधहै ॥ और अंतरंग संयम का घात का कारण परजीव की बाधारूप बहिरंग ॥ संयम का भी घात सर्वथा
न्यान्य है ॥ आगैं सर्वथा प्रकार अंतरंग संयमघात का कारण परिग्रह है ॥ तातैं मुनिकौं सर्वथा परिग्रह हनि
षेध है यह कहै हैं ॥ गाथा ॥ हवदि व न हवदि बंधो ॥ मदेहि जीवेध कायचेट्ठम्मि ॥ बंधो धुवमुवधीदो इदि
समणा छड्डिया सव्वं ॥ १८ ॥ भवति वा न भवति बंधो मृते हि जीवे ऽथ कायचेष्टायां बंधो ध्रुवमुपधेरिति श्र
मणाः त्यक्तवंतः सर्वं ॥ टीका ॥ अथ कायचेष्टायां जीवे मृते सति हि बंधः ॥ भवति वा न भवति ॥ अथ क
हियै आगें मुनिका परिग्रहतें संयम का घात दिखावै है ॥ कायचेष्टायां कहियै सरीर की हलन चलनादि
क्रिया होतसंतै ॥ जीवे कहियै त्रसथावर जीवे मृते सति कहियै मुएँ संतैं कहियै निश्चयसैं बंध ॥ कहियै

प्र.सा
१५५
कर्मलेपो भवति कहिये होय है। वा कहिये अथवा न भवति कहिये नाही भी होय है ॥ भावार्थ ॥ मुनिके सरीर
की हलनाचलनादिक्रिया करि। परजीवका जु घात होय है। तिस घात करि मुनिकै सेथां प्रकर्मबंध होता नां
ही। होय भी औरु नाभी होइ है। अनेकांत है। एकांत नियम नाही। जो अंतरंग सुद्धोपयोग है। तो बंध ना होय -
और जो असुद्धोपयोग है तो बंध होइ। तातैं बहिरंग परप्राणघाततैं सुद्धासुद्धोपयोगकै होने अनहोनेकै
रि बंध होय भी न भी होइ। परं उपधितः बंधः ध्रुव एव उपधितः कहिये परिग्रहतें मुनिकें बंध कहिये कर्मलेपः ध्रु
व कहिये नीकतासौ होइ। इति श्रमणाः सर्वं त्यक्तवंतः इति कहिये ऐसा जाणि करि। श्रमनाः कहिये महा मुनी
सर अरहंत देव। सर्वं कहिये समस्त ही परिग्रहकों पहिलै ही त्यक्तवंतः कहिये छोरते हुये ॥ भावार्थ ॥ मुनिके
परजीवके घाततैं बंध होय भी न भी होय परंतु जो मुनि परिग्रहका ग्रहन करै तो। अवस्य बंध होइ। होय भी न
भी होइ। ऐसा नाहि। अवस्य निश्चय सौं होइ। होइ काहे तैं जातैं परिग्रहके ग्रहनतें सर्वथा प्रकार असुद्धोपयो
ग न होइ है। तातैं अंतरंग संयमके घाततैं। निश्चय सौं बंध होइ है। अंतरंग कोंल गणा विना परिग्रहका ग्र
हन कदाचित न होइ। अंतरंग भाव विना। सरीरही की चेष्टा करि कदाचित न होइ। तातैं ऐसा जानि करि १५५

भगवंतवीतरागदेवसर्वथासर्वपरिग्रहकात्यागकरतभये । औरमुनहूकोंभीयोंहीचाहिये । तुम्हभीसमस्त
परिग्रहकानिषेधकरै । केकोईसुधोपयोगरूपअंतरंगसंयमकाघातकरै । केकोईपरिग्रहकाग्रहनेकरै
एहेंनेसमझोयाहै । संयमकेघातकूंसेनोहे । तातेंमुनिकोंयोंचाहिये । ज्योंअंतरंगसंयमकेघातकोंनिषे
धेहै । त्योंहीपरिग्रहकोंसर्वतैपहिलेछाडै । यहूनकहालगिकहिये । जोसमस्तग्रहणहमाहैय । सोयोंहीमैसम
मै । औरजोसमग्रगहणनहोरै । तातिसकोंजितनाबरंतितिनकाविस्तारदिखाईये । तेतासबमोहहोकाम
म्है । अपारवागनातहोयहै । समथ्यौंवदूंमकम्भीनोही ॥ आगेंअंतरंगकेभावस्योबाह्यपरिग्रहकात्या
ग । सोअंतरंगसुद्धोपयोगरूपसंयमकेघातकानिषेधहीहै । असाउपदेसहै । गाथा । णहिणिरवेक्खोचाओ
नहवदिभिक्खुस्सआसयविसुद्धी । अविसुद्धस्सयचित्ते कहंणुकम्मक्खओविहिओ ॥ २१ ॥ नहिनिरपेक्षस्त्या
गोनभवतिभिक्षोराशयविसुद्धिः । अशुद्धस्यचचित्ते कथंतुकर्मक्षयोविहितः ॥ टीका । निरपेक्षः त्यागः नहि
निरपेक्षः कहियेजोवछुभीपरिग्रहकीअपेक्षातेंरहित । त्यागः कहियेपरिग्रहकात्यजननहिहकहियेन
होइ । निश्चयसेंतौतोभिक्षोः । आशयविसुद्धिः । नभवतिभिक्षोः कहियेमुनिकेंआसयविसुद्धिः कहि

प्र.सा वै चित्तकैनिर्मलतानभवतिकहियेनाहीहोयहै ।भावार्थ।जोमुनिकैबाहिजपरिग्रहतसमात्रभीहोइ
१५५ तोअंतरंगविषै।सुद्धोपयोगरूपसंयमकाअवस्यघातहोइ।तातैंहीपरिग्रहतैं।अवस्यअसुद्धभावहो
हिं जैसैंचावलकैऊपरितुसकैहोतसंतैं।अवस्यचांवलविषैंआरक्तमलहोयहै तैसैंमुनिकैंकिंचित
मात्रभीबाहिजपरिग्रहकेहोतेसंतैं।अभ्यंतरनिग्रंथपणौअसुद्धभावहोइ यचित्तत्र्यविसुद्धस्यकथं
तुकर्मक्षयः विहितः।कथंकहियेबहुरि।सोमुनिचित्तकहियेज्ञानरूपउपयोगपरिनामविषैं अ
विसुद्धस्यकहियेजोसमलहै।तौतिसमुनिकैकथंकहियेकैसैंतुकहियेबहुरिकर्मक्षयः।कहियेसम
स्तकर्मकानासविहितः कहियेजोग्यहोयहै ॥भावार्थ॥जिसमुनिकैकछूभीपरिग्रहहै।तिसकैंसुद्धो
पयोगनहोय।नहींसुद्धोपयोगनाहीं।तहांकेवलपदकीप्राप्तिकहांतैंहोइ।तातैंजोकोईअसुद्धोप
योगरूपअसंयमभावकौनिषेधयाचाहैहै।सोपुरुषबाहिजपरिग्रहकाजोसर्वथात्यागकरैतौ
तिसपुरुषकैंअंतरंगसंयमकेघातकानिषेधअवस्यहोयहै।आगैंसर्वथाप्रकारअंतरं
गसंयमकाघातपरिग्रहहीसौंहैऐसाकहैहैं।गाथा।किधतम्मिणत्थिमुच्छा।आरंभो १५५

वाअसंपमोतस्स॥ तधपरदव्वम्मिरदो॥ कधमप्पाणंपसाधयदि॥२०॥ कथंतस्मिन्नास्तिमूर्छा॥ आ
रंभोवाअसंयमस्तस्य॥ तथापरद्रव्येरतः कथमात्मानंप्रसाधयति॥ टीका॥ तस्मिन्नमूर्छा कथंना
स्ति॥ तस्मिनकहियेतिसपरिग्रहकेहोतसंतेमूर्छाकहियेममत्वपरिनाम॥ कथंकहियेकैसेनास्तिकहि
येनहोइ॥ अवश्यहोय॥ वाआरंभः वाकहियेअथवातिसपरिग्रहहोनकेवासतैं॥ आरंभः कहियेउद्य
मकरिक्रियाकाआरंभकेसेनहोय॥ यहभीअवश्यहीहोइ॥ जहांममत्वपरिनामहोइ॥ औरआरंभहो
है॥ तहांतस्यअसंयमः तस्यकहिये॥ तिसमुनिकेअसंयमः कहियेशुद्धात्माचरणरूपसंयमकाआ
रंभहोइ॥ तहांतस्यअसंयमः तस्यकहिये॥ घातक्यौनहोइ अवश्यहोई॥ औरतथापरद्रव्येरतः
कथंआत्मानंप्रसाधयति॥ तथाकहिये॥ तैसेहीजिसमुनिकेपरिग्रहहै॥ सोमुनिपरद्रव्येकहियेनिज
स्वरूपतैंभिन्नजुहै॥ यहपरद्रव्यरूपपरिग्रहजिसविषैरतः कहियेरागीहुवा॥ कथंकहियेकैसैंआत्मानं
कहिये॥ अपणेशुद्धस्वरूपकों॥ प्रसाधयतिकहियेसंयतताकरिअनुभवैनअनुभवै॥ भावार्थ॥ जिसके
परिग्रहहोइ॥ तिसकैअवश्यममत्वभावहोय औरतिसपरिग्रहकेनिमित्ततैंआरंभभीहोय॥ जहांमम

तबअरुआरंभहोइ॥तहांसुधोपयोगरूपआत्मीकप्रानकीहिंसाहोयजहांहिंसाहोइ॥तहांअसंय
मीहोय॥औरुपरिग्रहहीमुनिकोवडादोषहै॥परिग्रहजुहैसुपरद्रव्यहै॥जोपरद्रव्यविषैरतहोइ
तिसकेआत्मीकसुधात्मद्रव्यकीसाधनिकाकाअभावहोइ॥सुद्धात्मद्रव्यकासाधनजुहै॥सुमुनि
पदकामूलहै जहांपरनहोइ॥तहांमुनिपदनाहीं॥तातेंइसकथनकापहनात्पर्यहै॥सर्वथाप्रकार
परिग्रहत्यागजोग्यहै॥आगेंकहूंएकमुनिकेंकहूंएककालविषैकाहूएकप्रकारकरिकेकैएकपरि
ग्रहनिषेधनांहैऐसाअपवादमार्गदिखावैहै॥गाथा॥छेदोजेणणविज्जदि॥गहणविसग्गेसुसेवमा
णस्स॥समणोतेणिहवट्टदुकालंखेत्तंवियाणित्ता॥२५॥छेदोयेननविद्यते॥ग्रहनविसर्गेषुसेवमा
नस्य॥श्रमनस्तेनेहवर्ततां॥कालंक्षेत्रंविज्ञाय॥टीका॥ग्रहनविसर्गेषुसेवमानस्ययेनछेदः॥नाविद्य
ते॥ग्रहणविसर्गेषुकहियेग्रहनत्यागविषैसेवमानस्यकहियेसेवणहाराजुहैमुनितिसकै॥येनकहिये
जिसपरिग्रहकरिछेदः कहियेसुद्धोपयोगरूपसंयमकाघात॥नविद्यतेकहियेनाहींहोयहै॥श्रमनः तेन
इहवर्ततांश्रमनः॥कहियेमुनिसोतेनकहियेतिसपरिग्रहकरि॥इहकहियेइसलोकविषैवर्त्ताकरि

येप्रवर्ते। कहाकरिप्रवर्तेहु कालंक्षेत्रंविज्ञाय। कालकहियेकालकौदेखकरि चकहियेवहुरिक्षेत्रंविज्ञा
पकहियेक्षेत्रकैजानिकरि ॥भावार्थ॥ उत्सर्गमार्गसोकहियेजहांसर्वपरिग्रहनिषेधकीजाहै। काहेतेंजा
तेंआत्माकैऐसेंकूनिजभावविनापरद्रव्यरूपपुद्गलद्रव्यनाभावनाहै। तातेंउत्सर्गमार्गपरिग्रहतेंरहितहै ~
औरपरजुहै। अपवादमार्ग। सोविसेषरूपकालक्षेत्रकेवसतें। काहूएकरूपपरिग्रहकौग्रहेहै। तातेंअपवा
दभेदधरैहै। सोऐसेंखाइहैजिसकालकोई। ऐसेमुनिसर्वपरिग्रहकौत्यागकरिपरमवीतरागसंयमकौं
मामहवाचाहैहै। सोईमुनिकोईएककालकैविसेषवसतें। अथवाक्षेत्रकेविसेषवतेंहीणसक्तिहोयहै। तिसवी
तरागसंयमदसाकोंनाहीधरिसकेहै। तबसोईमुनिसरागसंयमअवस्थाकौंअंगीकारकरैहै। तबतिस
अवस्थाकमैबाहिरसाधनगहारपरिग्रहलेहै। सोतिसपरिग्रहकरिजतियहैमुनि। तिसकैऐसेपरिग्रहतेंसं
यमकाघातनाहोहै। संयमकाघातनहोहोई। जहांमुनिपदकाघातकअसुधोपयोगहोयहै। परपरि
ग्रहतेंसंयमघातकैहोवेंहेरिपयमनेकहाहै। मुनिपदवीकासहकारीकासासरीरहै। तिसमरीरकीप्रवर्ति
आहारनीहारकैग्रहनत्यागतेहै। तिसविषैसंयमघातकेनिषेधकेनिमित्तअंगीकारकीजैयहै। तातें

असुधोपयोगमयी जु है संयम का घात तिसकौं हरि करै है तातें घातक नाही ॥ आगें जो परिग्रह मुनिकौं
प्र·सा निषेध नाही तिसका स्वरूप दिखावै है ॥ गाथा ॥ अप्पडिकुट्ठं उवहिं अपत्थणिज्जं असंजदजणेहिं मुच्छा
१५७ दिजणणरहिदं गेण्हदु समणो जदि वि अप्पं ॥ २३ ॥ अप्रतिकुष्टमुपधिमप्रार्थनीयमसंयतजनैः मू
र्छादिजननरहितं गृह्णातु श्रमणो यद्यप्यल्पं ॥ टीका ॥ श्रमण उपधिं ग्रहौ तु श्रमन कहिये आप
वादमार्गी मुनि सो उपधि कहिये । असैं परिग्रह कौं ग्रहौ तु कहिये ग्रहौ दोष नाही । कैसा है सो परिग्र
ह । अप्रतिकुष्टं कहिये बंधको नाही करै है । तातें मुनिकौं निषेध नाही । बहुरि कैसा है । असंयतजनो
ः अप्रार्थनीयं । असंयतजनैः कहिये जे जन संयमतें रहित है । तिनकौं सो उपधि जोग्य नाही । तातें तिनि
पुरुषनि कौं अप्रार्थनीय कहिये मागिवे कौं अजोग्य है । असंयमी जिसकौं लेते नाही । बहुरि कैसा है म
र्छादिजननरहितं । मूर्छादि कहिये ममता आरंभ हिंसादि भाव तिनका उत्पत्तन न करिये । उपजावना
तिसकरि रहित कहिये रहित है । रागादि भाव विना परिग्रह राखिये है तातें तिस विषै मूर्छादि भाव होतें ना १५७
ही । असैं सा परिग्रह मुनिकै निषेध नाही है । यद्यपि अल्पं । यद्यपि कहिये जो परद्रव्यौं का मुनिके ग्रहवे कौं जो

ग्यकहा॥ सोपरिग्रहअल्पकहियेथोराहै॥ तोभीऐसाहीजोग्यहैअरुसमस्तजोविपरीतिपरिग्रहहै॥ सोथो
राभीथोराहै॥ तोभीवहपरिग्रह॥ ग्रहनाजोग्यनाही॥ जैसाकछुमुनिकौंजोग्यहोइसोईग्रहनाहै॥ आगैउत्स
र्गहीमार्गवस्तुकाधर्महै अपवादनाही॥ ऐसाउपदेसकरैहैं॥ गाथा॥ किंकिंचणत्तितक्कं अपुणब्भवका
मिणोधदेहेवि॥ संगत्तिजिणवरिंदा॥ अप्पडिकम्मत्तमुद्दिट्ठा॥ २४॥ किंकिंचनमितितर्कः॥ अपुनर्भवका
मिनोथदेहेपिसंगइतिजिनवरेंद्रा॥ अप्रतिकर्मत्वमुद्दिष्टवंत॥ टीका॥ अथअपुनर्भवकामिनः देहेपि
संगः अथकहियेअहोजोअपुनर्भवकहियेमोक्षतिसकेकामिनः कहियेअभिलाषीजुहैमुनितिसकै
देहेपिकहियेदेहकेहोतसंतेभी॥ संगः कहियेपरिग्रहकहाहै॥ इतिजिनवरेंद्राः अप्रतिकर्मत्वउपदिष्टवंत
इतिकहियेऐसाजानि॥ जिणवरेंद्राः कहियेसर्वज्ञवीतरागदेव॥ अप्रतिकर्मत्वकहियेममत्वभावकरिस
रीरकीक्रियाकेत्यागकौं॥ उपदिष्टवंतः कहियेउपदेसकरतभये॥ तोतिसमुनकेकिंकिंचनइतितर्कः॥ किंकहियेकहा
किंचनकहियेकछुऔरहैं॥ परिग्रह इतितर्कः कहिये॥ यहवडाहीतर्कहैविचारहै॥ भावार्थ॥ जिसमार्गवि
षैमुनिपदवीकासहाईसरीरभीपरद्रव्यरूपपरिग्रहजांनिआदरिवेकौंजोग्यनाही॥ ममताभावकरि

प्र·सा रहितहोय त्यागनायोग्य है। ममताकरि आहारविहारविषै सरीरकौ मरति मनैं कीनी है। भगवतनै
१५८ वनैतौ। तिसमार्गविषै सुद्धात्म रसके आस्वादी मुनिकै औरपरिग्रहक्या कवैसेवनैयह। तिनि अरहं
तदेवनिकाभगवत अभिप्राय है। तातैं यहवात सिधभई। उत्सर्ग अपरिग्रही मार्ग है। सोईवस्तुका
धर्म है। परिग्रहतैं अपवादमार्ग वस्तुका धर्म नांही। तातैं यहतात्पर्य है। उत्सर्गमार्ग परमनिग्रंथपर
वीअवलंबनीयोग्य है। आगै अपवादकेकौ राभेद है तेदिखावै है। गाथा। उवयरणंजिणमग्गे लिं
गंजहजादरूवमिदिभणिदं। गुरुवयणंपियविणओ। सुत्तज्झयणंचपण्णत्तं। २५ उपकरनंजिनमार्गे लिंगं
यथाजातरूपमितिभणितं। गुरुवचनमपि चविनयः सूत्राध्ययनं चप्रज्ञप्तं। टीका। जिनमार्गे इति उप
करनंभनितं। जिनमार्गैं कहियै सर्वज्ञवीतरागकरिकथित जु है निर्ग्रंथमोक्षमार्ग। तिसविषै उपकरनं क
हियै मुनिकै उपकारी। परिग्रह इति कहियै यह भणितं कहियै कहा है सो कौंन उपकरनरूपपरिग्रह है।
यथाजातरूपलिंगं कहियै। जैसा मुनिका स्वरूप चाहियै। तैसाही जु सरीरका द्रव्यलिंग हौनं। एक तौ य
ह परिग्रह है। यथाजातरूपलिंगं कहियै। जैसा मुनिका स्वरूप चाहियै। तैसाही जु सरीरका द्रव्यलिंग है। १५८

नां ॥ एकतौ यह परिग्रह है और गुरुवचनं ॥ अपि कहिये तत्त्वका उपदेसक है जु गुरु तिसके वचन पुद्गली
कनिका ग्रहण सो एकु यह भी परिग्रह है ॥ च विनयः च कहिये बहुरि विनयः कहिये ॥ जे केरे सुद्धात्म अनुभ
वी है ॥ महामुनि तिनि की विनय कैं विषै प्रवर्ते जु है ॥ द्रव्य मन के पुद्गल ॥ एकु यह भी परिग्रह है च सूत्राध्ययनं
प्रज्ञप्तं च कहियें बहुरि सूत्राध्ययनं कहिये वचनात्मक जु है ॥ सिद्धांत का पढ़ना सो भी प्रज्ञप्तं कहिये परिग्रहरू
प कहै ॥ भावार्थ ॥ जो परिग्रह अपवाद मार्ग विषै निषेधना ही है किना सो च यह सब ही परिग्रह रूप तिसु अवस्था
कौं सहकारी कारण है ॥ ता तैं उपकारी है ॥ और परिग्रह नाही है तिसु मुनि जोग्य परिग्रह भेद एते है ॥ स
मस्त वस्त्र आभरनादिक रहित सहज सुंदर ॥ यथाजात रूप चाहिं जु द्रव्य लिंग रूप काय जोग सबै धी पु
द्गल ॥ एकतौ यह उपकरण है ॥ और सुद्धात्म तत्त्व के प्रकासक है जे वचनात्मक पुद्गल तिन कौं गुरु पास
तैं सुणै है ॥ एकु यह भी उपकरण है ॥ और जौ अनादि अनंत सुद्धात्म तत्त्व का प्रगट करनहारा श्रुतज्ञान
तिसके वचनात्मक ॥ जे सूत्र पुद्गल है ॥ तिन कौं पढै है ॥ यकै यह भी उपकरन है ॥ और जिन महा पुरुष मुनी
स्वरनि कौं ॥ ज्ञानादि भाव प्रगट हुए है ॥ तिनि विषै विनय रूप परनए है ॥ जे चित्त पुद्गल एकु यह भी उपकर

प्र·सा १५९ राहै ॥ तातैं यह बात सिद्धि भई जो मुनिकैं सरीरविषैं ममत्वभावनिषेध है काहेतें जातें सभी वस्तुके
धर्म नाहीं ॥ तातैं त्याज्य है ऐसा तातै अपुवाद मानि करावै हैं उत्सर्ग ईनतैं रहित है आगैं मुनिकैं जो होनि
षेधकौ नाउ सरीरमात्र परिग्रह तिसकै पालनकी विधि बतावै हैं ॥ गाथा ॥ इहलोगणिरावेषो ॥ अप्पडि
बद्धो परम्मि लोयम्मि ॥ जुत्ताहारविहारो रहिदकसाऊ हवे समणो ॥ २५ ॥ इहलोकनिरापेक्षः ॥ अप्रतिब
द्धः परस्मिन् लोके ॥ युक्ताहारविहारो रहितकषायो भवेत् श्रमणः ॥ टीका ॥ श्रमणः युक्ताहारविहारः ॥ भवे
त् श्रमन कहियै मुनि सो युक्ताहारविहारः कहियै योग्य है ॥ आहार अर विहार कर्म जिसकै ॥ ऐसा भवे
त् कहियै होय है ॥ कैसा है मुनि इहलोकनिरापेक्षः कहियै ईसि लोकविषैं जिसकौं कछु विषयकी
अभिलाषा नांही ॥ बहुरि कैसा है परस्मिन् लोके अप्रतिबद्धः परस्मिन् कहियै आगले लोक कहि
यै होनहार जु है ॥ देवादिपर्याय तिसविषैं भी अप्रतिबद्धः ॥ कहियै अभिलाषाकरि बंध्या नांही बहु
रि कैसा है ॥ रहितकषायः कहियै रागद्वेषभावरूप कषायनिकरि रहित है ॥ तातैं जोग्य आहार
विहारविषैं प्रवर्तै है ॥ अजोग्यकौं छांडै है ॥ भावार्थ ॥ मुनीस्वरनै अपना स्वरूप अनादि अशांत ॥ १६०

समस्तपुद्गलजनितभावनितैंभिन्नजांन्याहै ॥ तातैंकर्मकेउदयतैंजुवर्त्तमांनमनुष्यादिपर्यायहै तिसविषैंअ
पनास्वभावनांहीमांनैहै ॥ कषायनितैंरहितहै ॥ तातैंमनुष्यसंबंधनीजेक्रियाहै ॥ तिनतैंरहितहैइसिलो
कविषैं ॥ पंचइंद्रियविषयनिकीवांछानांही ॥ औरुआगामीकालदेवादिगतिके ॥ दिव्यसुषकेभोगवेकी
वांछातैंरहितहै ॥ तातैंपरलोककीभीअभिलाषाकरिवंधानांही ॥ जैसैंघटपटादिपदार्थनिकेदेषिवे
केनिमित्तदीएमैंतेलडारियेहै ॥ औरयातैंआदिसमारियेहै ॥ तैसैंसुद्धात्मतत्वकीप्राप्तकेनिमित्त
सरीरकौंभोजनकरिऔरुचलनादिक्रियाकरिजोग्यआहारविहारक्रियाविषैंप्रवर्त्तैंहै ॥ तातैंय
हकथनिसिद्धहुवा ॥ मुनीस्वरकषायभावनितैंरहितहै ॥ तातैंअपनैंवर्त्तमांनसरीरकेअनुरागकरि
औरुदेवगतिकीवांछाकरिदेवतौंसरीरकाअनुरागकरि ॥ आहारविहारविषैंअयोग्यताकरिप्रव
र्त्ततानांहीसुद्धात्मतत्वकीसिद्धिकेनिमित्तिमुनिपदपालवेकेंनिमित्तिकेवलयोग्यआहारविहार
विषैंप्रवर्त्तैंहै ॥ आगैंजोजोग्यआहारविहारकरैहै सोमुनिसाक्षात ॥ आहारविहारतैंरहितहीमानना
ऐसैंकहैहैं ॥ गाथा ॥ जस्सअणेसणमप्पा ॥ तंपितऊतप्पडिच्छगासमणा ॥ अण्णंभिक्खमणेस

प्र॰सा
९६१

णा मधतेसमणा आनाहारा ॥ ई ॥ यस्याणेषणा आत्मा तदपितपः तत्प्रत्येषकाः श्रमनाः अन्यद्भैक्षम
नेषन ॥ मथते श्रमना अनाहाराः ॥ टीका ॥ यस्य आत्मा अणेषणाः यस्य कहियेजिसमुनिका आत्मा क
हियेजीवद्रव्य अनेषन कहिये ॥ अपरौं स्वभाव करि परद्रव्यके ग्रहनतें रहित निराहार हो है ॥ तत् अपितप
तत् कहियेसो आत्माका निराहारस्वभाव अपि कहिये निश्चयस्यौं तपः कहिये अंतरंग तप है तत्प्रत्येष
काः श्रमनाः ॥ अणेषणा अन्यत् भैक्षं ॥ तत्प्रत्येषकाः कहियै तिस निराहार आत्मस्वभावकौ सिद्धके
वांछक जे है ॥ श्रमनाः कहियेमहामुनि ते अनेषनं कहियैं आहारके जे दोष हैं तिन तैं रहित ॥ अन्यत् क
हियै ॥ और भैक्षं कहियै भिक्षाकेविषैं सुद्ध अन्न कौ आचरे हैं ॥ अथ ते श्रमनाः ॥ अनाहाराः अथ के
हियै पाछैं ते ते श्रमनाः कहियै ते महामुनि अनाहारा कहियै आहारग्रहनतें रहित है ॥ असो मानने
भावार्थ ॥ जे महामुनीस्वर हैं तिनहूंने अपना स्वरूप सदाकाल सकल परद्रव्यरूप पुद्गलके ग्रहनतें र
हित जान्या है ॥ तातें घायवेकौं अभिलाषातें रहित हैं ॥ एही तिनकें अंतरंग अणासन नामा तप है तो असेनि
राहार आत्मस्वभाव न हारे जे महामुनि हैं ॥ ते सरीरस्थितिनिमित्त आहार भी लेहे ॥ तो समस्त दोषन ९६१

नैरहितभिक्षावृत्तकरिशुद्धअन्नलेहैं ॥ तातैंतेमुनिपरघरिआहारकौलेहैं ॥ तथापिनाहींलेतैं । अनलेने
हीमानने ज्ञातैंएकतौअपनाअनाहारस्वभावजान्यारैहैं ॥ औरहूजौआहारलेहैंतौरागीनाहीं । तातैं
बंधहोतानाहीं । ज्ञातैंनिराहारहीमाननैं ॥ औरयाहीप्रकारचलनादिक्रियारूपसहै विहारकर्म्मनिस्व
कौंभीनिजस्वभावनाहींजानैहै ॥ औरविहारकर्मकरैहै ॥ तौईर्यासमितिकीमुख्यताकरिजोग्यविहार
करैहैं ॥ तातैंविहारकर्मकरतैंसतैंभीअविहारीमानैं । आगैजोग्यआहारकाहेतैंहोयहै ॥ यहकरैहैनकरै
हैं ॥ गाथा ॥ केवलदेहोसमणो देहेनममेत्तिरहिदपरिकम्मो आउत्तोतंतवसा अणिगूहंअप्पणोसत्तिं ॥
केवलदेहः श्रमनोदेहेनममेतिरहितपरिकर्म्मा ॥ आयुक्तवांस्तंतपसा ॥ अनिगूहन्नात्मनः सक्तिं ॥
का ॥ श्रमनः केवलदेह ॥ श्रमनः कहियेमुनि सोकेवलदेहकहियेअकेलासरीरमात्रहीहैपरिग्रहजि
सकै ॥ सोकाहूप्रकारबलकरिभीहरिनाहीकिभाजारहै ॥ तातैंमुनिकैकेवलसरीरमात्रपरिग्रहहानिबंध
नाहीं ॥ देहेनममइंतिरहितपरिकर्म्मो देहकहिये ॥ देहकेहोतसंतैंभीनममकहियें ॥ यहदेहमेरीनां
हीं ॥ इतिकहिये ॥ ऐसेवीतरागभावकरिरहितपरिकर्मोकहियेदेहसंबंधीअजोग्यआहारविहारतें

तैरहितहोयहै। यद्यपिमुनिकैंसरीरहै। तथापितिससरीरविषैममत्वभावकरतानांहीं॥ किंकिंचनत्तिनहू
अैसैसर्वहीगाथाकहीहैतिसविषैसर्वत्रवीतरागका॥ अभिप्रायहै॥ जोपरिग्रहसर्वथात्याज्यहै॥ ऐ
सानांनकरिभगवंतकीआज्ञायग्रहनकरिसरीरविषैममताभावतैरहितहोयहै देहकेसमारनै॥ साज्जनैवि
षैनांहीप्रवर्त्तै है। ममत्वबुद्धिकरिअजोग्यआहारकौग्रहनानांहीं॥ तातैंमुनिकैजोग्यआहारकीसिद्धिहो
यहै। तत्तपसाअाप्रयुक्तवान् तंकहियेतिसदेहकौ॥ तपसाकहियेअनसनरूपतपस्याकरिअपुनक्तवान
कहियेलगावैहै। तिससरीरकौअजोग्यआहारकरियैयतनानांहीं॥ ओरूजतपस्याविषैलगावैहै। करहाक
रतासैतातपविषैलगावैहै। आत्मनसन्निंअनिगूहनआत्मन: कहियेअपनीजुहैसक्तिकहियेपरविषै र
तिभावतैरहितआपविषैथिरताभावरूपबलशक्तितिसहि॥ अनिगूहनकहियेप्रगटकरतासंता॥ भावार्थ
मुनिकैअंतरंगवीतरागभावकानलहै। तातैंसर्वत्रआहारकरिसरीरकौंतपविषैलगावैहै॥ जोकदाचितआहा
रलेहै। तौजोग्यलेहै। तातैंवैरागताकेबलकरिजोग्यआहारकीसिद्धिहोइहै॥ आगैंजोग्यआहारकास्वरूप
विस्तारकरिदिखावैहै। गाथा। एक्कंखलुतंभत्तंअप्पडिपुण्णोदरंजहालद्धं॥ निरवाचरनेनदिवा णरसावेखंरा १६२

मधुमसं ॥ ३५ ॥ एकखलुसभक्तः अप्रतिपूर्णोदरो यथालब्धः भैक्ष्याचरनेनपिंडा । नरसापेक्षोनमधुमांसः ही
का खलुसभक्तः एकखलुकहियैनिश्चयस्यो सकहियैसो भक्तः कहियेसुद्ध । आहार एकः कहियैं एककाल
जोग्रहीयेतौजोग्यआहारहै ॥ भावार्थ ॥ एकहीवीरमुनिकैआहारजोग्यहै मुनिपदपोषकासहकारीकारन
सरीरहै ॥ तिससरीरकीथितिऐकवारकेलियेहोरहै ॥ तातेंएककाललेनाजोग्यहै । औरजोसरीरकेअनुराग
करिवारवारलेइतौ प्रमादरसाकरिइन्द्रियभावाहैसाकाकारनहोइरहै है ॥ तातेंवारवारलेनाअजोग्यहै ॥ एकही
काललेनायोग्यहै औरएकवारभीसरीरकैअनुरागकरिजोलैतौभीअजोग्यहै ॥ संयमसाधनकौसरीरकी
थितिनिमित्तजोलेहैतौजोग्यहै ॥ बहुरिवैसाआहारजोग्यहै अप्रतिपूर्णोदरः अप्रतिपूर्णकहियैंनांहीपूर
होयपेटउदरः कहियेपेटजिसआहारकरिसोआहारजोग्यहै ॥ भावार्थ ॥ एककालभीजोपेटभरिकरिआहा
रलीजैतौअजोग्यआहारहोइ ॥ काहेतेंजातेंबहुतेंआहारकरिजोगशिथलहोइरहै ॥ प्रमादरसाहोयहैइसा
काकारनहोयहै ॥ तातेंउदरकूंभरिभोजनजोग्यनांही ॥ ऊनोदररहनायोग्यहै ॥ औरसरीरकेअनुरागकरि
जोपेटभरिनलीजैतौभीयोग्यआहारनांही संयमसाधनकौंसरीरथितिनिमित्तजोऊनोदररहैतौजो

प्र.सा ग्य है॥ बहुरि कैसा आहार योग्य है। यथालब्धः कहिये जैसा कछु पावै तैसा ही अंगीकार करै है यौं नांही कि
१६३ आप करि कराय लेइ॥ तातैं यथालब्ध आहार जोग्य है॥ और जो यथालब्ध आहार न लेय। मनोवांछित ले
यतौ विसेय इंद्रियसार कै अनुराग करि हिंसा का ध्यान कहो रै है॥ तातै निषेध है। यथालब्ध आहार ही जोग्य
है। अरु यथालब्ध आहार कौं भी स्वाद करि लें तौ भी अजोग्य है। संयमसाधन कै। जो सरीर की थितिनि
मित्त लें तौ जोग्य है। बहुरि किस प्रकार करि जोग्य आहार है। भिक्षाचरनैं न कहिये। भिक्षावृत्त करि जो ली
जै तौ जोग्य है॥ भिक्षा करि जो आहार लीजै तौ आरंभ न होय॥ और जो भिक्षावृत्ति करि न लीजै तौ हिंसा का
कारन आरंभ होई। तातै निषेध है। भिक्षा ही वृत्ति जोग्य और रागभाव अंतरंग की असुद्धता करि भिक्षा
वृत्ति करि भी जोग्य आहार नांही॥ संयमसाधन कौं सरीर की थिति निमित्त भिक्षा करि जोग्य है बहुरि
कैसा आहार जोग्य है॥ दिवा कहिये दिन विषैं आहार लेनां योग्य है दिन विषै भलीभांति दिखाई दे
है। दयापलै है॥ तातै दिन का आहार जोग्य है॥ रात्रि विषै भलीभांति नांही दिखाई दे है॥ अवस्य हिंसा हो
य है॥ तातै रात्रिभोजन निषेध है॥ और दिन का भी आहार सरागभावनि करि निषेध है। संयम का साध १६३

गासरीरथितिनिमित्तयोग्यहै।बहुरिकैसाआहारयोग्यहै।एसापेक्षनः कहियेजिसआहारविषेमिष्टि
ष्टादिरसवाहनहोयसोएसाआहारजोग्यहै।जोआहारसरसहोईतिसकरिअवस्यअंतरंगअसुद्धहोय।हिं
साकाकारनहोय तातेंसरसआहारनिषेधहै नीरसआहारजोग्यहै।औरसरणताकरिनीरसआहार
भीजोग्यनाहीं।संयमसाधनकूंसरीरथितिनिमित्तयोग्यहै।बहुरिकैसाआहारजोग्यहै।मधमांसक
हियेजोआहारमधमांससहित।इत्यादिअजोग्यवस्तुरूपनहोयसोआहारयोग्यहै।मधुमांससंयुक्तआ
हारहिंसाकाथानकहै तातेंनिषेधहै।इनतेंरहितआहारजोग्यहै।औरजिनवस्तुनिविषेमधमांसकादो
षलागे।औरएनिनविषैहिंसाहोय।तिसर्वजोग्यनाहीं।निःपापआहारजोग्यहै।औरनिःपापआहारभी
सरागभावनिकरिनिषेधहै।संयमसाधनकूंसरीरथितिनिमित्तजोग्यहै।तातेंयहबातसिधभईजोआ
हारएककालविषैं।पेटभरिनलीजैतौभिक्षाप्राप्तिकरियथालब्धदिनकोभीनीरसमधमांसादिदोषर
हितलीजैं।सोआहारजोग्यहै।इसतेंजोऔरप्रकारलेनांसोअजोगहै।आगेउत्सर्गअपवादमार्गविषैजो
मैत्रीभावहोयतौमुनिकेआचारकीथिरताहोय।तातेंइनिविषैमैत्रीभावदिखावैहै।गाथा।बालोवा

प्र·सा वृद्धो वा॥ समभिहदो वा पुनो गिलानो वा॥ चरियं चरउ सजोगं मूलच्छेदो यथा न हवदि॥ २३०॥ बालो वा वृ
१६५ द्धो वा॥ श्रमाभिहतो वा पुनर्ग्लानो वा॥ चर्यां चरतु स्वयोग्यं॥ मूलच्छेदो यथा न भवति॥ टीका॥ बालो
वा कहिये॥ बालक होउ॥ अथवा वृद्धो वा कहिये वृद्ध होउ॥ अथवा श्रमाभिहतो वा कहिये तप स्या
करि खेद खिन्न हुवा होउ॥ अथवा पुनः कहिये बहुरि ग्लानो वा कहिये रोग करि पीडित हुवा होई॥ अथवा
ऐसा जो मुनि होउ॥ सो स्वयोग्यां चर्यां चरतु स्वयोग्यां कहिये अपनी सक्ति माफिक चर्या कहिये॥ आ
चरणानि सहित॥ चरतु कहिये आचरहु किस प्रकार आचरहु॥ यथा मूलच्छेदो न भवति॥ यथा कहिये जै
से। मूलच्छेदो कहिये संयम का घात न भवति कहिये न होई॥ भावार्थ॥ उत्सर्ग मार्ग सो कहिये जहां मुनि
बालक वृद्ध खेद रोग ए च्यारि दसानि करि संयुक्त होइ परंतु शुद्धात्म का साधन हारा संयम तिसका ज्यों भंग
न होय॥ सो अतिकर्कश आपके जोग्य ऐसें आचार कौं आचरैं॥ तहां उत्सर्ग मार्ग है॥ जहां मुनि बाल वृद्ध
खेद रोग इनि च्यारि दसानि करि संयुक्त होइ॥ परंतु शुद्धात्म तत्व के साधन का कारण संयम तिस संयम के सा
धन का कारन सरीर तिसका ज्यों नास न होय॥ तिस प्रकार अपनी सक्ति माफिक कोमल आचार कौं आचरै १६५

जिसमैंसंयमअरुसरीरकानासनहोय।तहांअपवादमार्गकहियें।ऐसैमुनिकेदोयभेदहैं।उत्सर्गअवस्थावि
षैंकैसाहीरोगादिदसाकरिपीडाहोउ।तौभीअपनेअतिकठोरआचारकैं।आचरनासंतासंयमकोपालै।औ
रअपवादअवस्थाविषैंनीरोगादिदसाकरिपीरनहोइतौसरीरकौराखै।कोमलआचारविषैंप्रवर्त्तैसंयमकौ
पालै।ऐसैकठिनकोमलदोईमुनिकेमार्गहैं।जौइनदोऊमार्गनिविषैंआपसमैंविरोधहोइ।किउत्सर्गमा
र्गीअपवादअवस्थाकौंणधरै।औरअपवादमार्गीउत्सर्गअवस्थाकौंणधरै।तोमुनिपैसंयमनपलि
आवै।काहेतैंजातैंजोउत्सर्गमार्गीअतिकठोरहीआचरनआचरैरोगादिअवस्थाकैवसतैं।जघन्यदसाह
पअपवादमार्गकौनधरै।तौसरीरकेनाससंयमकानासकरै।तातैंउत्सर्गमार्गकैंअपवादमार्गसौंमैत्री
भावजोग्यहै।औरअपवादमार्गकौंउत्सर्गमार्गसौंमैत्रीभावजोग्यहैं।जोअपवादमार्गीरोगादिकरिपी
डतहुवासरीरकीरक्ष्यानिमित्तिजघन्यरूपही।आचारविषैंप्रवर्त्तै।तौप्रमादीभयाउत्कृष्टसंयमकौंणपावै।जघ
न्यसंयमकाभीनासकरै।तातैंअपवादमार्गकौभीउत्सर्गमार्गसौंमैत्रीभावयोग्यहै।सोइसमैंत्रीभावदिखा
ईयेहैं बालवृद्धखेदरोग।इतीचारिदसानिकरियद्यपिपीडतहैमुनि।तथापिसुद्धात्मतत्वकासाधनहारतु

प्र॰सा॰ हैसंयमतिसकाज्यौनासनहोई॥तिसप्रकारअतिकठिनआचारकौंआचरेहै॥परंतुसोईमुनिज्योंसंयमका
१६५ कारणजुहैसरीरतिसकानासनहोइ॥तिसप्रकारअपनाजोग्यकोमलआचारकौंभीआचरैं॥परमुनिअ
पवादमार्गकीअपेक्षालियै॥उत्सर्गमार्गौंकहियैं॥औरुबालकवृद्धखेदरोग॥ईनिकरिसंयमकासाधन
जुहैसरीर॥तिसकाज्यौंनासनहोइ॥तिसप्रकारमुनिअपनाजोग्यकोमलआचारकौंआचरैहै॥परंतुसो
ईमुनिज्यौंसुद्धात्मतत्वकासाधनजुहै॥संयमतिसकानासनहोय॥तिसहीप्रकारअतिकठोरआचा
रकौंभीआचरैं॥यहमुनिउत्सर्गमार्गकीअपेक्षालियैं॥अपवादमार्गकहियै॥तातैंयहबाततौसिद्धिभई
उत्सर्गअपवादमार्गविषैपरस्परमैत्रीभावहोई॥तौमुनिकेआचारकीथिरताभलीभांतिहोई॥
आगैंउत्सर्गअपवादमार्गविषैंजोपरस्परविरोधहोई॥तौमैत्रीभावनहोय॥तातैंआचारकीथिरतानहोई
यहकथनकरैहैं गाथा॥आहारेववविहारेदेसंकालंसमंखमंउवधिं जाणित्तातेसमणो॥वट्टदिजदिअ
प्पलेवीसो॥३१॥आहारेवाविहारेदेसंकालंश्रमंक्षमांमुपधिंज्ञात्वा॥तानश्रमणोवर्ततेयद्यल्पलेपी
सः टीका॥सश्रमणोयदिअल्पलेपी॥तदाआहारेवाविहारेवर्त्तते॥सकहियैसोअपवादमार्गी॥अथ १६५

वा उत्सर्गमार्गी । अमनः कहिये मुनि । परिकरि जो अल्पलेंपी कहिये थोरे से कर्मबंध करि लिप्त होय त
हा कहिये तो आहारे कहिये मुनि जोग्य आहार की क्रियाविषै । वा कहिये अथवा विहारे हलन चलन च
लनादि क्रियाविषै वर्त्तते कहिये प्रवर्त्तै है । कहा करि प्रवर्त्तै हैं । तान् ज्ञात्वा । तान् कहिये तिन पंचभेदनि कौं
ज्ञात्वा कहिये ज्ञान करि ते वे पंचभेद कौन है । देस कहिये क्षेत्र काल कहिये सीत उस्नादिकाल श्रम कहि
ये मार्गादिक का खेद । क्षमा कहिये उपवासादिकरण की सक्ति उपधि कहिये । सरीर मात्र जु है परिग्रह तिन
सविषै बाल वृद्ध रोगादि अवस्था इनु है पंचभेद । तिनकौं भली भांति जानि करि । भावार्थ । जो परम
विवेकी मुनि उत्सर्गमार्गी अथवा अपवादमार्गी । ईनि देसादि पंचभेदनि कौं जानि करि जिस क्रिया
मैं कर्मबंध थोरा होई । और संयम का भंग न होय । ऐसी आहार विहार क्रियाविषै प्रवर्त्तै तौ दोष नां
ही । काहे तैं जातैं संयम की रक्ष्या निमित्त । ज्यो सरीर का नास न होई त्यौं करै । अथवा कोमल क्रियावि
षै प्रवर्त्तै । तातैं दोष नाहीं । ता मैं देस काल का ज्ञान न हारा । उत्सर्गमार्गी मुनि बाल वृद्ध खेद रोग अवस्था
नि कैं वस तैं आहार विहार विषै प्रवर्त्तै है । कोमल क्रिया कौं आचरै है । अल्प कर्मबंध भी होय है । ऐसी

प्र.सा अपवादअवस्थाकौंधरतासंता। उत्सर्गेमुनिबहुतभलाहै॥ जुसरीरकीरक्षा[illegible]रिसंयमभंगनांहीहो[illegible]नैदेता
१६६ औरदेसकालज्ञाननहाराअपवादमार्गीमुनिबालबृद्धखेधरोगअवस्थानकेवसतैं। आहारविहार
क्रियाविषैंप्रवर्त्ततासंताकौंमलआचारकौंआचरैहै। प्रमादीहवाअतिकोमलक्रियाकरिसंयमका
नासभीनांहीकरैहै। जहांसंयमकानासहोताजानैहै। तहांकठोरक्रियाभीआचरैहै। अतिसिथल
भीनांहीहोयजायहै सरीरराखैहै संयमकौंपालैहै। अल्पबंधभीहोयहै। ऐसीउत्सर्गअवस्था
कौंलियेंअपवादमार्गीमुनिबहुतभलाहै। जुसंयमकौंभीपालैहै। औरसरीरकौंनांहीदिगन
देयहै। औरदेसकालादिककाजाननहाराउत्सर्गेमुनिबालबृद्धरोगअवस्थानकेहोतैं अल्पक
र्मबंधकेभयतैंकोमलआचारकौंनआचरै। आहारविहारक्रियाविषैंनप्रवर्त्तैं। मरणमैंयोजानै
किमैंउत्कृष्टजुहैं। यहउत्सर्गसंयमतिसकाधरनहाराहो। मोकूंजघन्यरूपअपवादसंयमनोग्यनां
ही। औरजुहीनअवस्थाकौंधरैगातौबंधहोयगा। ऐसाजानउत्कृष्टहीआचरनकौंआचरै। सो १६६
मुनिअतिकठोरतपस्याकरिसरीरकानासकरै देवलोकजायउपजै तहांसंयमरूपअमृतकौंवमै

रेवघट्टतपसाकासथाणकनांही॥ तातेंतहांसोईजीवमहांकर्मबंध अवस्याकरिलिप्तहोयहे॥ तातेंजो
उत्सर्गमार्गीअपवादमार्गस्योंमैत्रीभावलियैंनहोय॥ सोउत्सर्गमार्गीभलानांही शुसरीरकानासकरि
संयमकानासकरैहै॥ औरदेसकालादिकज्ञाननिहाए॥ अपवादमुनिबालवृद्धखेदरोगअवस्यानिकैं
होतैं॥ आहारविहारादिक्रियाविषैंप्रवर्तें॥ मणमैयोज्ञानाणोकिकिंहांतांविषैंकरहैं॥ तोअल्पबंधभीहोयतौ
भीरोगखेदादिकस्थानिकैहोतैं॥ मुनिकोमलआचारवर्तेंदोषनांही॥ ऐसाजाणिजोअतितिसथिलहो
यजाययनयेछांवारीहुवा॥ आहारविहारविषैंप्रवर्तें॥ तौसंयमकानासकरै॥ असंयमीसमानहोय॥ ति
सकालतिसमुनिकैंतपकाअभावहैं॥ तहांमहांकर्मबंधकरिलिप्तहोयहैं॥ तातैंउत्सर्गअपवादमार्गीउ
त्सर्गअवस्यासेंमैत्रीभावलियैंनहोयसोअपवादमार्गीभलानांही॥ तातैंउत्सर्गअपवादमार्गवि
षैंनोविरोधहोयतौमुनिकैंसंयमकीथिरतानहोय॥ तातैंउत्सर्गअपवादविषैंमैत्रीभावजोग्यहैं॥ भगवा
नकामततअनेकांतहैंजौसंयमकीरक्षाहोई॥ तिसप्रकारप्रवर्तें॥ यौनांहिकिसंयमकानासहोउ॥ अथवा
मातिहोउ॥ अपनैंएकरसाकौंनछांडियैं॥ ऐसाजिनिमार्गनांही॥ जिराणमार्गऐसाहैंजुकहुंतौअकेला अ

ला

प्र.सा वाद ही है। कहूं अंकै उत्सर्ग ही है॥ कहूं उत्सर्ग लियें अपवाद है॥ कहूं अपवाद लियैं उत्सर्ग है॥ ज्यौं संजम र
१९८ है त्यौंही उत्सर्ग अपवाद विषै विरोध एहित होय प्रवर्तैं॥ जे महापुरुष हैं तिन्हूंनै उत्सर्ग अपवाद रूप गहे
नाना प्रकार की भूमिका तैं क्रम सौं अंगीकार कीनी है॥ पाछैं उत्कृष्ट दसा कौं प्राप्त होय करि समस्त क्रिया कौं उ
तैं निवृत्त भए हैं॥ पाछैं सामान्य विसेषात्मक जु है चैतन्य स्वरूप निजतत्व तिस विषैं स्थिर होय रहे हैं॥ ऐसैं या
ही क्रम सौं आरंभी भव्य जन स्वसरूप विषैं गुप्त रहो॥ इति चर्याचार विधि संपूर्ण॥ अथानंतर एकाग्र
रूप मोक्षमार्ग का स्वरूप कहिये है॥ इस मोक्षमार्ग का नाम दूसरा श्रामण्य भी है॥ कोऊ मुनीश्वर कहै॥ अथ॰
वा कोऊ मोक्षमार्ग कहै नाम भेद है वस्तु भेद नाहीं काहे तैं॥ जातैं मुनि तु है ज्ञान दर्सन चारित्र रूप सोई मो
क्षमार्ग है॥ तातैं एकाग्रता है तिस मोक्षमार्ग का मूल साधन जिन प्रणीत आगम है॥ तातैं प्रथम ही॥ सिद्धांत की
प्रवृत्ति दिखावै हैं॥ गाथा॥ एयग्गगदो समणो। एयग्गं णिच्छिदस्स अत्थेसु॥ णिच्छित्ती आगमदो॥ आ
गमचेट्ठा तदो जेट्ठा॥ ३२॥ ऐकाग्र्यगतः श्रमणः। ऐकाग्र्यं निश्चितस्यार्थेषु। निश्चितिरागमतः॥ आगम
चेष्टा ततो ज्येष्ठा॥ टीका॥ ऐकाग्र्यगतः श्रमणः। ऐकाग्र्य कहियें ज्ञान दर्सन चारित्र की थिरता तिस कौं १

गतः। कहियेंजो प्राप्तभयाहैसोप्रशमनः कहियेंमुनिः **॥भावार्थ॥** मुणिसोईहैजिसकेंज्ञानदर्सनचारि
त्रथिरभएहैं। औरसोज्ञानदर्सनचारित्रकीएकाग्रताकिसकैहोयहै। अर्थेषुनिश्चितस्यैकाग्र्यं। अ
र्थेषुकहियेजीवा। जीवादिपदार्थनिकेज्ञानविषैनिश्चितस्यकहियेजिसकैंठीकभयाहोई। तिसकेंएका
ग्र्यंकहियेथिरताभावहोय **॥भावार्थ॥** जोजीवसंसयविमोहविभ्रमतैरहितहोय। जीवादिपदार्थनिकें
जाणैप्रधानकरें तिसकेंएकाग्रताहोयहै तेपदार्थनिकायथार्थज्ञानकहाकरिहोइहै। आगमतः नि
श्चितेः। आगमतः कहियेसर्वज्ञवीतरागप्रनीतसिद्धांततिसतेंनिश्चितेः कहियेयथार्थः पदार्थनिके
जाणनैकीटीकताहोयहै **॥भावार्थ॥** जोभगवंतप्रनीतआगमकाअभ्यासकरें। तोयथार्थसकलपद
र्थनिकाज्ञाताद्रष्टहोई ततः आगमचेष्टाः ज्येष्ठा। ततःकहियेतिसकारणतें। आगमचेष्टाः कहिये
सिद्धांतकेअभ्यासकीप्रवृत्तिः ज्येष्ठाः कहियेंप्रधानहैं। प्रथमहीमोक्षमार्गीकेंसिद्धांतकेपठनकी
प्रवृत्तिजोग्यहै **॥भावार्थ॥** सिद्धांतविनांयथार्थपदार्थनिकानिश्चयकीयाजातानाहोत्रिकालव
र्तीं। उत्पादव्ययध्रुवतासंयुक्तद्रव्यगुणपर्यायलक्षणऐसैंजुहैसकलपदार्थनिकासमूहतिसका

प्र.सा
१६८ यथार्थज्ञाता ऐसें कृतिसत्र आगमतें होय है। तातें ता ज्ञानकरि अंतरंग थिरताकरि गंभीर होय है। आगमही
तें पदार्थनिका निश्चय होय है। जो पदार्थनिका निश्चय न होइ तौ ऐकाग्रताकी सिधि न होय। जिस पुरुष
कै पदार्थनिका निश्चय न होई। सो पुरुष निश्चयरूप विषै आकुलचित्त होय थिरताभावकौं न धरै स
चनागे डवाडोल रहै है। अत्यंत चंचलभावकरि कबहू करनेंकी इच्छाके आवेस करि समस्त परद्रव्यनिकैं त
है व्यापार। तिनरूप परणवै है। और समय विषै अहंता बुद्धितें क्षोभभाव करि व डै है जैसें समुद्र वा
रिकरि क्षोभित होय है। ऐसें क्षोभित हुवा कबहू ऐक भोगवेकी इच्छा करि है। सारे त्रैलोक्यका आपकौं
भोक्ता मानै है। सबकौं भोग्य जानै है। कि यह मेरी वस्तु है। मैं रसका भोक्ता हौं। और रागद्वेषभावनिक
रि कलंकित चित्त होय है। इष्टानिष्ट वस्तुनिविषै। द्विविधि मानता प्रवर्तै है। वस्तु वस्तु विषै आत्मबुद्धि
करि परणमै है। अत्यंत सिथलभाव करि बहिर्मुख हुवा परि विषै आत्माका निश्चै करै है। जो अक
ता अभोक्ता है। अपनी ज्ञानशक्ति करि ऐकही बार समस्त लोकालोकका पीवनहारा है। आप
ना स्वरूप करि एक है। ऐसा भगवंत आत्मा है। ताकौं देषता जानता नाहीं। निरंतर चंचलाई करि १६८

ल्लोथिरहैं।तातैंपदार्थनिकीठीकताविनाएकाग्रथिरताकीसिद्धीनहोय।याहीतैंपदार्थनिकानिश्चयक
रनाजोग्यहै।औरएकाग्रताविनामुनिपदकीसिधिनहोय।काहेतैंजातैंस्वरूपकौंपरउपाधिकरिअने
करूपदेषैहै।अनेकतारूपप्रतीतिनैंआवेसकरिआपकौंएकस्वरूपजानैहै।अनेकहीरूपअनुभवैहै।मेरा
स्वरूपअनेकहै सर्वपरिभावरहितएकस्वरूपकौंदेषताजांनताअनुभवतानांही।तातैंपदार्थयथार्थविषै
निरंतरआत्मभावकरिप्रवर्त्तेहै संकल्पविकल्परूपचित्तकीप्रवृत्तिधरैहैं इसिप्रकारएकाग्रताविनाअ
थिरइस्थितहुवापुरुषअपणेएकस्वरूपकेअनुभवकीप्रवृत्तिकरि।ज्ञानदर्सनचारित्ररूपआत्मतत्वकी
ऐकाग्रताकौंकैसैपावैनपावै।औरजहांएकाग्रतानहोय तहांसुद्धात्मतत्वअनुभवरूपयतिपदकैसे
होईनहोय।तातैंयहबातसिधिभई।मोक्षमार्गहै।दूसरानामजिसकाऐसाजुहैयहमुनिपद।तिसकीसि
धिनिमित्ति।अर्हंतसर्वज्ञप्रनीतप्रगटअनेकांतधुनासंयुक्तसब्दब्रह्मरूपसिद्धांतजुकोउमुक्तिकावांछ
कहैं।ताकौंप्रथमहीआदर्नाजोग्यहै।सिद्धांतकेअभ्यासतैंपदार्थनिकानिश्चयहोयहै।तिसनिश्चयतैंए
काग्रतातैंमुनिपदहोइहै।मुनिपदअरुमोक्षमार्गएकहैं।तातैंमोक्षअभिलाषीजीवकौंआगमअभ्या

प्र·सा सकलज्ञानजोग्य है॥ आगें जो पुरुष आगमकरि हीन है ताकै मोहरूप कर्मनकी क्षपना न होय यह कथन करै है
१७० गाथा॥ आगमहीणो समणो णेवप्पाणं परं वियाणादि। अविजाणंतो अत्थे खवेदि कम्माणि किध।
भिखू॥ ३२॥ आगमहीनः श्रमणो नैवात्मानं परं विजानाति अविजानन्नर्थान् क्षपयति कर्माणि कथं
भिक्षुः॥ टीका॥ आगमहीनः श्रमनः आत्मानं परं नैव विजानाति॥ आगमहीनः कहियै सिद्धांतकरि र
हित है॥ ऐसा जो श्रमनः कहियै मुनि सो आत्मानं कहियै रोणा कर्म॥ द्रव्यकर्म भावकर्मतैं रहित शुद्धजीव
द्रव्य औ परं कहियै शरीरादिक परद्रव्य भावकर्मतैं तिनकौं नैव कहियै निश्चय सौं नाहीं विज्ञानाति
कहियै जानै है॥ भावार्थ॥ जो मुनि आगमके पढनै सुननैरूप अभ्यासतैं रहित है सो आपकौं परकौं जा
नै नाहीं॥ सकल पदार्थनिके जानिवेकौं आगमही है॥ जो ताही का अभ्यास न होय तौ भेदविज्ञानी
कैसे होइ॥ भिक्षुः अर्थान् अविजानन् कहियै अनजानता संता॥ कर्माणि कहियै द्रव्यभावरूप सम
स्त कर्मनिनहि कथं कहियै कैसे क्षपयति नास करैगा॥ जो मुनी स्वपरभेद करि जीवाजीव पदार्थानि ति १७०
नहीं कौं न जानै॥ सो कर्मनिका नास कैसे करै कबहू न करै॥ भावार्थ॥ जिस जीवकौं सिद्धांतका ज्ञान न

होय।ताकौंस्वपरकाज्ञाननानहोय।औरनिर्विकल्पपरमात्माकाभीज्ञाननहोय।ऐसेंहीकथनकीजि
एहै।अनंतसंसाररूपनदीकेप्रवाहकाबढावनहाराजुहै।यहमहामोहताकरिकलंकितजुहै।मली
नजगतजीवसोभगवत्प्रणीतआगमबिनाविवेकतेंरहितहैं।जैसेधतूरेकापानकरिउनमत्तहोय।का
र्यअकार्यकौंनजानै।तैसेंअज्ञानहोरहेहैं।परअरुआत्माकौंएककरिदेखैहैजानेहै।सरीरादिपरद्रव्य
विषैं।औरउपयोगसंमिलितरागद्वेषमोहभावनिविषैंएकतामानैहै।स्वपरभेदकाकारनजुहैस
द्धांत।ताकेउपदेसबिनाआत्माकाअनुभवनाहीहोयहै।तातेंयहआत्माहै।यहपरहै।ऐसेंभेद
विज्ञानकीसिद्धिनाहीहोयहै।औरनिर्विकल्पसमाधिकरि।एकपरमात्मज्ञानकीभीसिद्धिनाही
होयहै।जुपरमात्मातीनिकालसंबंधीहै।अनंतनानाप्रकारपर्यायनिकेसमूहकरिजुहै।लोका
लोकरूपसमस्तज्ञेयताकौंएकसमयविषैंज्ञानकरिदेदीप्यमानहै।ऐसेकेवलज्ञानस्वभावरूप
आत्माकौंनजानै।सोस्वपरभेदविज्ञानकरिसत्यहै।औरपरमात्मज्ञानकरिसून्यहै।सोद्रव्यक
र्मभावकर्मनोकर्मस्यौंआत्माकौंएककरिमानैहै।योनांहीजानैहै।किएकर्मआत्माकेघातक

प्र·सा ९१ हैं आत्मा ईनि करि ध्यात्मा जाय है। ताते आत्मा के स्वभावनां होय। ऐसा भेदज्ञान ताना ही। और समस्त
विकल्पनितै रहित होय स्वरूप कौं अनुभवता नो है। तौ ऐसे जीव कै मोहादि द्रव्यकर्म भावकर्मनि
की क्षपणा वैसे होय। और सो ईं जीव आपनो है भलि स्यौ परिज्ञेय विषै ते तिष्ठै है यदार्थ। यौ। विषै ग्रह
नत्याग करि। राग द्वेष भावनि परिणावै है। तातै तिनि स जीव का ज्ञान अनादि काल तै चला आव है
परमात्म स्वरूप विषै थिर होता नां ही। ऐसा अथिर अशुद्ध क्षयोपसम रूप ज्ञानावर्ण कर्म ति स
की भी क्षपणा। जो भेद विज्ञान करि रहत है। और जो परमात्म ज्ञान करि रहत है। ता कै होय नां है
तातै अज्ञानी कै द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म अथिर ज्ञान कर्म। ईन का नास न होय। तातै ईन की क्ष
पना के निमित्त आगम का अभ्यास करनो जोग्य है। आगे मोक्षमार्गी जीवन कै एक सिद्धांत ही ने
त्र है यह कथन करै है। गाथा। आगमचक्खू साहू इंदियचक्खूणि सव्वभूदाणि देवा य ओहिचक्खू
सिद्धा पुण सव्वदो चक्खू ॥ ३४ ॥ आगमचक्षुः साधुः इंद्रियचक्षूंषि सर्वे भूतानि। देवाश्चाव
धिचक्षुषः। सिद्धाः पुनः सर्वतश्चक्षुषः टीका। आगम चक्षुः साधुः। आगम कहियै सिद्धांत सो। १७१

ई है॥ चक्षु कहिए नेत्र जिसका॥ ऐसा साधुः कहियै मुनि है॥ मुनि कै मोक्षमार्ग की सिद्धि के निमित्त-
आगम नेत्र होय है॥ ईसही कहिये उपादेय जानै है॥ इंद्रियचक्षूंषि सर्वभूतानि॥ इंद्रिय कहियै मन
सहित छह इंद्रिय ते ई है॥ चक्षुंषि कहियै नेत्र जिनकै ऐसे सर्वभूतानि कहियै समस्त संसारी जीव है
संसारी जीवनि कै ईष्ट अनिष्ट विषयनि के जानिवे कौं इंद्रिय ही नेत्र है॥ च अवधिचक्षुषः देवाः च कहि-
यै बहुरि अवधिचक्षुषः कहियै अवधिज्ञान है नेत्र जिनकै ऐसा देवाः कहियै च्यारि प्रकार के देव
ता है॥ देवतानु कै सूक्ष्म मूर्तीक द्रव्य देखिवे कौं अवधिज्ञान नेत्र है परंतु सो अवधिज्ञान इंद्रियज्ञान तैं वि-
सेष नाहीं काहे तैं जातै अवधिज्ञान भी मूर्तीक द्रव्य कौं ग्रहै है॥ इंद्रियज्ञान भी मूर्तीक द्रव्य कौं ग्रहै है है ता-
तैं रागादिकनि मैं समान है॥ पुनः सर्वतः चक्षुषः सिद्धाः गुणाः कहियै बहुरि॥ सर्वतः कहियै त्रिकालवर्ती स-
कल पदार्थनि विषै॥ चक्षुषः कहियै केवलज्ञान है नेत्र जिनिकै ऐसे सिद्धा कहियै अष्टकर्मरहित मुक्त
जीव है॥ भावार्थ॥ संसार विषै जेते संसारी जीव है॥ ते ते सब अज्ञान करि आछादित है तातै पर ज्ञेय प-
दार्थनि विषै मोहित है॥ ज्ञाता स्वरूप सुद्धात्मतत्वज्ञान तै रहित है॥ तातै ईन कै अतींद्रिय सवका

प्र·सा देषनहारानेत्रनांही सर्वदर्सीएकसिद्धहैं॥ तिससिद्धपदकीप्राप्तिकेनिमित्तिमोक्षमार्गीनेमहामु
१७२ निहैं॥ तेआगमनेत्रकेधारकहोंयहैं॥ तिसआगमनेत्रकरिस्वरूपपररूपकाभेदकाभेदकरेहैं॥ यद्य
पिज्ञेयज्ञानकीपरस्परएकताहोयरहीहै॥ भेदनांहीकियाजायहै॥ तथापिआगमनेत्रकेवलकरिल
क्षणभेदतेंजुदेकीजियेहैं इसिभेदविज्ञानशक्तिकरिमहामोहकोजीतेहैं॥ पीछेपरमात्मपदकौपावे
हैं॥ तबनिरंतरअनंतज्ञानविषैतिष्ठेहैं॥ तातेंसर्वदरसोसिद्धपदकासाधकआगमहैं॥ यहज्ञानिमु
क्तिवांछकमहामुनिसबकौंआगमनेत्रकरीदेखेहैं॥ आगमबडानेत्रहैं॥ आगेंआगमनेत्रकरिस
वदेखिएहै॥ यहबातदृढकरैहैं॥ गाथा॥ सव्वेआगमसिद्धा॥ अत्थागुणपज्जएहिंचितेहिंजाणंतिआ
गमेणहिपिच्छित्तातेवितेसमणा॥ ३४॥ सर्वेआगमसिद्धाअर्थाः॥ गुणपर्यायैश्चित्रैः॥ जानं
त्यागमेनहि॥ दृष्ट्वातानपितेश्रमणाः॥ टीका सर्वेअर्थाः चित्रैः गुणपर्यायैः आगमसिद्धाः
सर्वेकहियेसमस्तही॥ अर्थाः कहियेजीवादिपदार्थहैं॥ तेचित्रैः कहियेनानाप्रकारसेगुनप
र्यायैः कहियेअपने॥ २ गुणपर्यायनिकरिआगमसिद्धाः॥ कहियेसिद्धांतविषेसिद्धहोयहैं॥ टीका: १७२

जेतेजीवअजीवपदार्थहैं। तिनिकागुणपर्यायनिकेभेदकरिजुस्वरूपहैं। सोअनादिनिधनसिद्धांत
विषैंभलीभांतिसाध्याहैं। तेश्रमणतानांअपिआगमेनाहिइत्थंजानंतितेश्रमनाःकहियें। तेमोक्ष
मार्गीमहामुनि। तानकरिहियेंगुणपर्यायनिसंयुक्ततिनिपदार्थनिकोंअपिकहियें। निश्चयसोंआग
मेनकरिऐसिद्धांतकेबलिकरि। इष्टाकहियेदेखेहैं। नानंतिकहियेजानेहैं। भावार्थ। सिद्धांतविषैंद्रव्यगुन
पर्यायकास्वरूपयथार्थकह्याहैं। काहूतर्कन्यायकरिखंडितनाहींहोता। अविरोधहैंसहभावीगुनक्रम
वर्तीपर्याय। इनदोयभेदनिकरिद्रव्यविषेंजेहैंअणंतधर्म्म। तिनमयीजुहै। अनेकांतताकोंआगम
करैहैं। तातैंप्रमानहै। ऐसाजुहैयहत्यागआगमनेत्रताहीकरिमहामुनिसकलपदार्थनिकेस्वरू
पकोंऐसेजानेहैंसकलपदार्थज्ञेयहै। महामुनिज्ञाताहैं। काहेतैंजातें। नानाप्रकारकेगुणपर्यायसं
युक्तजुहैं। सर्वद्रव्यतिनिकाजुहैंअनेकांतस्वरूपतिसकाकहनहाराहै। द्रव्यश्रुतआगमताकों
जानिकरिभावश्रुतज्ञानकेउपयोगीहोयपरनएहै। तातैंमहामुनिआगमकेवलकरिसबकोंदेखै
जानैहैं। याहीतैंआगमनेत्रकरिकछुभीअनदेखनारहतानांहीं। तातैंमोक्षाभिलाषीजीवकोंआ

प्र॰ गमअभ्यासकरनाजोग्यहै॥आगैसिद्धांतकाज्ञान औरतत्त्वसिद्धांतहीमोक्षकाप्रधान॥औरज्ञानश्र
१२३ धारासंयुक्तचारित्र॥ऐतीनहूतीनौएककालविषैहोयहि॥तोमोक्षमार्गहोयहै॥ऐसानिश्चयकरैहै॥गा
था॥आगमपुव्वादिट्ठी॥नहुंवदिजस्सेहसंजमोतस्स॥णाथ्थितिभनइसुत्तं॥असंयदोहवदिकिधसम॰
णो॥२५॥आगमपूर्वादृष्टिः॥नभवतियस्येहसंयमस्तस्यनास्ति॥इतिभणतिसूत्रं॥असंयतोभवति
कथंश्रमणः॥टीका॥यस्यइह आगमपूर्वादृष्टिः॥नभवति॥यस्यकहियेजिसजीवकेइहकहियेइ
सिलोकविषै आगमपूर्वाकहियेप्रथमहीभलीभांतिसिद्धांतकौजानिकरिदृष्टिःकहियेसम्य
ग्दृष्टिः नभवतिकहियेनहोय॥तस्यसंयमःनास्तिइतिसूत्रंभणति॥तस्यकहियेतिसजीवकै
संयमःकहियेमुनिकीक्रियारूपआचार॥सोनास्तिकहियेनाहीहोयहै॥इतिकहियेयहवातसू
त्रंकहियेजिनप्रनीतसिद्धांतविषै॥भणतिकहियेकहेहै॥भावार्थ॥जिसपुरुषकैप्रथमही आग
मकैजानिकरिपदार्थनिकाश्रधाननभयाहोय॥तिसपुरुषकैसंयमभावभीनहोइ॥यहनिश्च
यहै॥असंयतःकथंश्रमणःभवति असंयतःकहियेजाकैसंयमभावनहोई॥सोपुरुषकथं॥क १२३

हियै॥कैसेश्रमनःकहियेमुनिभवतिकहियैहोय॥भावार्थ॥जिसपुरषकैसंयमनहोय॥सोमुनिकैसैंकहि
यै॥काहूप्रकारनकह्याजायजाकैंआगमकौंजानिकरिश्रधानहुवाहोई॥ताहीकेसंयमसोईमुनिकज्ञाना
ई॥अन्यथानकहिये॥ऐसीकथनविसेषकरिकहियैहै॥ज्ञानदर्सनचारित्रकाजुएकहीवारहोनाताकौंमो
क्षमार्गहोयहै॥काहेतैंजातैंजोजीवअनेकांतध्वजाकरिविराजमानआगमज्ञानकैअनुसारिश्रधान्य
रूपसम्यग्दर्सनतैंरहितहै॥तोजीवकेभेदविज्ञानकेअभावतैंस्वपरकाभेदनहोय॥कषायपरिनामनिसैं
ऐकताअभ्यासहोई॥तहांरागदोषमोहभावतैंविषयाभिलाषकानिरोधनहोय॥इंद्रियविषयनिविषैं
प्रवर्तैंषट्कायनिकाविराधकहोय॥असंकतैंरहितयथेछाचारीहोय॥सर्वत्यागरूपमुनिव्रतनहोयतै
सेहीनिर्विकल्पसमाधिकरिपरमात्मज्ञानभीनहोइ॥औरज्ञेयपदार्थनिकेसमूहविषैंप्रवर्त्तैजुहै॥स्वकै
रहोयकरिज्ञानकीप्रवृत्तिनतैस्वरूपविषैऐकाग्रताकेअभावकरिज्ञाताप्रवृत्तिकाअभावहै॥तातैं
ऐसेजीवकैआगमज्ञानश्रधानकौंअहानविनासंयमभावकीसिद्धिकैसेहोइ॥काहूप्रकारभीनहोय॥ताकै
संयमकीसिद्धिभईनहोय॥ताकैनिश्चितऐकाग्रतारूपमोक्षमार्गनामजुहै॥मुनिपदनितसकीभीसिद्धिन

 होय॥ तातै आगमज्ञान तत्वार्थश्रद्धान संयमभाव इनि तीनि हूं की एकता होय॥ तब ही मोक्षमा
 र्ग की सिद्धि होई॥ आगैं आगमज्ञान तत्वार्थश्रद्धान संयमभाव ई नि तीनहूं की एकता न होय तौ मो
क्षमार्ग भी न होय॥ यह कथन करै हैं॥ गाथा॥ ण हि आगमेण सिज्झदि॥ सद्दहणं जदि ण अत्थि अत्थेसु
सद्दहमाणो अत्थे॥ असंजदो वा ण णिव्वादि॥ २३७॥ न ह्यागमेन सिध्यति॥ श्रद्धानं यदि नास्त्यर्थेषु श्रद्धा
नोऽप्यर्थान् असंयतो वा न निर्वाति॥ टीका॥ यदि अर्थेषु श्रद्धानं नास्ति नरो आगमेन हि न सिध्यति
यदि कहिये जो॥ अर्थेषु कहिये जीवाजीवादिक पदार्थनि विषैं श्रद्धानं कहिये रुचि प्रतीति नास्ति कहि
ये नाहीं है॥ नरो कहिये तौ आगमेन कहिये सिद्धांत के॥ ज्ञानने करि कहिये निश्चय सो न सिध्यति कहि
ये नांही मुक्ति होय है॥ भावार्थ॥ यद्यपि आगमचक्षु करि सकल पदार्थनि कौं विसेष रूप जानै है॥ परंतु
सकल पदार्थ के ज्ञान न करि प्रतिबिंबित जु हैं॥ निर्मल ज्ञानाकार आत्मा जैसा है॥ ताकौं ताही प्रकार जो
न जानै तौ और ताही प्रकार जैसा कछू कह्या है॥ तैसा ही जो न श्रद्दहै॥ और जैसा कछू कह्या है॥ तैसा ही जो न
अनुभवै तौ परज्ञेय विषै मग्न रहै॥ अज्ञानी जीव तातैं अकेलैं आगम ही के ज्ञान नै करि श्रद्धा विना ज्ञा

नीकैंसैंहोय काहूप्रकारभीनहोय॥ आगमकौंजानैं॥ औरतत्वार्थनिकौंश्रद्दहैं॥ तौहीग्यानीहोय-
औरप्रकारनहोय॥ यद्यपिआगमसकलपदार्थनिकौंप्रगटकरैहै तथापिअज्ञानीकौंकछूकार्य
कारीनाही॥ काहेतैंजातैंअज्ञानीश्रद्धानतैंरहितहै॥ तातैंताकौंआगमतैंकछूफलसिधिनाहीवा-श्र
द्धानश्रद्धानः अपिअसंयतः ननिर्वाति॥ याकहियैं॥ अथवाश्रद्धानकहियैजीवाजीवादिसर्वपद
र्थतिनकरिश्रद्धानः अथकहियेयद्यपिश्रद्दहैहै॥ ऐसाहुहै॥ असंयतः कहियेअसंयमीजीवसोन
निर्वातिकहियेनाहीमुक्तिहोयहै॥ भावार्थ॥ यद्यपिसकलज्ञेयपदार्थनिकरिप्रतिबिंबितहुहैंनिर्मल
एकज्ञानाकारआत्मा॥ तिसहिकोरंजीवश्रद्दहैभीहै॥ अनुभवैभीहै॥ तथापिसोईजीवआपहीविषैं
जोसंयमभावधरिनिश्चलहोयनप्रवर्तै॥ तौतिसअसंयमीकैंजेसाकछूकह्याहै॥ तैसाहीआत्मत
त्वकीप्रतीतिरूपजुहैश्रद्धानसोकहाकरै॥ औरयथार्थआत्मतत्वकीअनुभूतिरूपज्ञानभीकहाक
रै॥ संयमभावविनाकाहेतैं जातैंयहजीवअनादिकालतैंलेकरिरागद्वेषमोहकीवासनातैंपरविषैं
लगिरह्याहै॥ जातैंइसिजीवकीअसुद्धचेतनारूपजुहै॥ व्यभिचारिनीस्त्रीसोपरभावनिविषैंरमैहै॥-अ

प्र.सा पणैं आत्मीक रसविषैं मग्न होता नांही ॥ पर वासनातैं रहित ॥ निःकंप ऐसैं आत्मीक तत्त्वविषैं संयमभाव
१७५ विना थिरता होती नांही ॥ तातैं संयमभावविना श्रधानतैं वा ज्ञानतैं मोक्ष होती नांही ॥ तव आगमज्ञा
न औ तत्त्वार्थश्रधान और संयमभाव ॥ ईन तीनहू की ऐकता होय ॥ तव ही मोक्षमार्ग होय ॥ औ इन्हीं
ईन तीन भावनिविषैं एक भी भाव की कमी होय ॥ तौ मोक्षमार्ग न होय ॥ यह तात्पर्य जानना ॥ आगे
आगमज्ञान और तत्त्वार्थश्रधान और संयमभाव ॥ ईनि रत्नत्रय की ऐकता कै होतसंतैं भी आत्म
ज्ञान कौं मुख्यरूप मोक्षमार्ग का साधकपणा दिखावै हैं ॥ गाथा ॥ जं अण्णाणी कम्मं ॥ खवेइ भवसयसहस्स
कोडीहिं तं णाणी तिहिं गुत्तो ॥ खवेइ उस्सासमित्तेन ॥ ३८ ॥ यदज्ञानी कर्म्म क्षपयति ॥ भवशतसह
स्रकोटिभिः ॥ तद्ज्ञानी त्रिभिर्गुप्तः क्षपयति उच्छ्वासमात्रेन ॥ टीका ॥ अज्ञानी पुरुष कर्म भवसह
स्रकोटीभिः क्षपयति ॥ अज्ञानी कहियै परमात्मज्ञानरहित पुरुष सो ॥ पुरुष कहियै जो कर्म कहि
यै ज्ञानावरनादि अनेक कर्म्म ॥ भवशतसहस्रकोटिभिः कहियै सौ हजार कोडि अनेक पर्यायनि १७५
करि ॥ क्षपयति कहियै खिपावै है ॥ त्रिभिर्गुप्तः ज्ञानी तत् ॥ उच्छ्वासमात्रेन क्षपयति ॥ त्रिभिः करि

येपरागवचनकायनिकीक्रियानिकैनिरोधकरिगुप्तः कहियेस्वरूपविषैलीन ॥ ज्ञानीकहियेपरमात्मभा
वकाअनुभवीज्ञातासोतत्वकहियेतिसज्ञानावरनादिअसंख्यातलोकमात्रकर्मकौं ॥ उस्वासमात्रैनक
हियें ॥ ऐसेंउस्वासकिंचित्कालकरिस्वयंयतिकरियेंषिपावैहै ॥ भावार्थ ॥ अज्ञानीजीवक्रियाकांडकरिकैपा
पारीकरिअनेकप्रकारअज्ञानतपकैबलकरिजुनमैंषिपावैहैयहहै ॥ ताहीकर्मकेउदयपरागदोषभाव
निकरि ॥ सुखदुखादिविकारभावनिपरनवैहै ॥ फेरिनौतनबंधकरिसंसारिकासंतानवधावैहै ॥ तातेंअ
नेकसौहजारकोडिपर्यायनिविषैंभीकर्मकौंखपनानकरै ॥ मुक्तिनहोई ॥ अज्ञानीकेकर्मकीनिर्जराबं
धकाकारननहीहै ॥ औरुज्ञानजुहैस्याद्वादध्वजाकरिचिन्हितसआगमकाजानना ॥ औरुतत्वार्थश्र
धानऔरुसंयमभाव ॥ एनितीनिरत्नत्रयकीआधिकाईकैप्रसादतेंअंगीकारकीनाजुहै ॥ सुद्धज्ञान
मई ॥ आत्मतत्वकीअनुभूति ॥ तिसअनुभूतिरूपज्ञानकैहोतैंमनवचनकायकीनिरोधनिहोयहै ॥ ता
तैंस्वरूपविषैंगुप्तहै ॥ तातैंसोज्ञानीअपनीज्ञानवैरागसक्तिकैबलतैंएकश्वासनविषैंविनोहीयत्नअ
पनीलीलाहीकरिअसंख्यातलोकमात्रकर्मज्ञानिकौंखिपायपटारैहै ॥ कर्मकेउदयविषैंरागदोषभा

प्र·सा सभावनितैंरहितहैं । तातैंइहानिष्टपदार्थनिकेसंयोगतैं ॥ सुषदुषविकाररूपधरनानांही ॥ तातैंनोतन
१२६ कर्मबंधकाकर्त्तानांहीसंसारकीसंतानकाउछेदकरैहैं ॥ सहजहीमुक्तिहोयहै तातैंपरतात्पर्यजोमना
आगमज्ञानतत्वार्थश्रद्धानसंयमभाव ॥ इनकीएकताहै तौभी ॥ आत्मज्ञानहीकोंमोक्षकेसाधि
वेकौंअधिकाईजाननी ॥ आगैंआत्मज्ञानसून्यपुरुषकैंआगमज्ञानतत्वार्थश्रद्धानसंयमभावइनि
तीनहूंकीएकताभीअकार्यकारीहै ऐसाकहैहैं ॥ गाथा ॥ परमाणुपमाणंवा ॥ मुछादेहादिएसुजस्सपु
णो ॥ विज्जदिजदिसोसिद्धं ॥ णलहदिसव्वागमधरोवि ॥ ३९ ॥ परमाणुप्रमाणंवा ॥ मूर्छादेहादिकेषुयस्यपुनः
विद्यते ॥ यदिसःसिद्धिं ॥ नलभतेसर्वागमधरोपि ॥ टीका ॥ यस्यपुनः परमाणुप्रमाणंवादेहादिकेषुमूर्छा
यदिविद्यते ॥ यस्यकहियेजिसपुरुषकैंपुनःकहियेवहुरिपरमाणुप्रमाणंवाकहियेपरमाणूकीवराव
रि ॥ अतिसूक्ष्मदेहादिकेषुकहिये ॥ शरीरादिपरद्रव्यविषैंमूर्छाकहियेममत्वभावयदिकहियेजो वि
द्यतेकहियेप्रवर्त्तैंहै तदासःसर्वागमधरः अपिसिद्धिंनलभते ॥ तदाकहियेतौसःकहियेसोपुरुषजिन
नेंहीमोहकलंककरिसर्वागमधरः अपिकहियेयद्यपिद्वादसांगकापाठीहै ॥ तोभीसिद्धंकहिये १२६

मोक्षताहि न लभतै कहियै नाही पावै है। भावार्थ। जैसे हाथ विषैं निर्मल फटिक मनि कांति अंतरंग बाहिरतें
भली भांति दीसे है तैसै जिनि पुरुष समस्त आगम का रहस्य जान्या है। तहां आगम माफिक कहि कालसें वें
धी सकल पर्याय संयुक्त है समस्त द्रव्यानि का ज्ञान न हारा है। आत्मा ताहीकौं भी जानै है। और श्रद्धा
है है और आचरै है। इसि प्रकार जिस पुरुष कै आगमज्ञान तत्त्वार्थ श्रद्धान संयमभाव इनि तीन्यूं की
एकता भी भई है। परंतु सोई पुरुष जो कहूं काल विषैं शरीरादि परद्रव्यानि विषैं रागभाव मल करि मलीन
हुवा ज्ञान स्वरूप आत्मा का वीतराग उपयोग भाव परनमन करि नाहीं अनुभवै है। तो सो पुरुष तेते ही स
रूस मोह कलंक करि कीलें गये हैं कर्म तिनि करि छूटता नाहीं मुक्ति होता नाहीं। तातें यह बात सिद्ध भई वी
तराग निर्विकल्प समाधि करि आत्मज्ञान गतैं तन्मय है। पुरुष ताकैं आगमज्ञान तत्त्वार्थ श्रद्धान संयम
भावनि की एकता भी कार्यकारी नाहीं। जो आत्मज्ञान सहित होय। तो ही मोक्षमार्ग की सिद्धि होय ता
तैं आत्मज्ञान ही मोक्ष का मुख्य साधन है। आगें जिसके आगमज्ञान तत्त्वार्थ श्रद्धान संयम भावनि की
एकता है। और आत्मज्ञान की एकता है। तिस पुरुष का स्वरूप कहै है॥ गाथा॥ पंचसमिदो तिगुत्तो

प्र.सा. पंचेंदियसंवुडो जिदकसाओ दंसणणाणसमग्गो॥ समणो सो संजदो भणिदो॥ २४०॥ पंचसमितस्त्रिगुप्तः
१८८ पंचेंद्रियसंवृतो जितकषायः दर्शनज्ञानसमग्रः श्रमणः स संयतो भणितः॥ टीका॥ श्रमणः संयतः भ
णितः स है श्रमणः कहिये सो महामुनि संयतः कहिये संयमी भणितः कहिये भगवंतने बनैं कह्या है सो कै
न कह्या है जो पंचसमित कहिये॥ पंच है समितजाकै असा है॥ बहुरि कैसा है॥ त्रिगुप्त कहिये तीन जोगके।
निरोधतें तीन है गुप्ति जाकै॥ बहुरि कैसा है॥ पंचेंद्रियसंवृतः कहिये पंचइंद्रियनिका संवर है जाकै बहुरि
कैसा है जितकषाय कहिये जीते है कषाय जिननैं॥ बहुरि कैसा है दर्शनज्ञानसमग्रः कहिये दर्सणज्ञान
पूर्ण है॥ जिसकै असा जो महामुनि है॥ सो संयमी जाननां॥ भावार्थ॥ जो पुरुष स्याद्वादरूप आगमके
बलतैं॥ सकलज्ञेयाकारकरि प्रतिबिंबित निर्मल ज्ञानस्वरूप आत्माकौं जाणै है॥ श्रद्दहै है अनुभवै है
और आपविषैं निश्चलवृत्तकौं चाहै है॥ और पंचसमितिके आचरनतैं॥ स्वेच्छाचारिप्रवृत्तिकौं निरोधि
अपनां सरीर जिनि संयमका साधनकौं गणै है॥ और क्रमसौं जिनि निश्चल होय॥ पंचइंद्रियका निरो
धकीनां है॥ और जिसकै मनवचनकायव्यापार दूरि भया है॥ और परद्रव्यतैं चैतन्यवृत्ति जिनि निकषायपनितैं पारिदु १८८

त्यविवेगमनकरैहै॥ औरजेंकषायआत्मासौंपरस्परमिलतेंएकताकौंधारेहैंहै॥ तिनिकषायसत्रुनिकें
आपतेंनिश्चयसौंआजुदेजानि॥ तिनकौंऐकहीवारअपनेंज्ञानकीआधिकाईसौंमसलि॥ ॥मारिडारै
हैजैसेंप्रवीणमल्लअपनेंसत्रुमल्लकौंमसलि॥ जीवतेंछुडावैहैतैसेंकषायनिकौंविनासैहैं सोवहमहा
मुनिसुभटसकलपरद्रव्यनितेंरहितज्ञानदर्सनचारित्रकीथिरतातैंसाक्षात्संयमीहै॥ औरजाहीमुनिकैंआ
गमज्ञानतत्वार्थश्रद्धानसंयमभावकीएकताहै॥ औरआत्मज्ञानकीएकताहै॥ आगेआत्मज्ञानकाऐकत्व
औरआगमज्ञानतत्वार्थश्रद्धानसंयमभावकाऐकत्वजिसमुनिकैंसिद्धभयाहै॥ सोकैसेलक्षणनकरिल।
खिएहैंयहकथनकरैहै॥ गाथा॥ समसत्तुबंधुवग्गो॥ समसुहदुखोपसंसणिंदसमो॥ समलोट्ठुकंचणोपुणजी
विदमरणेसमसमणो॥ ४१॥ समसत्रुबंधुवर्गः समसुखदुखः प्रशंसानिंदासमः समलोष्ठकांचनःपुनः जीवितमरणेस
श्रमण॥ टीका॥ श्रमणः समसत्रुबंधुवर्गः श्रमनःकहियेसमता भावविषैलीनहुवाहै॥ महामुनि॥ सोसमसत्रुबंधुव
र्गःकहियेवरावरिहै॥ सत्रुऔरबंधुकुटंबलोकसमूहजिसकैं ऐसेहै॥ वहुरिकैसाहैसमसुखदुखकहियेसमानहै
सुखऔरदुखजिसकैं॥ वहुरिकैसाहै प्रशंसानिंदासमः प्रशंसाकहियेवडाईनिंदाकहियै॥ दोषकथनईनिदोनौं

प्र·सा विषैसमः कहियेसमोगाभावहैं ॥ जिसकेवहुरिकैसाहैं समः लोष्टकांचनकहियेसमाहैं लोहाअरुसोना
१२८ जिसकै ॥ वहुरिकैसाहैजीवितमरणेसमः जीवितकहियेप्राणधारण ॥ मरनेंकहियेप्राणत्याग ॥ ईनिदो
नोविषैसमः कहियेसमोनहैं ॥ ऐसामहामुनिकालक्षनहै ॥ भावार्थ ॥ सम्यग्दरसनसम्यग्ज्ञानकेसहि
तजुचारित्रहैं ॥ ताकोसंयमकहियें ॥ औरुताहीकानामधर्महै ॥ औरताहीकानामसाम्यभावभीहै ॥ मोह
क्षोभतैरहितजुआत्माकापरिणामसोसाम्यभावजाननां ॥ तातैंसंयमीजतीकालक्षणसाम्यभाव
है ॥ तातैसत्रुमित्रसुषदुषस्तुतिनिंदासोनालोहाजीवनमरणमरणाईत्यादि ईष्टअनिष्टविषपनिवि
षैमुनिकैभेदनांहीसमताभावहै ॥ यहमेंनरहैयहपरहैं ॥ यहआराधकहै ॥ यहआतापहै ॥ यहमोकोउत्त
महै ॥ यहमोकोहीनताहै ॥ यहउपकारीहैंयहरहकछनांही ॥ यहजीवनहैं ॥ यहमेराविनासहै ॥ ईत्यादिक
जुहैअनेकविकल्प तेमोहकेअभावतेसबजाईंगहमुनिकेंहोतेनांही ॥ तातैमहामुनिरागदोषतैं
रहितहैं ॥ सदाकालनिर्मलज्ञानदरसनमई ॥ आत्माकोअनुभवेहै ॥ सबइष्टअनिष्टविषपनिकोहेयु
रूपजांणेहै ॥ रागीद्वेषभेदनांहीकैं ॥ समस्तसंकल्पविकल्पनतैंरहितहोय ॥ स्वरूपविषैनिश्चलहोयतिष्टेहैं १२८

ऐसे मुनि है जो समताभाव है। सोई महंत मुनि का लक्षण है। याही लक्षनतैं मुनि आगमग्यान तत्त्वार्थश्रधा
नसंयमभाव इन की एकता। और आत्मग्यान की एकता जो सिद्धि हुई जानी है। तातैं समभाव मुनि का प्रग
ट लक्षन है। आगे एकाग्रता सिद्धि भई जु है। पर आगमग्यान तत्त्वार्थश्रधान संयमभाव की एकता। और आ
त्मग्यान की एकता ए हो एकाग्रतारूप मोक्षमार्ग है। याही का दूसरा नाम मुनिपद वी है। पर कथन करै है। गाथा
दंसणणाणचरित्तेसु। तिसु जुगवं समुट्ठिदो जो दु। एयग्गगदोत्ति मदो। सामण्णं तस्स पडिपुण्णं। ४१। दर्स
नज्ञानचारित्रेषु। त्रिषु युगपत्समुत्थितो यस्तु ऐकाग्र्यगतः इति मतः श्रामण्यं तस्य परिपूर्णं। टीका। यः
दर्सनज्ञानचारित्रेषु। त्रिषु युगपत्समुत्थितः स ऐकाग्र्यगतः इति मतः। यः कहिये जो पुरुष दर्सनज्ञानचारि
त्रेषु कहिये सम्यक्दर्सन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र ए है जु है। त्रिषु कहिये तीन भाव तिनि विषैं युगपत् कहि
ये एक ही बार समुत्थितः कहिये भली भांति उद्यमवान हुवा प्रवर्त्ते है। स कहिये सो पुरुष आत्मलीन एका
ग्र्यगतः कहिये एकाग्रता को प्राप्त हुवा इति कहिये ऐसा मतः कहिये कह्या है। तु तस्य श्रामण्यं परिपूर्णं
तु कहिये बहुरि। तस्य कहिये तिस ही पुरुष कै। श्रामण्यं कहिये जतिपद सो परिपूर्ण कहिये पूर्ण हुवा है। भावा

प्र·सा र्थ। तैसें यह ज्ञायकतत्वकी यथावत प्रतीतिरूप जु है नासो सम्यक् दर्सन कहियें। औरु तैसें ही ज्ञायकतत्वरूप यथावत

१७९ ज्ञान नासो सम्यग्ज्ञान कहिये। औरु अनासमस्त क्रियातैं निवृत्ति होइ दर्सन ज्ञान स्वरूप आत्मा कै वि

षै जु प्रवृत्ति सो सम्यक्चारित्र कहिए है। ए तीनौं हू भाव भाव्य कहिए। आत्मा इनिका भावक है। स्वभाव नैं जो

ग्य है। आत्मा इनिकी भावना करै है। इनि भाव्य भावक भावनिकै सत्त्वनैं तैं। अति परिचय रूप मिलाप है। आ

त्मा अंगी है ए तीनौं हू भाव अंग हैं। अंग अंगीकै एकता है। ऐसें ही बार अैसें एक भावकौं परणाया जु है। आ

त्मा तातैं स्वरूप विषै लीन हू ऐसें तें जु संयम भाव है। सो यद्यपि ज्ञान दर्सन चारित्र भेद करि अनेक हैं तथापि

एक स्वरूप ही है। जैसें पानाविषै आम्ल तिक्त सुगंध द्रव्यादिके भेदतैं अनेक हैं। तथापि सबकौं मिलि करि ए

क रूप पर्याय धरया है। तातैं एक है तैसें सो संयम यद्यपि रत्नत्रय करि भेद लिए है। तथापि तीनौं हू भावका एक

संयम रूप पर्याय है। तातैं एकरूप है। यह ऐसें रूप संयम भाव समस्त परिग्रहतैं रहित है। एकाग्रता

रूप मुनि पद है। औरु यह ही मोक्षमार्ग जानना। जिस मोक्षमार्गकौ दर्सन ज्ञान चारित्र ऐसैं भेद करि गुन १७९

हैं ना सो भेद स्वरूप पर्यायकी विवक्षा करि व्यवहारनय करि कहिये है। औरु ऐकाग्रतारूप मोक्षमार्ग ऐसा

जु कथन है सो अभेदस्वरूप द्रव्यार्थिककी विवक्षा करि निश्चयनय करि कहिये है। जु कछु समस्त पदार्थ है
सो भेद अभेदस्वरूप द्रव्यपर्यायार्थिककी विवक्षा करि निश्चयनय करि कहिये है। जु कछु समस्त पदार्थ है सो भेद
अभेदस्वरूप है। तातैं भेद करि जु कहिये सो व्यवहार अभेद करि जु कहिये। सो निश्चय प्रमाण करि इन दोऊ की
सिद्धि है। यह मोक्षमार्ग निश्चय व्यवहार करि ऐसें कहे है। व्यवहार करि ऐसौ कहो परै। ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीन भेदनि कौं
पघापि लिये है तथापि एकाग्रता करि ऐसैं कहे है। ऐसा एक अनेकरूप यह मोक्षमार्ग ज्ञाता पुरुषनि कौं विचार तैं सि
द्धि पावै है। ऐसे मोक्षमार्ग कौं जे जगतजीव अंगीकार करै। जो परद्रव्य विरानैं स्व अपरोक्ष अरागतम कासकौ प्राप्त
होय। आगें ज्ञाता कैं ऐसें एकाग्रता नाहीं। ताकैं मोक्षमार्ग नाहीं यह कथन करै हैं। गाथा। मुज्झदि वा रज्जदि वा॥ दु
स्सदि वा दव्वमण्णमासेज्ज॥ जदि समणो अण्णाणी॥ बज्झदि कम्मेहिं विविहेहिं॥ ४४॥ मुह्यति वा रज्यति वा द्वे
ष्टि वा द्रव्यमन्यदासाद्य॥ यदि श्रमणोऽज्ञानी बध्यते कर्मभिर्विविधैः॥ टीका॥ यदि अज्ञानी श्रमणः अन्यत् द्र
व्यं आसाद्य मुह्यति वा रज्यति वा द्वेष्टि वा॥ यदि कहिये जो अज्ञानी कहिये आत्मज्ञानतैं रहित ऐसा जु है॥ श्रम
णः कहिये मुनि सो अन्यत् कहिये॥ आत्मा तैं भिन्न जु है द्रव्य कहिये परद्रव्य॥ ताहि आसाद्य कहिये अंगीका

प्र॰ सा॰ एकरि प्रवृत्ति वाकहियै ॥ अथवा मोहकौ प्राप्त होय है रज्यप्रवृत्ति वाकहियै अथवा रागी होय है ॥ अथवा द्वेषिता
१८० कहिये द्वेषी होय है ॥ तदा स विविधैः कर्मभिः बध्यते तदा कहियै तौ सकहियै सो अज्ञानी मुनि विविधैः क
हियै नाना प्रकारके कर्मभिः ॥ कहियै ज्ञानावरनादिक कर्मनिकरि बध्यते कहियै बांधी है ॥ भावार्थ ॥ जो कोई ज्ञा
नस्वरूप आत्माकौ एकाग्रता होय न भावै सो ॥ अवश्यमेव परद्रव्यकौ जोगी कारक रहै ॥ सो तिस परद्रव्य
विषैं लगि रहिवा ॥ ज्ञानस्वरूप आत्मातैं भ्रष्ट होय है ॥ अज्ञानी हुवा रागी द्वेषी मोही होय है ॥ ऐसा होता क
र्मनिकरि बंधै है ॥ मुक्ति नाहीं होय है ॥ तातैं जो एकाग्रताकरि रहित न रहै ताकै मोक्षमार्गकी सिद्धि नाहीं ॥ आगें
जो एकाग्रताकौं प्राप्त भया है ॥ ताकै मोक्षमार्गकी सिद्धि है ॥ ऐसे कथन करि ईस व्याख्यानकौं संचै है ॥ गाथा ॥
अत्थेसु जो ण मुज्झदि ण हि रज्जदि णेव दोसमुवयादि ॥ समणो जदि सो णियदं खवेदि कम्माणि विविधाणि ॥
५३ ॥ अर्थेषु जो न मुह्यति न हि रज्यति नैव द्वेषमुपयाति ॥ श्रमणो यदि स नियतं क्षपयति कर्माणि विविधा
नि ॥ टीका ॥ यः श्रमणः अर्थेषु न मुह्यति ॥ न हि रज्यति नैव द्वेषं उपयाति यः कहियै जो ज्ञानस्वरूप
आत्माका ज्ञान न होय ॥ श्रमणः कहियै मुनि अर्थेषु कहियै परस्वरूप पदार्थनि विषै न मुह्यति कहियै मो १८०

हीनांही होयहैं नाहिरुपातिकहियेनिश्चयस्योंरागीनांही होयहै ॥ नैवहेवं उपपातिकहिये नांहीहे यभाव
कैंभी प्राप्तहोयहै ॥ परिश्रमनः नियत ॥ परिकहिये जोसश्रमनः कहियेसोमुनिनियतंकहियैनिश्चितप
कार्यताकरिश्रेष्ठसाहोपतदा सर्व्वविधानिकर्मांरिराक्षयपाति ॥ नराकहियेतोसकहियेसोविवेकीमुनि ।
विधानिकहियै ॥ नानाप्रकारकेकर्मांनि कहिये ॥ ज्ञानावरनादिकर्म्मतिनहिरुपपातिकहियेषिपावे है
॥भावार्थ॥ जोपुरुषज्ञानस्वरूपआत्माकौंएकाग्रताकरिभावे हैं ॥ सोज्ञेयरूपपरद्रव्यकौंअंगीकारता
नाही ॥ परकौंत्यागिकरि ज्ञातास्वरूपआत्माकौं लगैहै ॥ आपुहीज्ञानीहुवारागीद्वेषीमोहीहोतानां
ही ॥ ऐसीवीतरागअवस्थाकरिमोक्षपदकौंप्राप्तहोयहै ॥ कर्मनिकरिबंधतानांही तातैंजोमुनिरागएक
ग्रताभावकौंप्राप्तहै ॥ ताकैंमोक्षमार्गकीसिधिहैसंदेहनांही ॥ इतिमोक्षमार्गकाअधिकारपूर्नभया ॥
आगैंसुभोपयोगकाकथनकरैहै ॥ तहांप्रथमहीसुभोपयोगीकैंमुनिपदवीकरिनधर्मदिखावे है ॥
गाथाः समणासुद्धुवजुत्ता सुहोवजुत्तायहोंतिसमयम्हि तेसुविसुधवजुत्ता ॥ अणासवासासवा
सेसा ॥४५॥ श्रमनाः सुद्धोपयुक्ताः सुभोपयुक्ताश्चभवंतिसमयेतेष्वपिसुद्धोपयुक्ता श्री श्री

प्र.सा अनास्रवाः सास्रवा सेषा ॥ टीका ॥ समये श्रमणाः सुद्धोपयुक्ताः । च शुभोपयुक्ताश्च भवंति समय कहि
१८१ ये परमागम विषै । श्रमणा कहियैं महामुनि ते सुद्धोपयुक्ता कहियें सुद्धोपयोगी । च कहियें बहुरि सु
भोपयुक्ताः कहियें सुभोपयोगी । ऐसे दोय प्रकार के मुनि भवंति कहियें होय हैं । तेषु अपि सुद्धोपयु
क्ताः । अनास्रवाः सेषः सास्रवाः तेषु अपि कहियैं । तिनि दोय प्रकार के मुनि विषैं भी सुद्धोपयुक्ता
कहियैं जे सुद्धोपयोगी हैं महामुनिः ते अनास्रवा कहियें कर्मनिके आस्रव तैं रहित हैं । सेषाः सास्र
वा सेषाः कहियैं बाकी जे सुभोपयोगी मुनि हैं ते सास्रवा कहियें आस्रवभावसंयुक्त हैं ॥ भावार्थ ॥ जे
जीव यतिपरिणतिकी प्रतिज्ञा करिकैं भी कषाय अंसके उदयतैं सकलपरिग्रहतैं निवृत्ति होय नि
र्मलज्ञानारससैं रससुभावकरि । आत्मतत्वकी प्रतिरूप जु है सुद्धोपयोगभूमिका । तिसविषै चढिवेकों
समर्थ हैं । सुद्धोपयोगी महामुनि वेन करि वरतौ हैं । औरजिनकी कषायनिके उदयतैं सक्ति रुकी होय
रही है ॥ ताका उत्तर गाथा कहै हैं ॥ गाथा ॥ धम्मेण परिणदप्पा । अप्पा जदि सुद्ध संपउग जुदो । पावदि णि
व्वाणसुहं । सुहोवजुत्तोव सग्गसुहं । ऐसी गाथाके विषैं ग्रंथके आदिभाग हम समाधान करि आए है १८१

किसुभोपयोगकैंधर्मसौंएकार्थसमवायहै। एकार्थसमवायकहाकहियै। जहांआत्माकेविषैज्ञान
दर्सनप्रवर्त्तते है। औरुरागपरिनितभीहै। तहांएकार्थसमवायकहियै। एकआत्मापदार्थविषैंदोउका
समवायहै। तातैंसुभोपयोगीधर्मकाअस्तित्वहै। तातैंसुभोपयोगीभीपरमागमविषैंमुनिकहेहैं। परंतुइतना
विसेषतैंसुद्धोपयोगीमुनिसमस्तकषायनितैंरहितहै। निराश्रवहै। औरुऐकषायकेअंसतैंरहितनांही। इनकै
कषायकाअंसजीवैहै। साश्रवहैतातैंसुद्धोपयोगीनिकीबराबरिनांहीजघन्यहै। आगैसुभोपयोगीमुनिकाल
क्षनकहैहैं ॥गाथा॥ अरहंतादिसुभत्ती। वच्छलदापवयणाभिजुत्तेसु। विज्जदिजदिसामण्णे। सासुहजुत्ताभवे
चरिया॥ ४५॥ अर्हदादिषुभक्तिर्वत्सलताप्रवचनाभियुक्तेषु। विद्यतेयदिश्रामण्ये। साशुभयुक्ताभवेच्चर्या
टीका॥ यदिश्रामण्येअर्हदादिषुभक्तिः। प्रवचनाभियुक्तेषुवात्सल्यताविद्यते। यदिकहियैजो। श्रामण्येक
हियैमुनिअवस्थाविषैंअर्हदादिषुकहियैं। अरहंतादिक्यंचपरमेष्ठीनिविषैकहियै। अनुरागकरिभक्तिहै। प
औरुप्रवचनाभियुक्तेषुकहियै। जेपरमागमकरिजुक्तहैं। सुद्धात्मस्वरूपकेउपदेसकमहामुनि। तिनिविषैंवात्सल
ताकहियैजैसैंगायभैंसिअपनैंवाछरेविषैंअनुरागिनीहोयहै। तैसैंतिनिविषैंप्रीतिजोविद्यतेक

प्र॰सा हियै प्रवर्त्तै । तदा सा सुभयुक्ता चर्या भवेत् । तदा कहियै तौ सकल कहियै सो सुभयुक्ता कहियै सुभ रागकरि संयुक्त चर्या कहियै
१८२ आचार की प्रवृत्ति । भवेत् कहियै होय है । भावार्थ । जो मुनि समस्त परिग्रह कौं त्याग करि मुनि अवस्था लियै
भी है । परंतु कषाय अंसकै उदयतै । आप सुद्धात्म विषैं थिर होय वे कौं असमर्थ हैं । तातैं सुमुनि जे सुद्धात्म स्वरूप
विषैं थिर हुए हैं । पंचपरमेष्ठी तिनि विषैं और जे सुद्धात्म स्वरूप के उपदेसक हैं । तिनि विषैं भक्ति सेवा प्रीति करि
प्रवर्तैं हैं । तिस मुनि कै इतनी ही राग प्रवृत्ति करि परद्रव्य विषैं प्रवृत्ति होय है । और सो मुनि सुद्धात्म कौं थिरता तैं च
लित होय है । असे मुनि कै सुभोपयोग रूप चारित्र भाव जानना । एही पंच परमेष्ठीनि विषै । भक्ति सेवा प्रीति सुभो
पयोगी मुनीस्वरनि का लक्षण प्रगट है । आगै सुभोपयोगी मुनीस्वरनि कौं प्रवृत्ति दिखावै है । गाथा । वंदणनम
संसणेहिं । अब्भुट्ठाणाणुगमपडिवत्ती । समणेसु समावणउ । ण णिंदिया रायचरियम्मि । ४६ । वंदनानमस्कारा
भ्यां । अभ्युत्थानानुगमनप्रतिपत्तिः । श्रमणेषु श्रमापनय । न निंदिता रागचर्यायां । टीका । रागचर्यायां श्रमणेषु
वंदननमस्काराभ्यां । अभ्युत्थानानुगमनप्रतिपत्तिः । न निंदिता चर्या यो कहियै । सरागचारित्र अवस्था विषै जे सु
भोपयोगी मुनि हैं । तिनकै श्रमने यु कहियै सुद्ध स्वरूप विषै थिर हुए हैं । असे जु महामुनि । तिनि विषैं वंदननमस्का १८२

राभ्यांकहियें। गुणानुवादवंदनाणमस्कारसहित॥ अभ्युत्थानकहियें आवतारेंदेषिउठिषडाहोना। अनुगमनकहियें
चलतैंपाछैंचलनो। प्रतिपत्तिकहियेंऐसीप्रवृत्तिनिकीसिद्धि: नानिंदितानकहियेंनिषेधनाहीं। जोग्यहैंऔरश्रमाप
नय: कहियेंआराध्यवस्तुकेसंयोगसेतीमहांमुनिकैं। श्रमकहतांषेदतिसकाजुअपनय: कहियेंविनासकरणां
यहभीसुभोपयोगीकैंनिषेधनोंहींजोग्यहैं। भावार्थ॥ सुभोपयोगीमुनि। जौमहांमुनिस्वरनिकीस्तुतिकरे नम
स्कारकरै। तीनकौं आवतादेषिउठिषडाहोय चलतैंपाछैंचलै। ईत्यादिविणयसेतीप्रवर्त्तै। तौजोग्यहैनिषेधनां
हीं। औरजौमहांमुनिकैंथिरताकाघातककछुएककउपसर्गादिकजेषेदहूवाहोय। तौताकेंदूरिकरिवेकौंवैयाव्रत्यादि
क्रियाभीनिषेधनांहीं। सुद्धात्मभावकीथिरताकेंनिमित्तजोग्यहै। षेदकेनासहोतेंमुनिकैंसमाधिहोयहै ता
तैंजोग्यहै। आगैसुभोपयोगीनिकैं। औरभीऐसीप्रवृत्तिहोयहै। यहकथनकरैहैं॥ गाथा॥ दंसणणाणुवदेसो
सिस्सग्गहणंचपोसणंतेसिं। चरियाहिसरागाणं। जिणिंदपूजोवदेसोय॥ ४७॥ दरसणज्ञानोपदेस: सिष्यग्रह
णंचपोषणंतेषांचर्याहिसरागाणां। जिणेंद्रपूजोपदेशश्च॥ टीका॥ हि सरागाणांचर्याहिकहियेंनिश्चयसौं
इयंकहियेंपर सरागाणांकहियेंजेसुभोपयोगीमुनिहैं। तिनिकीचर्याकहियेंक्रियाहै। सोकौंणक्रियाहै इसै

प्र.सा. संणाह्नाणोपदेसकरिहियें॥ सम्यग्दर्सण सम्यग्ज्ञानका उपदेस देना सिष्य ग्रहनें करिहियें॥ सिष्यसाधानिकासे ग्र
१८३ हकरनाचतेसांयांपोषणांचकरिहियें चहुरत्तेसांकरिहियें॥ तिनिसिष्यनिकापोषणकरिहियें॥ सिष्यसाधानिकासे ग्रहक
रनाचतेसांपोषणाचकरिहियें॥ चहुरत्तेसांकरिहियें॥ तिनिसिष्यनिकापोषनकरिहियें समाधानकरनाचजिणेंद्र प्रजो
पदेसे॥ चकरिहियें चहुरिजिनेंद्रप्रजोपदेसः करिहियें भगवानवीतरागकीपुजहै अर्थो॥ तिसकाउपदेसदेनांभावार्थं॥
ईत्यादिपूर्वोक्तक्रियासुभोपयोगीमुनिकैंहोयहै॥ सुद्धोपयोगीनिकैंनांहीहोयहै॥ काहेतेंजातेंसुधोपयोगीवी
तरागहै॥ तातेंतिनकैंनांहीं॥ रसरुपीहै॥ तातेंईनकैंधर्मानुरागतेंऐसीईछाहोयहै॥ किरेजीवज्योधर्मकोंग्रहैतो
बहुतभलाहै॥ ऐसाज्ञानिज्ञानदर्सनकाउपदेसदेहै॥ सिष्यनिकोंराषैहै॥ पोषैहै भगवानकीभक्तिकोंउपदेसदे
है॥ ऐसीसुभोपयोगीमुनिकैंप्रवृत्तिहै॥ आगेंसमस्तहीवैयावृत्यादिक्रियासुभोपयोगीमुनिकैंहोयहै॥ सुद्धो
पयोगीनिकैंहोतीनांहीं यहकथनकरैहैंगाथा॥ उवकुणदिजोविणिच्चं॥ चादुव्वण्णस्ससमणसंघस्स॥ कायवि
राधणरहिदं॥ सोविसरागप्पधाणोसे॥ अर्थ उपकरोतियोपिनित्यं॥ चातुर्वर्णस्यश्रमणसंघस्यकायविराधण
रहितं॥ सोपिसरागप्रधानस्यात॥ टीका॥ यः अपिनित्यंचातुर्वर्णस्यश्रमणसंघस्यकायविराधणरहितं उ १८३

पकरोति। यः कहियें जो अपि कहियें मुनिनित्यं कहियें। सदाकाल चातुर्वर्णस्य कहियें च्यारि प्रकार जु है श्रावक श्रा
वका यति आर्या भेद करि श्रमणसंघस्य कहियें सदाकाल चातुर्वर्णस्य कहियें च्यारि मुनीस्वरनिका संघ तिस
कौ कायविराधना रहित करि हियें। यथायोग्य वैयाव्रत्यादिक करि उपकार करै है सो पि सरागप्रधान स्यात्। सो पि का
हियें सो भी यह चतुर्विधिसंघ का री मुणि सरागप्रधानः कहियें सरागधर्म्म है। प्रथाराज्ञि सवैं ऐसा सुभोपयोगी
स्यात् कहियें होय है। भावार्थ। जु यह श्रमनि च्यारि प्रकार के संघ कउ उपगारी होय है। सो ऐक सुद्धात्मा के आचरन करि रक्षा
निमित्त होय है। चतुर्विधि संघ सुद्धात्मा का आचरन करै है। तातें तिसकी रक्षा निमित्ति। ऐसा उपकार करै है जामें षट्का
यकी विराधना न होय। ऐसा उपकार करै है। यातें जानते यह मुणि भी संयमी है। तातें यह अपरो संयमकौं राखि उ
पकार करै है सु यह संयमी सुभोपयोगी है सुद्धोपयोगीनिकैं ऐसी क्रिया होती नांहीं। आगें ऐसी वैयाव्रत्यादि
क्रियाण करै जो अपरो संयमकी विराधना होय। यह कथन करै है। गाथा। जदि कुणदि कायखेदं। विज्जावच्च
त्थमुज्जदो समणो। ण हवदि हवदि अगारी। धम्मो सो सावयाणं से। ४९। यदि करोति कायखेदं वैयाव्रत्य
र्थमुद्यतः श्रमणः। न भवति भवत्यगारी। धर्मः स श्रावकाणां स्यात्। टीका। वैयाव्रत्यर्थं उद्यत। यदि कायखे

प्र.सा दं करोति॥ तदा श्रमणः न भवति वैयावृत्यर्थ कहिये॥ अन्यमुनीश्वरनिकी सेवानिमित्ति उद्यत कहिये उद्यमवान हुवा
१९४ जु है सुभोपयोगी मुनि सो यदि कहिये जो॥ कायखेदं कहिये षट्कायकी विराधनारूप हिंसा कौं करै तो निश्चय करि है
ता कहिये तो वह मुनि श्रमणः कहिये अपने संयमका धारक मुनि न भवती कहिये नाहीं होय है॥ सु वह कौंन
होय है अगारी भवति कहिये गृहस्थ होय है॥ काहेतैं जातैं स श्रावकाणां धर्म्मः॥ श्रावकनिनका धर्म स्यात् क
हिये धर्म्म होय है॥ भावार्थ॥ जो कोई सरागचारित्री मुनि॥ अन्य मुनीश्वरनकी शुद्धात्माचरनकी रक्षानिमित्ति
वैयावृत्यादि क्रिया करि॥ अपने संयमका विरोध होय है॥ सो गृहस्थधर्म कौं करै है॥ मुनिपद तैं गिरै है॥ काहेतैं जा
तैं हिंसासहित गृहस्थका धर्म है॥ तातैं यो चाहिये सुभोपयोगी मुनि कौं॥ ज्यों अपने संयमका घात न होय॥ त्यों
ही सेवादि क्रियाविषै प्रवर्त्तै काहेतैं जातैं॥ अन्यके सेवाविषैं भी उपवर्त्तै है॥ सो भी संयमही की वृद्धिनिमित्त
तातैं संयमका घात करनेयुक्त नाहीं॥ आगे यह परोपकाररूप प्रवृत्ति किसकी करै॥ यह भेद दिखावै है॥ गाथा॥ जोण्हाणं
णिरवेक्खं॥ सागारणगारचरियजुत्ताणं॥ अणुकंपयोवयारं॥ कुव्वदु लेवो जदि वि अप्पो॥ ५१॥ जैनानां निरपेक्षं सा १९४
कारानाकारचर्यायुक्तानां॥ अनुकंपयोपकारं करोतु लेपो यद्यप्यल्पं॥ टीका॥ साकारानाकारचर्यायुक्तानां

जैनानांनिरपेक्षं ॥ अनुकंपयाउपकारंकरोतु ॥ साकारकहियेश्रावकअणगारकहियेमुनीस्वर ॥ इनकीजुहैचर्या
कहियेआचारक्रिया ॥ तिसकरियुक्तानांकहिये ॥ जेयुक्तहैंपात्रिश्रावकजेनानांकहियेजिनमार्गानुसारीतिनकौंनि
रपेक्षंकहियेफलकीअभिलाषातेंरहितहोयकरि ॥ अनुकंपयाकहियेदयाभावकरि ॥ उपकारंकहियेयहपोषणसेवा
दिक्रियातिसहिकरोतु ॥ कहियेसुभोपयोगीमुनिकरहुदोषनांहीं ॥ यद्यपिअल्पलेपः पापेदपिकहियेजोईसिसुभाचा
रकरि अल्पः लेपः कहिये ॥ थोरासासुभकर्मकाबंधहै ॥ तौभीदोषनांहीं ॥ भावार्थ ॥ जोयहदयाभावकरि ॥ परोपकाररू
पभक्तिनिकरही ॥ सोअरोकांतकरिपवित्रहैचित्तजिनिका ॥ असेंउत्तमजैनीपात्रिश्रावककेंविषैजोयहै ॥ सुद्धात्म
कीप्राप्तितेंअराधसमकतसुभफलकीवांछातेंरहितसहजहीजोंअल्पकर्मलेपभीहै ॥ तौभीभलाहै ॥ औरजे
सुद्धात्माकीप्राप्तितेरहितजुहैं ॥ मिथ्यादृष्टीतिनिकीसेवादिक्रियानिषेधहै ॥ जोतिनकीसेवादिकरिथोराभी
कर्मबंधहै ॥ तौभीनिषेधहैं ॥ काहेतें ॥ जातेंतिनमिथ्यादृष्टीनिकीसेवातेंनआपकौंसुद्धात्मतत्वकीप्राप्तिहै ॥ न
तिनकैंसुद्धात्मतत्वकीरक्षाहै ॥ दोऊजागेंधर्मवृद्धिनांहीं ॥ तातेंनिषेधहैं ॥ आगेंविसकालधर्मात्मानिका
वैयाव्रत्यादिककरैयहकहैहै ॥ गाथा ॥ रागरावाक्षमाधारे ॥ तराहाऐवासस्मेरावारूढ दिहासमनेसाधू ॥ परिवृत्त

प्र.सा दुख्यारसन्नाऐ ॥५१॥ रोगेणवाक्षुधयातृष्णयावाश्रमेनवारूढं ॥ दृष्ट्वाश्रमणंसाधुप्रतिपद्यतामात्मशक्त्या ॥ टी
१८५ का ॥ साधुरोगेणवाक्षुधयावातृष्णयावाश्रमेनरूढं ॥ श्रमणंदृष्ट्वाआत्मशक्त्याप्रतिपद्यतांसाधुकहियें
सुभोपयोगीमुनिसोरोगेनकहियेरोगकरि ॥ वाकहियै ॥ अथवा ॥ क्षुधाकहियेंभूखकरिवाकहियें ॥ अथवा ॥
तृषाकरिवाकहियेअथवाश्रमेनकहियेपरीषहादिककेखेदकरि ॥ रूढंकहियेपीडाकरिसंयुक्तभयाहुवाहै ॥ म
हामुनीस्वरताकोदृष्ट्वाकहियेदेखिकरि ॥ आत्मशक्त्याकहियेंअपनीसक्तिकेअनुसारकरिप्रतिपद्यतांक
हियै ॥ वैयावृत्यादिककरिकैंयाकरहु ॥ यहसेवादिककाप्रयत्नोननां ॥ भावार्थ ॥ जेमहामुनिभलीभांतिसुद्धस्व
रूपकेविषैलीणभएहैं ॥ तिनिकैंकाहूएककालकर्मकेसंयोगतै ॥ स्वरूपकेविसरौकाकारणकोउऐकउप
सर्गआयप्राप्तहोइ ॥ तिसकालसुभोपयोगीमुनिनिकावैयाव्रत्यादिककासमयहै ॥ औसाकार्यकरैंजुतिनक
उपसर्गनिसौंनिवृत्तिहोय ॥ स्वरूपविषैंथिरहोय ॥ ईसतैंऔरजोसुभोपयोगीमुनिनिकाकालहै ॥ सोअपनेसुद्धात्म
स्वरूपआचरनकेनिमितिहै ॥ सेवादिककेनिमित्तनाही ॥ ध्यानादिकविषैंप्रवर्त्तैहैं ॥ आगेसुभोपयोगीनिकावैया
वृत्यादिनिमित्त ॥ अज्ञानीलोकनिसौंभीसंभाषनहै ॥ औसाभेददिखावैहै ॥ गाथा ॥ वैयावच्चणिमित्तं ॥ गिला १८५

नागुरुबालवुड्ढसमणाणं ॥ लोगिगजणसंभासा ॥ णाणिंदरावासुहोवजुदा ॥ ५२ ॥ वैयावृत्तिनिमित्तं ग्लानगु
रुबालवृद्धश्रमणानां ॥ लौकिकजनसंभाषा ॥ न निंदिता वा सुभोपयुक्ता ॥ टीका ॥ ग्लानगुरुबालवृद्ध
श्रमणानां वैयावृत्तिनिमित्तं ॥ लौकिकजनसंभाषा वा न निंदिता ॥ ग्लान कहियै पीडित गुरु कहियै बडे
आचार्य ॥ बाल कहियै वयसनिकरि लघु वृद्ध कहियै वयसनिकरि बडा ऐसे जु है चारि ॥ २ ॥ प्रकारके श्रमनानां
क कहियै मुणि ॥ तिनकी वृत्तिनिमित्तं कहियै ॥ सेवादिककै निमित्त लौकिकजन कहियै ॥ अज्ञानी चारित्र
भ्रष्ट जीव ॥ तिनस्यौं संभाषा कहियैं वचनप्रवृत्ति वा कहियै अथवा यह भी न निंदिता कहियै निषेध नांही
वह वचनप्रवृत्ति कैसी है ॥ सुभोपयोगलक्ष रतें नांही ॥ परंतु जो तिनसौं ज्ञानी लोकनिस्यौं संभाषन किरतें ॥ जो
महामुनीश्वरनिका उपसर्गादिक रेतो तिनकी वैयावृत्तिके निमित्ति ॥ तिनिस्यौं संभाषन करै ॥ निषेध नांही
और वाम्रते न करै ॥ आगैं कहा जु यह सुभोपयोग तिनकौं दिखावै है ॥ कि किसकै गौन है किसकै मुख्य है ॥ ऐसे
कथन करै है ॥ गाथा ॥ एसा पसत्थभूदा ॥ समणाणं वा पुणो घरत्थाणं ॥ चरिया परेत्ति भणिदा ॥ ताएव परं ल
हदि सोक्खं ॥ ५३ ॥ एषा प्रशस्तभूता ॥ श्रमनानां वा पुनः गृहस्थानां ॥ चर्या परेति भणिता ॥ तयैव परं लभते सौ

प्र॰सा॰ ख्यं ॥टीका॥ एषा प्रसस्तभूता श्रमणानां वा पुनर्ग्रहस्थानां पराईति भणिता। एषा कहियै पूर्वोक्त प्रसस्तभू
१९६ ता कहियै सुभरागरूप चर्या कहियै आचारप्रवृत्ति श्रमणानां कहियै मुनीस्वरनिकै होय है। वा कहियै अथवा:
पुनः कहियै बहुरि ग्रहस्थानां कहियै श्रावकनिकै परा कहियै उत्कृष्टरूप होय है। इति कहियै यह भणिता क
हियै परमागम विषैं कही है तया एव परं सौख्यं लभते। तया एव कहियै तिसहि सुभराग आचारप्रवृत्ति क
रि। यह जो है श्रावक सो परं सौख्यं कहियै उत्कृष्ट जु है। मोक्षसुख तिसहि लभते कहियै परंपराकरि पावै है
॥भावार्थ॥ सुद्धात्मा विषैं अनुरागरूप यह कहा जु सुभाचार सो सुद्धात्मा की प्रकासनहारी महाविरति
ताकै जे धाम भए हैं। मुनीस्वर तिनकै कषाय अंस कै उदय तैं गौणरूप प्रवर्त्तै है। यह जु मुनिकैं गौणरूप सु
भाचार है। सो सुद्धात्मा के आचरण सैं तौ विरोधी जु है राग। ताकै संबंध स्यौं होय है। और श्रावक कै यह सु
भाचार मुख्यता लिये होय है। तातैं कषायनिकै उदय तैं मुख्यरूप प्रवर्त्तै है। सो यह सुभोपयोग राग संयोग तैं ग्र
हस्थ कै असुद्धात्मा कै अनुभवन तैं परंपराय मोक्ष का कारन होय है। जैसे फटिकमनि कै संबंध करि ईंधन कै १९६
सूर्य तैं अगिनि परंपराय करि प्रगट होइ है। तैसे यह गृहस्थ कै यह सुभोपयोग परंपराय मोक्ष का कारन है॥ आ

गेहैं इसि सुभोपयोगके कारणकी विपरीततातै फलकी विपरीतता साधै हैं ॥ गाथा ॥ रागो पसत्थभूदो ॥ वत्थुवि
सेसेण फलदि विवरीदं ॥ णाणाभूमिगदाणिह बीयाणिव सस्सकालम्हि ॥ ५४ ॥ रागः प्रसस्तभूतो वस्तुविसे
षे फलति विपरीतं ॥ नानाभूमिगतानीह ॥ बीजानीव सस्यकाले ॥ टीका ॥ प्रसस्तभूतः रागः वस्तुविसेषेन विपरीतप
लति ॥ प्रसस्तभूत कहियै सुभस्वरूप जु है यह रागः कहियै रागभाव सुभोपयोग सो वस्तुविसेसन कहियै पुरुषके भे
दकरि ॥ विपरीत कार्य कौ फलै है ॥ कैसे विपरीत फलकौ करै है सस्यकाले नानाभूमिगतानीह बीजानीव सस्य
कालै कहियै जिस कालयेती होय ॥ तिस कालविषै नानाभूमिगतानि कहियै ॥ नानाप्रकारकी जु है ॥ भूमि तिनि
विषै डारे जु है ॥ इह कहियै उपजिवेकौ बीज धान्यतै ॥ इव कहियै जैसैं विपरीत फलकौ करै है ॥ भावार्थ ॥ जैसे कोई
भूमिका श्रेष्ठ भी है ॥ जिनि विषै उपजिवेकौ बोया जु है अन्न सो बुरा होय है ॥ तैसैं यह सुभोपयोग पात्रकै भेद
करि विपरीत फलकौ भोगवै है जैसा पुरुष भला बुरा होय ॥ तहां तैसैं फलकौ उपजावै ॥ कारणके भेदतै अव
स्यकार्यका भेद होय है ॥ आगै कारणकी विपरीतता दिखावै हैं ॥ गाथा ॥ छदुमत्थविहिदवत्थुसु ॥ वदणियम
ज्झयणझाणदाणरदो ॥ ण लहदि अपुणब्भावं ॥ भावं सादप्पगं लहदि ॥ ५५ ॥ छद्मस्थविहितवस्तुषु

प्र·सा व्रतनियमाध्ययनध्यानदानरतः। न लभते अपुनर्भावं भावं सातात्मकं लभते॥ टीका॥ छद्मस्थविहितवस्तुषु
१८ व्रतनियमाध्ययनध्यानदानरतः। अपुनर्भावेन न लभ्यते॥ छद्मस्थ कहियै अज्ञानी जीव ने अपनी ही बुद्धि
सौं कल्पित कथन करै हैं। तिनि करि विहित कहियै थापे जु हैं। वस्तु कहियै देवगुरुधर्म पदार्थादिक तिन विषै
व्रतनियमाध्ययनध्यानदानरत कहियै जो पुरुष व्रतनियम। अध्ययनध्यानदानादिक क्रियानि विषै र
त हैं। सो पुरुष अपुनर्भावे कहियै मोक्षपद ताहि न लभते कहियै नांही पावै है तौ कहा पावै है। सातात्मकं
भावं लभते सातात्मकं कहियै पुन्यरूप जु है। भावं कहियै उत्तम देव मनुष्य पदवी ताहि लभते कहियै पावै है
भावार्थ। सर्वज्ञ वीतराग करि थापे जु है देवगुरुधर्मादि तिनि विषै जो सुभोपयोगरूप भाव निश्चल होइ। ता
का फल साक्षात पुन्य है। परंपरा मोक्ष है। यही सुभोपयोग कारण कौं विपरीतता सौं विपरीत होय है। औ
र विपरीत फल कौं करै है। सो ई दिखाइयै है। जे अज्ञानी जीवनि नै देवगुरुधर्मादिक वस्तु थापे हैं॥ तिनकै का
रण विपरीत है। तिनि विषै व्रतनियमपठणपाठणध्यानदानादिक करि अप्रीति तिनि सौं॥ लगन निरूपनो
सुभोपयोग है। तिस करि मोक्ष की प्राप्ति नांही। अकेला कलाविना पुन्यरूप पपाल फल होय है॥ सु वहु फ १८

उत्तमदेवमनुष्यगतिरूपजानननो ॥ आगेंकुपात्रदानकौविपरीततातैंफलकीविपरीतताऔरभीदिखावैहै ॥ गाथा
अविदितपरमत्थेसुय ॥ विसयकसायाधिगेसपत्तेसु ॥ जंदत्तंकुदंयदत्तं ॥ फलतिहिकुदेवेसुमनुजेसु ॥ ५८ ॥ अविदि
तपरमार्थेषुच ॥ विषयकषायाधिकेषु ॥ पात्रेषुपुनर्यत्अन्नंदेवादत्तंफलतिकुदेवेषुमनुजेषु ॥ टीका ॥ अविदितपर
मार्थेषु ॥ पात्रेषुअविदितकहियेनाहीजान्याहै ॥ परमार्थेषुकहियेशुद्धात्मपदार्थजिनइने ॥ ऐसेजुहैपात्रेषु
कहिये ॥ अज्ञानीमनुष्यातिनिविषैं ॥ औरजेविषयकषायाधिकेषु ॥ चकहियेवहुरि ॥ विषयकषायाधिकेषुकहिये
जेपुरुषविषयकषायनिकरिअधिकहैं ॥ तिनिविषैभीजो ॥ जुयंअन्नंदेवादत्तं ॥ जुयंकहियेवहुतप्रीतिकरिसेयना
औरअन्नंकहियेवैपात्रस्यादिककाकरनो ॥ वाकहियेअथवा ॥ दत्तंकहियेआहारादिककादेना ॥ सोकुदेवेषुम
नुजेषुफलति ॥ कुदेवेषुकहियेनीचदेवनिविषैं ॥ अथवामनुजेषुकहियेनीचमनुष्यनिविषैं ॥ फलतिकहियेफले
है ॥ भावार्थ ॥ जेअज्ञानीक्षद्रसमस्यनीबहुरंगोंविपरीतगुरुथापेहैं ॥ तेवेकुपात्रविपरीतहैं ॥ शुद्धात्माकेज्ञाननेंवि
ना औरआचारणविनापरमार्थज्ञानतेंरहितहैं ॥ औरविषयकषायनिकेसेवनहारेहैं ॥ ऐसेगुरुनिकीसेवा
भक्तिकाकरना ॥ वैयाव्रतिकाकरना औरआहारादिककादेना ॥ इत्यादिक्रियानिकरिजुपुन्यहोयहैताका

फलनी चरैव नीचमनुष्य हैं। आगें कारणकी विपरीतिता तैं उत्तम फलकी सिद्धि न होय॥ ऐसा कथन करै हैं
गाथा॥ जदि ते विसयकसाय पावंति परूविदा व सत्थेसु। कह ते तप्पडिबद्धा पुरिसा णित्थारगा होंति॥ ५४॥ यदि ते वि
षयकषायाः पापमिति प्ररूपिता वा। शास्त्रेषु कथं तत्प्रतिबद्धा पुरुषा निस्तारका भवंति॥ टीका॥ यदि ते विष
यकषायाः शास्त्रेषु पापं इति प्ररूपिता। यदि कहिजो ते कहिये ते। पूर्वोक्त विषयकषाय जे कहिये से इंद्रियादिक
पंच विषय। और क्रोधादिक कषाय सास्त्रनिमें कहिये। सिद्धांतविषैं पापं इति कहिये पापरूप ऐसे प्ररूपित कहि
ये कहे हैं॥ भावार्थ विषयकषाय संसारविषैं बडे पाप हैं। वा तत्प्रतिबद्धाः पुरुषाः वा कहिये। और तत्प्रतिबद्धा
कहिये। तिनि विषयकषायनिकरि जैसे पुरुष है। पुरुषा कहिये अपानी जीव ते भी पापरूप ज्ञान नो। विषय
कषायी जीव पापी हैं। ते निस्तारकाः कथं भवंति। ते कहिये ते विषयकषायी पुरुष अपरनि भव्यनिकैं निस्ता
रकाः कहिये तारनहारे। कथं कहिये कैसे भवंति कहिये होय हैं नाही होते॥ भावार्थ॥ जे जीव विषयकषायनि
करि पापी हैं। और स्याप कौ गुरु मानै है। अपरनि भव्यनिकौं पुन्यात्मा करै है। ते वे पापी संसारतैं तारक कैसे होंहि
गे। तिनकौं उत्तम फलकी सिद्धि होयगा कहू प्रकार भी होता नांही। क्या है तातैं संसारविषैं विषयकषाय महा

पापहै। तिनकेजेधारणाहारेपुरुषहैतेभीपापीहै। औरजेतिनिविषयकषाईनिकेभक्तहै तेभीपापीहै। तातैंविष
यकषायपंचतत्तरणतारनकैसेहोहिंगे॥ आगेंउत्तमफलकाकारणउत्तमपात्रदिखावेहै॥गाथा॥ उवरयपावोपुरि
सो। समभावोधम्मिगेसुसव्वेसु गुणसमिइसेवी हवइसभागीसुमग्गस्स॥४८॥ उपरतपापःपुरुषः समभा
वोधार्मिकेषुगुणसमितिसेवीभवतिसभागीसुमार्गस्य॥टीका॥ सत्पुरुषः सुमार्गस्यभागीभवति सत्पुरुषःक
हियेसोपरमसुनिसुमार्गस्यकहियेरत्नत्रयकीएकताकरि। एकाग्रतारूपजुहैमोक्षमार्ग। तिसकाभागीकहिये
सेवनहाराघात्रभवतिकहियेहोइहै। सोपुरुषकैसाहै। उपरतः पापः कहियेसमस्तविषयकषायरूपपापानि
तैंरहितहै। बहुरिकैसाहै। सर्वेषुधार्मिकेषुसमभावः। कहियेसर्वहीधर्मवंतनिकैविषैंसम्यकूदृष्टीहै। अनंतगुणा
त्मकअनेकधर्मनिविषैंपक्षपातनाहीं। मध्यस्थहै। बहुरिकैसाहैगुणसमितिसेवीकहियेंज्ञानादिअने
कगुणनिकेसमूहकासेवनहाराहै। ऐसाजुहैमहापुरुषमुनिसोतरणतारणसमर्थहै आपकौंपरकौंमोक्ष
कास्थानकहै यहउत्तमपात्रउत्तमफलकाकारणजाननां॥ आगेंफेरिउत्तमफलकाकारणउत्तमपात्रदिखावे
है॥गाथा॥ असुहेवकुगररहिया। सुधवजुत्तासुहेवजुत्तावा णिक्षारयंतिलोग तेमुपसंत्थलहहिंभत्ते॥४९॥

प्र.सा असुभोपयोगरहिताः सुद्धोपयुक्ताः सुभोपयुक्तावानिस्तारयंतिलोकं। तेषुप्रसस्तंलभतेभक्तः ॥टीका॥ असुभो
१९९ पयोगरहिताः सुद्धोपयुक्ताः। वासुभोपयुक्ताः लोकंनिस्तारयंति। असुभोपयोगरहिताः कहियेतेमुनिजोरागरू
पजेहै मोहद्वेषभाव तिनतेंरहितभएहैं ऐसेहोतसंतेसुद्धोपयुक्ताः कहियेसकलकषायकेउदयकेंअभावतें
कषायजेसुद्धोपयोगीहैं। वाकहियेअथवा सुभोपयुक्ताः कहियेउत्तमरागकेउदयतेंकषायसुभोपयोगीहैं –
ऐसेदोयप्रकारकेजेसुद्धोपयोगीसुभोपयोगीमुनि तेलोककेंकहियें। उत्तमजेहैंभव्यलोक तिनकोंनिस्तारयं
तिकहियेतारेहैं ॥भावार्थ॥ येउत्तममुनिआपमोक्षकेंस्थानकरैं। तातेंजगतकेंउद्धारकरै तेषुभक्तः प्रसस्तंलभ
तेतेषुकहियेतिनसुद्धोपयोगीसुभोपयोगीमुनिहूविषैं भक्तः कहियेभक्तभावनाविषेंप्रवर्त्तेहै। जोपुरुषसं
प्रसस्तं कहियेउत्तमस्थानकनाहिलाभतेकहियेपावेहैं ॥भावार्थ॥ जेईनिमुनिहूकीभक्तिकरैहैं। तेउत्तमभा
वसेंपुन्यहोयहै। औरुजेअनुमोदेहैं। तेभीपुन्यफलकोंभोगवेहैं। आगेजेउत्तमफलकेंकारणउत्तमपात्रहैं
तिनकीसेवासामाग्यविसेषताकरिदोईगाथामेंदिखावैहैं ॥गाथा॥ दिठापगदंवत्थं। अब्भुट्ठाणप्पधाणा १९९
किरियाहिं। वट्टदुतदोगुणादो। विसेसिदव्वोत्तिउवदेसो॥६१॥ इठ्ठापकदंवत्थु अब्भुट्ठाणप्पधाणक्रिया

भिः वर्न्नतांततस्तेगुणादिभिर्विशिष्टः ईसुपदेसः । टीका । ततः प्रकृतंवस्तुंउच्यते अभ्युत्थानप्रधानक्रियाभिः-
वर्ततांततः । कहियेत्तिसकारनतैंजेउत्तमगुणसहितहै । ते प्रकृतंकहियेउत्तमहै । जोवस्तुकहियेपात्रता।
हिदृष्टावृहियेदेयिकरि । अभ्युत्थानप्रधानक्रियाभिः कहियेआवतादेखिकरिउठिखडाहोना इत्यादिकजे
हैउत्तमक्रियातिणाकरिवर्न्नतांकहियेप्रवर्त्तौ ॥ भावार्थ ॥ जेधर्मात्मागुणसहितहै । तीनकौंउत्तमपात्रकाआद
विणयकरनाजोग्यहैं । काहेतैंजातैंगुणानांविसेषितत्वं ईतिउपदेस । गुणानांकहियेउत्तमगुणातैंविसेषि
तत्वं कहियेआदरविनायादिकरिविसेषकरनाजोग्यहैं । ईतिउपदेसः कहियेयहभगवंतदेवकाउपदे
सहै । भावार्थ । भगवंतकीआज्ञाऐसीहै ॥ ज्ञानादिगुणनिकरिविसेषकरिविसेषहोय तिनकाआदरविणय
करनाअवस्यजोग्यहैं । तातैंधर्मात्माकौंउत्तमपात्रकीविनयादिक्रियाजोग्यहैं । आगेविनयादिक्रियावि
सेषताकरिदिखावैहैं । गाथा । अभ्युट्ठाणंगहणं । उवासणायोसणाचसक्कारं ॥ अंजलिकरणपणामं । भणिद
मिहगुणाधिगाणांहि । ६१ । अभ्युत्थानंग्रहणमुपासनंपोषणंचसत्कारं । अंजलिकरणंप्रणामो । भ
णितमिहगुणाधिकानांहि । टीका । इहहिगुणाधिकानांअभ्युत्थानंभणितं । ईहकहियेईसलोकवि

ते

प्र·सा वौ है कहियै निश्चयस्यौं गुणाधिकनां कहियै आपतैं नैं अधिकगुणसंयुक्त हैं। महापुरुषातिणकै। अब्भुट्ठ स
१९० णां कहियै सनमुख आवतैं देषि करि उठि खड़ा होय करि सनमुख जानां भणि ते कहियै भगवंत देवनैं कहे हैं। ग्र
हन कहियै बहुत आदरसौं आदरपै। ऐसे उत्तम वचननि करि अंगीकार करना जोग्य है। बहुरि उपासण
कहियै सेवा करनी जोग्य है। च कहियै बहुरि पोषनं कहियै अन्नपानादिककरि पोषना जोग्य है। बहुरि सत्कारः क
हियै गुणानिकी प्रसंसा करि उत्तम वचन कहन करणो जोग्य है। बहुरि अंजलिकरणं कहियै विनयस्यौ हाथ जोर
णो जोग्य है। बहुरि प्रणामः कहियै नमस्कार करना जोग्य है। एतौ उत्तम क्रिया आपतैं जे गुणानिकरि उत्कृष्ट
है। तिणाकी करनी जोग्य है। आगैं नैं मुनि नां ही परंतु मुनिसैं है। ऐसे नु है इन्यासिंगी तिणाकी आदर विनयादि
सब क्रिया निषेध है ऐसा कहै है। गाथा। अब्भुट्ठेया समणा सुत्तत्थविसारदा उवासेया। संजमतवणाणड्ढा पणि
वंदणीया हि समणेहिं। ६२। अभ्युत्थेयाः श्रमणाः सूत्रार्थविशारदा उपासेयाः। संयमतपोगुणाढ्याः प्रणि
पतनीया हि श्रमणैः। टीका। श्रमणाः हि सूत्रार्थविशारदाः संयमतपोगुणाढ्याः श्रमणाः अभ्युत्थेयाः उ १९०
पासेयाः श्रमणैः। कहियै उत्तम मुनिहूकरि हि कहियै निश्चयस्यौ सूत्रार्थविसारदाः कहियै जे परमागमके

अर्थनिविषैंप्रवीणाहै ॥ और संयमतपोगुणाढ्या: कहियेसंयम और तपस्या ईत्यादिकनेगुणहैं ॥ तिनिक
रिपूर्नहै ऐसेजुहैं श्रमना: कहियैंमहामुनि तिनिकौ अभ्युत्थेयाः कहियैबडेहोय सनमुखजाय आदरविनयकरना
जोग्यहै ॥ और उपास्याः कहियेसेवणीजोग्यहैं ॥ और प्रणिपतनीया: कहियैंनमस्कारकरिनाजोग्यहै ॥ भावार्थ जे
मुनिसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकरिसंपूर्नहैं तिनहीकौं श्रेष्ठविनयादिक्रियाकरनींजोग्यहै ॥ औरनें द्रव्यलिं
गी श्रमणाभासमुनिहैं तिणकौंविनयादिक्रियाजोग्यनांही ॥ आगें श्रमणाभासमुनिकैसाहैयहकथनकरैहै ॥ गा
था ॥ णहवदिसमणोत्तिमदो संयमतवसुत्तसंपजुत्तोवि ॥ जदिसद्दहदिणअत्थे ॥ आदपधाणेजिणक्खादे ॥ ६३ ॥ न
भवतिश्रमणइतिमत: संयमतप: सूत्रसंप्रयुक्तोपि यदि श्रद्दधत्ते नार्थानात्मप्रधानान्जिनाख्यातान् ॥ टीका ॥ सं
यम: तप: सूत्रसंप्रयुक्तोपि ॥ यदिजिनाख्यातान् आत्मप्रधानान् अर्थान् नश्रद्दधत्ते ॥ संयमतप: सूत्रसंप्रयुक्तोपि
कहियै ॥ संयमतपस्याशास्त्रसिधांतइनिकरिमुनिसंपूर्नभीहै यद्यपिकहियैतौ ॥ जिनाख्यातान्कहियैसर्वज्ञवीतरा
गप्रनीत ॥ आत्मप्रधानान्कहियैसकलज्ञेयकेजाननेकौं आत्माहै प्रधानजिनविषैं ऐसेजुहैंअर्थान्कहि
यैजीवादिकपदार्थ ॥ तिनहिनश्रद्धतेकहियैं नाहीश्रद्दहैहै ॥ तदासश्रमन: नभवति इतिमत: तदाकहियैतौश्रमन.

कहियेसोमिथ्यादृष्टीमुनिश्रमनः कहियें। उत्तममुनिनभवतिकहियेंनांहीहैं। पतिकहीयेपरस्मश्रमनाभा
प्र॰सा समुनिमतः कहियें सिद्धांतविषेमहांपुरुषनिनकह्याहैं। भावार्थ। जोंश्रमसिद्धांतकाज्ञानवानहैसाभीहैं। संयमीतत्त
१९९ पसीभीहैं। परंतुसर्वज्ञप्रनीतनवीचारित्रकपदार्थनिकौंश्रद्दहतानांहीं। सोश्रमणाभासाकहियें। आगैप्रथ
र्थमुनिपरसंपूर्णमुनिकौंविरागपारिक्रियानोंगकरें सोचारित्रतैंरहिततहैयहदिखावैहैं। गाथा। अववदहिं
सासनत्थं समणंदिट्ठापदोसदोजोहि। किरियासुणाणुमण्णदि। हवदिहिसोणट्टचारित्तो। ६९। अपवदंति
सासणत्थं श्रमनंदृष्ट्वाप्रद्वेषतोयोहि। क्रियासुनानुमन्यतेंभवतिहिनष्टचारित्र। टीका। यः हिंसासण
स्थंश्रमणंदृष्टाप्रद्वेषतः। अपवदतियकहियेंजोमुनिहिकहियेनिश्चयसेंशासनस्थं कहियेंभगवंतकी
आज्ञाविषैंप्रवर्त्ततेहे श्रमनंः कहियेउत्तममुनि। ताहिदृष्ट्वाकहियेदेषकरि। प्रद्वेषतः। कहियेद्वेषभावतैं अ
पवदतिकहियेंअनादरकरिअपवादकरैहैं। औरक्रियासुनअनुमन्यतेंक्रियासुकहियेपूर्वोक्तविराग
पारिक्रियानिविषैं। नचअनुमन्यतेकहियेंनाहीं। अनुमोदैहै। सःनष्टचारित्रहिभवति। सकहियेसोद्वे
षीअविनयीमुनिनष्टचारित्रीकहियें। चारित्रभावतैरहितताहिकहियेंनिश्चयसेंभवतिकहियेहोयहैं १९९

भावार्थ॥ जो कोई मुनि अन्य जिनमार्गी मुनिकों दोष करि दोषभावपरिणामें है सो दोषभावनिकी परिनिति
तें नष्टचारित्री होय है॥ आगें जो पनि भाव करि उत्कृष्ट है ताकौं जो आपतें हीन आचरै सो अणंतसंसारी है ॥
ऐसा कथन करै है॥ गाथा॥ गुणदोधिगस्स विणयं॥ पडिछगो जो वि होदि समणो त्ति होज्जं गुणाधरो जदि॥ सो हो
दि अणंतसंसारी॥ छा॰॥ गुणतोधिकस्य विनयं प्रत्येषकः योपि भवामि श्रमण इति भवन गुणाधरो यदि स भवति अ
णंतसंसारी॥ टीका॥ यः अपि गुणतोधिकस्य विनयं प्रत्येषकः यः कहिये जो कोई मुणि अपि कहिये निश्चय सों
गुणतोधिकस्य कहिये ज्ञानसंयमादि गुणनिकरि उत्कृष्ट है जो महामुनि तिसका विनय कहिये आदरादिक
ताहि प्रत्येषः कहिये चाहै है॥ भावार्थ॥ जो कोई महामुनि पासतें अपना विनय आदर चाहै है॥ कहा है ते चाहै है -
अहं श्रमणः भवामि इति अहं कहिये मैं भी श्रमणः कहिये यती भवामि कहिये हूं इति कहिये ऐसें गर्वतें भा
वार्थ॥ कहा भया जो बहुगुणनिकरि अधिक है मैं भी तो यती हौं॥ ऐसे अहंकारतें बडे गुणीके पासतें अपना आदर चा
है है॥ यदि गुणाधरः भवन॥ यदि कहिये जो गुणाधरः कहिये आपगुननिका आधार न होय भया कहिये होतसं
तायौं ही रूदागर्भ करै है तौ सु अणंतसंसारी भवति॥ सः कहिये सो गर्वित अणंतसंसारी कहिये कदाचित॥ अणंतसं

सारकाभीभोगवुनहाराभवतिकहियेहोयहै ॥ तातें आपतेजेवडेहैं ॥ विणायकरनाजोग्यहै ॥ आगे आपपतिभावक
रिजतकष्टहै ॥ जोगुणाहीनकोविनयादिक्रियाकरै ॥ तोचारित्रकानासहोय यहदिखावेहै ॥ गाथा ॥ अधिगगुणा
सामणये ॥ वट्टंतिगुणाधरेहिकिरियासु ॥ जदितेमिछूवजुत्ता ॥ हवंतिपभट्टचारित्ता ॥ ६६ ॥ अधिकगुणाश्रामण्ये
वर्त्ततेगुणाधरेक्रियासु ॥ यदितेमिथ्योपयुक्ताःप्रभष्टचारित्राभवंति ॥ यदिकहियेजोश्रामणेकहियेयतिभावविं
वे अधिकगुणाः कहियेगुणानिकरिउत्कृष्टहै ॥ जेमहामुनियतेगुणाधरेकहिये ॥ जेगुणानिकरिरहितहै हीनमु
नि ॥ तिणाहूसोक्रियासुकहियेविणयादिक्रियानिविवै ॥ वर्त्ततेकहियेपरिवर्त्तैतदाकहियेजोतेंकहियेएवउत्कृ
ष्टमुणिमिथ्योपयुक्ताःकहियेमिथ्याभावकरिसंयुक्तहोते ॥ प्रभष्टचारित्राकहियेचारित्रभ्रष्टभवंतिकहियेहो
यहैं ॥ भावार्थ ॥ जेआपतेंहीणकुविणायआरंभकरैहै ॥ तेअज्ञानीहोयकरिसंयमकानासकरैहै ॥ गाथा ॥ णिछि
दसुत्तसपदो ॥ समिदकसाऊतवोधिगोचाविलोगिगजणसंसग्गं ॥ णजहदिजदिसंजदोणहवदि ॥ ६७ ॥ निश्चि
तसूत्रार्थपदः ॥ परः समितकषायस्तपोधिकश्चापि ॥ लौकिकजनसंसर्गननहातियदिसंयतोनभवति टीका
एतादृसः ॥ अपियदिलौकिकजनसंसर्गंनहाति ॥ तदासंयतोनभवति ॥ एतादृसः अपिकहियेयद्यपिश्रे

साभीहै। तथापिपरिकहियेंजोलौकिकजनणकहिएजेचारित्रभ्रष्ट अज्ञानीमुनि। तिणकासंसर्गकहियेंला
पताहिनंनमहागतिकहियेंनछोडे। तदाकहियेंतोसंयतोणभवतिकहियेसंयमीमुनिनाहीहोयहो कैसाहै यद्य
पिनिश्चितसूत्रार्थपदः। कहियेंनीकैकीयेहैं। सिद्धांतअरुजीवादिपदार्थजिनिनें। वहुरिकैसाहै। समितकषाय
: कहियेउपसमीहैंकषायजिनकें। चकहियेंवहुरिकैसाहै। तपोधिकः कहियेंतपस्याकरिउत्कृष्टहै। यद्यपिऐ
साहै तथापिकुसंगतितैंमुनिपदवीतैंभ्रष्टहोयहै। भावार्थ। जोभगवंतप्रणीतशास्त्रनकाजाननहाराहै
औरआत्मतत्त्वकौंभीजानेहै। औरबहुतअभ्यासकरिनिःकंपउपयोगीभीहै॥ औरतपकीअधिकाई
करिउत्कृष्टसंयमीभीहै॥ इत्यादिअनेकगुणनिकरिसंयुक्तहै। परंतुजोलौकिकमुनिकीसंगतनछोडैतौअ
संयमीहोय। कैसेंजैसेंअग्निकेसंबंधसेतीउत्तमसीतलजलअवस्थातप्तभावविकारकौंधरैहै तैसैंकुसंगतितैंअ
वस्थागुणनिकाभासहोयहैतातैंकुसंगतित्याज्यजोगहै। आगेंलौकिकमुनिकालक्षनकहैहै॥ गाथा॥ णिग्गं
थंपव्वइदो। वट्टदिजदिएहिगेहिकम्मेहिं। सोलोगिगोत्तिभणिदो संजमतवसंपजुत्तोवि॥ ६९॥ निर्ग्रंथंप्रव्र

प्र० १९३ प्रव्रजितः वर्त्तते यद्यैहिकैः कर्मभिः सलौकिकः इतिभनितः संयमतपसंप्रयुक्तोपि ॥टीका॥ नैर्ग्रंथ्यं प्रव्रजि
तः यदि ऐहिकैः कर्मभिर्वर्त्तते। तदा स लौकिकः इतिभणितः नैर्ग्रंथ्यं कहिये निर्ग्रंथ मुनिपदताकौं धारि
प्रव्रजितः कहियें दीक्षित हुवा है। ऐसा जो मुनिपद कहिये जो ऐहिकैः कर्मभिः कहिये इस लोकसंबंधी सं
सारीकर्मनो। तिस वेषक मेंत्र तमारिक तिनकरि वर्त्तते कहिये परवर्त्ते है। तदा कहिये तो स कहिये सो भ्रष्ट
मुनि लौकिक इति कहिये लौकिक ऐसे नाम भणितः कहिये कह्या है कैसा है यद्यपि संजमतपः संप्रयुक्तः
अपि कहियें संजमतपसा करि संयुक्त भी है। भावार्थ। यद्यपि निर्ग्रंथ दीक्षा की प्रत्यंगणा कीनी है। संयमतपस्या
का भार लीना है। और मोहकी अधिकाई करि सुद्धचेतनाव्यवहारकौं सिथल करै है। मैं मनुष्य हौ ऐसे अहंकार
कौं करि कमि रहहि। ईस लोकसंबंधी कारननितै रहित नाही हुवा ऐसा जो भ्रष्ट मुनि है। सो लौकीक मुनि कहिये। ऐ
सेकी संगति उत्तम मुनिकौं त्याज्य है। आगें सुसंगति कीजियें ऐसा कहै हैं ॥गाथा॥ तम्हा समं गुणादो स
मणो समणं गुणेहिं वा अहियं। अधिवसदु तम्हि णिच्चं। इच्छदि जदि दुक्खपरिमोक्खं ॥ ६९ ॥ तस्मात्समं गुण १९३

त् श्रमणः श्रमणं गुणैर्वाधिकं । अधिवसतु तत्र नित्यमिच्छति परिदुःखपरिमोक्षं ॥ टीका ॥ तस्मात् श्रम
णः गुणात् समं श्रमणं वा गुणैः अधिकं अधिवसतु । तस्मात् कहियै निस कारनतै । कुसंगतिसेती अग्निके
संबंधतै जैसैं जल परिणमन करि सविकार होय है । तैसै मुनि भी लौकिक संगति सो असंयमी होय है । ति
स कारणतै कुसंगति कौ त्याग कै श्रमनः कहियै उत्तम मुनि सो गुणात् समं कहियै । अपने गुण हूतै समान
होय । ऐसा जो श्रमणं कहियै मुनि ताकी संगति करौ । पुनः कहियै आप समान जो मुनि होय ताकी संगति मु
निकौं जोग्य है । वा कहियै अथवा गुणैः अधिकं कहियै । आपतै गुननि करि अधिक होय । महा मुनि ताकी
संगति कौ अधिवसतु कहियै । अंगीकार करि तिष्ठौ ॥ भावार्थ जो आपतै गुननि करि उत्कृष्ट होय ताकी सं
गति जोग्य है । परिदुःखपरमोक्षं इच्छति तत्र नित्यं अधिवसतु परि कहियै जो दुःख परमोक्षं कहियै । दुःख
तै मुक्त अवस्था ताहि इच्छति कहियै मुनि चाहै है तदा कहियै तौ तत्र कहियै तिनि दोऊ संगति विषै नि
त्य कहियै सदा काल अधिवसतु कहियै अंगीकार करि तिष्ठौ ॥ भावार्थ जो मोक्षाभिलाषी मुनि है । ता
कौं यो चाहियै कै तो गुणनि करि आप समान होय । कै अधिक होई । ऐसे होय मुनि की संगति करै ।

प्र.
१९४ औरकीणको। जैसैं सीतलघरकै कोनमैं। सीतलजलराखै तैसैं सीतगुणकी रक्षा होय है। तैसैं अपरोगुणसमा
णकी संगतिसौं गुणकी रक्षा होय है। और जैसैं अतिसीतलवरफमिश्री कपूरादिककी संगतिस्यौं अति
सीतलजल होय है। तैसैं गुनाधिकपुरुषकी संगतिसौं गुणवृद्धि होय है। तातैं सतसंगति जोग्य है। मुनकौं यो
चाहियै। कि प्रथम दसा विषैं। पहलही जो पूर्व ही सुभोपयोगतैं उत्पन्न प्रवृत्तिताकौं अंगीकार करै। पाछैं
क्रमस्यौं संयमकी उत्कृष्टताकरि परमदसाकौं धरै। पाछैं समस्तवस्तुकी प्रकासणहारी केवलज्ञानानं
दमयी सासती अवस्थाकौं सर्वथा प्रकार पाई। अपरो अतींद्रियसुख्यकौं अनुभवहु। इति सुभोपयो
गअधिकारसमाप्तं। अथानंतर पंचरत्नकथ्यते। आगैं पांच गाथानि करि पांचरत्न कहै है ६६ ऐसें पां
च गाथानि करि एपंचरत्न जानौ। कि ईस सिद्धांतका मुकट हैं। और भगवंतका अणेकांतमतसंक्षेप
ताकरि कहे हैं। और ए संसारमोक्षकी थितिकौं प्रगट करै हैं। तातैं एपंचरत्न जयवंत होहु संसारतत्व। १
मोक्षतत्व। २। मोक्षतत्वका साधन। ३। मोक्षतत्वसाधनसर्वमनोरथानां स्थानकथन। ४। सिष्य १९४
जनकौं सास्त्र फलका लाभ ५ इति पांच तत्वनि विषैं प्रथम ही संसारतत्व कहियै है। गाथा। जे अजधा

गहिदत्था एदे तच्चत्ति णिच्छिदा समये॥ अच्चंतफलसमिद्धं भमंति ते तो परं कालं ॥७०॥ ये अयथागृहीतार्था
एते तत्त्वमिति निश्चिताः॥ समये अत्यंतफलसमृद्धं भ्रमंति ते अतः परं कालं॥ टीका॥ ये समये अयथागृहीता
र्था एते तत्त्वं इति निश्चिताः ये कहिये जे पुरुष समये कहिये जिनमत विषै द्रव्यलिंग अवस्था धारि तिष्ठै भी
हैं परंतु अयथागृहीतार्थाः एते तत्त्वं इति निश्चिताः कहियै और कौ और ग्रहि रहे हैं। पदार्थनि कौं और रूप ने तत्त्वं
इति निश्चिताः एते कहियै जे पदार्थ हमनै ग्रहे ज्ञाने हैं। ते ई तत्त्वं कहियै वस्तु का स्वरूप है इति कहियै ऐसा।
मिथ्याभाव सौं एकांत निश्चिता कहियै ठीकता करि निश्चल होय रहे हैं। असे जे पुरष हैं ते अतः। अत्यंतफ
लसमृद्धं परे कालं भ्रमंति। ते कहियै ते श्रमनाभास मुनि। अतः कहियै इस वर्तमान काल तें आगे
अत्यंतफलसमृद्धं कहियै। अनंत परावर्तनरूप फल करि पूर्णा परकाल भ्रमंति कहियै अनंत का
ल पर्यंत भ्रमैंगे जे अज्ञानी मुनि मिथ्याबुद्धि सौं पदार्थनि के स्वरूप कौं यथार्थ नांही अ
है है और का और कल्पै हैं। और सदा काल निरंतर महा मोह मल करि चित्त की मलीनता है अ

प्र·सा विवेकी है ॥ यद्यपि द्रव्यलिंग धारि रहे हैं ॥ तथापि परमार्थ मुनिभाव कौं प्राप्त हूए नांही हैं, मुनिसे है तें अर्णत
९८५ परावर्त्त रागकरि भयारागकर्म नकरि भयारागकर्मफल कौं भोगवतें भ्रमे हैं ॥ तातें ते भ्रमनात्मा समुनिसंसा
रतत्वज्ञाननें और कोऊ संसार नांही जे नीवामिथ्याबुद्धि लिये हैं तेई संसार हैं आगे मोक्षतत्व कौं प्रगट करे है
गाथा अयधाचारविजुत्तो ॥ जधत्थपदणिछिदो पसंतप्पा ॥ अफले चिरं ण जीवदि ॥ इह सो संपुण्ण सामण्णे ७१
अयथाचारवियुक्तो यथार्थपदनिश्चितः ॥ प्रसांतात्मा अफले चिरं न जीवति इह स संपूर्णश्रामण्यः टीका
यः अयथाचारवियुक्तः यः कहिए जो पुरुष अयथाचार कहिए मिथ्या आचार ताकरि वियुक्तः कहिए रहित है
यथावस्तुस्वरूपाचरण विषे प्रवर्त्ते है ॥ और यथार्थपदनिश्चितः कहिये ॥ जैसा कछु पदार्थनि का स्वरूप है तैसा
ही श्रद्धान करि निश्चित तिष्ठे है ॥ बहुरि कैसा है प्रसांतात्मा कहिये रागद्वेष तें रहित है ॥ ऐसा जु है पुरुष सो संपू
र्णश्रामण्यः इह अफले चिरं न जीवति संपूर्णश्रामण्यः कहिये समग्र है मुनिपद जीसैं संपूर्ण ज्ञानना और स कहिये सो ऐसा महामुनि इह अफले कहिये मसफलरहित संसार विषे चिरं कहिये बहुत काल न जीवति कहिये नांही ९८५

ज्ञाएगनिकौंधरैगा।थोरेहीसेकालमैंमुक्तिहोयहै॥भावार्थ॥त्रिलोककाचूडामनिरतनसमानजुहैनिर्मलविवेक
रूपदीपकः तावेअधकारसवरिरत्निनिमहामुनिनैं यथावस्तुपदार्थनिकानिश्चयकीनोहै।स्वरूपकीलीनताकरिप
प्रसांतभावकौंप्राप्तहूवाहै।औरएकहीअपनैंहीखरूपकैंप्रमुख्यताकरिआचार्योंहै।विपरीतआचरणातैंरहितहूवा
मदाकालज्ञानीहै।ऐसापरिश्रगपैमुनिपरखीवकध्यारकमहांमुनिसकलपूर्वबंधकर्मफलकौंनिर्जराकरैहै।नौतन
कर्मफलकाउपजावणाहारानाहीहै।तातैंफिरिसंसारीवकप्रानिकैधरनैकीदीनताकौंनाहीधरैहै।औरजाकेंदूसरौं
परपंचधारणाकाअभावहै।ऐसाजुहैयहस्वस्वरूपकेविषैं।निश्चलमहामुनिसोईजुममोक्षतत्त्वजानहु।औरको
ईमोक्षनाहीं।जोजीवपरिग्रहतैंमुक्तहोयस्वरूपविषैंलीनहै सोईमोक्षतत्त्वहै।आगेमोक्षतत्त्वकासाधकतत्त्वदिखा
वैहै॥गाथा॥सम्मंविदिदपयत्था।चत्ताउपधिबहिसमज्झत्थे।विसयेसुणावसत्ता जेतेसुधत्तिनिद्दिट्ठा॥ ७२॥स
म्यग्विदितपदार्थाः त्यक्त्वोपधिंबहिस्थमध्यस्थं।विषयेषुनावशक्ताःयेतेसुधाइतिनिर्दिष्टाः॥टीका॥जेसुद्धा
इतिनिर्देसातैंकहियेतेजीवसुद्धाकहियेनिर्मलभगवंतमोक्षतत्त्वकेसाधगा इतिकहियेऐसैनिर्देस्याकहिये
दियाहैतेवेजीवकैसेनहै।येसम्यग्विदितपदार्थाः येकहियेजेजीवसम्यक्प्रकारकहियेयथार्थ।विदितकहियेजा

प्र·सा
१९६

गौहैं पदार्थ कहियै समस्त तत्त्व जिनांहूनैं। बहुरि कैसेहैं ते जीव विषयेषु न अवशक्ता। विषयेषु कहियै पंचइं
द्रियविषयतिनिविषै न अवसक्ता कहियै नांही लगै हैं। कहा करि इंद्रियनिविषै नांही लगे बहुरि स्थमध्यस्थ उ
पधिं त्यक्ता बहुरि स्थमध्यस्थ कहियै बाह्यि अंतरंग उपधि कहियै परिग्रह ताहि। त्यक्ता कहियै छांडि करि ऐसे
जे सुद्ध जीव हैं ते मोक्ष तत्त्व के साधन जांणणें॥ भावार्थ - अनेकांत तासप्रसन्न जु है। समस्त ज्ञेय ज्ञायक तत्त्व ति
न के यथावत् ज्ञान न विषै प्रवीन हैं। और समस्त बाह्य अंतरंग के परिग्रह निके त्याग करि है दीप्यमांन भए हैं
और अनंत सक्ति विराजमांन आत्म तत्त्व॥ जिनि के घट विषै वासि रह्या है। और इंद्रिय विषयनि विषै काहू का
लभी आसक्त नांही होय है। और स्वरूप विषै ऐसे लीन हैं। जानौं विसुध सोसे रहै है। ताते विषय पारिणति रहि
त हैं। और समार विषै घेरे जु हैं। कर्म रूपकी बारि तिन के उघाडि वे कौं आपनी सक्ति जिनांहू नैं प्रगट कीनी है
महाप्रभावसंपन्न हैं। ऐसे जे सुद्ध जीव हैं ते मोक्ष तत्त्व के साधन जानने॥ आगे मोक्ष तत्त्व का साधन तत्त्व सर्व
मनवांछित अर्थनिका स्थानक है यह दिषावै है॥ गाथा सुद्धस्स य सामण्णं। भणियं सुद्धस्स दंसणं णाण
णं सुद्धस्स य णिव्वाणं सो चिय सिद्धो णमो तस्स॥ २७४॥ सुद्धस्य श्रामण्यं भणितं शुद्धस्य दर्शनं ज्ञानं॥ सु

हूसचनिर्वांणं ॥ सएवसिधोरामस्तस्मैं ॥ टीका ॥ शुद्धस्यआमरापैभणितंशुद्धस्यकहियेजोपरमवीतरागभाव
कौप्राप्तभयाहै ॥ मोमोक्षतत्वकासाधणपरम्‌जोगीस्वरताकै ॥ आमरापंकहियेसम्यग्दर्सनज्ञाणचारित्रकीऐ
कताकरि ॥ ऐकाग्रतालियै ॥ साक्षात्‌मोक्षमार्गरूपपत्तिपदभनितंकहियेकह्याहै ॥ चक्षुदर्सनंज्ञानभनितं ॥ चव
हियेवहरिसुद्धस्यकहियेताहीसुधोपयोगीमोक्षसाधकमुनीस्वरकैंदर्सनंज्ञानंकहियै ॥ अतीतअनागतिवर्त
मांणा ॥ अणंतपर्यायसंयुक्तजुहै ॥ सकलपदार्थतिनकीसामान्यविसेषतांकादेखनाजांननाभीभणितंकहिये
कह्याहै ॥ चसुद्धस्यसिवांणंचकहिये ॥ चवहरिसुद्धस्यकहियैंनांहीसुद्धमोक्षमार्गीमुनिकेंनिर्वांणंकहियेनिरा
वरनअनंतज्ञांणदर्सनसुखवीर्यसंयुक्तपरमनिर्मलमोक्षअवस्थाभीहै ॥ सएवसिद्धः सएवकहियेसोई
सुद्धमोक्षसाधकसिद्ध ॥ कहियेटंकोत्कीर्णपरमआनंदअवस्थाकरिथिररूपनिरावरनदसाकौप्राप्तप
रमब्रह्मरूपसाक्षात्‌सिद्धहैंतस्मैरामं ॥ तस्मैकहियेसोजुहैं ॥ सर्वमनोरथकास्थांणक मोक्षतत्वकासाध
णसुद्धोपयोगी ॥ ताकौनमः कहियेहमाराभावनमस्कारहोउ ॥ वहुतविचनविस्तारकहालगिकीजियै भा
वार्थ ॥ यहजोमोक्षतत्वकासाधणसुधोपयोगीमहामुनिहैं ॥ सोसर्वमनोवांछितकार्यंनिकास्थाण

कहै । तेईसि दसाकै होतैं सब मनोरथ पूरे होय है । तातैं परमोक्षमार्ग है ईसही कौ अणंतज्ञानदर्सन है ईसही
प्र १९ कौ मोक्ष है । औरहू रे ही साक्षात सिद्ध है । जो सर्व उत्तम दसा है । तिनिरूप एही भावनना । आगे सिष्यजनकैं सा।
स्त्रफल दिखावै । सास्त्र कौ समाप्त करै है ॥ गाथा ॥ बुझदि सासणमेयं सागारणागारचरियाए जुत्तो जो सो
पवयणसारं लहुणा कालेण पप्पोदि ॥ ७५ ॥ बुध्यते शासनमेतत् साकारनाकारचर्यया युक्तः । यः स प्रवचन
सारं लघुना कालेन प्राप्नोति ॥ टीका ॥ यः साकार अनाकारचर्यया युक्तः एतत्सासणं बुध्यते पह कहियै जो
पुरुष । साकार कहियै श्रावक । अनाकार कहियै मुनि । ईणकी जु है चर्या कहियै क्रिया ताकरि युक्तः कहियै संयु
क्त है । एतत्सासणं कहियै यह जु है । भगवंतप्रनीत उपदेस ताहि बुध्यते कहियै समुझै है स लघुना कालेन प्रवच
नसारं प्राप्नोति । स कहियै सो यति अथवा श्रावक लघुना कालेन कहियै थोरे ही से काल करि । प्रवचनसारं क
हियै सिद्धांत का रहस्य जु है परमात्मभाव । ताहि प्राप्नोति कहियै पावै है भावार्थ जो कोई सिष्यजन निर्मल ज्ञा
न दर्सन विषै स्थिर होय श्रावक अथवा यतिभाव कौं प्राप्त हूवा होय । संक्षेप विस्तार रूप अर्थनि करि गर्भित १९
जु है । श्रुतज्ञान ताकौं प्रथम ही यथावत जानि आत्मा कौं अनुभवता संता । ईसि भगवतप्रनीत उपदेस कौं स

गु है। सो पुरुष सकल नय सार्थनि करि सचक्र नु है यह प्रवचनसार सिद्धांतका सारभूत समसंवेदन ज्ञानगम्य परमात्मा ग्रि
रागादिक नु शुद्धहीन अनुभयाथा ऐसे भगवंत आत्माकौं पावै है। जो कोई इहां ऐसी प्रश्न करै कि यह आत्मा कै
सा है। और कैसे पाइयै ता का समाधान फिरि कीजियै है। यद्यपि पहिलें कथन करि आए हैं। तथापि फेरि तनक रू
प कहियै है। यह आत्मा चैतन्य स्वरूप अनंत धर्मात्मक एक द्रव्य है ते अनंत धर्म अनंत नयनि करि गम्य हैं।
अनंत नय हैं सु श्रुतज्ञान है। तिस श्रुतज्ञान प्रमाण करि आत्मा अनंतधर्मात्मक जानिए है। तातैं नयनि करि
वस्तु दिखाइयै है। सो ई आत्मा द्रव्यार्थिक नय करि चिन्मात्र है। जैसैं वस्त्र एक है। और सो ई आत्मा पर्यायार्थि
क नय करि ज्ञान दर्सनादि रूप करि अनेक है। जैसैं सो ई वस्त्र तंतुनि करि अनेक है। अस्तित्व नय करि
सो ई आत्मा स्वद्रव्य क्षेत्र काल भावनि करि अस्तित्व रूप है। जैसैं लोहमयी बांण अपने चतुष्टै अस्तित्व रूप है
लोह तौ द्रव्य है। धनुष अरु गुणकै बीचि रहै है। तातैं वह बांन क्षेत्र है। जो साधवेका समय सो काल है। निसा
नेकै सामुही है सो भाव है। ऐसि भांति अपणा चतुष्टै करि लोहमयी बांन अस्तित्व रूप है। और नास्तित्व नय
करि सो ई आत्मा परद्रव्य क्षेत्र काल भाव करि नास्तित्व रूप है। जैसैं सो ई लोहमयी बांण सो ई लोहका बांन

प्र णनोही॥ औरधनुषगुनवीचिनांही॥ औरसाध्यानांही॥ औरनिसानैकै॥ सन्मुखनाहीं॥ ऐसेसोईलोहम
९६८ वीवोरागपरचतुष्टयकरिक्रमसेसोई आत्माअस्तिनास्तिरूपहै॥ जैसेसोईवोरागस्वचतुष्टैपरचतुष्टयक्रमविव
क्षाकरिअस्तिनास्तिरूपहोयहै॥ औरअवक्तव्यनयकरिसोईआतमाएकहीवारस्वचतुष्टयपरचतुष्टय-
करिअवक्तव्यहै जैसेसोईवोरागस्वपरचतुष्टयकरिअवक्तव्यसधैहै॥ औरअस्तिअवक्तव्यनयकरिसोई
आत्मास्वचतुष्टयकरि औरएकहीवारस्वपरचतुष्टयकरिअस्तिरूपअवक्तव्य॥ वोरागकेदृष्टांतकरिजान
नां॥ औरनास्तिअवक्तव्यनयकरिसोईआत्मापरचतुष्टयकरि॥ औरएकहीवारस्वपरचतुष्टयकरिनास्ति
रूपअवक्तव्यवोरागकेदृष्टांतकरिजाननो॥ औरअस्तिअवक्तव्यनयकरिसोईआत्मास्वचतुष्टयकरिऔ
रपरचतुष्टयकरि॥ औरएकहीवारस्वपरचतुष्टयकरि॥ अस्तिनास्तिरूपअवक्तव्यवोरागकेदृष्टांतकरिजा
ननां॥ सविकल्पनयकरिसोईआत्माभेदलियेहै॥ जैसेएकपुरुषकुमारबालकजुवानवृद्धभेदनिकरि
सविकल्पहोयहै॥ औरअविकल्पनयकरिसोईआत्माअभेदहै॥ जैसेएकपुरुषपलुकरिअभेदरूपहै॥ ना
मनयकरिसोईआत्मासद्ब्रह्मकरिनामलेवैकहाजावै॥ स्थापनानयकरिसोईआत्मापुद्गलकाअ ९६८

चलेवकरिथापिएहै।जैसैमूर्तीकपदार्थथापियेहै।द्रव्यनयकरिसोईआत्माअतीतअनागतपर्यायकरिक
ह्यियेहै जैसैश्रेनिकमहाराजातीर्थंकरकाद्रव्यवाराहै।भावनयकरिसोईआत्माजिसभावपरणमैहैति
सपरिनामस्योतन्मयीहोयहै।जैसैपुरुषाधीरास्त्रीविपरीतिसभोगविषैप्रवर्त्ततीतिसपर्यायरूपहोयहै।साम
न्यनयकरिसोईआत्माअपरौसमस्तपर्यायनिविषैव्यापीहै जैसैहारसूतसवमुक्ताफलनिविषैव्यापीहै।विसे
षनयकरिसोईआत्माएकपर्यायकरिकहिये।जैसैतिसहारकाएकमुक्ताफलवाहारविषैव्यापीहै।नित्यनय
करिसोईआत्माध्रुवरूपहै।जैसैनटअनेकरूपधरिस्वांगधरैहै।तथापिसोईनटएकहै।अनित्यनयकरिसोईआ
त्माअवस्थांतरिकरिअनवस्थितहै।जैसैसोईनटरामरावनादिककैस्वांगकरिऔरकाऔरहोयहै।सर्वगतन
यकरिसकलपदार्थवर्त्तैहै।जैसैखुलीआंखिसमस्तघटपटादिपदार्थानिविषैप्रवर्त्तैहै सुगतनयकरिआपही
विषैप्रवर्त्तैहै।जैसैमुदाहुवानेत्रआपहीविषैहै।सून्यनयकरिकेवलएकहीसोभायमानहै।जैसैसूनाघरए
कहोयहै।असून्यनयकरिअनेककरिमिल्याहुवासोभैहै।जैसैअनेकलोककरिभर्यौनावसोभैहै।ज्ञानज्ञे
यकेअभेदकथनरूपनयकरिएकहै।जैसैअनेकईधनाकारपरनयाहुवाअगिनएकहै।ज्ञानज्ञेयकेभेद

प्र द्रव्यनरूपनयकरिअनेकहैं जैसैंअनेकघटपटादिपदार्थनिकेप्रतिबिंबनिकरिआरसीअनेकरूपहोय
१९९ है नियतिनयकरिअपनैंनिश्चितस्वभावकौंलियेंहोयरहै।जैसैंपानीअपनासाहजीकस्वभावकरिसीतलता
लियेंहोयहै।अनियतिनयकरिअनिश्चितस्वभावहोयहै।जैसैंपानीअग्निकेसंबंधसौंउस्नहोयहै।स्वभाव
नयकरिकाहूकरिसिखायानाहीहोता जैसैंलोहकाबाणाधसाहूवातीषाहोयहै।कालनयकरिकालकेआ
धीनसिधिहोयहै।जैसैंग्रीषमकालकेअनुसारिसहजडालकाआंबपकैहैं।अकालनयकरिकालकेआ
धीणसिद्धिनाही जैसैंकृत्रिमघासुकीऊषमाकरिपालकेआंबपकैहैं।पुरुषाकारनयकरियतनस्यौंसि
द्धिहोयहै।जैसैंसाहितउपजायवेकेवासतैंयतनकरैहैं।काष्टकेमाटलाविषैंएकमधुमाखिकरराखियेंहै।तिस
मधुमाखिकाकेसब्दस्यौंऔरसाहितकीमाखीआईं।मधुछत्ताकरैहैं।ऐसैंयतनसौंभीसाहितकीसिद्धिहो
यहै।तैसैंयतनस्यौंभीद्रव्यकीसिद्धिहै दैवनयकरियतनाविनांहींसाध्यकीसिद्धिहोयहै।जैसैंयतनाविनाथा
साहितकेवासतैंमाटलाविषैंमधुमाखिकाका औरतिसमधछत्ताविषैंदैवसंयोगतैंमाणिकपाईयेंहैं।तैसैंय १९९
तनविनाभीसिद्धिहोयहै। ईस्वरनयकरिपराधीणहुवाभोगवैहै।जैसैंपंथीबालककधायकेआधीनहुवाधाए

पोराक्रियाकरैहै। अनीस्वरनयकरिस्वाधीनभोक्ताहै। जैसैंस्वेछाचारीसिंहमृगनिकौंविदारिवानक्रियाकरै
है। गुननयकरिकैंगुननिकाग्रहनहारोहै। जैसैंउपाध्यायकरिसिखायाहुवाकुमारगुनग्राहीहोयहै। अगुनन
यकरिकेवलसाक्षीभूतहै। गुनग्राहीनाही। जैसैंउपाध्यायकरिसिखाइयैजुहैकुमार। तिसकारखवालापुरुषगुन
ग्राहीनाहीहोता। कर्त्तानयकरिरागादिपरिनामनिकाकर्त्ताहै। जैसैंरंगरेजकामकरनहाराहै। अकर्त्तानयकरि
रागादिपरिनामनिकाकर्त्तानाहीसाक्षीभूतहै। जैसैंरंगरेजअनेकरंगकरैहै। औरकोऊतमासगीरतमासादेखै
है। कर्त्तानाहीहोता। भोक्तानयकरिसुखदुखकाभोक्ताहोयहै। जैसैंहितअहितपथ्यकौंलेतारोगीसुखदुखकौं
भोगवैहै। अभोक्तानयकरिसुखदुखकाभोक्तानाही। केवलसाक्षीभूतहै। जैसैंहितअहितपथ्यकौंभोक्ताजुहैरो
गी। ताकातमासगीरधनंतरवैदकाचाकरसाक्षीभूतहै। क्रियानयकरि। क्रियाकीप्रधानताकरिसिद्धहोयहै। जै
सैंकाहूंअंधनैमहांदुष्यतैं। काहूपाषानकेथंभकौंपायअपनामाथाफोड्या। तहांतिसअंधकैमस्तककादैवजु
रुधिरविकारथासुदूरिभया। तातैंदृष्टिहुई। औरतिसहीजागातिनैंनिधानपाया। तैसैंक्रियाकरकरिभीवा
स्तुकीप्राप्तिहोयहै। ज्ञाननयकरिविवेककीप्रधानताकरिवस्तुकीसिद्धिहोयहै। जैसैंकोउरत्नपरीख्य

प्र॰
२००

रूपया। तिननैं काहू अज्ञानदरीरापुरषकै हाथ चिंतामनिरत्न देख्या। तब तिस दरीरापुरुषकौं फुसलाई अपनैं घर
लेकैं वनमैं जायकरि कै कंचननिकी मूठीकै बदलैं चिंतामनिरत्न लीना तातैं सैं क्रिया कष्ट बिना ही ज्ञानकरि वस्तु
की सिद्धि होय है। व्यवहारनयकरि यह आत्मा बंधमोक्षअवस्थाकी द्विविधाविषै प्रवर्त्तै है। जैसैं परमा
णु अन्यपरमाणूस्यौं बंधै वा खुलै है। तैसैं यह आत्मा बंधमोक्षअवस्थाकौं पुद्गलस्यौं धरै है। निश्चयनयकरि परि
द्रव्यस्यौं बंधमोक्षअवस्थाकी द्विविधाकौं नाही धरै है। केवल अपने ही परिणामनिस्यौं बंधमोक्षअवस्था
कौं धरै है जैसैं अकेला परमाणु बंधमोक्षअवस्थाकौं जोग्य। अपनें स्निग्धरूक्षगुणपरिणामकौं धरता सं
ता बंधमोक्षअवस्थाकौं धरै है। असुद्धनयकरि यह आत्मा उपाधिकभेदस्वभाव लियें है। जैसैं एक मृत्ति
का घटसरावआदि। अनेकभेद लियें होय है। सुद्धनयकरि निरुपाधि अभेदस्वभावरूप है। जैसैं भेदभा
वरहित केवल मृत्तिका होय है। इत्यादि अनंतनयनिकरि वस्तुकी सिद्धि होय है। वस्तुकै अनेकप्रकारवचनवि
लासकरि दिखाइए है। जे वचन है ते तेतै ही नय है। जेते नय है ते तेते ही मिथ्यावाद है। जो तौ एक नयकौं सर्वथा मा
नीए तौ तौ मिथ्यावाद होय। और जौ कथंचित मानिए तौ। यथार्थ अनेकांतरूप सर्वज्ञवचन होय। तातैं ऐसें कौं २००

ततानिषेधहैं।ऐसेंएकवस्तुअनेकनयकरिसाधियेहै।यहआत्मानयनकरि।औरप्रमानकरिजानियेहै।जैसेंए
कसमुद्रजवतुदेहुरेनदीगाकेजलनिकरिसाधीयें।तवगंगाजमुनादिककेसेतनीलादिजलनिकेभेदकरिएक
ऐकस्वभावकौंधरैहै।तैसेंयहआत्मानयनिकीअपेक्षाऐकैकरूपकौंधरैहै।औरजैसेंसोईसमुद्र।अनेकन
दीनकेजलनिकरिएकसमुद्रहीहैभेदनाही।अनेकरूपएकवस्तुहै।तैसेंयहआत्माप्रमानविवक्षाकरिअ
नंतस्वभावमयएकद्रव्यहै।इसिप्रकारऐकअनेकस्वरूपदिखाईएहै।इसिप्रकारस्यात्पदकीसोभाकरिगर्भितनय
निकेस्वरूपकरि।औरअनेकान्तरूपप्रमानकरिअनंतधर्मसंपन्नहै।सुद्धचिन्मात्रवस्तुताकौंजेपुरुषअवधारे
हैं।तेपुरुषसाक्षात्आत्मस्वरूपकेअनुभवीहोयहैं।यहआत्मद्रव्यकास्वरूपजाननां।अवतिसआत्माकीप्र
प्तिकाप्रकारदिखाईयेहै।यहआत्माअनादिकालतैलेकरि।पहलीहीकर्मकेनिमित्ततैमोहमदिराकेपानकरिम
स्तत्वहुवाघूमैहै।समुद्रकीसीनांईआपहीविषैविकल्पतरंगनिकरिमहाक्षोभितहै।क्रमकरिपरिवर्तनहै।अनं
तइंद्रियज्ञानकेभेदनिकरिसदाकालपलटनिकौंप्राप्तहोयहै।एकरूपनांही।अज्ञानभावकरिपररूपवाह्यप
दार्थनिविषैआत्मवुद्धिकरिमैत्रीभावकरैहै।आत्मविवेककीसिथलाकरिसर्वथांवहिर्मुखहुवाहै।वारंवारपु

प्र
२०१

रपुद्गलीककर्मकेउपजावनहारेजुहैरागद्वेषभावतिनकैदैततातविषैप्रवर्त्तैहै। ऐसेआत्माकेसुद्धचिदानंदपरमा
त्माकीप्राप्तिकहांतैहोय। औरऐसेकहीआत्माजोअखंडज्ञानकेअभ्यासतैअनादिपुद्गलीककर्मकरिउपजाय
जुथायहमिथ्यामोहताकौंअपनाधातकजानिभेदविज्ञानकरिआपतैजुदाकरैकेवलआत्मस्वरूपकीभाव
नातैनिश्चलथिरहोय। तौअपनैस्वरूपविषैनिस्तरंगसमुद्रकीसीनांईनिःकंपहुवातिष्ठैहै। एकहीवारव्यान। भए
जुहैंअग्यानज्ञानकीसक्तिकेभेदतिनकरिचलतानाही। अपनीज्ञानसक्तिनिकरिबाह्यपररूपज्ञेयपदार्थनिविषै
मैभीभावनाहीकरैहै निश्चलआत्मज्ञानकीविवेकताकरि। अत्यंतस्वरूपस्योसन्मुखहुवाहै पुद्गलीककर्मबंध
केकारनजुहैरागद्वेषभावतिनिकीद्विविधातैंदूरिरहैहैं। ऐसाजोपरमात्माकाआराधकपुरुषहै। सोभगवंत
आत्माएवंहीएाअनुभवपाया। अरज्ञानानंदस्वभावहैपरमब्रह्महै। ताकौप्राप्तहोयहै। आपहीसाधकहैआ
पहीसाध्यहैऐसेस्याकेभेदतैसाध्यसाधकभेदहै। यहसमस्तहीजुहैजगतजीव। सोभीज्ञानानंदस्वरूपजुहैप
मात्माभावतिसकौंप्राप्तहोहु। औरअग्यानरूपजुहैअनंतजलतिसकेप्रवाहकरिपरिपूर्नवहैजुहै। यहकेवल
ज्ञानरूपनीनरतिसकेविषैजुआत्मतत्वमग्नहोयरहाहै। औरजुतत्वसमस्तलोकदेखिवेकौसमर्थहै। और २०

प्र·सा
२०२

टीकाकारतातैं अतिसुंदरसारसब रतैप्रवचनसार ॥२॥ सकल [illegible] सिनोल [illegible]
विकीयहटीका अभिराम ॥३॥ चौपई ॥ बालबोधयह कीधीजिनस ॥ सोउ मसु [illegible] नैसै ॥ [illegible]
तकारी ॥ कोरपाल ज्ञाता अविकारी ॥४॥ तिनविचारजियमैयह कीनी ॥ जो भाषा [illegible] दीनी ॥ [illegible]
रथवषानै ॥ आगम अगोचरपरपहिचानै ॥५॥ यहविचारि मनमैंतिनराषी ॥ पांडे हेमराज [illegible]
नेकीनी ॥ समयसारभाषारसलीनी ॥६॥ अब जो प्रवचनकी है भाषा ॥ जोजिनधर्मवधैवहसाषा ॥ [illegible]
नकीजै ॥ परभावना अंगफललीजै ॥७॥ सोरठा ॥ निजसुबोध अनुसार ॥ ऐसेहितउपदेससोरचै [illegible]
तयपवैतो मगरहूसदा ॥८॥ हेमराजहित आनिभविकजीवकैहितभणी ॥ जिणवरआणप्रवानि ॥ भाषा [illegible]
कीपूरी ॥९॥ दोहा ॥ सत्रहसैनववउतरैं माघमाससितपाष ॥ पंचमिआदितवारकों पूरनकीनीभाष ॥१०॥
श्रीप्रवचनसारभाषाटीकासंपूर्णं समाप्त ॥ शुभं भवतु मंगलं ददातु ॥ मिती चैत्रसुदि ८ ॥ संवत् ॥ १८५५
जयामततस्यालिख्यते ॥ पुस्तकमैटीकमै गइ ॥ लिख्यतंपं श्री चौवेनन्दे ॥

श्री अकलंक सरस्वती भवन
स्याद्वाद विद्यालय, काशी ।
[illegible]
[illegible]

प्र· २०२ गुनतत्वद्वाराकरिप्रधानहै। औरजुतत्वअमोलिकचोषेमहारत्नकीसीनांईअतिसोभायमानहै॥ तिसतत्वको
स्याद्वादरूपजिनेस्वरकेमतकोंअंगीकारकरियें जगतजनराअंगीकारकरो। जातेंपरमानंदसुषकोंप्राप्तहोहि। इति
श्रीकुंदकुंदाचार्यकृतप्रवचनसारसास्त्रविषै॥पंचरत्नानुयोगप्रगटवायरूआगारनिधनशार्॥ घरस्यअपनेअ
र्थरसकरिगर्वितहैं। काहूपरषकरिरसकाअर्थकीपाहोतानाहीं अपनीहीशक्तिकरिप्रवर्तो। तातेंऐसाकोउमतिम
नोकिप्रवचनसारकाअर्थमैंकीनाहै। एतेंसिद्धहीहैनिर्मलज्ञानकल्याणप्रकाशतैंअनेकांतविद्याकोंअवधा
रिसैंकपरमात्मतत्वकोंपाईकरिपरमआनंदितहोउजेमहाबुद्धिवंतहूवेहैंतेभीतत्वकेकथनसमुद्रकेपारगामीन
होहुवे।औरजुथोराबहुतत्वकाकथनकीयाहै सोसबतत्वकोअनंततताविषैऐसेंसमाईगयाहैंकिजानोंकहूक
नांहीं॥ कैसेंजैसेंअग्निविषैहोमीहुईवस्तुकछुरहतीनाहीं कैतोहीहारैंतेसेंतत्वविषैंसबकथनसमाईगा
स्यात्मतत्ववचनकरिकहाजातानाहीं अनुभवगम्यहैतातेंचिन्मात्रवस्तुकोंअनुभवहु औरहैसि
भमवस्तुकोईनांहीं॥ तातेंचिदानंदपरमात्मसदाघटविषैंप्रकासकरों॥ आगेंयहटीकाकर्त्ताकोंनाम
मूलग्रंथकर्त्ताभए॥कुंदकुंदमतिमान्अमृतचंद्रटीकाकरीदेवभाषपरवान॥ १॥